उष्मा

मनोवैज्ञानिक उपन्यास

मूल लेखक : रसिक मेहता
रूपान्तरण : शिवचरण मंत्री

सुशील प्रकाशन, अजमेर

प्रकाशक : सुशीला माथुर
सुशील प्रकाशन
63, कचहरी रोड, अजमेर



संस्करण : 1983



मूल्य : साठ रुपये



मुद्रक : मुकेश मोर,
नीलम प्रिन्टिर्स,
सुन्दर विलास, अजमेर - 305001

दो शब्द

गुजराती के सुप्रसिद्ध उपन्यासकार श्री रसिक मेहता की मूलकृति 'पाताल फूटे उठा धरती ने' का रूपान्तरण 'उलझन' पाठकों के हाथों में सौंपता हुआ अपार हर्ष का अनुभव कर रहा हूँ।

प्रस्तुत उपन्यास में लेखक श्री मेहता ने एक मनोवैज्ञानिक समस्या का मनोवैज्ञानिक ढंग से समाधान किया है। मनोविश्लेषण से रोग का उपचार करने का लेखक का यह एक अनूठा प्रयास रहा है। रूपान्तर करते समय मेरा प्रयास रहा है कि लेखक की मूल भावनाओं को यथावत रखते हुए पाठक भरमा देने वाले शब्द जाल में ही न उलझ रहें।

मैं, श्री जगदीशप्रसाद माथुर का अत्यन्त आभारी हूँ जिन्होंने अपने साहित्यिक दृष्टिकोण से मुझे समय-समय पर आवश्यक मार्ग-दर्शन दिया। उपन्यास को प्रकाशित करवाने में मुझे श्री मोहनलाल शर्मा, कनिष्ठ लिपिक ने भी जो सहयोग दिया, इसके लिए मैं उनको धन्यवाद देता हूँ।

जाने-अनजाने में जिन साथियों ने मुझे इस कार्य में सहयोग दिया है, उनका आभार प्रदर्शित करते हुए मैं प्रबुद्ध पाठकों एवं मूल लेखक श्री मेहता से उन सभी भूलों, कमियों के लिए क्षमाप्रार्थी हूँ, जिसके कारण उनके मन को कहीं ठेस लगी हो।

विनीत
शिवचरण मंत्री

स्वर्गीय श्री गोपालदास जी मंत्री को सादर समर्पित

शिवचरण मंत्री

'क्यों क्या हो रहा है बेटी ?

चक्कर आ रहे हैं पिताजी !

'चक्कर ? स्टीमर मे चक्कर आए। आज से पहले तूने कभी नही बताया।

न जाने क्यो, चक्कर आ रहे हैं ?

'इससे पहले कि मधुसूदन कुछ विस्मित और चिन्तित होकर कुछ बोले, उष्मा बॉश बेसिन की ओर दौड पडी उसने कै करने की कोशिश की—गले म अगुली डालकर कै करने की कोशिश की— किन्तु उसे कै नही आ सकी। मुह बिगाडते हुए उष्मा कुछ शिथिल कदमो से लौट आई। वह केबिन के कोने म रक्खे हुए कोच म धडाम से गिर पडी बेहोश हो गई ।

मधुसूदन चौंककर चिल्लाए उष्मा ! अरी ओ उष्मा !

पर जिस उष्मा की चैतन्य शक्ति अचेतन की मुट्ठी मे दब गई थी, वह उष्मा कैसे पिता की बात का उत्तर देती ?

मधुसूदन के पावो म वात रोग होने के कारण वह जल्दी-जल्दी चलने म असमर्थ थ। इस पर भी तेज चाल से बेटी तक पहुँचे। उसे झकझोरते हुए बार-बार आवाजें देने लगे 'उष्मा ओ बेटी ! क्या हो गया है तुझे ?

इतने पर भी उष्मा निरुत्तर ।

वैसे मधुसूदन घबराते नही थे, लेकिन आज वे घबरा गए। आखिर पिता का दिल जो था ! वेन्जुएला, मे भी उष्मा को कई बार इसी प्रकार के फिटस् के दौरे पड चुके थे

पर वहा तो घर था और यहाँ स्टीमर । इसी कारण आज मधुसुदन और दिनो से ज्यादा घबरा गए थे। बहुत ही आकुल-व्याकुल होकर वे स्मेलिंग सॉल्ट की गोली ढूढने लगे। उन्होंने सन्दूक, बेग्स, होल्डोल की एक-एक चीज उथल पुथल करके देख ली। किन्तु दवा तो उसी दशा मे मिलती, जबकि उसको कहीं रक्खा जाता। गत दो एक माह से दवा की जरूरत ही नही पडी थी, अतएव साथ लेने की याद क्योंकर रहती ?

हाफ्ते हुए मधुसूदन ने आखिरकार घण्टी बजाकर बॉय को बुलवाकर आदेश दिया। तनिक, जल्दी से डाक्टर को बुला ला।

पाच मिनट मे हाथ मे स्टेथेस्कोप झुलाते हुए डाक्टर हिमांशु देसाई हाजिर हुए। पशेन्ट के पास पडी हुई बेंत की कुर्सी पर बैठते हुए वे हँसते हुए बोले। ओह यह तो बडा अजीब तमाशा है ' अभी तो स्टीमर स्टार्ट ही हुआ है और डाक्टर के नाम की आवाजें आना शुरू हो गई ? क्या हो गया इसे। सी-सिक्नेस ?

नही, साहब ! इसे सी-सिक्नेस का रोग कभी नही हुआ। सामान्य तौर पर इसे चक्कर भी नही यह तो फिट है फिट !

'हिस्टीरिया" ! ओह आई सी ! हिस्टीरिया।

इतना कहकर डाक्टर ने पेशेन्ट की पल्स हाथ मे ले ली।

एकक्षण" ! उष्मा के अस्तव्यस्त शरीर को डाक्टर ने तीखी नजरो से देखा। डाक्टर ने सहारा देकर उष्मा को पलग पर आराम से सुला दिया। इसके बाद पल्स गिनते हुए नीची गर्दन करके घडी देखने लगे।

उष्मा के पावो की ओर मधुसूदन एक छोर पर बैठे थे बिस्तर मे ढग से बेटी को वे ठीक प्रकार से नही सुला सके थे, मानो इसी बात की सफाई देते हुए अपने दोनो घटनो पर हाथ रखकर बोले डाक्टर मैं तो बडा परेशान हूँ, मेरे दोनो पावो मे दर्द है, दर्द जाता ही नही है।

"रुमेटीजम ?

'हाँ ।'

'कोई दिक्कत नही। मैं स्वय तुम्हारा ट्रीटमेन्ट शुरू करूगा"' स्टीमर छोडने से पहले तुमको तैय्यार करना मेरी गारण्टी है। बस, इससे अधिक क्या चाहिए ?'

मधुसूदन का गला रूध गया। रूधे स्वर मे धीरे से कहने लगे आप तो बहुत भले है, साहब ! मैं आपका अहसान कैसे भूल सकूगा ?

हाथ की घडी से डाक्टर की नजर एक क्षण के लिये उठी, उसने उडती नजर से उष्मा के फीके अचेत मुख को देखा तथा दूसरे ही क्षण उसने फिर से घडी देखना शुरू कर दिया। सम्भवतया उन्होने मधुसूदन की बात ही नही सुनी। पल्स की गिनती पूरी करके उन्होने छाती पर स्टेथेस्कोप लगाया। छाती, पीठ, पेट, फसलियो का डाक्टर ने भली प्रकार से परीक्षण किया। इसके बाद शात-स्वस्थ आवाज मे बोले-इसके सिवाय कुछ नही है। सब आलराइट है। बल्लड प्रेशर भी ठीक है। यह हिस्टीरिया का रोग कब से हुआ है ?'

'कोई छ महीने हो चुके हैं।'

'विवाह हो गया है ?'

'हा—शादी के बाद ही हिस्टीरिया का दौरा पडना शुरू हो गया था। इसके पहले तो इसे सपने मे भी फिट नही आते थे।

'हू ! डॉक्टर को यह सुनकर कुछ आश्चर्य हुआ और वे हँस पड़े। इस प्रकार का रोग अधिकतर शादी के बाद ही प्रारम्भ होता है। क्या किसी अविवाहित लड़की को तुमने फिट के रोग से पीड़ित देखा है ?'

ऐसा कैसे कहा जा सकता है ? हमारे एक सम्बन्धी की अविवाहित लड़की को भी ।

वास्तव मे यह रोग फिटस् का रोग न होकर गेस्ट्रीकल डिजीज होती है या फिर जन्म से ही कमजोर बुद्धि के कारण यह रोग हो जाता है ! जिसको हम लोग मिरगी कहते हैं।

हा हा ! यही तो ! मधुसूदन ने हा मे हा मिलाते हुए सिर पर हाथ मारा। इसके बाद कुछ चिंतित होकर पूछने लगे उष्मा को हिस्टीरिया ही है या कुछ और साहब ?'

बेशक हिस्टीरिया ही है।'

इतना कहकर डाक्टर ने उष्मा की आखो की पलकें खोली और बडी देर तक देखते रहे। इसके बाद पलक वापस बद कर दी।

कुछ अधीर होकर मधुसूदन बोले आप इसे कुछ सु घा कर पहले होश म तो लाइऐगा।

नही ! इसे स्वत ही होश म आने दीजिए।

आपके पास कोई दवा नही है ? अमोनिया या स्मलिंग सॉल्ट या कुछ दूसरी सू घने की दवा !

सिर पर हाथ मारते हुए डाक्टर कहने लगे यह एक बडी बुरी प्रथा है। बार बार अमोनिया सु घाने स दिमाग को बहुत नुकसान पहुचता है। स्मेलिंग-सॉल्ट म अमोनिया का प्रमाण कुछ माइल्ड होता है परन्तु फिर भी बिना कारण क्यो सु घाया जाए ?

वैसे खुद ही होश मे आ जायगी ?

हाँ "। आधा घटे तक प्रतीक्षा करके देखो। मैं कभी भी किसी बीमार को हिस्टीरिया म अमानिया सू घने की राय नही देता हू। हिस्टीरिया क्या कर शुरू होता है। इसका कारण जान लेना बहुत आवश्यक है ? इसके दौरे क्या पडते है ? मस्तिष्क के थके हुए ज्ञान तंतु आराम करना चाहते हो और इसी समय यदि किसी कारण से वह उत्तेजित हो जाय तो फिर फिट आ जाते हैं। इस प्रकार की उत्तेजित अवस्था म तेज दवाइयाँ सु घाई जाय अथवा नही यह आप स्वय विचार करके देख लें। यही कारण है कि कई बार हिस्टीरिया के सामान्य होने पर भी यह भयकर रूप ले लेता है। हमारे यहाँ प्याज

पाच मिनट म हाथ म स्टेथेस्कोप घुमाते हुए डाक्टर हिमाशु देसाई हाजिर हुए। पेशेन्ट के पास पडी हुई बेंत की कुर्सी पर बैठते हुए व हँसते हुए बोले। ओह यह तो बडा अजीब तमाशा है '। अभी तो स्टीमर स्टार्ट ही हुआ है और डाक्टर के नाम की आवाजें आना शुरू हो गई ? क्या हो गया इसे। सी-सिकनेस ?

नही, साहब ! इसे सी-सिकनेस का रोग कभी नही हुआ। सामान्य तौर पर इस चक्कर भी नही यह तो फिट है फिट !

'हिस्टीरिया ! ओह माई गौ ' हिस्टीरिया।

इतना कहकर डाक्टर ने पेशेन्ट की पल्स हाथ मे ले ली।

एकक्षण''' उष्मा के अस्तव्यस्त शरीर को डाक्टर ने तीखी नजरो से देखा। डाक्टर ने सहारा देकर उष्मा को पलग पर आराम से सुला दिया। इसके बाद पल्स गिनने हुए नीची गर्दन करके घडी देखने लगे।

उष्मा के पावो की ओर मधुसूदन एक छोर पर बैठे थे बिस्तर म ढग से बटो को वे ठीक प्रकार से नहीं सुना सके थे मानो इसी बात की सफाई देते हुए अपने दोनो घटनो पर हाथ रखकर बोले डाक्टर मैं तो बडा परेशान हूँ, मेरे दोनो पावो मे दर्द है दद जाता ही नहीं है।

रयुटीजम ?

'हाँ ।'

कोई दिक्कत नही। मैं स्वय तुम्हारा ट्रीटमेन्ट शुरू करूगा · स्टीमर छोडने से पहले तुमको तैय्यार करना मेरी गारण्टी है · । बस, इससे अधिक क्या चाहिए ?'

मधुसूदन का गला रुध गया। रुधे स्वर म धीरे से कहने लगे आप तो बहुत भले हैं, साहब ! मैं आपका अहसान कैसे भूल सकूगा ?

हाथ की घडी से डाक्टर की नजर एक क्षण के लिये उठी उसने उडती नजर से उष्मा के फीके अचेत मुख को देखा तथा दूसरे ही क्षण उसने फिर से घडी देखना शुरू कर दिया। सम्भवतया उन्होंने मधुसूदन की बात ही नही सुनी। पल्स की गिनती पूरी करके उन्होने छाती पर स्टेथेस्कोप लगाया। छाती, पीठ, पेट, फसलियो का डाक्टर ने भली प्रकार से परीक्षण किया। इसके बाद शात-स्वस्थ आवाज मे बोले-इसके सिवाय कुछ नही है। सब आलराइट है। ब्लड प्रेशर भी ठीक है। यह हिस्टीरिया का रोग कब से हुआ है ?'

'कोई छ महीने हो चुके है।'

'विवाह हो गया है ?'

'हा—शादी के बाद ही हिस्टीरिया का दौरा पडना शुरू हो गया था। इसके पहले तो इसे सपने मे भी फिट नही आते थे।

'हूं''''! डॉक्टर को यह सुनकर कुछ आश्चर्य हुआ और वे हंस पड़े। इस प्रकार का रोग अधिकतर शादी के बाद ही प्रारम्भ होता है। क्या किसी अविवाहित लड़की को तुमने फिट के रोग से पीड़ित देखा है ?'

'ऐसा कैसे कहा जा सकता है ? हमारे एक सम्बन्धी की अविवाहित लड़की को भी''''''।

'वास्तव में यह रोग फिट्स् का रोग न होकर गेस्ट्रीकल डिजीज होती है, या फिर जन्म से ही कमज़ोर बुद्धि के कारण यह रोग हो जाता है''''! जिसको हम लोग, मिरगी कहते हैं।'

'हा''''हा''''! यही तो!' मधुसूदन ने हां में हा मिलाते हुए सिर पर हाथ मारा। इसके बाद कुछ चिंतित होकर पूछने लगे: उष्मा को हिस्टीरिया ही है या कुछ और''''साहब ?'

'बेशक''''हिस्टीरिया''''ही है।'

इतना कहकर डाक्टर ने उष्मा की आखों की पलकें खोली और बड़ी देर तक देखते रहे। इसके बाद पलकें वापस बद कर दी।

कुछ अधीर होकर मधुसूदन बोले: आप इसे कुछ सुंघा कर पहले होश मे तो लाइऐगा।

'नही''''''! इसे स्वतः ही होश मे आने दीजिए।

'आपके पास कोई दवा नही है ? अमोनिया या स्मेलिंग सॉल्ट या कुछ दूसरी सूंघने की दवा''''''!'

'सिर पर हाथ मारते हुए डाक्टर कहने लगे, यह एक बड़ी बुरी प्रथा है। बार बार अमोनिया सुंघाने से दिमाग को बहुत नुकसान पहुंचता है। स्मेलिंग-सॉल्ट मे अमोनिया का प्रमाण कुछ माइल्ड होता है, परन्तु फिर भी बिना कारण क्यो सुंघाया जाए ?

'वैसे''''खुद ही होश मे आ जायेगी ?

'हां''''। आधा घंटे तक प्रतीक्षा करके देखो। मैं कभी भी किसी बीमार को हिस्टीरिया मे अमोनिया सूंघने की राय नहीं देता हू। हिस्टीरिया क्यों कर शुरू होता है। इसका कारण जान लेना बहुत आवश्यक है ? इसके दौरे क्यों पड़ते है ? मस्तिष्क के थके हुए ज्ञान तंतु आराम करना चाहते हो और इसी समय यदि किसी कारण से वह उत्तेजित हो जाय तो फिर फिट आ जाते हैं। इस प्रकार की उत्तेजित अवस्था में तेज दवाइयां सुंघाई जायं अथवा नहीं यह आप स्वयं विचार करके देख लें। यही कारण है कि कई बार हिस्टीरिया के सामान्य होने पर भी यह भयंकर रूप ले लेता है। हमारे यहां प्याज सुंघाने की प्रथा बिल्कुल ठीक है, पर कितने ही मूर्ख जूता भी सुंघाते हैं''''

तेज बू के कारण वे रोगी को होश मे लाने मे तो सफल हो जाते है, लेकिन साथ ही रोगी को अनेक बीमारियाँ भी दे बैठते हैं।

'यह तो वास्तव मे मूर्खता ही है।' इसके बाद मधुसूदन ने अपनी बेहोश लाडली के शरीर को देखा। किस प्रकार शान्त चित्त होकर सो रही है? मानो थककर चकनाचूर होकर, बहुत चैन से सो रही हो। उनका दिल भर आया। वे कुछ कहना चाहते थे, तभी उनके मन की बात डाक्टर ताड गए हो। वैसे ही डाक्टर तनिक हसते हुए कहने लगे व्यर्थ की चिन्ता मत करियेगा। जब तक तुम्हारी लाडली बेटी होश मे नही आ जाती है, मैं यही बैठा रहूगा आधे घटे तक प्रतीक्षा कीजिये, इसके बाद दवा तो है ही।

मधुसूदन शात हो गए। गहरा श्वास लेकर कहा. डाक्टर आप व्यर्थ मे समय क्यो बर्बाद कर रहे है।

चिन्ता की कोई बात नही है। इस समय डिस्पेन्सरी का समय नही है। आज ही तो स्टीमर स्टार्ट हुआ है, इसलिए मुझे नही लगता कि किसी पैसेन्जर को इतनी जल्दी डाक्टर की आवश्यकता आन पडे।

मधुसूदन आभार के बोझ से गद्गद् हो उठे। डाक्टर ने रोगी के शरीर को भली प्रकार से देख लिया। रोगी तनिक भी हिलडुल नही रहा था"" । जो कुछ हिलने-डुलने की गति हो रही थी, वह स्टीमर के कारण ही थी । उष्मा की शय्या के पास ही जहाज की दीवार मे काच की एक छोटी-सी खिडकी थी। इस खिडकी से डाक्टर बाहर के विस्तृत सागर को देख रहे थे।

परन्तु मधुसूदन""। कभी डाक्टर को तो कभी अपनी पुत्री को' ''।

धैर्य न रख सकने के कारण उन्होंने एक बार फिर उष्मा के शरीर को हिलाया-डुलाया। उष्मा""अरी ओ उष्मा ''।

चौंकते हुए डाक्टर ने इस ओर देखा। वे कभी मधुसूदन को देखते तो कभी मरीज को देख रहे थे। फर्स्टक्लास के सुख-व्यवस्थाओ से परिपूर्ण इस कमरे मे चारो ओर डाक्टर ने एक उडती नजर से देखा। यकायक उनकी नजर एक जगह ठहरी गई। वे, बैग पर लिखा हुआ नाम बडी उत्सुकता से पढने लगे। क्या आप भी देसाई हैं।

मधुसूदन हँसने लगे हा जी।

उत्तर मे डाक्टर ने अपना कार्ड उन्हे दिया। डा. हिमाशु ए. देसाई, एम बी. बी एस।

आनद मग्न होकर मधुसूदन ने पूछा. आप कहाँ के रहने वाले हैं ? सूरत जिले के ? 'हा आप ?

'यही तो बात है। पुर्तगीज टेरीट्ररी मे क्या सूरत जिले के देसाई कोई

कम है? मधुर हास्य करते हुए बात को आगे बढाते हुए बोले बम्बई या सूरत मे प्रेक्टिस करने के बजाय स्टीमर की सर्विस आपने कैसे पसद की?

यह तो शौक की बात है, चाचाजी! घूमने फिरने का शौक और क्या? दुनियाँ देखनी थी। घर का पैसा खर्च करके घूमने से यह ज्यादा अच्छा है कि नौकरी करते हुए घूम लिया जाय।

और डाक्टर हिमाशु खिलखिला कर हसने लगे। हसते हुए उन्होने पूछा आप लोएण्डा से बैठे हैं या ·?

नही ···बेन्जुएला से····।

'बेन्जुएला मे क्या करते थे?'

'कॉन्ट्रेक्ट था।' इसके बाद मधुसूदन ने तुरन्त अपना इतिहास बताना शुरू कर दिया। यदि कोई सुनने वाला मिल जाय तो वह उत्साह मे आकर बिना समय खोये अपनी गाथा प्रारम्भ कर देते थे। इस बात मे किसी प्रकार की शका नही की जा सकती थी कि डाक्टर एक बहुत अच्छे श्रोता थे। एक ही समाज के दो व्यक्ति मिल जाय तो बात करने मे भला रस कैसे न आए? भोले-भाले मधुसूदन ने थोडीसी बात को बहुत लम्बा कर दिया था।

आज से दस साल पहले मैं दमन गया था। वैसे सूरत मे ही रहता, परन्तु दमन मे हमारे बाबू भाई थे। उनकी और मेरे मामाजी की बडी गहरी दोस्ती थी। पुर्तगीज ईस्ट अफ्रीका मे उन्होंने कई साल पहले कॉन्ट्रेक्ट का काम शुरू किया था ····पर वहाँ आदमियो की कमी थी। इसलिए मैं जैसे ही दमन गया, उन्होने मुझे पकड लिया। उन्हे कई स्थानो पर काम देखने पडते थे। अकेले आदमी के लिए बडी परेशानी थी, इस कारण वे आग्रह करके मुझे यहाँ ले आए। पहले मैं उनके साथ ईस्ट मे था। पर अभी दो साल पहले वे चल बसे। इसके बाद साझेदारो मे आपस मे झगडा हो गया और मैं अलग हो गया। यहाँ बेन्जुएला के पास मे वेस्टर्न लाइन पर रेलवे का काम हो रहा था। मैंने इसमे से सौ मील का टुकडा कॉन्ट्रेक्ट पर लिया। रेलवे के कॉन्ट्रेक्ट मे आमदनी बहुत अच्छी होती है। सोचा यह ठीक ही है। मुझे रेलवे के सिवाय दूसरे काम को नही छूना था। पिछले साल काम पूरा करके देश लौट आया। अब तक लडकी बडी हो गई थी और शादी भी करनी ही थी। अतएव देश मे आकर शादी कर दी। देश मे शादी करने के पश्चात मैं छ मास तक बम्बई रहा। लडकी अपने ससुराल सूरत मे रही। छ महीने बाद जब मैं बेन्जुएला वापस लौटने लगा तो उम्मा ने मेरे साथ चलने का आग्रह किया। शादी के बाद बेटी को चार छ माह तक मायके रखना ही होता है। अतएव, मैंने कहा चल। उम्मा के ससुराल वालो ने तो बहुत मना किया, किन्तु मैंने ही आग्रह किया कि उम्मा अब तक मुझसे अलग नहीं रही है। मुझमे विछुड-

कर कुछ घबरा जायेगी, कौन जाने""""। मुझे भी अकेले रहने मे परेशानी हो रही थी। इस प्रकार जैसे तैसे बहाना बनाकर चार-छ महीने के लिए अपने साथ ले गया" ""बराबर सोचता रहा कि देश वापस भेज दूगा। इस पर भी ससुराल वालो की ओर से एक के बाद दूसरा पत्र बुलाने के लिए आने लगे"" ""*कि गोवा की दुर्घटना हो गई*""""*ऐसे समय मे पुर्तगीज अफ्रीका* मे रहना सभव नही था। इसलिए मैंने अपना कारोबार समेट लिया। इसके अलावा करता भी क्या ?

मधुसूदन अपनी राम कहानी और आगे सुनाते, किन्तु इसी समय उप्मा के शरीर मे कुछ हलचल शुरू हुई। बात करना छोडकर मधुसूदन एकदम बेटी पर झुक पडे, अदम्य आनद से वे बोले उप्मा""""। ओ उप्मा""""।

पर उप्मा फिर से शात होकर सो गई।

डाक्टर ने कहा सोने दीजिये। पाच-दस मिनट मे ही होश मे आ जायेगी।

यकायक खडे होकर आगे दौडने के कारण मधुसूदन के घुटनो मे दर्द होने लगा। वे धीमे स्वर मे कराहे और दोनो घुटने दबाने लगे।

डाक्टर ने कहा देखू """बात किस जगह आ गई है ?

मधुसूदन ने पतलून ऊचा करके घुटने दिखाये। घटनो पर मामूली-सी सूजन दिखाई पड रही थी। डाक्टर ने बार बार घुटनो को भली प्रकार से देखा और गहरे आत्म विश्वास से चुटकी बजाते हुए कहा, यह तो बिल्कुल नॉर्मल है। मात्र पन्द्रह दिन मे, मैं तुम्हारे इस रोग का उपचार करके तुम्हे उसी प्रकार रोग मुक्त कर दूगा, जैसे कोई ओझा भूत को भगा देता है।

मधुसूदन एकदम डाक्टर की ओर झुक पडे। हाथ पकडकर भाव विभोर होकर कहने लगे। डाक्टर साहब मेरे गठिया का उपचार के साथ ही साथ आपको मेरी लाडली बेटी के हिस्टीरिया के रोग का भी इलाज करना पडेगा। मेरे इस गठिया रोग की मुझे कोई चिंता नही, परन्तु मुझे उप्मा की बहुत ज्यादा चिन्ता है""? डाक्टर तुम्हे क्या बताऊ""। शादी करके जिस समय यह ससुराल गई थी तब तो यह ऐसी थी कि मानो गुलाब का कोई गुच्छा ही""इसी एक साल मे तो"" ""कुछ समझ मे नही आता कि क्या हो गया है। बिल्कुल स्वस्थ होते हुए भी न जाने क्यो इसे फिटस् आने लगे है।

डाक्टर की निगाह अब तक भी उप्मा पर लगी हुई थी। सहसा डाक्टर ने पूछा क्या इसकी माँ नही है ?

'वह तो कई वर्षों पहले चल बसी""। मधुसूदन ने गहरा सास लिया। यह छोकरी, इसकी मा के मरने के समय केवल पाच साल की थी। इसलिए तो विदेश मे साथ लाना पडा। मैंने बचपन से ही इसे क्षण भर के लिए भी नजर से दूर नही किया है। इसका पालन पोषण किया है। इसी कारण यह मेरे साथ मे रहने की आदी हो गई है।

'शादी के समय तुमसे बिछुड़ते हुए यह खूब रोई होगी ?'

साहब आप भी क्या बात करते हैं ?

और उस प्रसग की याद मात्र से इस समय मधुसूदन की आखें छलछला आई। धीमे स्वर में बोले- मैं ऐसा सोचता हू कि इसी डर के कारण इसे हिस्टीरिया का रोग शुरू हो गया है। कदाचित उष्मा इस विचार मात्र को सहन नही कर सकी कि अब उसे अपने पिताजी से बिछुड़ना पड़ेगा। मुझे क्या पता था, नही तो मैं शादी ही नही करता·· किन्तु अब जो हो गया सो हो गया, इसके सिवाय करता भी तो क्या करता ? तनिक आप ही बताए ?

कनपटी पर तर्जनी रखकर डाक्टर मानो किसी गहरे विचार मे खो गये हो। फिर यकायक पूछा ससुराल मे तो कोई दु ख नही है इसे ?

ससुराल मे ? वहां इसको सभी प्रकार की सुख-सुविधाए उपलब्ध हैं ? वहा इसको पानी मागने पर दूध दिया जाता है।

ऐसा तो आप कहते हैं, किन्तु क्या आपने उष्मा से भी कभी इस सबध मे पूछा है ?

पूछने जैसी कोई बात ही नहीं है। मैं जानता हूं। इस पर भी मैंने अपनी ओर से इस बारे में पूछने म कोई कसर नही रखी थी।

पर उष्मा क्या कहती है ?

यही तो सबसे बडी मुश्किल है। यदि कुछ कह दे तो फिर देसाई की पुत्री ही कैसी ? बात को चाहे घुमाफिरा कर पूछो भी तो केवल एक ही जवाब····।

'कुछ नही ?'

डाक्टर के इस प्रश्न का उत्तर देने मे मधुसूदन ने फिर से एक नया अध्याय कहना शुरू कर दिया। उष्मा के हिस्टीरिया का इतिहास ···।

डाक्टर बहुत फुर्सत मे थे तथा मधुसूदन को ऐसा लगता था कि डाक्टर सारा इतिहास बड़े प्रेम से सुन रहे हैं। उनकी ओर से कोई बाधा नही आई, इस कारण से बात स्वभाविक रूप से लम्बी चली ···।

पर इसका सक्षेप मात्र इतना हा है—

वेन्जुएला मे उष्मा को इस प्रकार के पहले भी फिटस् के दौरे पड़ते रहे हैं। सबसे पहली बार जब दौरा पडा तब मधुसूदन बहुत घबरा गये थे। जल्दी से डाक्टर को बुलाया गया ····· मात्र अमोनिया सु घाते ही उष्मा होश मे आ गई थी ...और मधुसूदन ने सन्तोष की सास ली। इसके बाद बहुत ही चिंतित होकर अति कौतुहल से डाक्टर को पूछने लगे हिस्टीरिया का कारण ? इसके पहले तो इसको इस प्रकार का हिस्टीरिया का दौरा नही पडा था।'

डाक्टर ने बताया। कई कारण हो सकते हैं। जब तक भली प्रकार से परीक्षण न कर लिया जाय तब तक निदान कैसे किया जा सकता है ?

इसके बाद दवा लिख दी गई। दवा के साथ स्मेलिंग सॉल्ट भी लिख दिया और बोले यदि अब फिर दौरा पड जाय तो स्मेलिंग सॉल्ट सुंघा देना। इससे तुरन्त होश मे आ जायेगी।

कोई बीस दिन बाद फिर एक बार उष्मा को फिट का दौरा पडा। इस समय मधुसूदन घबराये तो थे, किन्तु चिन्तित नही हुये। डाक्टर की आज्ञा शिरोधार्य कर ली। होश मे लाने के लिए स्मेलिंग सॉल्ट सुघाया। उष्मा होश मे आगई थी।

दूसरे दिन उन्होने उष्मा से पूछा बेटी, यह रोग तुम्हे कैसे लग गया ? दिमाग पर व्यर्थ की परेशानी ढोने से कोई मतलब नही है। किसी बात से परेशान होने की आवश्यकता नही है। मैं जब तक जीवित हूँ, तब तक तुझे किसी बात की चिन्ता करने की जरूरत नही है।

सच्ची बात······ चिन्ता तो किसी बात की नही·········किन्तु एक सप्ताह बाद फिर हिस्टीरिया का दौरा पड गया। डॉक्टर स्मेलिंग सॉल्ट का डोज देकर चले गये थे। किन्तु मधुसूदन के सिर पर चिता का पहाड छोड गये। अरे मेरी फूलसी कोमल बच्ची को इस उम्र मे यह फिटस् का रोग कैसे लग गया।

मधुसूदन ने बार बार पूछा क्या तकलीफ है बेटी ?

उष्मा पिताजी की बात सुनकर कोई उत्तर नही देती थी।

'पिता से भला क्या छिपाना ? तू तो जानती है कि तेरी माँ मर चुकी है। अब तो तेरी माँ और बाप मैं ही हू।

कभी कभी तो मधुसूदन इतनी आद्रता से पूछते थे कि सुनने वाला रोने लग जाता था। पर आश्चर्य की बात कि उष्मा की आखो मे न तो आसू ही आते और न ही वह जबान पर एक शब्द ही लाती ·······।

व्याकुल पिता ने मन ही मन सोचा कि पिता से कभी अलग नही रही है। इस कारण से ही व्याकुल है। इसके सिवाय और क्या हो सकता है ? ससुराल मे चाहे कितना ही सुख क्यो न हो पर पिता का प्यार कहाँ से पाये ?

बार बार सभी बातो पर विचार करके मधुसूदन ने देखा। सास कितनी अच्छी है ! मानो भगवान का ही अवतार हो··· इसके अतिरिक्त घर मे ससुर, देवर, जेठ, ननद आदि कोई नही····· ··घर भी पूरा भरा है। किसी प्रकार का कोई झंझट नही। पति को देखो तो ······। कितना पढा लिखा········ उतना ही प्यारा ······। लाखो मे एक ही है।

परन्तु इस पर भी····· ?

इस बात की जानकारी तो जब तक उष्मा का ओठ न खुले तब तक सम्भव नही है। बात कहने जैसी न होगी········ तब। नही तो बाप से कुछ छिपाए ऐसी छोकरी नही।

कुछ दिनो बाद पत्र आया कि उष्मा को भिजवा दें। नीले आसमानी रग का इन्टरनेशनल लिफाफा...। डाकिए ने लिफाफा मधुसूदन को देने के बजाय उष्मा को दे दिया। उष्मा ने लिफाफा खोला, पूरा पढ़े, इससे पहले ही उसको फिट का दौरा आ गया।

मधुसूदन यह देखकर काप उठे ' इस समय वे उष्मा पर कुछ कठोर हुये और कठोर शब्दो मे कहा यदि तू ऐसे ही मुह बद करके बैठी रहगी तो मुझे किस बात की खबर हो सकती है ? मैं ऐसी दशा मे कर भी क्या सकता हू ?

रोते हुये स्वर मे उष्मा ने जवाब दिया अब आपको क्या करना रह गया है पिताजी ? न जाने क्यो मेरा दिमाग कमजोर हो गया है। कुछ दवा लेने से ठीक हो जायेगा, वैसे चिन्ता करने की कोई आवश्यकता नही।'

'चिन्ता ? इससे बढकर बेटी और क्या चिन्ता रहेगी ?

अपनी एक मात्र पुत्री का मुख देखकर मधुसूदन वात्सल्य भाव से रोने लगे।

पिता की गोदी मे सिर डालकर उष्मा भी पहली बार रोने लगी। उष्मा कुछ इस प्रकार से रोई कि उसका हृदय विचलित हो उठा। इससे मधुसूदन के मन को कुछ शाति मिली। उन्होंने विचार किया कि इस प्रकार अश्रु की अनर्गल धारा में कुछ नई बात निकलेगी, जिसको उष्मा ने अब तक मुझसे छिपाया है, वह बात अवश्य कहेगी।

पर उष्मा, जिसका नाम ! भग्न बाध के अश्रु जल मे चाहे कितने ही मिट्टी के ढेले बह जाए, किन्तु एक भी शब्द यदि इस प्रवाह मे निकल जाय तो फिर वह देसाई कुटुम्ब की कैसी दुहिता ?

किन्तु देसाई कुटुम्ब की दुहिता वाला अतीव गर्व का यह प्रच्छन्न प्रणीत पोषण अब व्यथित हो रहे मधुसूदन को वास्तव में अभद्र प्रतीत होने लगा। आखिर यह कैसी छोकरी है ? न कोई बात चीत और न कुछ, और बस...।

दुःखी होकर उन्होने पूछा उष्मा मैं सूरत कागज लिख दू कि उष्मा को......।

वाक्य अधूरा ही रह गया। उनका नि स्वर प्रश्न उष्मा के फिट के साथ टकराकर पुन उनके अन्तर्मन मे विलीन हो गया। मधुसूदन का श्वास घुटने लगा।

एक सप्ताह बाद उष्मा को बहुत प्रसन्न देखकर उन्होने उससे पूछा मैं, तेरे सुसराल वालो को पत्र लिख देता हू कि कुछ दिनो मे किसी के साथ भेजने का इन्तजाम कर रहा हू।

किन्तु किस के साथ तुझे रवाना करूं और इस प्रकार रास्ते मे तुझे बार-बार फिटस् आ जाय तो तेरे साथ-साथ, ले जाने वाले की क्या हालत होगी, तनिक विचार करके देख ले ?

'ऐसे रास्ते में फिट नहीं आने वाले हैं और यदि आ भी जाय तो भी क्या ? दवा सुधाने ही होश आ जायेगा। सुसराल जाने की बात कब तक टाली जा सकेगी उष्मा ?

तुझे सुसराल में जैसा चैन चाहिए, वैसा नहीं मिलता है क्या ?

किसने कहा ? ऐसी कौनसी लड़की होगी, जिसे सुसराल अच्छा न लगता हो पिताजी ! मैं आपसे कभी अलग नहीं रही, इससे ऐसा लगता है। कुछ दिनों में फिर आदत पड़ जायेगी।

पर अलग होने के दुःख से किसी को फिट तो नहीं आते हैं। तू मुझे अपने दिल की बात सच-सच क्यों नहीं बता देती है ?

क्या बताऊं पिताजी ?

'तुझे ससुराल में किसी बात का दुःख या कष्ट है ? मुझे स्पष्ट बता दे ताकि मैं उसका निवारण करने की कोशिश करू।'

दुःख, कष्ट ? पिताजी आप कैसी बातें कर रहे हैं। इतने अच्छे ससुराल में दुःख, कष्ट "? मुझे ससुराल की तरफ से तनिक भी दुःख नहीं है।

फिर इस प्रकार बेचैन रहने का क्या कारण है ?

पिताजी बात दरअसल यह है कि आपसे जुदा होने का ख्याल आते ही मुझे रोना आ जाता है। परन्तु जब मैं गहराई से सोचती हू तो ख्याल आता है कि चाहे कुछ भी हो जाय, लड़की का इसके बिना छुटकारा सम्भव नहीं है। अब यदि मैं फिर कभी रोऊं तो आप कहना ...बस ?

सचमुच में उष्मा उस दिन के बाद न तो कभी रोई और न उसे हिस्टीरिया का दौरा ही पड़ा।

मधुसूदन पहले तो प्रसन्न हुए, परन्तु ज्यों-ज्यों लाडली की तबियत का गहराई से अध्ययन करने लगे, वैसे ही वैसे "।

रात दिन खिल-खिलाकर हसती हुई न अघाने वाली उष्मा को अब सहज में अकारण ही हसते हुए भी न जाने कौन-सी तकलीफ हो गई थी।

न जाने कितनी बार लाडली को मनाया-फुसलाया-बहकाया" खोज करके एक ही बात को स्पष्ट करवाया नहीं, मुझे किसी बात का दुःख नहीं ? इतने अच्छे ससुराल में मुझे भला किस बात का अभाव हो सकता है ?

सास क्या कोई दुःख देती है ?

सास तो इतनी अच्छी और भली हैं कि दुःख देने की इच्छा करने पर भी दुःख नहीं दे सकती है। आप तो जानते है कि मेरी सास बडी भली है। मुझे हथेली में फूल के समान बड़े दुलार से रखती है। मुझे जब कभी फिट आ जाते हैं, तब वह आप जैसे ही पागल बन जाती है"'।

""तब क्या तुझे वहा भी फिट आते थे ?

उष्मा ने एकदम बात बदलकर, दातो के बीच मे ओठो को दबाया। बात को बदलते हुए वह बोली एक दो बार ही हिस्टीरिया का दौरा पडा था। परन्तु उसके बाद कभी नही आये।

परन्तु एक दो बार भी क्यो आये ? क्या तेरे पति ने कभी कुछ·····!

क्या ?

मारपीट की हो ?

नही पिताजी, आपकी कल्पना भी न जाने कहा की वहा पहुच जाती है। क्या कोई पढा-लिखा व्यक्ति ऐसा कर सकता है ? वे तो मुझे कुछ भी नही कहते हैं।

तब फिर क्या बात है····?

पर इस, तब फिर क्या····का कोई जवाब न तो उष्मा के पास ही था और न उसके अतर मन के पास ···। मधुसूदन को स्पष्टीकरण कहा से मिलता ? बात का सदैव यही स्पष्टीकरण दिया जाता कि बेटी, बाप से विदा होने का अपार दुख सहन करने मे असमर्थ है····इसके अतिरिक्त ससुराल जाने और पिया से मिलने की तो इतनी ही प्रबल उत्कठा है, जैसे की सामान्यतौर पर लडकियो को होती है।

मधुसूदन ने जानकारी कर ली थी कि उष्मा को ससुराल जाने की बात करने मात्र से ही हिस्टीरिया का गिद्ध पक्षी उसके सिर पर घूमने लगता है। इतनी बडी हो जाने पर भी कभी भूल से उष्मा के सलोने शरीर पर जिसकी छाया नही पडी, उसी हिस्टीरिया की प्रबल छाया मे उसके समस्त शरीर की चेतना नष्ट हो जाती है·······।

इधर पिता का हृदय बडा व्यथित था तथा दूसरी तरफ सूरत से लगातार एक के बाद एक पत्र आने लगे, जिससे कि पिता का हृदय भग्न हो गया।

चाहे ससुराल मे उष्मा को किसी प्रकार का कष्ट नही। किन्तु इस प्रकार बीमार तथा अस्वस्थ्य लाडली को आखो से दूर भी कैसे किया जाय ? जबकि उष्मा, पिता की बहुत ही लाडली बेटी थी··।

व्यथित पिता के मन मे एक ही बात जमी हुई थी····मेरी लाडली···· मेरी उष्मा·······!

हार थककर, परेशान होकर, बिना उष्मा को बताए मधुसूदन ने निम्न प्रकार का एक पत्र उसके ससुराल मे लिख भेजा।

·······उष्मा को किसी तरह से भेजना अभी मेरे लिए सम्भव नही है। पुर्तगाल ईस्ट आफ्रिका से भारत तक का कोई साथ जल्दी से मिल जाय, यह कम सम्भव है। घर का साथ न मिल जाने तक युवा लडकी को भेजना कैसे सम्भव है ? ब्रिटिश अफ्रीका की बात दूसरी थी, मोम्बासा, दारेसलाम या

नाईरोबिया से हर स्टीमर मे भारत के लिए अच्छा साथ मिल जाता है। किन्तु वेन्जुएला तो अन्तिम कोने पर है। अत अब तो उष्मा को मैं जब भी भारत आऊगा अपने साथ ही लेकर आऊगा"" ""

उष्मा हिस्टीरिया के रोग से पीडित है। इससे मुझे बहुत चिन्ता हो गई है। वह बहुत कमजोर हो गई है। कारण कुछ समझ मे नही आता। डाक्टर का ट्रीटमेन्ट चल रहा है तथा डाक्टर की भी राय है कि रोग से छुटकारा पाने तक ही जाये तो अच्छा रहेगा। जबकि आपके पत्र आने के बाद उष्मा हिन्दुस्तान आने की बडी जल्दी कर रही है""किन्तु जब तक लडकी शारीरिक व मानसिक दृष्टिकोण से पूर्ण स्वस्थ नही हो जाती, तब तक यह पिता हृदय अपनी बेटी को आखो से कैसे दूर कर सकता है ? अत प्रार्थना है कि आप अब कृपया बुलवाने की जल्दी न करें"" " इत्यादि।

स्वभाव के विरुद्ध कागज तो लिख दिया किन्तु बाद मे मधुसूदन को बहुत पश्चाताप रहा " । हे परमात्मा कही दामाद रुष्ट न हो जाय। तो"" ""तब क्या होगा"" "? वैसे तो दामाद इतनी-सी बात पर रुष्ट हो जाए, इतने नाबालिग नही, फिर भी दामाद जो ठहरे ! इसी उधेडबुन व परेशानी मे उन्होंने दामाद को बहुत ही मिठास भरा दूसरा पत्र तुरन्त लिख दिया।

कुछ ही दिनो मे दामाद का पत्र आया ""बहुत ही सक्षेप मे और सुन्दर।

"" 'जब भी ठीक समझें आप भेज सकते है, आपके साथ ही उष्मा को लाना, हमे कोई जल्दी नही है। ट्रीटमेंट बराबर करवाते रहना। यहाँ भी उसे एक दो बार फिटस् आ गए थे। मैंने डाक्टर को बताया था। उसने कहा कोई चिन्ता जैसी बात नही है। इन दिनो हिस्टीरिया स्त्रियो का एक सामान्य रोग है। अतएव आप व्यर्थ मे चिंतित न हो"""" ।

अतीव सक्षेप मे अपने दामाद का ऐसा उत्तर पाकर मधुसूदन ने एक सतोष की सास ली। दामाद का अब वे पहिले से अधिक सम्मान करने लगे। हर्ष के आवश मे उन्होने बेटी को पत्र पढवाया।

मधुसूदन ने जैसा सोचा, ठीक उसके विपरीत ही हुआ। उष्मा एकदम झुंझला उठी। आपने ऐसा क्यों लिखा। मुझे तो ससुराल जाना ही था। अब आपके इस प्रकार लिख देने से मैं कैसे जा सकती हू ?

इससे मधुसूदन एकदम विस्मित हो गए। साथ ही साथ उन्हे बहुत प्रसन्नता हुई कि अब बेटी कैसी फूल सी हल्की दिखाई दे रही है। हिस्टीरिया नामक गिद्ध मानो सदा के लिए रास्ता भूल गया है ! उष्मा कितनी स्वस्थ हो गई है। उष्मा कैसी सलोनी बनती जा रही है" "।

पिता प्रसन्न हैं........इस पर भी यदा कदा गहरा श्वास निकलता है, जान व अनजान में। उन्हे इस बात का पता लग चुका था कि उष्मा और उसके पति अनग के बीच पत्र व्यवहार नही होता है। शुरू-शुरू मे अनग के दो तीन पत्र आये थे....पर बाद मे बद हो गये। ऐसा प्रतीत होता है कि उष्मा ने पत्र का प्रत्युत्तर नही दिया।

कई दिन इसी प्रकार की व्यग्रता और परेशानी मे बीत गए....कुछ शाति, कुछ चिंता....। मधुसूदन सोचने लगे कि अब कोई चिन्ता की बात नही रही। जब बेटी ने आगे होकर ही कुछ नही कहा तो पूछने जैसी कोई बात नही रह गई। फिर भी एक बार बात ही बात मे उन्होने कहा . उष्मा मुझे सदा एक ही भय खाये जा रहा है कि यहा तो अब तू पूर्ण रूप से स्वस्थ हो गई है, किन्तु वहाँ जाने पर कदाचित....।

वहाँ जाने के बाद अब कुछ नही होगा पिताजी। वह एकदम हंसी। कुछ देर रूककर वह अकायक कहने लगी · मुझे किस बात की चिंता थी, जानते है पिताजी ?

किसकी ?

मेरे मन मे था कि मेरी माँ तो मुझे बचपन मे ही छोड़कर चली गई। और अब मैं आपसे से भी दूर........इस वृद्धावस्था मे आपकी कौन देखभाल करेगा। मेरे सिवाय अब आपका कौन रहा है? तनिक बताइए? दूसरी चिन्ता यह थी कि मेरी शादी के बाद आप गठिया रोग से पीड़ित रहने लगे हैं। आप ही बतायें कि चिंता होना स्वभाविक है या नही ? बस, यह बात मेरे दिमाग मे सदा घूमती रहती है।

अरे, मेरी बेटी.........।

यकायक मधुसूदन रोने लगे और उन्होने उष्मा को अपनी छाती से लगा लिया। न तो आखो से आसू ही रुके और न ही उष्मा मधुसूदन की बाहो से अलग हो सकी।

वृद्ध पिता की चिंता लड़की को न हो तो किसको होगी ? मेरे तो बेटा या बेटी जो भी है, तू ही तो है। तेरे सिवाय अब मेरा कौन रह गया है बेटी ?

......इसके बाद कुछ सोचकर उन्होंने दूसरी बात शुरू की। अरी उष्मा ! हम लोग यहाँ के ही नागरिक बन जाए। यहाँ के कानून के अनुसार दामाद स्वतः ही यहाँ के नागरिक बन जायगें। अतएव हम अनग को ही यही बुलाकर रख लें तो ? न तुझे मुझसे दूर रहना पडेगा........और न ....।

पर इस समय जो सोचा गया था ठीक उसके विपरीत ही हुआ....। उष्मा के मुंह पर हवाइयाँ उड़ती देखकर वे एकदम चौंक पड़े।

मधुसूदन एकदम खिलखिला कर हस पडे। उष्मा के मनोभावों को परखते हुये कहा आप डाक्टर हैं। मुझे एकाएक फिट आ गया था, इसलिए मैंने बेटी इनको जल्दी से बुला लिया था।

उष्मा कुछ नहीं बोली। पांव लम्बे करके, शरीर को ढीला छोड़ते हुए, एक बार फिर उबासी लेकर वह नीचे की ओर ही देखती रही।

डाक्टर ने मधुसूदन से कहा जरा इन्हे पानी पिला दीजिये।

हाँ·······। हाँ ·······। करते हुए मधुसूदन खड़े हो गए, किन्तु पाव के दर्द के कारण वे जल्दी से खडे नही हो सके। मधुसूदन के दर्द का ध्यान आते ही डाक्टर खुद खडे हो गए तथा बोले चाचाजी आप बैठे रह। मैं पानी पिला देता हूँ।

शर्म से अधमरी-सी हुई उष्मा कमजोर होते हुए भी एकदम छलाग मार कर पानी की सुराही की ओर दौड पडी और कहने लगी नही··· नही'। मैं तो स्वयम् ही पी लू गी।

उष्मा ' । डाक्टर के हाथ का पानी, पानी से दवा नही बनेगा·· पानी, पानी ही रहेगा।

उष्मा यह सुनकर अधिक व्यथित हो, गई' नही' । और डाक्टर के साथ ही पानी की सुराही के पास पहुच गई। परन्तु सुराही पर पहला हाथ डाक्टर का लगा, तथा दूसरा उष्मा का।

ध्यान आते ही मानो उसको आग छु गई हो, वैसे ही उष्मा ने हाथ खैंच लिया। फिट के कारण उसकी हथेलिया पसीने से लथपथ थी। डाक्टर के हाथ पर उष्मा की हथेली का पसीना लग गया।

डाक्टर ने भी हाथ खैंच लिया। अपनी जगह बैठते हुए डाक्टर ने कहा चलिए कोई बात नही! आप अपने हाथ से ही पी लीजिये, बस···! पर एक गिलास मुझे भी दीजियेगा।

शर्म से डूबी हुई उष्मा मु ह ऊचा करने का साहस नही कर सकी। पानी के दो गिलास रखकर वह चली गई।

खाली गिलास टिपाय पर रखकर डाक्टर बोले तो अब मुझे चलने की इजाजत दीजिए।

कुछ याद आते हुए, मधुसूदन हडबडाकर कहने लगे अरी उष्मा! तनिक घटी तो बजा। डाक्टर साहब के लिए मैं चाय मगवाना ही भूल गया।

हाथ हिलाते हुए डाक्टर ने आनाकानी शुरू की, किन्तु तब तक उष्मा ने घंटी बजा दी। मधुसूदन ने पूछा क्यो, डाक्टर साहब क्या आपको जल्दी है?

नहीं जी ! मुझे किस बात की जल्दी है ? स्टीमर में जब तक कोई बीमार न हो, तब तक तो घूमने फिरने के सिवाय मेरे पास कोई काम ही नहीं है।

और वे खिलखिला कर हँस पड़े।

घंटी की आवाज सुनकर बॉय आया। मधुसूदन के बदले उष्मा ने ही चाय का आर्डर दे दिया। चाय का आर्डर देकर उष्मा वॉश-बेसिन की ओर चल दी।

उष्मा मुंह धोकर आई और डाक्टर को देखने लगी। उष्मा की बड़ी-बड़ी आंखें अब तक भी लाल सुर्ख थीं। बेहोशी का नशा तथा बेहोशी के बाद की सुस्ती अभी भी उसके मुंह पर दृष्टिगत हो रही थी। अपनी इन लाल सुर्ख आँखों से उष्मा ने डाक्टर को देखा। इन आँखों को देखकर ऐसा प्रतीत होता था, मानो गुलमोहर के पत्तों सहित दो फूलों में से पराग निकाल लिए गये हों।

मधुसूदन कह रहे थे उष्मा ! डाक्टर साहब एक घंटे से परेशान हो रहे हैं।

एक घंटे से" " ?

विस्मित उष्मा पिताजी के पास बैठ गई। पिता के कन्धे पर हाथ रखकर कुछ क्षुब्ध होकर वह बोली एक घंटे तक फिट दूर नहीं हो सकी।

डाक्टर साहब कहते हैं कि दवा सुंघाने से दिमाग को नुकसान पहुंचता है। उष्मा चुप ही रही।

कुछ विकल भाव से मधुसूदन ने फिर से कहा—बेटी ! इतने दिनों के बाद तुम्हें फिट कैसे आ रहे हैं ?

क्षुब्ध हुये स्वर में उष्मा ने कहा—मुझे क्या मालूम पिताजी।

डाक्टर ने उष्मा से पूछा-क्या तुम्हारे दिमाग पर किसी बात का बोझ तो नहीं है ? मैं देख रहा हूं कि तुम अपने पिताजी से भी दिल खोलकर बात नहीं करती हो और न ही कुछ बताती हो, आखिर तुम्हें फिट्स आने का क्या कारण हो सकता है ?

डाक्टर के सीधे प्रश्न से वह चौंककर कहने लगी—क्या बताऊं, कोई बात हो तो कहूं। अच्छा डाक्टर साहब क्या यह सच है कि दिमाग पर बोझ पड़ने से फिट आते हैं ?

हां,

उष्मा ने एकदम उत्तेजित होकर कहा—पिताजी मामूली-सी बीमारी है और आप न जाने क्यों इसे बड़ा रूप दे रहे हैं।

बेटी के सिर पर प्यार से हाथ फेरते हुये मधुसूदन ने कोमल स्वर में कहा

मधुसूदन एकदम खिलखिला कर हस पडे। उष्मा के मनोभावों को परखते हुये कहा आप डाक्टर हैं। तुने एकाएक फिट आ गया था, इसलिए मैंने बेटी इनको जल्दी से बुला लिया था।

उष्मा कुछ नहीं बोली। पाँव लम्बे करके, शरीर को ढीला छोडते हुए, एक बार फिर उबासी लेकर वह नीचे की ओर ही देखती रही।

डाक्टर ने मधुसूदन से कहा जरा इन्हें पानी पिला दीजिये।

हाँ.......। हाँ ....। करते हुए मधुसूदन खडे हो गए, किन्तु पाव के दर्द के कारण वे जल्दी से खडे नही हो सके। मधुसूदन के दर्द का ध्यान आते ही डाक्टर खुद खडे हो गए तथा बोले चाचाजी आप बैठे रहे। मैं पानी पिला देता हूँ।

शर्म से अधमरी-सी हुई उष्मा कमजोर होने हुए भी एकदम छलाग मार कर पानी की सुराही की ओर दौड पडी और कहने लगी नही... नही...। मैं तो स्वयम् ही पी लु गी।

उष्मा.......। डाक्टर के हाथ का पानी, पानी से दवा नही बनेगा... पानी, पानी ही रहेगा।

उष्मा यह सुनकर अधिक व्यथित हो, गई.....नही...। और डाक्टर के साथ ही पानी की सुराही के पास पहुच गई। परन्तु सुराही पर पहला हाथ डाक्टर का लगा, तथा दूसरा उष्मा का।

ध्यान आते ही मानो उसको आग छू गई हो, वैसे ही उष्मा ने हाथ खैंच लिया। फिट के कारण उसकी हथेलिया पसीने से लथपथ थी। डाक्टर के हाथ पर उष्मा की हथेली का पसीना लग गया।

डाक्टर ने भी हाथ खैंच लिया। अपनी जगह बैठते हुए डाक्टर ने कहा चलिए कोई बात नही! आप अपने हाथ से ही पी लीजिये, बस....! पर एक गिलास मुझे भी दीजियेगा।

शर्म से डूबी हुई उष्मा मु ह ऊचा करने का साहस नही कर सकी। पानी के दो गिलास रखकर वह चली गई।

खाली गिलास टिपाय पर रखकर डाक्टर बोले तो अब मुझे चलने की इजाजत दीजिए।

कुछ याद आते हुए, मधुसूदन हडबडाकर कहने लगे अरी उष्मा! तनिक घटी तो बजा। डाक्टर साहब के लिए मैं चाय मगवाना ही भूल गया।

हाथ हिलाते हुए डाक्टर ने आनाकानी शुरू की, किन्तु तब तक उष्मा ने घटी बजा दी। मधुसूदन ने पूछा क्यों, डाक्टर साहब क्या आपको जल्दी है?

नहीं जी ! मुझे किस बात की जल्दी है ? स्टीमर में जब तक कोई बीमार न हो, तब तक तो घूमने फिरने के सिवाय मेरे पास कोई काम ही नहीं है।

और वे खिलखिला कर हँस पड़े।

घंटी की आवाज सुनकर बॉय आया। मधुसूदन के बदले उष्मा ने ही चाय का आर्डर दे दिया। चाय का आर्डर देकर उष्मा वॉश-बेसिन की ओर चल दी।

उष्मा मुँह धोकर आई और डाक्टर को देखने लगी। उष्मा की बड़ी-बड़ी आँखें अब तक भी लाल सुर्ख थीं। बेहोशी का नशा तथा बेहोशी के बाद की सुस्ती अभी भी उसके मुँह पर दृष्टिगत हो रही थी। अपनी इन लाल सुर्ख आँखों से उष्मा ने डाक्टर को देखा। इन आँखों को देखकर ऐसा प्रतीत होता था, मानो गुलमोहर के पत्तों सहित दो फूलों में से पराग निकाल लिए गये हों।

मधुसूदन कह रहे थे उष्मा ! डाक्टर साहब एक घंटे से परेशान हो रहे हैं।

एक घंटे से"......?

विस्मित उष्मा पिताजी के पास बैठ गई। पिता ने कन्धे पर हाथ रखकर कुछ क्षुब्ध होकर वह बोली . एक घंटे तक फिट दूर नहीं हो सकी।

डाक्टर साहब कहते हैं कि दवा सुँघाने से दिमाग को नुकसान पहुँचता है। उष्मा चुप ही रही।

कुछ विकल भाव से मधुसूदन ने फिर से कहा—बेटी ! इतने दिनों के बाद तुम फिट कैसे आ रहे हैं ?

बुझे हुये स्वर में उष्मा ने कहा—मुझे क्या मालूम पिताजी।

डाक्टर ने उष्मा से पूछा-क्या तुम्हारे दिमाग पर किसी बात का बोझ तो नहीं है ? मैं देख रहा हूँ कि तुम अपने पिताजी से भी दिल खोलकर बात नहीं करती हो और न ही कुछ बताती हो, आखिर तुम्हें फिट्स् आने का क्या कारण हो सकता है ?

डाक्टर के सीधे प्रश्न से वह चौंककर कहने लगी—क्या बताऊ, कोई बात हो तो कहूँ। अच्छा डाक्टर साहब क्या यह सच है कि दिमाग पर बोझ पड़ने से फिट आते हैं ?

हाँ,

उष्मा ने एकदम उत्तेजित होकर कहा—पिताजी मामूली-सी बीमारी है और आप न जाने क्यों इसे बड़ा रूप दे रहे हैं।

बेटी के सिर पर प्यार से हाथ फेरते हुये मधुसूदन ने कोमल स्वर में कहा

परेशान होने की बात ही है, लेकिन बेटी डाक्टर साहब हम लोगों के सम्बन्धी है और सजातीय होने के कारण इन्हें तकलीफ देकर बुलाने की आवश्यकता इसलिए पडी है कि बार-बार तुझे जो फिट्स् आते है, वे इसका इलाज करके तुझे इस रोग स छुटकारा दिला सकें ।

बेटी ! डाक्टर साहब कह रहे हैं कि तेरी हिस्टीरीया की बीमारी को वे जडमूल से नष्ट करना चाहते हैं ।

पिताजी हिस्टीरीया का रोग तो कभी का ठीक हो गया है । मुझे इस समय हिस्टीरीया का दौर नही पडा था....केवल सामान्य रूप से चक्कर आये थे ।

उष्मा ! जब डाक्टर साहब तेरा ईलाज करना चाहते हैं, तब इन्हें रोग के बारे मे सब बातें बताना आवश्यक है ।

डाक्टर ने कहा....मैं जानता हूँ, यह कोई हिस्टीरिया नही.. तो ।

उष्मा यह बात सुनकर चौंक पडी । डाक्टर को टकटकी लगाकर देखती रही । तब डाक्टर ने बताया कि पिताजी से अलग रहने के कारण वेदना का एक हल्का-सा आविष्कार है, क्यो उष्मा यही बात है ना !

मधुसूदन ने डाक्टर को सम्बोधित करते हुये दबे स्वर मे कहा' यह तो मूख लडकी है । आप इसकी ओर ध्यान न दें । आप आज से ही इसका ट्रीटमेन्ट शुरू कर दीजियगा और जैसे भी बन पडे इसका रोग दूर करने की कोशिश कीजियेगा । डॉक्टर साहब, मैं आपकी पूरी फीस अदा करूगा ।

फीस का तो कोई सवाल ही नही उठता हैं, क्योंकि स्टीमर म मैं रोगी से फीस नही ले सकता हू । आप जानते ही है कि मेरी नियुक्ति इसलिए ही की गई है कि मैं यात्रियों की तकलीफ दूर कर सकू । अगर मुझे समय पर रोगी का पूरा-पूरा सहयोग मिल पायेगा तभी उसकी तीमारदारी ठीक से कर सकूगा ।

रोगी तो मेरे हाथ म है । आप जैसा कहग वैसा ही किया जायेगा । स्टीमर एक माह मे बम्बई पहुँचेगा । यह कोई कम समय नही है ? यदि एक महीने म भी इलाज पूरा न हो सके तब आप अपना इलाज बम्बई मे भी जारी रख सकते हैं ।

मैं बम्बई कैसे रुक सकता हू ? मैं तो वेस्ट अफ्रिका स्टीम नेवीगेशन कम्पनी का वेतन भोगी नौकर हू । जैसे ही एक यात्रा समाप्त होती है कि दूसरी नई यात्रा शुरू हो जाती है ।

अब तक चुपचाप बैठी उष्मा ने अनुभव किया कि उसकी चुप्पी के कारण डाक्टर के मन म उसके प्रति एक अशिष्टता का भाव प्रेरित हो रहा है । मात्र शिष्टता के लिए कृत्रिम कौतूहल दिखलाते हुए वह पूछने लगी क्या आप स्थाई रूप से स्टीमर पर ही रहते है ?

हां.....। इस स्टीमर में लगभग पन्द्रह सौ पैसेन्जर की कैपेसिटी है। इन सब में न जाने कौन कब बीमार पड़ जाय, किसको मालूम ? बिना डाक्टर के तो इतना बड़ा स्टीमर स्टार्ट ही नहीं हो सकता है.....।

बात को बीच में काटते हुए मधुसूदन ने कहा कुछ नहीं.....जब तक हम साथ हैं, तब तक ट्राई करते रहें।

बेशक.....! मैं अपने प्रयत्नों में कोई कमी नहीं आने दूंगा। खड़े होते हुए डाक्टर ने कहा। अभी थोड़ी देर में दवा भिजवा देता हूं।

जाते जाते कुछ याद आने से डाक्टर वापस आये। हां.....वेन्जुएला में किस डाक्टर का ट्रीटमेंट ले रहे थे ?

मधुसूदन के बजाय उष्मा ने जवाब दिया : डाक्टर पिम्राफो बेनिडीक का........।

ओह ! फिरंगी डाक्टर हमारी सामाजिक पृष्ठभूमि तथा मानसिक स्थिति को समझ सकने में असमर्थ रहता है। ऐसी स्थिति में वह हम लोगों के मानसिक रोगों का इलाज कैसे कर सकता है।

उष्मा के अन्तर की व्यथा अब वास्तव में शब्दों में फूट पड़ी, परन्तु मेरे लिए मेन्टल ट्रीटमेन्ट की कोई आवश्यकता नहीं है, डाक्टर साहब ! मैं कोई पागल तो हूं नहीं......।

हिस्टीरिया एक प्रकार का अस्थाई पागलपन ही है। तुम्हारे स्वीकार करने या ना करने से मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता है।

डाक्टर हिमांशु की आवाज में ठंडक थी। उष्मा की समस्त चेतना इस दर्दनाक ठंड के कारण कांपती हुई सिकुड़ गई। यदि उष्मा अपनी पूरी ताकत न लगाती तो यह सम्भव था कि उसे फिर से फिट आ जाते........आत्मा को कुचलकर उसने आत्म संयम कर लिया। बापूजी को यदि इससे ही संतोष मिलता है, तो आप दवा भिजवा देना।

उष्मा ने देखा कि डाक्टर हिमांशु उसकी पूरी बात सुनने को वहां नहीं रुके।

मधुसूदन ने कहा बेटी, तू तो बिना हिस्टीरिया के ही पागल है।

इतना कहकर बेटी का हाथ खींचकर उसके मुंह को छाती से लगाकर गद्गद् हो माथा चूमने लगे। ००

परेशान होने की बात ही है, लेकिन बेटी डाक्टर साहब हम लोगों के सम्बन्धी हैं और सजातीय होने के कारण इन्हें तकलीफ देकर बुलाने की आवश्यकता इसलिए पड़ी है कि बार-बार तुझे जो फिटस् आते हैं, वे इसका इलाज करके तुझे इस रोग से छुटकारा दिला सकें।

बेटी ! डाक्टर साहब कह रहे है कि तेरी हिस्टीरीया की बीमारी को वे जड़मूल से नष्ट करना चाहते हैं।

पिताजी हिस्टीरीया का रोग तो कभी का ठीक हो गया है। मुझे इस समय हिस्टीरीया का दौर नही पडा था····केवल सामान्य रूप से चक्कर आये थे।

उष्मा ! जब डाक्टर साहब तेरा ईलाज करना चाहते है, तब इन्हें रोग के बारे में सब बातें बताना आवश्यक है।

डाक्टर ने कहा····मैं जानता हूँ, यह कोई हिस्टीरिया नहीं··· तो।

उष्मा यह बात सुनकर चौंक पड़ी। डाक्टर को टक्टकी लगाकर देखती रही। तब डाक्टर ने बताया कि पिताजी से अलग रहने के कारण, बेदना का एक हलका-सा आविष्कार है, क्यों उष्मा यही बात है ना !

मधुसूदन ने डाक्टर को सम्बोधित करते हुये दबे स्वर मे कहा··· यह तो मूर्ख लडकी है। आप इसकी ओर ध्यान न दें। आप आज से ही इसका ट्रीटमेन्ट शुरू कर दीजियगा और जैसे भी बन पडे इसका रोग दूर करने की कोशिश कीजियेगा। डॉक्टर साहब, मैं आपकी पूरी फीस अदा करूगा।

फीस का तो कोई सवाल ही नहीं उठता है, क्योंकि स्टीमर म, मैं रोगी से फीस नही ले सकता हू। आप जानते ही है कि मेरी नियुक्ति इसलिए ही की गई है कि मैं यात्रियों की तकलीफ दूर कर सकू। अगर मुझे समय पर रोगी का पूरा-पूरा सहयोग मिल पायेगा तभी उसकी तीमारदारी ठीक से कर सकू गा।

रोगी तो मेरे हाथ मे है। आप जैसा कहगे वैसा ही किया जायेगा। स्टीमर एक माह मे बम्बई पहुँचेगा। यह कोई कम समय नहीं है ? यदि एक महीने में भी इलाज पूरा न हो सके तब आप अपना इलाज बम्बई में भी जारी रख सकते हैं।

मैं बम्बई कैसे रुक सकता हू ? मैं तो वेस्ट अफ्रिका स्टीम नेवीगेशन कम्पनी का वेतन भोगी नौकर हू। जैसे ही एक यात्रा समाप्त होती है कि दूसरी नई यात्रा शुरू हो जाती है।

अब तक चुपचाप बैठी उष्मा ने अनुभव किया कि उसकी चुप्पी के कारण डाक्टर के मन मे उसके प्रति एक अशिष्टता का भाव प्रेरित हो रहा है। मात्र शिष्टता के लिए कृत्रिम कौतूहल दिखलाते हुए वह पूछने लगी. क्या आप स्थाई रूप से स्टीमर पर ही रहते है ?

उष्मा ! मुझे तुम्हारी यह आदत बिल्कुल पसद नही । हम डाक्टर को सहयोग न देंगे तब ट्रीटमेट करने मे उसे क्यो रुचि रहेगी ?

मधुसूदन वास्तव मे व्याकुल हो उठे । पिता की व्याकुलता समाप्त करने के लिए उष्मा ने दवा पी ली। यद्यपि दवा पी लेने के बाद भी चेहरे पर छाया अश्रद्धा का भाव लेशमात्र भी लुप्त न हो सका । दवा की कडवाहट के कारण उष्मा का मु ह और बिगड गया ।

बहुत कडवी है ? मधुसूदन ने हसते हुए पूछा ।

केवल कडवी ही नही है, आग के समान तेज भी है । न जाने दवा मे क्या मिलाया है ?

डिब्बा खोलकर उष्मा ने धनिया के दाने मु ह मे डाल लिए ।

बिना कुछ कहे सुने समुद्र की तरफ खिडकी के द्वार से समुद्र का नजारा देखती रही ।

उतरती सन्ध्या का सागर एकदम शात हो गया था । क्षितिज तक किनारा दिखाई नही दे रहा था । नीले आकाश के साथ नीला जल एकसा दिख रहा था । एस एस अगोला स्थिर और धीमी गति से आगे बढ रहा था ।

बेटी को बात करने के मूड मे न देखकर मधुसूदन ने एक पुस्तक उठाई स्वामी रामतीर्थ की आत्मकथा, बिना किसी उद्देश्य के पृष्ठ पलटते हुए बीच-बीच मे से पुस्तक पढते रहे ।

शान्त सागर मे कुछ बुलबुले उठ रहे थे ।

समुद्र की तरफ मु ह करके यकायक उष्मा ने पूछा बापूजी इस समुद्र का क्या नाम है ?

चौंकते हुए मधुसूदन, कुछ रुक कर बोले यह तो बोल्वीश है, बेटी ! बोल्वीश का उपसागर····।

ओह ! तब यह अफ्रिका का पश्चिमी किनारा है ?

हाँ···· ·।

दूसरी ओर पहुँचने मे हमको तीन चार दिन तो लगेगें ही ।

शायद इससे ज्यादा क्योकि अगोला बहुत बडा स्टीमर है। इसकी गति बहुत धीमी है ।

तनिक रुककर उष्मा ने पूछा बम्बई पहुचने मे तो एक महीना लग ही जायेगा ?

हा ।

लगभग एक घंटे बाद डाक्टर का नौकर दो बोतलें लेकर आया। एक बोतल पर मधुसूदन देसाई का नाम तथा दूसरी पर उष्मा का नाम था।

कृतज्ञभाव से मधुसूदन ने कहा कितने अच्छे हैं डाक्टर साहब ! इस उमर मे इतनी समझदारी और गम्भीरता सौभाग्य से ही किसी डाक्टर मे देखने को मिलती है।

पुत्री को निरुत्तर देखकर प्रश्न भाव स उसने पूछा, उष्मा ! तू क्यों नही कुछ बोलती है ?

बापू ! डाक्टर बहुत उत्साही हैं।

मधुसूदन बेटी की बात सुन हस पडे।

पिताजी आपकी व्याकुलता ने ही डाक्टर को इतना रस लेने को बाध्य किया है। वैसे यह कोई इतना भयकर रोग नही, कि आप परेशान हो जाय।

तेरे लिए यह मामूली रोग होगा। तेरी चिन्ता के कारण ही मेरी नींद हराम हो रही है।

मधुसूदन का बदला स्वर देखकर उष्मा कुछ ढीली पड गई। हल्की हसी हँसकर उसने कहा व्यर्थ मे चिन्ता करने से क्या लाभ ? कई स्त्रियाँ शादी के बाद हिस्टीरिया की रोगी हो जाती हैं। दो चार साल रोगी रहकर स्वत ही ठीक हो जाती है।

'हरि··· ! हरि··· ! सिर पीटते हुए मधुसूदन इतना ही कहकर चुप हो गये।

पिता की दवा गिलास मे डालते हुए उष्मा पुन बोली अंगोला और वेन्जुएला के बडे बडे डाक्टरो से आपका यह रोग ठीक नही हो सका तो अब पानी-सी दवा से क्या ठीक हो जायेगा ?

मुझे विश्वास है कि मैं ठीक हो जाऊगा। जाने क्यो डाक्टर हिमाशु से प्रथम भेंट मे ही मेरे मन म उनके लिए श्रद्धा उत्पन्न हो गई है। मैं पूर्ण विश्वास के साथ कह सकता हू कि तेरा रोग, जायेगा तो वह डाक्टर हिमाशु के हाथो से ही जायेगा।

उष्मा न कोई प्रतिवाद नही किया। चुपचाप पिताजी के सामने गिलास रख दिया। दवा पीते हुए मधुसूदन ने कहा . तू भी पी ले।

जबरदस्ती पिलाने से क्या लाभ ? मुझे डाक्टर पर आस्था नही है।

उष्मा ! मुझे तुम्हारी यह आदत बिल्कुल पसद नही। हम डाक्टर को सहयोग न देंगे तब ट्रीटमेंट करने मे उसे क्यो रूचि रहेगी ?

मधुसूदन वास्तव मे व्याकुल हो उठे। पिता की व्याकुलता समाप्त करने के लिए उष्मा ने दवा पी ली। यद्यपि दवा पी लेने के बाद भी चेहरे पर छाया अश्रद्धा का भाव लेशमात्र भी लुप्त न हो सका। दवा की कडवाहट के कारण उष्मा का मुह और बिगड गया।

बहुत कडवी है ? मधुसूदन ने हसते हुए पूछा।

केवल कडवी ही नही है, आग के समान तेज भी है। न जाने दवा मे क्या मिलाया है ?

डिब्बा खोलकर उष्मा ने धनिया के दाने मुह म डाल लिए।

बिना कुछ कहे सुने समुद्र की तरफ खिडकी के द्वार से समुद्र का नजारा देखती रही।

उतरती सन्ध्या का सागर एकदम शात हो गया था। क्षितिज तक किनारा दिखाई नही दे रहा था। नीले आकाश के साथ नीला जल एकसा दिख रहा था। एस एस अगोला स्थिर और धीमी गति से आगे बढ रहा था।

बेटी को बात करने के मूड मे न देखकर मधुसूदन ने एक पुस्तक उठाई स्वामी रामतीर्थ की आत्मकथा, बिना किसी उद्देश्य के पृष्ठ पलटते हुए बीच-बीच मे से पुस्तक पढते रहे।

शान्त सागर मे कुछ बुलबुले उठ रहे थे।

समुद्र की तरफ मुह करके यकायक उष्मा ने पूछा बापूजी इस समुद्र का क्या नाम है ?

चौंकते हुए मधुसूदन, कुछ रुक कर बोले यह तो बोल्बीश है, बेटी! बोल्बीश का उपसागर…।

ओह ! तब यह अफ्रिका का पश्चिमी किनारा है ?

हां…।

दूसरी ओर पहुँचने मे हमको तीन चार दिन तो लगेगें ही।

शायद इससे ज्यादा क्योकि अगोला बहुत बडा स्टीमर है। इसकी गति बहुत धीमी है।

तनिक रुककर उष्मा ने पूछा बम्बई पहुचने मे तो एक महीना लग ही जायेगा ?

हां।

उष्मा की बात सुनकर मधुसूदन हस पडे आज तो पहला ही दिन है, क्या अभी से ही तुझे परेशानी शुरू हो गई है ?

परेशानी तो क्या ? परन्तु कोई कम्पनी नही मिलती है। अकेले बैठे-बैठे समय बिताना भी कठिन लगता है।

हू""। लम्बी सास लेकर मधुसूदन फिर से पुस्तक के पृष्ठ पलटने लगे। चारो ओर नीरव शाति छा गई। ००

रात हो गई""""

पढते-पढते मधुसूदन को नींद का झोका आ गया। तकिए पर कोहनी के सहारे बिस्तर मे लेटी हुई बेटी बापू को न जाने कब तक निरमेष नेत्रो से देखती रही""छाती से निकला श्वास गले मे अटक गया। अपार करुणा मे प्राण आर्द्र बन गया · पिता के नाक से निकलने वाली आवाज स्टीमर की आवाज मे घुलमिल गई। मन ही मन उष्मा को पश्चाताप हो रहा था ""। अरे, रे! इतने सीधे सादे पिता को वह व्यर्थ मे कितना परेशान कर रही है""।

किन्तु उष्मा इसके अलावा कर भी क्या सकती थी ?

यकायक उसने सोचा कि यदि वह डाक्टर का ट्रीटमेन्ट लेती रहेगी तो इन थोडे दिनो मे तो पिताजी का उत्साह बढता रहेगा।

यह आशावादी दृष्टिकोण उसके लिए बडा आनददायक हो जायेगा।

डाक्टर "" ""।

उसे याद आया कि हिस्टीरिया सम्बन्धी रोग के प्रश्नो मे कैसा स्पष्ट व्यग था डाक्टर साहब का ?

भोजन का समय हो गया था""। बॉय मेज पर भोजन की डिशें रखकर चला गया था। बॉय के आने के कारण मधुसूदन की आख खुल गई। वे बहुत थके से लग रहे थे। उन्हें खाना कोई विशेष रुचिकर नही लगा। खाना खाकर सोने की सोच ही रहे थे कि दरवाजे के पास धु धले प्रकाश मे किसी कि आकृति दिखाई दी।

डाक्टर साहब""""।

क्यो चाचाजी अब तबियत कैसी है ?

ठीक है।

डाक्टर की नजर केवल मधुसूदन के सामने ही लगी हुई थी। कार्नर मे बैठी उष्मा को उन्होंने नही देखा था। स्वागतभाव से मधुसूदन बोले ' पधारिए, पधारिए''''''''। भला इस समय आपने क्यो कष्ट किया ?

अरे चाचाजी ! किस बात का कष्ट, शायद आपको मालूम नही, पास वाले केबिन मे ही हू।

अब तो देर सबेर जब भी चाहे आप बुला सकते हैं।

डाक्टर ने पूछा . भोजन कर लिया ?

हा''''''''।

ठीक, अब आप आराम कीजिए। कुछ काम हो तो बुला लेना बाजू मे ही हू।

मधुसूदन कुछ कहे कि इससे पहले ही डाक्टर वहा से चले गये।

मधुसूदन के हाव भावो से लगता था कि उनकी डाक्टर से गप्प लगाने की इच्छा थी, परन्तु जल्दी से डाक्टर को जाते हुये देखकर वह ऐसा नही कर सके।

उष्मा को नीद नही आ रही थी। कुछ पढने की इच्छा थी, किन्तु यह सोचकर कि लाईट से पिताजी को कुछ परेशानी होगी, उसने पढने का विचार छोडकर बत्ती बुझा दी।

दस बजे तक सारे स्टीमर मे नीरव शांति छा गई। परन्तु बाजू के केबिन मे से यदाकदा कुछ आवाज आ रही थी। फिर कुछ देर बाद सन्नाटा छा जाता था। रात की नीरव शाति के कारण स्टीमर की मशीनो की आवाज बहुत तेज हो गई थी, एव अविराम घरघराहट''''। सिर पर घूमते चक्र के समान स्टीमर की आवाज आ रही थी। यह आवाज ऐसी जान पडती थी, मानो उष्मा को सुलाने के लिए कोई हालरिया गा रहा हो।

पडौस की केबिन मे अब तक बत्ती जल रही थी। उष्मा को यह मालूम था कि उसके केबिन के दाहिनी ओर दस केबिन हैं। ये सभी कतारबन्द केबिनें फर्स्ट क्लास की है, पर बाईं तरफ एक ही केबिन है। एक दो बार बाहर निकलते समय उसने एक छोटी-सी नेम प्लेट भी देखी थी। उसे ध्यान नही था कि यह डाक्टर की नेम प्लेट होगी। बाजू मे ही डाक्टर का केबिन है।

उष्मा चस्-चम् की आवाज सुनकर चौंक पडी, यह आवाज पास के केबिन से आ रही थी।

प्लायवुड की पतली आवाज लाघकर धीमी तेज सभी प्रकार की आवाजें

केबिन में तेज रोशनी के कारण प्रकाश भी तेज हो गया था। वेन्टीलेशन के द्वारा यह तेज रोशनी बाजू के अन्धकारपूर्ण केबिन में भी फैलने लगी।

स्टीमर में केबिन छोटी होती हैं। दरवाजे भी छोटे होते हैं। दो केबिनस् के बीच में एक पल्लड वाला दरवाजा, दो ओर से बंद ऐसा एक दरवाजा है। ऊपर पारदर्शक कांच का एक छोटा-सा वेन्टीलेशन से प्रकाश की किरणें आ रही थीं "……।

ऐंजिन रूम से घंटे-घंटे भर बाद समय बताने वाली शब्द व्हिसल बज रही थी। मधुर सायरन की तेज"… धीमी और जगती प्राणों-सी क्षणिक गर्जना समान एक दो क्षण बजकर व्हिसल शांत हो जाती थी।

उष्मा ने ग्यारह और बारह बजे की व्हिसल सुन ली थी।

डाक्टर के रूम में अब भी तेज पावर की बत्ती जल रही थी।

इतनी रात बीतने तक डाक्टर क्या कर रहे होंगे……।

टेबुल पर कुछ रखा जाता है, उठाया जाता है, कुछ खोला जाता है"…। बंद किया जाता है। डाक्टर हिन्दी में कुछ बोलते हैं।

हूं…हूं…! बस… ! बस… बस्स्। घबराओ मत…। मैं तुम्हें मारूंगा नहीं …हां…! बस कितने सयान हो तुम… क्यों कांपते हो ! स… स्… स … स् बहुत समझदार हो।

कुछ हास्य मिश्रित बहुत धीमी दृढ आवाज। प्रत्येक शब्द में मजाक का टोन है, आवाज में हास्य की भनकार ! धीमे-धीमे बोलने के कारण शब्द बड़े अस्पष्ट सुनाई पड़ते हैं फिर भी उष्मा की तेज श्रवनेन्द्रिया आवाज समझ लेती हैं…। फिर सन्नाटा छा गया था।

उष्मा के कान ही नहीं अपितु समग्र अस्तित्व सचेत हो गये। क्या है? भीतर डाक्टर न जाने किसके साथ इस रात्रि में चसकारे मारते-मस्ती कर रहे हैं?

एक दो क्षण की नीरवता…और यकायक पुचकारते हुए चुम्बन की ध्वनि "……।

हाय…! हाय…कदाचित कोई स्त्री ही होगी?

इसके अलावा दूसरा होगा भी कौन? दूसरा कोई हो तो इस प्रकार की दबती आवाज में मस्ती मारने की क्या आवश्यकता है?

उष्मा का नाक चढ गया ! उसका मुंह उसी प्रकार विकृत हो गया, जैसे हिस्टीरिया की दवा से "……।

उसे डाक्टर के प्रति नफरत हुई। स्परश से चाहे कैसे भी दिखाई क्यों न दें, किन्तु वास्तव में डाक्टर कोई उच्च चरित्रवान पुरुष प्रतीत नहीं दिखाई पड़ता है।

इसलिए, उस समय वह मेरी ओर टकटकी बान्धे देख रहे थे?

पिताजी वास्तव मे कितने भोले है ? हरएक को अपनी तरह का समझते हैं किन्तु पुरुष ।

ओह ! पुरुष ।

उष्मा को जोरदार धक्का लगा।

फिर बाजू के केबिन मे से आवाज आई चुप । गडबड मत कर । मैं तुझे जरा भी तकलीफ नहीं दूंगा । बहुत आहिस्ता आहिस्ता हां ।

उष्मा ने अपने आपको रोकने का खूब प्रयत्न किया। परन्तु कौतूहल सीमा लांघ चुका था। उसका काट दरवाजे के बिल्कुल बाजू मे है। दरवाजा नीचा है। अत कॉट पर चढकर देखें तो वे न्टीलेशन से पास के केबिन म होने वाली हलचल को देखा जा सकता है।

पिताजी इस समय सो रहे हैं। यदि जग भी जाए तो अंधरे के कारण मेरी ओर उनका ध्यान जाना सम्भव नही हो सकेगा।

बहुत देर तक उष्मा अपने मन की बात को दबाकर बैठी रही। आखिर वह अपने आपको नही रोक सकी। एक प्रकार की जुगुप्साप्रेरक भावना डाक्टर के प्रति जाग्रत हो ही गई ।

डाक्टर भी एसे ही होगें ? वे पत्नी के साथ स्टीमर म नही रहते हैं ? सचमुच मैं किसी को पकड लिया होगा कौन हो सकती है ।

दीवार पकडकर दबे पावो वह काट की गद्दी पर खडी हो गई। बहुत सावधानी से उसने वेन्टीलेशन मे गदन डाली ।

एक क्षण ! उसकी धारणा कठोर परिहास के साथ क्षुब्ध हो उठी। बडी मुश्किल से वह गिरते गिरते बची।

हाथ की मुट्ठी म एक छोटे से चूहे को पकडकर डाक्टर केबिन के बीचो बीच खडे थे। खरगोश के बच्चे के समान दूध सा सफेद छोटे से मासूम चूहे । उसकी नन्ही सी जान मुट्ठी म पकडे जाने से कैसी तडफ रही थी ।

डाक्टर इस चूहे के साथ ही बातें कर रहे थे घबराओ मत । घबराओ मत ।।

चूहा सम्भवतया हिन्दी भाषा के अलावा दूसरी भाषा समझने म असमथ होगा।

उष्मा बेचैन होते हुए भी खडी रही। यकायक डाक्टर ने दराज खोली। दराज खोलकर लकडी की एक खोखली पकड बाहर निकाली। पकड म खूब सारी रूई डाली। इसके पश्चात बडी सावधानी से चूहे को उस पकड मे डाल दिया।

चूहा पकड म समा गया। चूहे की पूछ मात्र ही बाहर रह गई। चूहे की पूछ सफेद पतली रस्सी के समान थी।

डाक्टर ने अब टेबल पर रखी सिरिंज उठाई और खूब सावधानी से चूहे की पूंछ में सुई भोंककर हल्के हाथ से इन्जेक्शन लगा दिया। डाक्टर ने अब चूहे को पकड़ से मुक्त कर दिया और उसे अपनी मुट्ठी में लेकर देखने लगे। चूहा अब तक भी आंधी में वृक्ष के पत्ते के समान कांप रहा था।

उष्मा का स्थिर मन मानो किसी रहस्यमय चचलता से पत्ते के समान कांपने लगा। अब वह खड़ी रहने में असमर्थ थी, किन्तु जैसे-तैसे वह दीवार पकड़कर खड़ी रही।

अब डाक्टर ने टेबुल पर रखा पिंजरा उठाया और चूहे को उसमें बद कर दिया। पिंजरे में दो तीन खण्ड थे। दूसर खण्डो मे भी ऐसे ही चूहे थे। ये सफेद चूहे अपने अपने खडो मे उछलकूद कर रहे थे। डाक्टर ने पिंजरा ठीक से बद किया और उसे अलमारी के ऊपर के हिस्से मे एक ओर रख दिया। इसके पश्चात अलमारी का दरवाजा बद कर दिया।

दोनो हाथ लम्बे करके डाक्टर ने आलस तोड़ा और आराम से कुर्सी पर बैठ गए।

मेज पर माइक्रोस्कोप रखा था। स्लाइड पर किसी द्रव की दो तीन बूंदे डालकर डाक्टर माइक्रोस्कोपिक एक्जामीनेशन म व्यस्त हो गए।

उष्मा यह सब देखती रही। उष्मा केवल डाक्टर को ही नही अपितु सारे केबिन को देख रही थी। उसे यह केबिन रेजीडेन्शियल केबिन की अपेक्षा एक प्रयोगशाला लगा।

रात्रि के बारह बज जाने पर भी डाक्टर प्रयोग म खोये हुए है।

किसका प्रयोग कर रहे होंगे ?

उष्मा फिर से कॉट पर सो गई। डाक्टर के विषय मे सोचे गये गदे विचारो के कारण उसे बडा क्षोभ हुआ। वह पश्चाताप करने लगी डाक्टर हिमाशु कितने कार्यरत आदमी हैं ? और कर्त्तव्य निष्ठ भी।

नही तो एक वेतन भोगी डाक्टर नींद खराब करके केवल प्रयोगो के लिए आधी रात तक क्यो हैरान होता रहे ? वह स्वयम् भी नींद बेच कर क्यो परेशान हो रही है।

वह अपनी नीद क्यो कर खराब कर रही है ?

किसी भी तरह नींद नही आ रही है। मन, मस्तिष्क और आखें सभी भारी हो रही थी। उष्मा दिन भर केबिन मे ही घुसी रही और। सन्ध्या के समय पिताजी ने उष्मा से कहा वह डेक पर घूमकर मन बहला लिया करे।

परन्तु वह गई नहीं। सारे समय वह बिस्तर में ही पड़ी रही'' बिस्तर'''। सारा शरीर मानो बिस्तर के समान ही बन गया हो। अब तो यह बिस्तर भी कैसा गरम गरम लगता है? खूब बेचैनी हो रही है'''।

उसने मन ही मन बत्ती जलाकर कुछ पढ़ने का विचार किया, परन्तु पिताजी के जागने के भय से वह ऐसा नहीं कर सकी। केबिन के पीछे ही रेलिंग थी। इस पर खड़े होकर खुले और समुद्री हवा का आनंद एक साथ उठाया जा सकता है।

दरवाजा खोलकर वह बाहर निकली। बाहर निकलकर बड़ी सावधानी पूर्वक उष्मा ने दरवाजा बंद कर दिया। थोड़ी दूर चलकर वह रेलिंग पर जा पहुँची।

यह रेलिंग की अन्तिम माल है। इससे ऊपर केवल डेक है। डेक पर इससे ज्यादा आनन्द आयेगा। पर इतनी रात बीतने पर उसे डेक पर जाने का साहस करना उचित नहीं लगा। संभव है पिताजी की आंख खुल जाए''' उष्मा को न देखकर चिल्लाना शुरू कर दें'''।

बापू के स्वभाव पर उष्मा मन ही मन स्नेह से हँसने लगी।

रेलिंग का सहारा लेकर, अंधकार के काले रंग में एक रूप बने पानी पर उसने नजर स्थिर कर दी।

चारों ओर कैसी शांति फैली हुई है। केवल स्टीमर की गति के कारण कटते हुए पानी की छलक छलक धीमी आवाज आ रही है।

जूड़े से बिखरी हुई लटें, उष्मा के मुंह पर मस्ती करती हुई उड़ रही है। उष्मा का मन फिर से जूड़ा बांधने को नहीं हुआ। निस्तब्ध निशि की गम्भीर छाया में श्याम तरंगें तारों के बिम्ब के कारण इस प्रकार हँस रही हैं, मानो श्याम चहेरे पर श्वेत अधर हंस रहे हों। तारमंडित गगन और नीला सागर'''। घूमती घूमती उष्मा की दृष्टि उत्तर दिशा में स्थित ध्रुव तारे पर स्थिर हो गई'''

वह कुछ विस्मित हुई'''ध्रुव तारा'''। ठीक नीचे'''क्षितिज से लगभग सटकर'''ध्रुव तारा इतना नीचे कैसे उतर आया होगा'''। सम्भवतया यह ध्रुवतारा ही न हो? वह हसी। उसने एक ही दृष्टि में पहचान लिया'''वह तो ध्रुव तारा ही था'''।

'''और उष्मा नहीं जानती कि उसके जीवन के ध्रुव तारे की कौनसी दिशा है? शायद उसकी कोई दिशा नहीं है'''यदि है तो वहां कोई ध्रुवतारा नहीं है। उसकी सभी मानाएँ दिशाहीन हैं। बिना पहियों की गाड़ी में आरूढ़ उसका जीवन गतिहीन है'''अपनी रुद्ध गति के लिए उसके पास एक ही चक्र शेष रहा है'''''हिस्टीरिया, क्या यही हिस्टीरिया उसके जीवन का ध्रुवतारा है?

वह चौंकी। उसने अनुभव किया कि कदाचित इसी क्षण उसे कहीं हिस्टीरिया का दौरा न पड़ जाय? बलपूर्वक रेलिंग पकड़कर उसने पीछे मुड़ कर देखा। तग पैसेज मे केबिन्स से सटी हुई आठ दस कुर्सियां रखी हुई हैं। वह एक कुर्सी पर बैठ गई। छत मे लगी कुछ बत्तियों से धीमा धीमा प्रकाश बिखरा हुआ था। कोरीडोर के पीछे केबिन की परछाइयो मे चारो ओर घोर अधेरा फैला हुआ था।

उसने नजर घुमाते हुए चारो ओर का अवलोकन करना शुरू किया। इस ओर केवल केबिन्स ही है। केवल डाक्टर की केबिन मे पार्टीशन नही है। यह केबिन बड़ा भी है। इसका दरवाजा रेलिंग की ओर खुलता है... उष्मा को पता नही कि जहाँ वह बैठी है वह डाक्टर के रूम का ही पिछला द्वार है। सहसा वह दरवाजा खुला। डाक्टर दरवाजे से बाहर निकलकर रेलिंग के पास आकर रुक गए। रेलिंग पकड़कर वे झुक-झुक कर समुद्र की ओर देखने लगे। फिर सीधे खड़े होकर लम्बी उदासी लेकर क्षितिज की ओर देखने लगे। ऐसा मालूम होता था कि डाक्टर थकावट दूर कर रहे हो... और डाक्टर का ध्यान इस ओर नही है।

चौंकी हुई उष्मा खड़े होना चाहती थी, पर वह खड़ी न हो सकी। वह मन ही मन सकुचाने लगी, बिना कारण ही वह घबराने लगी.........।

जेब से सिगरेट का पैकिट निकालकर डाक्टर ने सिगरेट जलाना चाहा। तेज हवा के कारण दियासलाई बुझ गई। हवा से बचने के लिए उसने इस ओर मुह फेरा....... और... ।

क्षुब्ध भाव से बैठी हुई उष्मा पर दृष्टि पड़ते ही डाक्टर का चेहरा चमक उठा... ओह! तुम... ? इस समय ?

उष्मा की समझ मे नही आया कि वह क्या उत्तर दे। डाक्टर उसकी व्याकुलता को समझ गये और खिलखिला कर हस पड़े। नीद नही आई, क्यों ठीक है न। इस समय तुम यहाँ खुली हवा मे बैठी रहो। अब तुम जैसे ही यहाँ से जाओगी नीद अपने आप आजायेगी।

उष्मा को फीकी हँसी आ गई। उसे अब तक भी समझ मे नही आया कि वह क्या कहे।

सिगरेट जलाकर डाक्टर बोले . जिसको एकान्त प्रिय हो उनको इस समय यहाँ पर आना बहुत अच्छा लगता है....।

एक क्षण ठहरकर उष्मा की चुप्पी देखकर हँसते-हँसते अधूरा वाक्य पूरा करने लगे मुझे लगता है कि तुम्हारे मनपसन्द एकान्त मे खलल डालकर मैने तुम्हे व्याकुल बना दिया... है, ना"। मैं यह नही जानता था कि तुम यहाँ पर बैठी होगी · लो, चला जाता हूँ....बस....।

इतना कहकर एक ही क्षण मे डाक्टर अपने केबिन में चले गए।

बंद हो रहे स्प्रिंग वाले दरवाजे की सुमधुर ध्वनि·····लेकिन इस आवाज से उष्मा को एक गहरा धक्का-सा लगा। वह विमूढ-सी दरवाजे की ओर देखने लगी। ध्यान आते ही वह अपने आपको जी भरकर कोसने लगी। यह उसका कैसा स्वभाव बनता जा रहा है·······? केवल शिष्टाचार के लिए ही क्या वह डाक्टर को उचित जवाब नहीं दे सकती थी ?

यह भी एक अजीब बात नहीं है कि जहाँ डाक्टर के आने की कोई कल्पना ही नही थी, वह वहा भी आ जाय ?

उसने विचार किया कि वह अपने केबिन मे चली जाय·······केबिन मे जाकर सो जाय·······परन्तु आखो मे तो नीद का नाम ही नही। मन हल्का होने के बजाय और क्षुब्ध हो गया। डाक्टर ने क्या सोचा होगा भला ?

उष्मा ने देखा कि कुछ देर पहले वे अपने प्रयोगो मे कैसे तल्लीन थे ? थकावट दूर करने को वे बाहर आये और मेरे विचित्र व्यवहार के कारण लौट गये।

उष्मा खिन्न हो गई।

न जाने, उसने क्या सोचा। वह खडी हुई और डाक्टर के केबिन के द्वार पर जाकर खडी हो गई। दु साहस करके उसने दरवाजा खटखटाया।

ओह तुम ! खुले दरवाजे के बीच मे खडे हुए डाक्टर ने बिना विचलित हुए स्वस्थ स्वर मे पूछा।

मैं·······मैं अब जा रही हूँ। आप वहा से क्यो आ गये ।

क्या मेरे आने से तुमको किसी प्रकार का विक्षेप नही हुआ ?

कैसा विक्षेप ? सारा संकोच दूर करके उष्मा ने हिम्मत पूर्वक कहा: कोई एकात की मौज लेने नही आई थी ? अकेले बैठे-बैठे उकता गई थी और इस ऊब को दूर करने को आई थी।

ओह अकेली बैठी बैठी ऊब गई होगी ? तो फिर मेरे पास क्यो नहीं आ जाती हो ? आओ बैठो ! तुम बात करते रहना और मैं अपना काम करता रहूंगा·····।

इतना कहकर अधखुला दरवाजा डाक्टर ने पूरा खोल दिया और उसे भीतर ले लिया।

उष्मा को फिर एक क्षोभ हुआ····किन्तु अब उसने हिम्मत न छोड़ने का संकल्प कर लिया था। झट से वह अन्दर चली आई।

सदा की भाति मुस्कराते हुए कुर्सी की ओर इशारा करते हुए डाक्टर ने कहा: बैठिए।

बैठते हुए उष्मा बोली : जानती हूं काम करने से थक गये होगें। हवा खाने के बजाय अंदर क्यो आकर बैठ गये ?

मैं तो मजाक कर रहा था। हिमाशु खिलखिला कर हँसने लगे उष्मा जैसा तुम समझती हो वैसी बात नही। आज मुझे हवा खाने मे समय बिताना पुसाता नही।

क्यो ऐसी क्या बात है ?

बहुत भारी मुसीबत मे पड गया हूं। दोपहर बाद स्टीमर मे के और दस्त का एक केस हो गया है। मैं खोज कर रहा हूं, यदि कॉलेरा फैल गया तो आफत हो जायेगी। सारे स्टीमर मे छूत लगते समय नही लगेगा।

हाय· । हाय··· । उष्मा एकदम चौंक पडी कॉलेरा··· ?

कॉलेरा ही होगा, ऐसा निश्चय पूर्वक नही कहा जा सकता है। परन्तु दस्त इतने पतले हैं कि कॉलेरा का शक होता है।

यह कैसे ज्ञात हो सकेगा कि कॉलेरा हो है।

रोगी के दस्त और पेशाब का टेस्ट कर रहा हूँ। रात के दस बजे से यही काम कर रहा हूँ। परन्तु इस समय कुछ पता नही लग रहा है। प्रयोग पूरा करने मे सुबह हो जायेगी।

तब तो आपको रात भर जागना पडेगा।

इसकी कोई चिन्ता नही। चिन्ता तो इस बात की है कि कॉलेरा फैल गया तब क्या होगा ? इसीलिए तो बडा परेशान हू।

यकायक फोनोजन मे घरघराहट हुई। डाक्टर ने माईक की ओर कान लगाए। कैप्टिन पूछ रहे थे, हल्लो डाक्टर, क्या जाग रहे हो ?

यस· ! आज मैं, कैसे सो सकता हूं।

थैंक्स उस रोगी की क्या रिपोर्ट है ?

सुबह से पहले डायग्नोसिस की रिपोर्ट तैय्यार नहीं हो सकती है। किन्तु पेशेन्ट के लिए मैंने अलग व्यवस्था कर दी है।

केप्टिन आल्फान्सो डी ब्रामा ने टूटी फूटी अग्रेजी और पुर्तगाली भाषा के मिश्रण म बात को आगे बढाते हुए कहा आप स्वयम् कितने चिंतित है मैं क्या यह नही जानता हू। आपके भरोसे पर ही मैं निश्चित हू। कृपया बताइए कि आपकी अलग व्यवस्था कैसी है ?

अन्तिम पतवार के ऊपर के हिस्से मे तिरपाल की एक केबिन बनाकर रोगी को वहां रखा है। एक आदमी को रोगी की सेवा के लिए रख दिया है। जहाज के उस हिस्से मे केबिन इसलिए बनाया गया है कि हवा समुद्र की ओर जायेगी और छूत की बीमारी फैलने का भय कम रहेगा।

थैंक्स ! मैनी मैनी थैंक्स ! डाक्टर ! आप केयरफुल रहना।

हिमाशु हँसा डॉन्टवरी सर ! ट्रस्टइन गॉड।

केप्टिन की बात पूरी होने ही उष्मा ने कुछ बात करने की सोची, किन्तु

उसे लगा कि डाक्टर का मन बातों मे नही लग रहा है। वे कुछ ढूंढ रहे हैं ... वे कुछ व्याकुल है।

आप क्या ढूंढ रहे हैं ? हिम्मत करके उष्मा ने पूछा।

नाइट्रिक एसिड की शीशी न जाने कहाँ रखकर भूल गया हूं। मूर्ख ने सभी सामान इधर-उधर रख दिया है ।

कौन ?

उत्तर देने के बजाय हिमांशु फिर से जहरीली दवाओं के रैक पर रखी शीशियाँ ढूंढने लगे। कुछ देर मे शीशी मिल गई। डाक्टर खुश होकर कहने लगे, अब रोगी की स्पेसिफिक ग्रेविटी भी ज्ञात करनी होगी। उसके बिना उसे ठीक तरह की दवा भी नही दी जा सकती है।

इसके पश्चात उसने घंटी बजाकर नौकर को बुलवाया। नौकर के हाथ में गिलास देते हुए उसे आज्ञा दी। उस डायरिया के रोगी का इसी समय जाकर पेशाब ले आओ।

जैसे ही बॉय पेशाब लेने गया कि ललाट पर आ रही जुल्फों को दोनों हाथों से ठीक करके थकावट दूर करने के उद्देश्य से, डाक्टर, उष्मा के सामने की कुर्सी पर बैठ गये हां तो... अब बोलो तुम क्या पूछ रही थी ?

कुछ चौंककर उष्मा ने कहा क्या आपकी मदद करने वाला कोई नहीं है ? क्या यह सब आपको ही करना होता है ?

सहायक की बात तो दूर रही, एक कम्पाउन्डर था, वह कमबख्त भी अभी पिछली यात्रा में भाग गया।

हिमांशु के बोलने के ढंग से उष्मा को हँसी आ गई भाग गया ? क्या भाग गया ?

डाक्टर एकदम हँस पड़े अंग्रेजी में कहावत है कि खलासियों की प्रत्येक बन्दरगाह पर उपपत्नी होती है, परन्तु तनिक गौर से देखने पर यह कहावत केवल खलासियों के लिए ही नहीं अपितु स्टीमर के हर कर्मचारी के लिए सच होती है। साले ने कुछ लफड़ा किया था। पिछले सफर में केपटाउन उतरा था, वहाँ ऐसा उतरा कि वापस लौटा ही नहीं।

डा हिमांशु की बात में मजाक का टोन था, फिर भी उष्मा का मुंह एकदम लाल सुर्ख हो गया। कुछ बोलना चाहते हुए भी वह कुछ नही बोल सकी।

डाक्टर फिर से खड़े हुये। किसी शीशी का लेवल पढ़कर प्लेट में सल्फर या पाउडर डालते हुए बोले आज तो सारा समय इस रोगी के पीछे ही पूरा हो गया है। नही तो मेरा विचार तुम्हारे हिस्टीरिया के ट्रीटमेन्ट का कोर्स आज से ही शुरू कर देने को था।

उष्मा के मन मे कल्पनातीत कडवाहट व्याप्त हो गई। डाक्टर साहब आप जैसा सोचते हैं, वैसा कुछ भी नही है। मेरे लिए किसी प्रकार की दवा की आवश्यकता नही है।

तब दवा क्यो मगवाई थी ?

पिताजी के मन को इसी से सतोष मिल जाए तो ऐसा करने मे क्या बुराई थी ?

मात्र पिताजी के मन को सन्तोष ? डाक्टर का इतनी रुचि लेकर तुम्हारा ट्रीटमेन्ट करने का तुम्हारे लिए कोई मूल्य ही नही ?

हिमाशु ने सोचा था कि उष्मा उसके प्रश्न से क्षुब्ध हो उठेगी। किन्तु यह तो इसके विपरीत बडबडाई डाक्टर को रोगी की अनइच्छा जान लेने पर भी क्यो इतनी रुचि लेनी चाहिए ?

उष्मा की बात सुनकर हिमाशु एकदम चौंक पडे। तुरन्त ही प्रयत्न पूर्वक हँसते हुए उसने कहा ट्रीटमेन्ट म रोगी की इच्छा और अनइच्छा का कोई प्रश्न नही होता है" " "इतने पर भी मैं तुमको यह बात साफ साफ बता दू कि यदि तुम हिस्टीरिया की अपेक्षा मलेरिया की रोगी होती तो मैं इतनी अधिक रुचि कदाचित नही लेता।

तब क्या हिस्टीरिया मे आपको बहुत ज्यादा रुचि है ?

हाँ मैं इस पर थीसिस तैय्यार कर रहा हू। एक दो वर्ष की प्रेक्टिस के पश्चात लदन मे परीक्षा देकर मेरी इच्छा साइकोन की डिग्री लेने की है।

ओह ! ऐसा ! उष्मा मुक्त भाव से हँस पडी इसका मतलब यह हुआ कि मैं आपके प्रयोग का एक प्राणी बनू • •।

एक्जेक्ट •! किंतु उष्मा घबराओ नही। प्रयोग करते समय, मैं तुमको किसी प्रकार की तकलीफ नही होने दूगा। नब्बे प्रतिशत यह विश्वास दिलाता हू कि रोग को समूल नष्ट कर दूगा और यदि नष्ट नही कर सकू तो भी क्या ? तुम्हारे सहयोग से मुझे लाभ ही होगा।

यह उसकी कल्पना थी या परिहास ? एक डाक्टर की आवाज मे इतनी अधिक नम्रता ? उसे कुछ भी समझ मे नही आ रहा था। फिर भी न जाने क्यो उष्मा ने सिर नीचे झुका लिया। अविकल्प सज्ञा मे वह इतना ही कह सकी। यदि आपको लाभ हो तो प्रयोग करके देख लिजियेगा।

मेरे लाभ के लिए ? यदि इसमे मेरा ही लाभ होता है, तो मैं यह प्रयोग चूहो या बदरो पर भी आजमाईश करके देख सकता हूँ। इसमे जहाँ यश का लालच नही तो सामने के पक्ष वाले को कोई जोखिम उठाने की

भी आवश्यकता नही है। उष्मा तुम नही जानती हो कि डाक्टर पैसे की अपेक्षा यश का भूखा होता है ···· परन्तु तुम मुझे सहयोग नही देना चाहती हो, अगर यह जान लिया होता तो मैं तुम्हारी चिकित्सा ही शुरू नही करता।

उष्मा के दिल म न जाने क्यो एक टीस उठी। वह कुछ कहना ही चाहती थी कि बॉय ने आकर पेशाब का गिलास टेबुल पर रख दिया और बोला, पेशेन्ट को फिर से कै हो रही है। पेशेन्ट के आदमियो ने कहा है कि डाक्टर साहब को इसकी खबर दे देना।

बॉय इतना कहकर चला गया।

ओह! डाक्टर ने फिर सिर खुजाना शुरू किया। इसके बाद बिना एक क्षण खोये उसने यूरिन पर यूरोमीटर रख दिया और स्पेसिफिक ग्रेवीटी निकालने मे लग गये। चार्ट मे से कुछ नोट किया और जल्दी से उष्मा की ओर मुडकर कहा उष्मा, क्या तुमको नीद आ रही है?

वह चौंकी नही तो!

क्या तुम मुझे इस समय मदद दे सकती हो?

उष्मा को इससे खुशी हुई। कुछ बोलना चाहती थी कि उसके मुख के भावों को देखकर डाक्टर ने जल्दी से कहा मुझे पेशेन्ट के पास जाना है। तुम यह डिब्बी जलाकर इस पर पेशाब की डिश रख दो। जब गर्म हो जाये तो दो भाग निकालकर एक भाग मे नाइट्रिक ऐसिड की पाच बूद डाल देना और दूसरे भाग मे टेस्ट ट्यूब लेकर थोडा और गरम करना, उसमे यह ऐसेटिक ऐसिड ग्लेशीअल डालना······ तब तक मे आ ही जाऊगा।

उष्मा कुछ पूछे तब तक डाक्टर चला गया।

केबिन के बीच मे पुतली-सी बैठी उष्मा चुपचाप डाक्टर की पीठ देखती रही। डाक्टर क्या कह गये थे यह उसको समझ मे नही आया···· पर कुछ तो कह गए थे · इसको ऐसा करना तथा उसको वैसा करना · ···· और····।

अतीव व्याकुलता के समुद्र म गोते लगाते हुए वह शुन्य भाव से इधर-उधर देखने लगी। डाक्टर का केबिन रेजिडेन्स न होकर एक लेबोट्री-सी थी। कुछ समझ मे न आये ऐसे प्रयोग और विभिन्न प्रकार के उपकरणो के मध्य मे वह घुट रही थी · तथा उसकी समझ मे नही आ रहा था कि वह करे तो क्या करे?

उसने मेज पर गिलास मे रखे पेशाब को बडी घृणा की दृष्टि से देखा। गिलास के दूर होते हुए भी किसी काल्पनिक बू मात्र से उसका नाक चढ गया····बदबू। बिना कुछ सोचे समझे डाक्टर उसे यूरिन टेस्ट का काम सौंप कर चले गए · ऐसा उत्तरदायित्व पूर्ण काम····। ऐसी कौनसी विशेष बात डाक्टर ने उष्मा मे देखी · था?

सहमा एक अनुक्त गर्व से उष्मा की आखें चमक उठी। उसे अब इस बात का ध्यान आया कि उसमें कुछ विशेषता है, तथा इसी विशेषता को डाक्टर ने देख लिया है। अभी वे आयेंगे और टेस्ट की रिपोर्ट मागेगे" । इस नाजुक समय मे अप्रितम विश्वास का जो बोझ उष्मा के कधो पर उन्होने डाला है, ये कधे, इस बोझ को सहन करने मे असमर्थ हैं, यह जानकर""?

उष्मा को मन ही मन अपने आप पर शर्म आई। बिना एक क्षण नष्ट किए बिना किसी दुविधा के उसने काम करना शुरू कर दिया। अथाह प्रयत्न करके उसने घृणा को मन से निकाल फैंका। उसने डिब्बी सुलगाई" "।

जल्दी जल्दी काम करना शुरू किया। वह डर रही थी कि कही टेस्ट पूरा होने से पहले ही डाक्टर न आजाए""न जाने कैसे उष्मा मे स्वयम् की कुशलता एवम् डाक्टर के विश्वास पात्र होने की प्रबल भावना यकायक जाग पडी।

और "

जैसे ही टेस्ट पूरा हुआ कि डाक्टर आ पहुँचे।

ओह ! वैलडन ! माय गर्ल ! टेस्ट का रिजल्ट देखने के साथ डाक्टर ने उसके कधो को थपथपाते हुए कहा तुम तो वास्तव मे बहुत होशियार प्रतीत होती हो। क्या ऐसा काम पहले भी कभी किया था ?

उष्मा स्तब्ध होकर देखती रही। वह शर्म के मारे अधमरी हो गई। कुछ ढूढते हुए डाक्टर न पुन कहा। मेरे साथ डिस्पेन्सरी म आओ। खूब होशियार प्रतीत होती हो। जैसा मैं बनाऊ वैसा मिक्सचर-बनाना होगा। मैं आज तुमको नही छोड़ूगा।

उष्मा के जवाब की प्रतीक्षा किए बिना डाक्टर बाहर निकल गए। बूट की आवाज "" ...और सारे निस्तब्ध वातावरण मे उनके आदेश की प्रतिध्वनि" ।

भयभीत कछुए की तरह उष्मा का सारा अस्तित्व सकुचित हो उठा। यह क्या हो रहा है, हिमाशु सचमुच मे ही उसे अपना सहायक मान बैठे हैं ?

अब तक डाक्टर की पीठ अदृश्य हो गई थी। न जाने कैसे उसका मन फिर मुक्त सागर तरग की भाति नाचने लगा। उसे लगा कि उसके सिर से कुछ खिसक कर कधो पर आ गया है। डाक्टर के हाथ का शाबाशी देता हुआ स्पर्श वह अभिभूत चहेरा ! हिमाशु कितना खुश दिखाई दे रहा था " ।

इस पर भी

डाक्टर हिमाशु ने उसका कधा क्यो इतनी जोर से थपथपाया ?

अनायास ही, हिमाशु की दृष्टि उसकी योग्यता पर जा ठहरी""! और उष्मा, मानो उसकी वेतन भोगी सहायक हो, वैसे ही सटासट हुक्म देता जा रहा था। डिस्पेन्सरी मे आओ ""आज अब मैं तुम्हे नही छोड़ूगां।

उष्मा ने निर्णय लिया। वह नही जायेगी....वह उस काम मे क्यो सिर खपाए जिसके सम्बन्ध म खुद नही जानती है "" ।

हिमांशु जैसे ही उष्मा की दृष्टि से ओझल हुआ कि उसका अतीव प्रभावशाली व्यक्तित्व भी अदृश्य हो गया। केबिन के दरवाजे से वह बाहर निकली। उसके केबिन का दरवाजा बाजू में ही था। होंठ भींचकर उसने कदम मोड़ लिए। अपने केबिन का दरवाजा खोलकर वह जल्दी से उसमें घुस गई।

उसे इस बात का ध्यान ही नहीं रहा कि उसके ललाट पर पसीने की बूंदें झलक रही हैं। वह बिना कारण ही कांप रही थी।

पिताजी सो रहे या जाग रहे हैं यह जानने के लिए उसने बत्ती जलाई। बत्ती की रोशनी से मधुसूदन की आंख खुल गई। चौंकते हुए पूछने लगे क्या कर रही हो, बेटी? अभी सोई नहीं?

नहीं।

उष्मा की बात सुनकर मधुसूदन चौंककर बोले तब आधी रात तक क्या कर रही थी?

बिस्तर में लेटते हुए उष्मा ने जवाब दिया डाक्टर के केबिन में थी। एक कॉलेरा का केस आ गया था। डाक्टर साहब खूब काम में व्यस्त थे। उनके कहने पर उनकी मदद कर रही थी।

ओह! मधुसूदन हंसने लगे। फिर चौंके कालेरा का केस हो गया है? तू तो रोगी के पास नहीं गई?

नहीं नहीं! मैं तो केबिन में ही थी।

हूं इसका मतलब यह हुआ कि डाक्टर भारी मुसीबत में पड़ गए हैं, क्या? तो फिर तू क्यों आई? ऐसे समय कुछ उनकी मदद कर सके तो इससे अच्छी और क्या बात हो सकती है?

परन्तु उष्मा कुछ कहे कि केबिन के दरवाजे पर डाक्टर की शक्ल दृष्टिगत हुई। चेहरे पर अधीरता पूर्ण व्याकुलता स्पष्ट झलक रही थी।

कुछ ऊंची और भर्राई आवाज में हिमांशु बोले कमो, उष्मा तुम भाग आई? आई रिक्वेस्ट यू! प्लीज कम विद मी!

मधुसूदन को समझाते हुए डाक्टर बोले मुझे ज्ञात है कि आपको परेशान करने का मुझे भाई हक नहीं है किन्तु स्टीमर में कोई दूसरा व्यक्ति भी तो दिखाई नहीं दे रहा है, जिससे मदद मिल सके। बात यह है कि एक तरफ कॉलेरा का केस है तो दूसरी ओर एक प्रेसोपीटेट सेवर डिलिवरी का केस है। उसे भी इस कुसमय में दर्द शुरू हुआ है। समय का ध्यान रखे बिना प्रेगनेंट हालत में यात्रा शुरू कर दी है। स्वयम् तो हैरान होते ही हैं, पर दूसरों को भी परेशान कर देते हैं।

हिमांशु के बोलने के ढग से उष्मा को हँसी आ गई। हक्के-बक्के बैठे मधुसूदन जल्दी से बोले हा हा उष्मा ! तुझे इसी समय चले जाना चाहिए।

रोगी के पास जाने से मुझे घबराहट होती है।

उष्मा की बात सुनकर मधुसूदन के पास बोलने को कुछ नहीं रहा। क्योंकि यदि घबराहट होनी है, तो घबराहट के साथ फिट आने में कितना समय लग सकता है?

शून्य भाव से वे उष्मा और डाक्टर की शक्लें देखने लगे। उष्मा ने नीचे देखना शुरू कर दिया था किन्तु डाक्टर ।

उष्मा को खींचकर ले जाने को आतुर हो रहे डाक्टर अब कुछ शात हो गये। निर्लेप भाव से स्थिर होकर वे उष्मा की ओर देखने लगे। वे तुरत वहाँ से चल दिए। दरवाजे के पास सहसा रुककर वे कहने लगे हाँ यदि घबराहट हो तो दूर रहना ही अच्छा है, कदाचित यदि तुम्हारी तबियत खराब हो जाए तो मेरे कधो पर दो रोगियो के बोझ के बदले म तीन रोगियो का बोझ आ पडेगा।

इसके बाद वे मुक्त भाव से हँसने लगे। डाक्टर की हँसी से ऐसा प्रतीत होता था, मानो वे उष्मा के अनादर भाव को समझ ही न सके हो, उन्होने उष्मा को एक घमन्डी लडकी न समझ लिया हो।

डाक्टर के चले जाने के बाद भी उष्मा न जाने कब तक सिर झुकाकर चुपचाप बैठी रही। बैठे बैठे उसे मन ही मन ऐसा आभास होने लगा, मानो उसके बहाने का उसके पिता को आभास हो गया है। वह डाक्टर से किस कारण से दूर भागती है, ऐसा प्रश्न उसके पिता के मन मे अवश्य आया होगा। इस कारण से वह डाक्टर के चले जाने के बाद आँख ऊची करके अपने पिता से बात करने का साहस न कर सकी।

आज उसकी मनोदशा बडी विचित्र थी।

मधुसूदन कॉट मे लेट गए। उष्मा भी पुस्तक उठाकर उसके पृष्ठ पलटने लगी, जबकि आधीरात मे पुस्तक मे मन लगना सम्भव नही था। इसे उष्मा भली प्रकार जानती थी।

कुछ देर बाद उसने पुस्तक फेंक दी, सोने का विचार कर ही रही थी कि सहसा पिता की कराहट देखकर मालिश की याद आ गई। वह बोली लाओ पिताजी ! आपके घुटने पर मालिश कर दू।

डाक्टर ने मालिश का तेल दिया है, किन्तु नियमित रूप से मालिश नही हो सकती थी। वह उनके पास पहुँच गई और बडी देर तक मालिश करती रही।

मधुसूदन आँखें मूंदकर चुपचाप पड़े रहे। मधुसूदन के चेहरे पर सुख की भाव देखकर यह सहज ही अनुमान लगाया जा सकता था कि मालिश से उन्हें आराम मिल रहा है। पांच मिनट में ही पिताजी को नींद के झोंके आने लगे।

शीशी को यथा स्थान पर रखकर उष्मा लेट गई। किन्तु आज की आब-हवा में किसी प्रकार के आराम की अनुभूति नहीं हो रही थी। मन के शून्य आवास में आज पहली बार किसी वायु के झोंके का प्रवेश हो रहा था। शुष्क भूमि पर हल्की हल्की बारीक रेत उड़ रही थी।

सदा ही मुक्त विचारों में मस्त रहने को व्यग्र उष्मा आज अनजाने ही विचारों में तनती जा रही है। उसने अनुभव किया कि विचारों के साथ-साथ व्याकुलता भी बढ़ रही है।

उसने पीठ की मुविंग खिड़की का द्वार खोला। सारा कमरा समुद्र की ठंडी हवा से भर गया।

खिड़की से उसने मुक्त नजर से बाहर देखा, बैठे बैठे अगाध जल राशि को देखते ही देखते वह सो गई।

जब वह जागी तो रात की कालिमा मिट चुकी थी और प्रभात का पुरोहित क्षितिज में से हाथ लम्बा कर सागर की माँग में सिन्दूर भर रहा था।

००

रात भर जागने के कारण हिमांशु के नेत्र लाल सुर्ख हो गए थे। वे मधुसूदन के केबिन के बाहर खड़े थे। मधुसूदन के केबिन में चाय-नाश्ते की ट्रे लेकर जाते हुए बैरे के धक्के से दरवाजा खुल गया और पीछे खड़े डाक्टर को मधुसूदन ने देख लिया।

'हल्लो डाक्टर! ओह...! सुबह की चाय में कम्पनी तो देनी ही होगी। मैं तुम से प्रार्थना कर रहा हूं।

'रात इतनी चाय पी ली है कि पेट-पेट न रहकर एक ही पॉट बन गया है। अन्दर घुसते हुए डाक्टर ने अपनी सहज अदा से पेट पर हाथ फेरते हुए कहा 'अब तो स्टमक बिना उपद्रव मचाए नहीं रहेगा।'

'ओह! सारी रात उस कॉलेरा के रोगी के लिए जगे हो।

'जी हां, वह अब खतरे से बिल्कुल बाहर है। दरअसल वह कॉलेरा का रोगी नहीं था...टेस्ट करने से पता लगा कि सामान्य गेस्ट्रो-एन्टाईटीस ...

ओह हाँ। डेक पर अब कौन जायेगा ? पिताजी फिर कहेंगे जा बेटी थोडा घूमन फिरने से मन हल्का हो जायेगा मन यदि हल्का होगा तो डाक्टर को ट्रीटमेन्ट करने म मदद मिलेगी।

डाक्टर ..! डाक्टर फिर दवा की शीशियाँ देगा थोडी-सी बेवकूफियो से पूए सलाहा की पोटला तथा ट्रीटमेन्ट का बिल ।

शावर का वेग तेज हो चुका था, पानी की गति भी तेज थी। बेंथिग मिरर धुन्धला हो चुका था। शेम्पू के झाग सागर की तूफानी तरंगो की तरह ऊचे से ऊचे बढते जा रहे थे।

बाथरूम म टब होता तो और आनन्द आता ! उष्मा को केवल एक ही शौक था कि टब म घन्टो पडे रहकर स्नान करना । पर यहा टब नहीं था। स्टीमर म टब किसी प्रकार स रखना क्या सम्भव नही हो सकता था ? पाक, थियेटर स्टेज रेडियो यह सब रखना सम्भव हो सकता है। अगोला एक बहुत बडा स्टीमर है ? एक दो छोटे गाव इसमे समा सकते हैं, इतना बडा ! यदि कोरीडोर म घूमने निकलो तो कोई अन्त नही आता .! डाक्टर ने भी कहा था इस प्रकार से घूमना फिरना आवश्यक है।

उष्मा को एक दूसरा भी शौक था यह शौक टब बाथ से कुछ हल्के दर्जे का था, परन्तु शौक तो था ही घूमने फिरने का शौक । उसे घूमना फिरना बहुत अच्छा लगता है कदाचित अभी अच्छा नही लगता। सम्भवतया अब तो ज्यादा देर तक स्नान करना भी अच्छा नहीं लगता है। पहले कई और बात अच्छी लगती थी नाटक सिनेमा म्युजिक कन्सर्ट ! स्टेज पर नाचती हुई चमकदार रूपवान पतली लडकिया ।

लिजा भी शायद इतनी हा चमकदार होगी दुबली पतली । नोट आग्लो पनीवानेन्ट । डेमसेल ! ब्युटिफूल मेयडन ! डाक्टर स्वयम् अपने मुह स कह रहे थ । पुरुष मात्र ही को सौन्दय कृतियो पर प्रशसा पुष्पो की वर्षा करना अच्छा लगता है।

परतु शत यही है कि उसके विवाहित स्त्री नही होनी चाहिए ।

विवाह के बाद विवाह के बाद ! उसका पति तो विवाह के बाद भी उसके सौन्दय व प्रशसा के फूलो से उसका अभिवादन करते नही अघाता था।

अनग ।

'उष्मा ? अरी ओ उष्मा ! मधुसूदन बाथरूम का दरवाजा जोर से खटखटाने लगे। उष्मा भी व्याकुल व चिन्तित स्वर स बोली बापूजी, क्या कह रहे हो ?

कुछ नही, कुछ नही !' शर्माते हुए वापिस लौटते हुए मधुसूदन ने कहा। मैंने सोचा था कि नहाते हुए इतनी देर क्यो हो गई। कही फिट तो नही

आ गया।

उष्मा ने शॉवर बन्द कर दिया। नल खोलकर जल्दी से स्नान किया। कपड़े पहनकर, गीले बाल टावल से बाँध के बाहर आ गई।

बापू जी, आपको नहाने जाना है ?

हाँ, बेटी ! मधुसूदन जब तक स्नान करके आये तो उष्मा ने केस सुखाकर सवार लिए थे। मधुसूदन स्नान करने के बाद दूसरी बार चाय पीने के आदी थे। घंटी बजाकर, फोन से चाय के लिए आर्डर दे दिया। अब उष्मा को यकायक समझ में आया, वह कहने लगी बापूजी, आप चाय पियें, मैं तनिक उस प्रसूता के पास जाकर, उसकी कुशलक्षेम पूछ आती हूं ।। किसी प्रकार की आवश्यकता हो तो वह भी पूछ आऊँ।

उष्मा की बात सुनकर मधुसूदन को जरूरत से ज्यादा आश्चर्य हुआ। किन्तु वे कुछ बोलें, इससे पूर्व उष्मा बाहर चली गई।

कोरीडोर में नेमप्लेट देखते हुए उष्मा बहुत आगे बढ़ गई। किसी भी केबिन पर लिजा के नाम की प्लेट दिखाई नहीं दी। सामने की रेलिंग के पास नीली पोशाक पहिने हुए एक खलासी खड़ा था। उष्मा ने खलासी को पूछा 'लिजा । लिजा की कौनसी केबिन है ?'

शायद उष्मा को इस बात का ख्याल नहीं था। किन्तु वह प्रसूता के बजाय लिजा को देखने को ज्यादा उत्सुक थी।

यहा से तीसरे नम्बर का केबिन लिजा का है। बेल मारते ही लिजा सामने आगई। नीली आँखें ...। सुनहरी जुल्फें गौरा और आकर्षक मुख-मण्डल। लिजा डाक्टर के कहे अनुसार से भी ज्यादा सुन्दर पानीदार ।

'हनी ! यस गर्ल ! यस, कम इन ।

आवाज ऐसी मधुर और कर्णप्रिय थी, मानो कोई संगीत बज रहा हो।

हाथ में स्पंज का टुकड़ा । कदाचित् प्रसूता को स्पंज कर रही होगी। बिना किसी प्रकार की घबराहट के उष्मा ने कहा, मुझे डाक्टर ने बताया है कि आप बहुत थकी हुई हैं। क्यों ठीक है न ! आप कुछ देर आराम कर लीजिए, मैं तब तक यहां बैठ जाऊंगी।

'ओह ! आपको डाक्टर ने बताया ? थैंक्स ! माई डियर फ्रैन्ड ! मैनी-मैनी थैंक्स। मुझे रात में फिर स्टेज पर जाना है। यदि दो चार घण्टे आराम नहीं करूंगी तो रात्रि में स्टेज पर नहीं जा सकूंगी ..इस पर भी मैं यदि आराम करना भी चाहूं तो कैसे करूं, क्योंकि केबिन पर तो इसने अधिकार कर लिया है।'

प्रसूता की ओर देखकर लिजा मन ही मन मुस्कराने लगी।

लिजा बहन, आप चिन्ता न करें। हमारी केबिन मे कॉट खाली पडी हुई है। आप वहा जाकर आराम करें। केबिन मे मेरे पिताजी हैं। वे आपके साथ बात करने मे आनन्द का अनुभव करेंगे।'

लिजा ने उष्मा का हाथ पकड लिया। कृतज्ञता से उसने उष्मा का हाथ दबाया ' 'बहन, मैं आपका आभार कैसे प्रदर्शित करू।'

लिजा की बोली मे पहले से कही अधिक मिठास टपक रहा था। उष्मा का मन इन मधुर शब्दो को पी जाने को व्यग्र हो उठा तथा वह इस भावना मे बहते हुए कहने लगी जाने से पहले मुझे बता दीजिए, मुझे क्या करना है।

'कोई विशेष काम नही करना है, केवल यहाँ पर हाजिर रहना ही जरूरी है। स्पज तो कर दिया है। हा, बच्चा रोने लगे तो उसे माँ की बगल मे सुला देना, घन्टे भर बाद दवा दे देना। डाक्टर ने आज खाने के लिए मना कर दिया है, इसलिए खाने का तो सवाल ही नहीं उठता।

इसके बाद प्रसूता के मु ह पर झुककर बडे ममता भरे स्वर म लिजा ने कहा, मैं जाती हूँ। तुम्हे किसी प्रकार की तकलीफ नही होगी। घबराना मत। छोटी-सी केबिन मे एक तरफ खाट रखी है, उसकी बगल मे बेंत के मोढे पर छोटी-सी गद्दी पर बालक सो रहा है। प्रसूता क फीके चहरे से यह स्पष्ट हो रहा है कि रात्रि मे उसने अतीव यातना बर्दाश्त की है। आखें खोलने मे भी थकावट का अनुभव होती है। पर जैसे ही उसने आख खोली, वह चौंककर बोली अरे उष्मा तू!

उष्मा भी प्रसूता को देखकर चौंक पडी। प्रसूता तो पहले से ही परिचित थी। बेन्जुएला से ही यह भारतीय परिवार स्टीमर मे बैठा था। बेन्जुएला मे इनकी फ्रूट की दुकान थी। श्वसुर दुकान पर बैठता था, और श्वसुर की गैर हाजरी मे वह दुकान पर बैठती थी। उष्मा फल लेने जाती थी इसलिए वह इसको पहचानती थी। विदेश मे स्वदेश वाली से मित्रता होते कितना समय लगता है?

इसी कारण उम्र मे बडी होने के कारण मैना उसे आत्मीयता से 'तू' कहकर पुकारती थी। स्टीमर मे इस प्रकार परिचितजन का साथ होने से दोनो को बहुत हर्ष हुआ। मैना का पति मनोज विदेशी फर्म मे काम करता था। छ मास पहले ही फर्म की एक ब्राच गोवा मे खोली गई थी और मनोज गोवा मे रहता था।

दु:खी स्वर मे मैना बोली ' बहुत चिन्ता हो रही है, गोवा मे न जाने

क्या हुआ होगा । न जाने वे वहीं होंगे या भारत चले गए होंगे, इसका भी पता नहीं । कई दिनों से कोई पत्र भी नहीं आया ।'

डाक का आना-जाना तो पुर्तगीज सरकार ने कहां जारी रहने दिया है । आश्वासन देते हुए उष्मा ने कहा, चिन्ता की कोई बात नहीं है । गोवा में कोई घमासान लडाई नहीं हुई है । चार दिनो की लडाई के बाद एकदम शांति हो गई है । कदाचित् वे वहीं होंगे ...। हाँ....तुम्हारे श्वसुर कहाँ चले गए ?

वे नीचे के हिस्से में चले गये हैं । बेचारे बार-बार खबर पूछने आते हैं, किन्तु मुझे शर्म आती है, इससे अंदर नहीं आते हैं ।

उष्मा ने दु खी भाव से कहा डाक्टर ने रात मे ही मुझे बुलाया था ; मेरी तबियत ठीक नहीं थी । मुझे क्या पता था कि तुम ही होगी, नहीं ते उसी समय आ जाती ।

मैना ने दिल खोलकर उष्मा से बातें की । उसे उष्मा के मिल जाने कि ...कुल आशा नहीं थी । अब उष्मा की सेवा का लाभ मिलने से मैना बहुत प्रसन्न हुई । वह डाक्टर और लिजा की भूरि-भूरि प्रशंसा करने लगी ।

ठीक इसी समय स्टेथस्कोप झुलाते हुए डाक्टर कमरे मे आए उष्मा . . . तुम, तुम यहाँ, उष्मा को ऐसा लगा कि डाक्टर को शायद अपनी आंखो पर विश्वास नहीं हो रहा है । शर्माकर नीचा मुह करके वह बोली . 'मैना बहन तो मेरी जान पहिचान वाली हैं । इनकी सेवा मे रहना तो मेरा पुनीत कर्त्तव्य है ।'

ओह ! जब जान पहिचान निकली तब तुमको कर्त्तव्य का तकाजा याद आया, कैसी सुन्दर बात रही । मुझे अब रिक्वेस्ट करने की जरूरत नहीं रही ।

'रिक्वेस्ट ?'

'नहीं तो क्या ? रात मे तो आपने रिक्वेस्ट भी कहां सुनी ? मुझे बिल्कुल ही असहाय बना दिया था । किन्तु अब तो तुम्हे मुझसे रिक्वेस्ट करनी होगी । बिना ऐसे किए मैं नर्सिंग का यह जोखमी काम तुम्हें नहीं सौंप सकता हूँ । पेशेन्ट तुम्हारी परिचित हैं । अत बिना रिक्वेस्ट किये तुम्हें सेवा का अवसर नहीं दिया जा सकता है ।

डाक्टर की बोली में मिश्रित हास्य, उष्मा को बहुत अच्छा लगा ।

उष्मा शर्माते हुए बोली 'केवल मैना बहिन के लिए ही नहीं, अपितु स्टीमर में आप किसी के लिए भी मुझे बुला लेना, कहूँ तो लिखित में अर्जी दे दू ।'

ओह ! मुझे लगता है कि मेरी किस्मत खुल गई है....। मेरी किस्मत ही नहीं, बल्कि इस स्टीमर में बीमार होने वाले यात्रियों की किस्मत भी खुल गई है। 'मैं सबको खुशी से यह कह दूंगा कि आप लोग बीमार होने में मत हिचकना, अन्यथा ऐसी अच्छी सेवा टहल का अवसर जीवन में पुन नहीं मिलेगा।'

'हीं....। मेरी सेवा टहल के लिए आप यात्रियों को बीमार करेंगे।'

'वाह ! मेरा काम तो रोगियों को ठीक करने का है। अब बीमार होंगे तो चिन्ता का कोई विषय नहीं। उष्मा सच कहता हूं कि कल रात में तुमने केवल पन्द्रह मिनट तक मेरी लेबोरेट्री में मेरे साथ जिस कुशलता से काम किया था, उसके कारण ही मैंने तुमसे मदद करने की प्रार्थना करने का साहस किया था। डायरिया के रोगी का तुमने किस कुशलता से पेशाब टेस्ट किया। सचमुच में यदि तुम मैना बहिन के केस में मेरी सहायता को आ जाती तो मैं आजीवन तुम्हारा आभार प्रदर्शित करता रहता।

आजीवन ! अवश्य याद करते ? इसका अभिप्राय यह हुआ कि रात में सहायता को मैं नहीं आई, इससे मैना बहिन को लाभ हुआ या नुक्सान। किन्तु तुम्हारे पर तो मैंने उपकार का भार चढ़ा ही दिया।' जिसे तुम अस्वीकार नहीं कर सकते हो...। आजीवन याद करने की दुविधा म से तुम निकल नहीं सकते हो।

डाक्टर उष्मा का बुद्धिमता पूर्ण उत्तर सुनकर चुप हो गए।

डाक्टर का यह भाव उष्मा से नहीं छिप सका। अतएव बात को आगे बढ़ाने के उद्देश्य से उसने नेपकिन हाथ में लेकर व्यर्थ में ही मैना की गर्दन धीरे-धीरे साफ करना शुरू कर दिया।

मैना को देखने के उद्देश्य से डाक्टर पास में आए, किन्तु वे एकदम दूर खिसक गए। बेत के मोढ़े में सोया बालक हलचल करने लगा।

हँसते हुए डाक्टर ने कहा 'देखो, यह इस बात का संकेत कर रहा है, कि कहीं मुझे देखे बिना ही डाक्टर लौट न जाए।'

तत्पश्चात बालक को देखकर, उष्मा से कहा 'यदि बालक रोये तो मैना को दूध पिलाने को दे देना।' अब दूध पिलाने म कोई आपत्ति नहीं है।

इसके बाद बालक के मुंह की ओर टकटकी से देखकर मैना को सुनाते हुए डाक्टर ने कहा 'कैप्टेन ने अंगोला में स्थित वेस्ट अफ्रिका स्टीम नेवीगेशन के मुख्य कार्यालय में बालक के जन्म की सूचना दे दी है। कम्पनी के नियमानुसार बालक को कम्पनी के स्टीमर में भविष्य में मुफ्त यात्रा करने का अधिकार मिल जायेगा।

मैना पर इसका कोई असर नहीं हुआ। परन्तु उष्मा दांतो तले अगुली

दबाकर पूछने लगी : ओह ! स्टीमर मे जन्म हुआ इससे स्टीमर मे सदैव मुफ्त यात्रा करने का अधिकार मिल जायेगा, ऐसा क्यो ?

'सामान्यतया सभी कम्पनियो मे ऐसा ही नियम है। विमान मे यदि जन्म हो तो विमान मे मुफ्त यात्रा करने का अधिकार मिल जाता है। यूरोप, अमेरिका मे तो यदि किसी बालक का ट्रेन मे भी जन्म हो जाय तो सरकार उसे ट्रेन मे आजीवन मुफ्त मे यात्रा करने का पास बना देती है।'

उष्मा इस बात से अपरिचित थी। उसके रहस्य मुग्ध नेत्रो मे छलकते कौतूहल को देखकर डाक्टर ने मजाक मे कहा : 'कभी यदि सयोग से ही ऐसा हो जाय तो ठीक, किन्तु बालक के होने के समय को देखकर ऐसा मौका लेने के झमेले मे मत पड़ना।'

वह सोच रहा था कि इससे उष्मा शर्माकर पलकें नीचे कर लेगी।

परन्तु डाक्टर की बात का उष्मा पर उल्टा असर हुआ। उसके प्रसन्न चित्त वदन पर एकदम विरक्तता की झलक दिखाई देने लगी।

डाक्टर को आश्चर्य हुआ तथा यह कहते हुए, 'ठीक है तुम यहीं बैठना।' जल्दी से बाहर निकल गये।

००

आकाश के अधूरे वृत मे चुम्बन लेता हुआ, हँसता व गुंजार करता हुआ स्टीमर, सागर के कान मे न जाने कौन-सा मत्र फूंकते हुए दौड़ता चला जा रहा था ? इतनी तेजी से वह कहा जा रहा है ?

उष्मा नही जानती . . . .

वह इतना ही जानती थी कि सागर की अशात छाती पर खरोचें करता हुआ स्टीमर बम्बई का किनारा चूमने को जा रहा है। उसकी गति तेज हो रही है . . . . . यदाकदा धीमी हो जाती है . . . . . फिर भी एक दिन तो वह निर्धारित समय पर पहुच ही जायेगा।

शाम होते ही मैना गहरी नींद मे सो गई। नवजात शिशु भी . . . .। सोने से पहले मैना ने बार-बार कहा, : 'तुम चली जाओ, थोडी देर मे लौटना। इस समय कोई काम नहीं है।

जब तक मैना को नीद नही आई तब तक उष्मा वहां से नहीं उठी।

निशा भी अब तक नहीं उठी थी। वह उष्मा के कमरे में गहरी नींद सो रही थी। उष्मा, मैना को छोड़कर सबसे पहले वहीं गई थी। इस प्रकार

मधुसूदन भी सो रहे थे, चारो ओर शांति थी। उष्मा कमरे में बैठने के बजाय घूमने निकल गई।

'हल्लो उष्मा।'

इस परिचित आवाज से उष्मा चौंकी नही। सहज ही उसने मुडकर देखा। सिर पर हेड लाइट चढाकर हिमाशु सर्विस ड्रेस मे खडा था। मैं अभी लिजा के केबिन की ओर गया था। मा और बालक दोनो सो रहे हैं। तुमने चाय पी ली या नही ?

चाय तो कोई पीने जैसी चीज नही, किन्तु यह सच है कि मैंने चाय नही पी है।

उष्मा की बात से डाक्टर को एकदम होश आया। उसने देखा कि उष्मा इस समय बहुत प्रसन्न है। इसी भाव को ध्यान मे रखकर उसने कहा 'बालक ससार मे जन्म लेकर सर्व प्रथम अपनी वा (मा) को ही पीता है। इसका मतलब यह है कि दूध पीते पीते वह यह मानता है कि वह अपनी माँ को ही पी रहा है। जैसा कि हम लोग भी कुछ पीने के बाद कहते हैं, एक कप पिया अथवा एक गिलास पिया।'

'हा किन्तु बालक को इस बात का कोई ज्ञान नही होता है।'

ज्ञान ? मैं मानता हू कि तुम्हे उस समय की दशा का ज्ञान निश्चित ही नही होगा और तो और एक दो बालक को जन्म देने से पहले तुम्हें बालक की उस समय की दशा का बोध भी कैसे हो सकता है। परन्तु वास्तविक स्थिति तो यह है कि बालक जन्म के तुरन्त बाद एक क्षण मे जितना सीखता है, उतना जीवन भर नही सीख सकता है। भूख लगने के साथ ही रोना तथा मुह मे दूध की प्रथम धार पडते ही 'उवा उवा' बद करके आनन्द विभोर होकर, चसड चसड करने लग जाना, तनिक बताओ तो कि उस समय यह सब कौन उसे सिखाता है।'

हिमाशु की रसभरी बातें उष्मा को आनन्द देने के बजाय लज्जा मे डुबा रही थी, उत्तर देने की इच्छा होने पर भी वह कोई उत्तर न दे सकी।

उष्मा को इस प्रकार चुप देखकर डाक्टर ने उसी लहजे मे पूछा 'क्यो, चुप हो गई, क्या डाक्टर की बात दिमाग मे नही बैठती है ?

उष्मा ने सहसा डाक्टर की आखो की ओर क्षण भर के लिए देखा।

'क्या मात्र डाक्टर बनने से ही इतना सब ज्ञान आ जाता है ?'

'इसका मतलब यह हुआ उष्मा, कि डाक्टर को पढते समय प्रयोग के लिए एक बार तुरन्त जन्मे बालक का रूप धारण करना होता होगा, ठीक है न।'

हिमाशु को इतने जोर की हँसी आई कि वह कुछ नही बोल सका।

उष्मा ने बात बढाते हुए कहा . 'अथवा हरएक डाक्टर डिग्री प्राप्त करने से पहले निश्चित रूप से एक दो बालक का पिता हो जाता होगा ।'

इसी क्षण, पहले जैसे लहजे मे तथा उसी आवाज मे हिमांशु ने कहा, 'बताओ, क्या तुम्हारे दिमाग मे यह बात नही उतरती है ।'

'डाक्टर ! तुम्हारे बात करने का ढंग ऐसा है, जैसा कि अरंड के तेल का जुलाब । यह जुलाब का तेल सीधी तरह से गले से नीचे उतरना सम्भव नही है, इसको गले से उतारने के लिए चाय के कप मे घोलना आवश्यक है ।'

'चलो मेरी इस काम मे मदद करो ।'

उष्मा की कलई पकडकर डाक्टर जल्दी से उसे अपने केबिन मे ले गया । बेल बजाई, एक्स्टेन्शन से आर्डर दिया ट्रे लाओ ..जल्दी चाय और नास्ता ....

ट्रे आई ।

चाय पी ली गई । नास्ता खत्म हुआ ।

डाक्टर की अंगुलियाँ स्टेथस्कोप के साथ नाच रही थी.... ।

....और यकायक उष्मा को ध्यान आया । 'पिताजी को दवा देने का समय हो गया है ।'

'चलो मैं भी चलता हूँ । पिताजी की खबर पूछ आऊ ।'

डाक्टर भी उष्मा के साथ खडे हो गये ।

परन्तु केबिन म आते ही पता चला कि दवा तो लिजा ने दे दी है । थोडी देर पहले ही नीद से सोकर उठी लिजा इस समय मुह धोकर नेपकिन से चेहरा पूछ रही थी । डाक्टर को देखते ही बडे उमग भरे स्वर मे मधुसूदन ने कहा : 'वाह ! वाह ! डाक्टर तुमने तो गजब का चमत्कार कर डाला ।'

'कैसा चमत्कार' ?

'केवल दो दिन की दवा से ही एक दम आधा फायदा प्रतीत होने लगा है । रूमेटिजम्-सा हटीला रोग इतनी जल्दी समाप्त हो जायेगा, इसको कोई नहीं मान सकता है । चाहे तुम मानो या न मानो मैं सच कहता हू । यह हकीकत भी है कि घुटनो का दर्द तो मानो गायब ही हो गया है । तनिक देखो, पाँव बराबर सीधा किया जा सकता है ।'

इतना कहकर मधुसूदन कॉट पर से खडे हो गए । पर इस प्रकार जल्दी से खडे होने के कारण घुटनो मे हल्का-सा खटका हुआ । एक दर्द-पूर्ण सिसकार करके मधुसूदन को सिवाय बैठने के कुछ नही सूझा ।

डाक्टर हँसने लगे । घुटना देखकर बोले : 'चाचा जी, मेरे पास ऐसी कोई जादुई लकडी नहीं कि जिसे घुमाते ही दर्द गायब हो जाए ।' परन्तु मैं जो दवा

लिखदेता हू, उसको लगातार तीन माह तक लेने से अवश्य लाभ होगा, इसमे कोई शक नही।

'मधुसूदन उष्मा की ओर मुंह करके बोले 'यह सीख तो आपको इसे देनी चाहिए थी। इसने अभी केवल तीन ही खुराक ली है, किन्तु देखिए पुन फिट का दौरा अब तक नही पडा है।'

निर्मम स्पष्टता से उष्मा कहने लगी, मुझे किसी प्रकार की सीख की आवश्यकता नही है। पिताजी की तरह ही मैं अपनी दवा लेती रहूँगी···· यदि पितजी की इच्छा है तो मैं, आजीवन दवा पीती रहूँगी।

छि····! छि···· ! वेटा ! आजीवन दवा पीती रहेगी, ऐसी भगवान से क्यो प्रार्थना कर रही है ? मुझे भी जवरदस्ती तुझे ट्रीटमेन्ट दिलवाने से क्या फायदा ? यह तो मुझे डाक्टर साहब का चमत्कार का अनुभव हुआ इसलिए तेरे को इतना . !

'आप इसकी बात पर ध्यान मत दीजिए, बीच बचाव करते हुए हिमाशु ने कहा, 'ये जो चाहे बोलती रहे हम तो अपना काम करते रहना है।'

उष्मा को सम्बोधित करके हिमाशु ऐसे बोले, मानो मधुसूदन को वे उष्मा से अधिक आत्मीयजन मानते हो।

यही एक ऐसी बात है जो उष्मा के दिल मे शूल की भाति चुभन करती थी। वह डाक्टर के अतिसानिध्य के तीखे प्रहार को सहन करने मे असमर्थ थी। इसी असहनीयता के कारण वह डाक्टर से दूर रहने का प्रयास करती थी।

मनोभावो की गु जरित फूलमाला का परिधान पहिनकर लिजा स्वयम् ही डाक्टर के प्रति सानिध्य का अवसर प्राप्त कर चुकी थी।

लिजा को डाक्टर के साथ बातें करना अच्छा लगता था, किन्तु इस समय अवसर का लाभ उठाना सभव नही था। उसे डास के रिहर्सल के लिए डान्स कोर्ट मे जाना था।

डाक्टर को सम्बोधित करते हुए कुछ अधिकार पूर्ण शब्दो मे उसने कहा, 'रात मे उपस्थित रहना मत भूलना।'

'अरे वाह ! यदि तुम इन्वाइट नही भी करती तो भी मैं जरूर आता। लिजा की पलकें लज्जा से ढल गई।

उष्मा की ओर मुंह करके बोली, आप भी आना....जरूर आना...।' यदि हो सके तो अकल को भी साथ लाना।

'हा . वेटा ! तेरा डान्स देखने के लिए तो आना ही पडेगा।'

'अच्छा ! बॉई ! बॉई ! मैं भी मैना की खबर ले आऊ।' कहती हुई उष्मा, लिजा के पीछे ही बाहर निकल पडी।'

मैना को लिजा के केबिन मे ज्यादा दिन रहने देना किसी भी प्रकार सम्भव नही था ।

स्टीमर के बीच के भाग के अन्तिम कोने मे केन्टीन था । केन्टीन के नीचे एक बड़ा-सा कमरा था । इस कमरे को केन्टीन के गोदाम के रूप मे काम मे लाया जाता था ।

केप्टिन की आज्ञा लेकर डाक्टर ने इस गोदाम के एक कोने का कुछ हिस्सा खाली करवाया और मैना की खाट वहाँ लगा दी गई । खाट के आगे टाट का पर्दा लगा दिया गया ।

बगल मे बेंत के दो मोड़े रख दिये गये । एक मैना के नवजात शिशु के लिये तथा दूसरा मैना की सेवा टहल करने वाली के बैठने के लिए ·· ।

दिन मे उष्मा प्राय मैना के पास ही बैठी रहती थी । मैना बहुत बातूनी औरत थी पर कुछ दिनो से वह बहुत गम्भीर हो गई थी ।

श्वसुर की बातें करते हुए मैना को बहुत प्रसन्नता होती थी । श्वसुर की बातें करते हुए मैना का रोम रोम खिल जाता था । उसके प्रत्येक शब्द से मानो फूल बिखरते प्रतीत होते थे ।

मैना न जाने कितनी बातें करती थी ? घर की, श्वसुर की, पति की ·· जैसे जैसे दिन बीतते गये वह उष्मा के बहुत नजदीक आने लगी और पति-पत्नी के मध्य होने वाली गुप्त और न कहने वाली बातें भी उसने उष्मा को कहना शुरू कर दिया 'अभी हम लोगो की यह बिलकुल इच्छा नही थी ।'

'कौनसी इच्छा ?'

'इसकी !'

मैना ने मोढ़े पर सोये शिशु की ओर अगुली का सकेत किया ।

किसकी ? किसकी इच्छा नही थी ? अब भी कुछ समझ मे न आने से उष्मा बहुत आश्चर्य मे पड गई ।

झिझकते हुए, शर्माते हुए मैना लज्जित भाव से कहने लगी . 'उनका कहना था कि देश या विदेश मे जब तक हम लोगों के रहने का कोई ठिकाना नहीं, तब तक क्यो हम इस झझट मे पडे ?'

'झझट ? यह क्या कोई झझट है ?'

शिशु की ओर हसरत भरी निगाहो से देखते हुए, उष्मा की आवाज मे विस्मय झलक पड़ा ।

'बहिन, हमे झझट न लगे तो क्या, इस समय इस मुसीबत मे उन्हें तो झझट ही लगता है !'

परन्तु...।

आगे उष्मा को कुछ बोलते न बन पडने से वह बीच मे ही रुक गई ।

'फिर क्या ?' मैना खिलखिला कर हँस पडी बालक होगा ऐसी कोई धारणा नही थी, बहिन ! मुझे मासिक धर्म हुआ और वे किसी डाक्टर को पूछ आए । मूर्ख डाक्टर ने बिना सोचे समझे इनको गलत राय दे दी । डाक्टर ने कहा कि मासिक धर्म होने के बाद पहले दस दिन तक बालक रहना सम्भव है ... । इसके बाद बीच के दस दिन मे बालक रहना बिलकुल सम्भव नही । दस दिन बाद फिर महीने भरतक सभव है । डाक्टर की सलाह के बाद उन्होने बहुत सयम रखा । किन्तु डाक्टर ने जो ठीक कहा होता, इन बीच के दस दिनो मे एकबार....। मात्र एक ही बार ..और इसी मे गर्भ रह गया ।'

मैना ने पुन बालक की ओर सकेत किया किसको पता था कि अफ्रीका छोडकर इस प्रकार बीच मे ही भागना होगा और स्टीमर मे ही. .. ।

'यह भी क्या कोई अपने हाथ की बात है ।' उष्मा ने हँसी दबाते हुए कहा ।

'हाथ मे भले ही न हो, किन्तु स्टीमर मे ऐसी स्थिति मे आना पडे, इससे तो लज्जा आती है न बहिन । यह तो भगवान के समान ही दयालु डाक्टर स्टीमर म मिल गया, नही तो न जाने क्या हाल होता ?'

भगवान् के समान ही दयालु डाक्टर ।

इस अभिभावना का तो उष्मा कुछ विरोध कर सकती है ?

परन्तु डाक्टर की चर्चा एक ओर रखकर-इसके अलावा मैना की बातो में उसे अधिक आनन्द आ रहा था ।

इसी समय बेंत के मोढे मे सोया नवजात शिशु ऊवा-ऊवा करके रो पडा ।

उष्मा ने बालक को झट से गोदी मे उठा लिया 'देखो ! देखो ! इसके विषय मे चल रहे प्रसग के प्रति इसने कितनी अरुचि व्यक्त कर दी है? मालूम है, यह क्या कहता है ? इसके माता-पिता के मनोभावो को जानकर इसे बहुत दुःख हुआ है ।'

इतना कहकर उसने बालक को मैना की बगल म सुला दिया ।

मातृस्नेह उडेलती हुए मैना से बालक को छाती से चिपका लिया और उर्मिल स्वर मे कहने लगी . बहिन यह तो भगवान् का आगमन हुआ है । क्या बताऊ, मुझे इसके लिए कितनी तृष्णा थी ?डाक्टर ने जब सतति नियम का इलाज बताया तो मैंने मन ही मन उसको न जाने कितना भला बुरा कहा था ... । किन्तु जब भगवान् को ही मेरी गोद भरनी थी, तब उस बेचारे को क्या चल सकती थी ?

इतना कहकर मैना ने शिशु को प्यार किया।

चुम्बन की एक-एक आवाज के साथ-साथ उष्मा की छाती मे इस प्रकार की गुदगुदी होने लगी, मानो कली के समान कोई दो छोटे-छोटे नन्ने-नन्ने ओठ उसकी छाती पर ही चुच-चुच कर रहे हों।

सृष्टि मे अनजान - अपरिचित एक नवीन आत्मा का मुंह चूमते हुए मैना न जाने क्या-क्या प्राप्त कर रही थी ?

बोल्वीश उपसागर में स्टीमर धीरे-धीरे आगे बढ रहा था, किन्तु उष्मा की समग्र काया नवीन प्राणी के मुख-मण्डल पर स्थिर होकर डोल रही थी।

इस प्रकार मानो वह किसी शास्त्रीय संगीत मे ताल मिला रही हो।

किन्तु नवजात शिशु के तीव्र आक्राद मे किसी शास्त्रीय संगीत का लय नहीं था।

इस पर भी न जाने क्यों वह आक्रंद किसी शास्त्रीय संगीत की लय दे रहा था।

सागर का मंद गुंजान कुछ तेज हुआ।

इस स्थान से जबकि सागर दिखाई नही दे रहा था। गुंजन की ध्वनि मे न तो एक लय थी और न एक समानता थी। मात्र फिरके का एक मन्द कोलाहल....।

क्या उष्मा यहाँ नही है ?' डाक्टर ने आकर पूछा।

'नही।'

'पर उष्मा के पिताजी ने मुझे बताया था कि उष्मा तुम्हारे पास है।

'अभी थोड़ी देर पहले तो यहीं थी। किन्तु उसे न जाने क्या हुआ कि वह बिना कुछ बोले ही यहाँ से कहा चली गई है।'

'बिना कुछ कहे ही चली गई ? ऐसा क्यो ?'

'क्या पता ? मुझे खुद इस बात का आश्चर्य है।'

'क्या तबियत तो खराब नही हो गई है ?'

उसने कुछ भी नही बताया। मैं बातें कर रही थी 'कि उसका मुंह देखते देखते ही एक दम लाल सुर्ख हो गया। बिना कुछ कहे सुने ही वह बाहर भाग गई। मुझे उसने जल्दी ही लौटने को कहा था, किन्तु वह तो अब तक नहीं आई। ऐसा लगता है कि वह कहीं ऊपर चली गई होगी।

'तुम लोग किस प्रकार की बातें कर रही थी ?'

'बातें तो क्या, स्त्रियों की आम बातें। मैं अपने ससुराल और घर-बार की सब बातें कर रही थी—।'

'अच्छा, तो यह बात थी....।'

गले में लटकते हुए स्टेथेस्कोप की रिंग को अंगुली मे झुलाते हुए डाक्टर कुछ गहरे विचारो मे खो गए।

कल से उष्मा के व्यवहार मे कुछ विचित्रता-सी आ रही है....कुछ दिनो पहले का पूर्व उल्लास अभ्राच्छिदित चन्द्रमा की तरह पुन. गायब हो गया है। कल डाक्टर लिजा के आमन्त्रण के कारण उष्मा को थियेटर मे बुलवाने गये थे, किन्तु उसने थियेटर मे जाने से मना कर दिया था।

मधुसूदन ने लिजा को थियेटर में आने का वायदा किया था, परन्तु उष्मा के तैय्यार न होने के कारण उन्होंने भी जाना स्थगित कर दिया था।

वे मधुसूदन के केबिन में गए। मधुसूदन से यह मालूम होने पर कि उष्मा यहाँ है, वे मैना के केबिन की ओर चल दिये....।

काफी विचार करने के पश्चात् डाक्टर गम्भीर स्वर से बोले : 'मैना बहिन क्या आप मेरा एक काम करेंगी ?'

'काम ।' आपका ?' आश्चर्य मे डूबी मैना को मानो आश्चर्य प्रगट करने मे भी बडी व्याकुलता का अनुभव हो रहा था।

'हाँ....मेरा....।' ऐसा लगता है कि तुम मेरा काम कर सकती हो, इसीलिए तुम्हारी मदद माँग रहा हूँ।'

मैना की समझ मे कुछ नही आया, इसी कारण वह कुछ नही कह सकी। मात्र अपलक नेत्रो से डाक्टर की ओर देखती रही।

गम्भीर व शान्त स्वर मे डाक्टर ने कहा · 'जैसे तुम मेरी तीमारदारी मे हो, वैसे ही उष्मा भी मेरी तीमारदारी मे है।

'आपकी तिमारदारी मे ? तब उष्मा भी क्या बीमार है ?'

'हाँ....उसे हिस्टीरिया की बीमारी है। इसीलिए वह यहा से जल्दी भाग गई थी कि उसको हिस्टीरिया का दौरा पडने की सम्भावना होगी। बातो ही बातो मे शायद तुमने ऐसी बातें की होगी, कि उसके मन मे खलबली मच गई होगी।'

'ओह ! मुझे क्या पता था ? मैं तो सामान्य तौर पर अपने घर-गृहस्थी की बातें कर रही थी।'

'मेरे कहने का यह मतलब नही है कि तुमने कोई बुरा काम किया है। यदि वास्तव मे तुम्हारी बातो का ही उस पर ऐसा असर हुआ है, तो यह एक तरह से ठीक ही रहा....पर मैं तुमसे कुछ और ही कहना चाहता हू।'

'क्या ?'

'उष्मा मेरी तीमारदारी मे है, किन्तु मैं उसका इलाज कैसे करूं, यह मेरी समझ मे नही आ रहा है। क्योंकि उष्मा अपने दिल की कोई बात मुझे नही बताती है। मैना, तुम तो जानती हो कि हिस्टीरिया का रोग एक मानसिक रोग है। इस रोग का शरीर से कोई सम्बन्ध नही होता है, बल्कि मन के साथ होता है। अत. इस रोग से छुटकारा दिलवाने के लिए शरीर के इलाज के बजाय मन का इलाज करना आवश्यक है....परन्तु रोगी जब मन की बात ही न बताए तो भला डाक्टर क्या कर सकता है?'

मैना ने विचार किया कि डाक्टर इस कारण से उसकी सहायता चाहते हैं। ऐसा विचार मन मे आने से उसे अजीब आनन्द की अनुभूति होने लगी।

वह उत्साह से कहने लगी : 'कहावत है कि वैद्य और वैश्या के सामने कोई पर्दा नहीं होता है। डाक्टर के सामने सारी हकीकत कह देनी चाहिए।'

जल्दी मे मैना कह तो गई किन्तु वैश्या शब्द मुंह से अनायास निकल जाने का ख्याल आते ही वह कुछ लज्जित हो गई। वह अटकते हुये बात का रुख बदलने लगी : डाक्टर को यदि हकीकत कहने मे लज्जा आती हो तो लेडी डाक्टर को बताना चाहिए। परन्तु इस प्रकार मन की बात छिपाकर रखने से काम कैसे चल सकता है? इससे तो तबियत अधिक खराब ही होगी।'

'मैना की बात सुनकर डाक्टर को सहज ही हँसी आ गई : इस स्टीमर मे लेडी डाक्टर कहा से लाई जाए? देखो न तुम्हारे तो प्रसूति का प्रसग था, परन्तु तुम तो तनिक भी लज्जित नही हुई। इस प्रकार लजाने से तो जीवन जाने का भय बना रहता है। किन्तु तुम्हारे मे इस प्रकार के सोचने की शक्ति थी और इसलिए मुझे तुम्हारी तीमारदारी करने मे अनुकूलता मिल सकी। तुम्हारे सहयोग देने के कारण मुझे यश मिला। परन्तु उष्मा का स्वभाव तो कुछ विचित्र-सा है। वह न तो मेरी बात सुनती है और न मेरी बात मानती ही है। मैं नहीं समझ पा रहा हूं कि मैं क्या करूं?'

'यदि आपकी बात नही सुनती तो आपका क्या जाता है? यह तो आप के समान सज्जन व्यक्ति इतनी चिन्ता करते हैं, नहीं तो आपकी जगह कोई दूसरा होता तो उसे क्यो इतनी चिन्ता होती।' इसी कारण से सहज मे ही यह बात निकल गई कि स्टीमर मे तो डाक्टर ही मानो भगवान का अवतार होता है।

तुमने उष्मा के सामने ही ऐसा कहा था?

'हां ऐसा ही।'

उष्मा यह सुनकर क्या कहने लगी?

उसने भी यही कहा और कहती भी क्या ? उसने कहा था कि ऐसे भले और सदैव दूसरों के हित मे लीन डाक्टर मैंने कहीं नही देखा।

यह सुनकर डाक्टर जोर से खिल-खिलाकर हंसने लगे : 'मैना बहन यह तो सब ठीक है। यदि डाक्टर के प्रति तुम इतना सम्मान रखती हो तो एक एक काम तुम को करना ही होगा।'

साहब इसके लिए किसने मना किया है ? 'आप कहें तो . . . .। कृपया बताएँ कि मुझे क्या करना है।'

उष्मा के मन की बात तुम्हें जान लेना है।

मन की बात ?

हाँ . . .! किस कारण से उसके मन में जड़ता आ चुकी है ? किस छिपे दुःख की जलन मे वह मन ही मन जल रही है, यही जानने की सबसे अधिक जरूरत है। इससे भी अधिक इस बात की चिन्ता है कि किस कारण से उष्मा अपने मन की बात कहने मे हिचकिचाहट करती है। . . . डाक्टर, 'जब वह तुम्हारे सामने ही बात नही करती है तो मेरे सामने बात करेगी क्या ?'

इन दो तीन दिनो मे मैंने नोट किया है कि वह तुमसे खुलकर बात करती है। कुछ स्त्रिया ऐसी होती हैं, जो पुरुषो के सामने बातचीत करने मे हिचकिचाहट करती है। किन्तु ऐसी स्त्रिया, स्त्रियो के सामने खुलकर बात कर लेती हैं। यदि तुम उष्मा का विश्वाश प्राप्त करके उससे खुलकर उसके कुटुम्ब, घर, पति आदि के विषय मे एक एक करके बातें करना शुरू करो तो सम्भव है कि कभी न कभी अनायास ही ऐसी कोई बात निकल आयेगी, जिसको छिपाने के लिए वह हर सम्भव प्रयत्न कर रही हो . . . अपने अनुभव की तुमको एक बात बता देना हूँ कि जिस बात को हम हर सम्भव दबाने का प्रयास करते हैं, कदाचित अनायास मे वही बात निकल जाए तो इससे मन का बोझ हल्का हो जाता है तथा रोगी को अपने मानसिक रोग से छुटकारा मिल जाता है . . ! सभी रोगो मे ऐसा नही होता है, परन्तु कितने ही कैसो मे ऐसा देखने को जरूर मिलता है . . . . ! इस प्रकार उष्मा के आन्तरिक मन मे छिपी बात जान ली जाए तो सम्भव है उसको रोग से मुक्ति मिल जाय। इससे आशाभरी एक नवयुवती को रोगमुक्त करने का तुम कारण बनकर सदा के लिए उसे एहसानमन्द कर दोगी। मुझे भी डाक्टर होने के कारण यश मिलेगा तथा मेरी सहायता करने के कारण मैं तुम्हारा आभारी रहूँगा।

डाक्टर की बात सुनकर मैना बडी उलझन मे पड गई। एक ओर डाक्टर के गम्भीर व भावुक शब्दो से जहाँ वह डाक्टर की मदद को प्रोत्साहित हुई, वहाँ दूसरी ओर डाक्टर की विनम्र विनती के कारण वह लज्जा सागर मे

डूब गई। उसका बाह्य व आन्तरिक कलेवर क्षोभ व लज्जा से खलबला उठा।

मुंह पर पालव डालकर, नीची पलकें किये मैना बोली : 'आभार प्रदर्शन करने की इसमें कौनसी बात है ? आपके कथनानुसार, मैं उष्मा के मन की थाह लेने का प्रयास करूंगी। अब की बार जब वह आयेगी तब ही, मैं इधर-उधर की बातें करके उसके मन की बात जानने की कोशिश करूंगी। तुम देखना 'मैं उसके मन की बात जरूर जान लूंगी।'

चुप रहकर मैना बोली : डाक्टर साहब, आप ऐसा कीजिये, मैं कल अपनी तबियत खराब होने का बहाना करुंगी और आप उष्मा को मेरे पास रहने को कह दीजियेगा। इसके बाद देखना कि बातो मे लगाकर मैं सभी बातें एक एक कर उससे निकलवा लेती हूं या नही ? आप चाहें तो स्वयम पर्दे की ओट मे खडे होकर सब कुछ सुन सकते हैं।

डाक्टर अपनी हंसी नही रोक सके और बोले : इतनी जल्दी करने की कोई जरूरत नही है। साथ ही उष्मा इतनी भोली लड़की नहीं है, कि एक दिन मे ही सारी मनोव्यथा कह दे। इसके लिए तुम्हें पहले उष्मा को अपने विश्वास मे लेना होगा। पहले तुम अपने ससुराल की बातें करना। सच्ची झूठी जैसे भी अच्छी लगे वैसी ही....शायद इतनी बातें न हो तो कपोल कल्पित बातें बनाकर भी तुम्हे बातें करते रहना चाहिए . . .। कपोल कल्पित बातें बनाने से पहले तुम्हे यह भली भांती जान लेना चाहिए कि किन बातो मे उष्मा को रुचि है तथा कौनसी बातो से उसे अरूचि है। यदि पुरुष जाति की प्रशंसा उसे अच्छी लगती हो तो उससे पुरुष जाति की प्रशसा : सुनाना, किन्तु इसके विपरीत उसे पुरुष जाति की बुराई सुनने मे आनंद आता हो तो पुरुष जाति की बुराई करने मे तुमको कोई कमी नही रखना चाहिए। समझी ? आवश्यक्ता समझो तो तुम अपने पति की भी बुराई करने मे भी कमी मत रखना, यह याद रहे ? यही नही डाक्टर को भगवान के समान बतलाने की अपेक्षा उसकी आलोचना भी करनो पड़े तो इसमे तनिक भी मत हिचकिचाना....जैसे भी हो यह अवश्य मालूम कर लो कि मन पर गुप्त वेदना का जो पहाड अडिग होकर खड़ा है, उसके नीचे के खोखले पन में क्या भरा हुआ है।'

डाक्टर की बात और लम्बी होती'''' किन्तु इसी समय नीचे के हिस्से मे रहने वाले दो तीन पेसेन्जरो के कै करने की आवाज शांत हवा मे गूंज उठी। कै की बू मैना के केबिन तक आ रही थी।

सी-सिकनेस से पीड़ित पेसेन्जरों को मुक्त करवाने के उद्देश्य से डाक्टर एकदम जहाज के नीचे के हिस्से की ओर चल दिये।

उस दिन उष्मा मैना के पास बिलकुल नहीं आई।

किन्तु दूसरे दिन सुबह जल्दी ही आ गई।

डाक्टर साहब ने मैना के कंधों पर जो भारी बोझ डाल दिया था उसको पूरा करने में अब वह देरी नहीं करना चाहती थी।

अतएव इधर उधर की चर्चा करके वह उष्मा को अपने ससुराल की बातों पर ले आई। मैना ने अनुभव किया कि उष्मा को अपने ससुराल की बातों में कोई रुचि नहीं है।

यही नहीं मैना ने यह भी देखा की उष्मा अपने पति के सम्बन्ध की बात को टाल जाती है।

पर मैना बात का रुख क्यों बदलने देती ?

उसने अपने पति के सम्बन्ध में बातें करना शुरू किया और फिर यकायक पूछा, 'उष्मा, पति की बात आते ही तू ऊबती क्यों है ?'

'ऊब ?'

'नहीं तो ? नई-नई दुलहन अपने पति के सम्बन्ध में बात करते हुए कभी नहीं थकती है। इसके विपरीत तुम्हें मेरी प्रत्येक बात से ऊब होती है। तुम्हारी गंगा उल्टी बह रही है। मैं तो तुम्हारे पति के बारे में बातें सुनना चाहती हूँ, जबकि तू पति की बात आते ही ऐसा मुंह बिगाड़ लेती है, मानो हम किसी गैर पुरुष की बात कर रही हो।'

यह सीधा और सपाट निशाना ठीक मर्मस्थल पर लगा ...।

उष्मा का मुंह एकदम लाल सुर्ख हो गया।

उष्मा को कदाचित अपनी स्थिति का एकदम ख्याल आ गया। इसलिए बिना एक क्षण नष्ट किए अपनी व्याकुलता को कृत्रिम स्वस्थता के बिम्ब में ढालने का प्रयत्न करते हुए जल्दी से कहने लगी, 'मैना बहिन, पति की बातों के सिवाय भी कई अन्य बातें हो सकती हैं। रात-दिन केवल एक ही आफत की क्या चर्चा करना ?'

'पति की बात करना भी क्या कोई आफत है ?'

'नहीं तो ? सदैव ही पति के विषय में बातें करने वाली लड़कियां दूसरों की नजर में भले ही अच्छी लगती हों, पर मैं तो उनको पागल की संज्ञा ही दूंगी।'

'यदि ऐसी बात है' तो बहिन मेरा नाम भी तुम्हें अपनी लिस्ट में लिखना पड़ेगा।'

मैना बरबस ही हँसने लगी।

'जरूर अपनी लिस्ट में तुम्हारा नाम लिख देती पर इस समय तो मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि तुम उन पागलों में से एक पागल नहीं हो, अपितु मेरे लिए ही तुम पागल बन रही हो ?'

'तुम्हारे लिये ?'

'हाँ, । मुझे ऐसा शक होता है कि आज तुमने जिस अधीरता और उत्कठा से पति के विषय में चर्चा की है, इससे पहले तुमने इतनी उत्कठा और अधीरता से पति के सम्बन्ध मे बात नही की । बैन्जुएला मे भी हम लोग कई बार मिल चुके हैं, पर उस समय भी तुमने इतनी व्यग्रता से, पति के सम्बन्ध मे बात नही की और इसीसे मुझे शक होता है कि—'

'तो बताओ ! मेरी बहन ! शक भला किस बात का ? यह तो मैं वैसे ही पूछ रही हू .. । वैसे ही क्या ऐसी बात पूछने को जी नही चाहता है ? यह तो मुझे लगा कि—'

'क्या लगा तुम्हे ?'

मैना को बगल झाकते हुये देखकर उष्मा अपनी हँसी नही रोक सकी : 'देखो, चोरी पकड ली गई, इसलिए तुम एकदम घबरा गई ।'

'तो बहन ! मैंने तो किसी प्रकार की चोरी नहीं की है ।'

'कौन कहता है कि तुमने चोरी की है ? तुमने तो किसी दूसरे के इशारे पर ही ऐसा किया है ?'

'उष्मा की बात सुनकर मैना का अतीव प्रफुल्लित चेहरा एकदम उतर गया । वह रुक-रुक कर कहने लगी · मैंने....मैंने किसी के कहने से अपना कर्त्तव्य निभाया है, यह कैसे ?'

'बिल्कुल ठीक ... । किसने कहा है, यह भी मैं बता सकती हूँ ।

'तब फिर बताओ तो ।'

'क्या इनाम दोगी ,'

'जो तुम कहोगी ।'

'तब वायदा करो ।'

इतनी बात सुनकर मैना मानो कुछ खो बैठी और मन्द-मन्द मुस्कराते हुए अपने आप को सभाल सकी । उसने उष्मा की तरफ अपना हाथ लम्बा किया ।

मैना का हाथ पकडते हुए उष्मा ने कहा : 'तुम्हें डाक्टर ने ऐसा कहा है कि उष्मा से उसके मन की बात मालूम करना । क्यो मैं गलत तो नही कह रही हूँ ?'

मैना, उष्मा की बात सुनकर आश्चर्य चकित होकर आंखें फाडकर देखने लगी ।

होठों पर मन्द मुस्कान लाते हुए उष्मा ने कहा, 'इसके बिना इतना जोर देकर तुम मुझसे ऐसी बातें क्योंकर पूछती बहन ?'

मैना के पास अब बोलने को कुछ नही था ।

उसका फीका मुंह देखकर उष्मा को बडी प्रसन्नता हुई। वह बोली : 'यह तुम सोचती हो कि मैंने कैसे यह सब जान लिया ? परन्तु मैना बहन, मैं जानती हू कि डाक्टर ऐसे कुछ उपाय किये बिना नही रह सकते ?'

'डाक्टर तो बहुत ही भले हैं, बहन ! उनका क्या स्वार्थ है कि—'

'मैं कब कहती हूँ कि उनका स्वार्थ है ?'

'तब फिर ?'

'फिर क्या ? जिस समय से स्टीमर मे चढी हू, तब से ही उन्होंने मेरा केस हाथ मे ले लिया है। मान न मान, मैं तेरा मेहमान। ऐसा ही डाक्टर ने किया है। डाक्टर को रोगी की इच्छा भी देखनी चाहिए या नही। मैं जब अपने आप को रोगी ही नही मानती, तब मेरे रोग के लिए इतनी अधिक चिन्ता क्यो की जाए ?

'डाक्टर का तो कर्त्तव्य होता है.......'

'कर्त्तव्य जाये भाड मे। मैं डाक्टर को साफ साफ कह दूगी।'

'क्या कह दोगी ?'

अपने पिताजी की तसल्ली के लिये मैं दवा पी रही हूँ। परन्तु यदि डाक्टर ने मेरा पीछा नही छोडा तो मैं उसकी दवा की बोतलो को समुद्र मे फेंक दूगी।

'बहन, तुम्हे जो करना हो वह करना, पर डाक्टर के सामने कम से कम मेरा नाम तो मत लेना।'

'तुम्हरा नाम इसमें क्यो आयेगा भला ?'

'यह कि डाक्टर ने मुझे तुम्हारे मन की बात जानने का काम सौंपा था.... यह बात मैंने तुम्हे भी कह दी है।'

'भला तुमने मुझे यह कब बताया। मैं तो खुद ही इस बात को जान गई हूँ।'

'तुम बहुत होशियार हो, बहन ! बात का कुछ भी पता नही और स्वयम् ही सारी बात जान गई। पर मुझे तो लेने के देने पड गये। मुझे डाक्टर के सामने लज्जित होना पडेगा। डाक्टर कहेगे कि एक इतना सरल काम भी तुमसे नही हो सका।'

मैना ने जिस उमग व उत्साह से अपने कधे पर जिम्मेदारी ली थी, उस जिम्मेदारी के लिये वह कुछ कर सकने मे असमर्थ थी, ऐसा भान होने से वह बहुत क्षुब्ध हो गई। अब उसकी घिग्घी बध गई थी।

उष्मा उसकी परेशानी पर सहानुभूति दिखाने की अपेक्षा बडी निष्ठुरता से हँस रही थी। उष्मा ने हँसते हुए कहा : 'तुमने मुझे वचन दिया है कि मैं जो चाहूगी वह तुम दोगी।'

मैना बहन ! तुम मुझे वचन दो कि भविष्य मे यदि डाक्टर तुम्हें ऐसा कोई काम बताये तो मेरे सामने इस प्रकार की बातो की चर्चा मत करना ।

'किस बात की चर्चा ?'

'यही....जिसकी चर्चा तुमने अभी किसी कारण से शुरू की थी । बस मैं तुमसे इतना ही मागती हू, मैना बहन ! इसके सिवाय मुझे कुछ भी नही चाहिये ।'

इतना कहकर अतीव हर्ष मे प्रफुल्लित हुई उष्मा, एकदम गहरी सासे लेने लगी ।

उसका गोरा मुखारविन्द एकदम सावन के शशि के समान मलीन हो गया ।

इस प्रकार के गहरे विश्वास के कारण मैना भी उष्मा के साथ गहरे श्वास लेने लगी ।

इस अजीबोगरीब लडकी के विचित्र व्यवहार का गहन रहस्य उसकी समझ मे नही आ रहा था ।

उष्मा को अब अपनी बात मैना को समझाने की कतई उत्सुकता नहीं थी ।

कमरे मे बहुत देर तक नीरव शांति रही । कुछ समय बाद मैना के बच्चे ने कुछ हल-चल की और उष्मा ने उठकर बालक को जल्दी से गोदी मे ले लिया ।

बालक को माँ को सौंपने की अपेक्षा वह स्वयम् ही उसे खिलाने लगी ।

इसी समय यकायक स्टीमर की व्हिसिल बजी ।

चारो ओर एक घोर शखनाद की गूंज सुनाई देने लगी ।

क्षण . दो क्षण .. इसी प्रकार क्षणो को पार करता हुआ स्टीमर का शखनाद पूरे एक मिनट तक गूंजता रहा ।

यकायक अन्दर से कोई झटका लगा हो, इसी प्रकार उष्मा ने जल्दी से बालक को माँ की बगल मे सुला दिया ।

'बहन, मैं जा रही हू.... 'कहते हुए एक ही क्षण मे वह दरवाजा लाघ गई ।'

ताज्जुब मे डूबी मैना आखें फाडती हुई दरवाजे की तरफ देखती रही ।

परन्तु उसको आश्चर्य व ताज्जुब के चक्र में डाल गई, उष्मा के अजब-गजब व्यवहार के गहन रहस्य का उत्तर दरवाजे में नहीं था....।

कुछ ही देर में डाक्टर जल्दी-जल्दी मैना के केबिन मे आये और पूछने लगे : 'क्या मैना बहन, यहाँ उष्मा आई थी ?'

'हाँ....। थोडी देर पहले वह यही थी ।'

'क्या कोई ऐसी-वैसी बात यहाँ हुई थी, जिससे उसको किसी प्रकार का आघात लगे ?'

'कैसे ?'

'उसे फिर हिस्टीरिया का दौरा पडा है । वह इस समय अपने केबिन मे बेहोश पड़ी है ।'

'मुझे भी कुछ ऐसा ही लगा था कि उसको हिस्टीरिया का दौरा पड़ा होगा ।'

'तुम्हे ऐसा कैसे लगा ?'

'वह यहाँ से एकदम दौडी थी ।'

'क्या ऐसी कोई बात या ऐसी कोई चर्चा चली थी ?'

'चर्चा मे तो, आपने जैसा मुझसे कहा था, उसी मुताबिक मैंने उसको पूछना शुरू किया था, इतना ही - दूसरी कोई बात नहीं हुई ।'

कुछ झेंपते हुए मैना अटकते-अटकते हुए बोली : 'परन्तु इस प्रकार की चर्चा के बाद तो वह बहुत देर तक यहाँ बैठी रही थी । उसने बहुत देर तक दूसरी बातें की थीं ।

'क्या बातें कर रही थी ?'

'कोई विशेष बात तो वह नही कर रही थी, किन्तु इतना अवश्य कह रही थी कि उसे पति या ससुराल की बातें अच्छी नही लगती हैं ।'

'तुमने क्या सबसे पहले इस प्रकार की ही बात शुरू की थी । 'डाक्टर के मुख-मण्डल पर हास्य की रेखाएं उभरती देखकर मैना ने अपनी खोई हुई हिम्मत को पुन प्राप्त किया तथा कहने लगी : 'नही साहब मैंने सीधे रूप में बात नही की थी, किन्तु कुछ इधर-उधर की बातें करके जैसे ही उसके पति के विषय में मैंने कुछ पूछना चाहा कि वह एकदम व्याकुल हो गई और कहने लगी । यह सब पूछने को तुम्हें डाक्टर साहब ने ही सिखाया है । तुम व्यर्थ मे ऐसी पचायत मे नहीं पडने वाली हो और न तुम्हे ऐसी पंचायत का बोध हो सकता है ।'

'वाह ! तब तो हमारी कलई खुल गई ।'

डाक्टर एकदम खिलखिला कर हँस पडे ।

'सिर पीट कर बोले : 'तब अब कोई अन्य मार्ग ढूंढना पडेगा । भविष्य मे अब तुम उष्मा से इस विषय पर बात मत करना ।'

'नहीं, साहब । इस सम्बन्ध में या किसी दूसरे विषय में मेरे को भला क्या बात करने की जरूरत है ? यह तो ऐसी बात थी कि उसका रोग ठीक हो जाये···· · आपको यश मिले···· और····।'

'···· और तुमको भी यश मिले । किन्तु अपना यह ख्याल एकदम गलत रहा, मैना बहन ! यह लडकी किसी को इतनी शीघ्रता से यश का अधिकारी बना दे, ऐसी नही है । इसकी माया बडी अजीब है । इसके मन की थाह पाना आसान नही है ।'

'वैसे दूसरी बातो मे तो यह एकदम सीधी है, लेकिन कितनी गभीर भी है । पर न जाने क्यो—इस एक बात मे—

'इस एक बात मे वह गुस्सा हो जाती है, इसका कारण यह है कि गभीर है । हाँ, वैसे तो उष्मा सभी प्रकार से गभीर है और इसी कारण अपनी मनोव्यथा मन ही मन मे दबाए चुपचाप जलती रहती है । मन की बात को बाहर न निकालने के कारण ही तो उसको हिस्टीरिया का रोग लगा है । यदि गभीर नही होती तो हिस्टीरिया का रोग बजाय उष्मा के, उसके ससुराल वालो को लगा होता, समझी ?'

सोचती तो मैं भी यही हूँ साहब ! 'कहा जाता है कि हिस्टीरिया की शुरूआत मनोव्यथा से होती है । वैसे बाहर से सभी प्रकार से सुखी प्रतीत होने वाली लडकी को ऐसी कौन-सी मानसिक व्यथा हो सकती है कि जिसके कारण न तो जबान ही खोलती है और न उपचार ही करवाती है ।'

'यह सिर्फ अपने अभिमान के कारण ही ।'

'अभिमान ?'

'हाँ, यह भी एक प्रकार की ग्रन्थि है, जिससे वह पीडित है । यह ग्रन्थि मन के गूढ स्तर से नहीं छूटती है । किन्तु तुम्हारी समझ मे यह बात नही आ सकती है । इसका पता तो मैं इन कुछ दिनो मे जो कि मेरे पास उपलब्ध है, लगा सकू गा । मैं उस अचेतन मन की ग्रन्थि को अवश्य ज्ञात कर लू गा । किन्तु तुमको मैं यह स्पष्ट बता देना चाहता हूँ कि भविष्य म तुम इस विषय पर किसी प्रकार की चर्चा मत करना । इस पर भी इस काम के लिए यदि मैं कोई दूसरा काम तुम्हे सौंपू तो तुम्हें मेरी मदद अवश्य करनी होगी ।

डाक्टर साहब ! भला 'मैं आपको किसी काम के लिए मना कैसे कर सकती हूँ । आप जैसा कहेंगे, मैं वैसा ही करू गी । पर अब उष्मा के साथ बहुत सोच-विचार कर व्यवहार करने की आवश्यकता है । क्षणमात्र मे वह सब कुछ समझ जाती है । एक बार किसी बात की जिद्द कर ले तो उसका पीछा नही छोड़ती है ।'

'हम उसे जिद्द करने का अवसर ही नही देंगे।'

डाक्टर ने सिगरेट जलाई और सिगरेट के धुए के छल्ले बनाता हुआ कुछ सोचते हुए कहने लगा 'हाँ, एक बात बताओ, उष्मा जब यहाँ से भागकर गई थी, उस समय क्या बात चल रही थी ? या फिर वह कौन-सी बात थी कि वह यहाँ से यकायक भागी और जाकर बेहोश हो गई।'

'मैंने आपको पहले ही बताया था कि ऐसी कोई बात नही चल रही थी। यकायक स्टीमर ने सीटी बजाई और वह बालक को मेरे पास सुलाकर अपनी कनपटी दबाने लगी। सीटी की आवाज सुनकर उसकी कनपटियो मे मानो कोई भयकर दर्द हो रहा था। सीटी बजती रही और वह भाग खडी हुई।

'ओह ! सीटी की आवाज—'

'हाँ, साहब ! अब मुझे याद आया कि कल भी वह सीटी की आवाज सुनकर इसी प्रकार भागी थी। अब मुझे ठीक से याद आ रहा है।'

'कल भी सीटी की आवाज सुनकर भागी थी ?'

डाक्टर के ओठो मे दबी सिगरेट एक बार तेजी से चमकी।

इसके साथ ही उसकी आखो मे एक स्पष्ट चमक आ गई स्टीमर की सीटी की आवाज—।

'हाँ, साहब ! सीटी बजते ही इसके दिमाग का सन्तुलन बिगड गया था।

डाक्टर ने चुटकी बजाकर सिगरेट की राख झाडी, और बिना कुछ बोले वहाँ से चले गये।

oo

मधुसूदन की केबिन मे आकर डाक्टर ने देखा कि उष्मा होश में आ चुकी थी।

आखो मे जगमगाती रक्तिमा डाक्टर के तीखेपन मे बदल गई। डाक्टर को देखते ही उसने मु ह फेर लिया।

अभी तक वह पूर्ण स्वस्थ नही हो सकी थी।

मधुसूदन भी स्वस्थ कहाँ थे ?

डाक्टर को देखते ही मधुसूदन बोले . 'साहब यह तो फिर से जहाँ की तहाँ आ गई।'

डाक्टर ने हँसते हुए कहा · 'यह ब्रह्माण्ड भी तो घूम-फिरकर अपने स्थान पर आता है तब फिर हम लोग तो इस ब्रह्माण्ड के सामान्य प्राणी हैं। हम सृष्टि के नियम के विपरीत कैसे चल सकते हैं ?'

मधुसूदन यह नही समझ सके कि डाक्टर हँसी मे बात कर रहे हैं या व्यग मे ।

'आप चिन्ता न करें 'मैं दवा भिजवाता हूं ।' इतना कहकर डाक्टर वहाँ से चल दिये ।

परन्तु जाने के बाद अपने वायदे के अनुसार डाक्टर ने दवा नही भिजवाई ।

मधुसूदन ने दो तीन बार कहा 'तनिक बेटी जा तो सही कही, डाक्टर दवा भिजवाना भूल तो नही गये हैं ?

परन्तु उष्मा नही गई ।

दोपहर म जब खाना आया तो मधुसूदन ने डाक्टर के केबिन मे एक नजर डाली ।

परन्तु केबिन इस समय बन्द था ।

शाम तक डाक्टर के दर्शन नही हुए ।

शाम की केपटाऊन के बन्दरगाह पर जहाज दो तीन घटो के लिये ठहरने वाला था ।

दूर से नौनिवेश का झडा दिखाई देते ही स्टीमर की बुलन्द व्हिसिल गू जी । थोडी देर म डाक्टर मधुसूदन की केबिन में आये । देखा, तो जैसा सोचा था वैसे ही मधुसूदन के केबिन मे उष्मा बेहोश पडी थी ।

'उष्मा सो रही है या इसे पुन दौरा पडा है ?'

मधुसूदन ने डाक्टर की बात का रोते हुए उत्तर दिया 'इस समय नीद कैसी, डाक्टर साहब ! अभी सीटी बजी और इसके साथ ही यह आखें मू द कर लेट गई । मालूम होता है इसे दौरा पड गया है ।'

डाक्टर ने उष्मा की नाडी देखी । पलकें ऊची करके आखें देखी । इसके बाद स्टेथेस्कोप की रिंग गोल-गोल घुमाते हुये किसी विचार मे खो गये ।

एक दो मिनट मे पुन सचेत हो गये।

'व्हिसिल की आवाज सुनते ही लेट गई, क्यो ठीक है न ?'

'हाँ.... '

'पहले भी क्या व्हिसिल बजने के साथ ही दौरा पड गया था, क्या आप इस विषय में कुछ बता सकते हैं ?'

'ऐसा तो कुछ नही साहब ! पर सम्भव है कि शायद स्टीमर की व्हिसिल बजी हो और इसे दौरा पड गया हो । दोनों बातें अकस्मात ही एक साथ हो गई हो । पर ऐसे ही इसे वेन्जुएला मे दौरे पड जाते थे और बम्बई मे भी...।'

'हां ...! वेन्जुएला की बात वेन्जुएला मे रही और बबई की बात बम्बई मे । स्टीमर की यात्रा जब से शुरू की है, इस मध्य की बात करनी है ।

'हिमांशु ने अपनी बात इतनी गम्भीरता से कही कि मधुसूदन को एकदम आश्चर्य हुआ। कुछ व्याकुल होकर कहने लगे : 'स्टीमर मे यह चौथा या पाचवा हमला हुआ है। हर बार व्हिसिल की आवाज से हो ऐसा हुआ हो, ऐसा नही कहा जा सकता है।'

'यात्रा की शुरूआत में पहला हमला स्टीमर में हुआ था, उस समय क्या व्हिसिल बजी थी, आपको कुछ याद है ?'

'ऐसा याद तो नही आता, किन्तु शायद बजी हो।'

'हूं...यह तो ठीक है। अब सबसे पहले हमे यही ज्ञात करना होगा कि—

'व्हिसिल की आवाज और हिस्टीरिया के दौरे मे क्या परस्पर कोई सम्बन्ध है ?'

'किन्तु स्टीमर मे तो व्हिसिल कई बार बजती होगी। इस प्रकार हर समय तो दौरा नही पड सकता है।'

'सम्भव है कि आपके सामने शायद ऐसी बात नहीं आई हो। दौरा तो पड़ता ही होगा, किन्तु उष्मा इतनी सयानी लडकी है कि दौरे का अनुभव कदाचित् नीद मे ही दिखलाती होगी। व्हिसिल की आवाज के साथ ही कॉट पर सो जाती होगी। आप सोचते होंगे कि सो रही होगी, जबकि वह हिस्टीरिया के दौरे से बेहोश होगी।'

डाक्टर की बात सुनकर मधुसूदन एकदम चौंक गये।

'व्हिसिल की आवाज से हिस्टीरिया का दौरा ? आप यह क्या कह रहे हैं, साहब ?'

'पूरी तरह से इस बात की जाच किये बिना ऐसा मैं निश्चय पूर्वक नही कह सकता, पर गत दो दिनो के हमलो के कारण मुझे ऐसा सन्देह हुआ है। उष्मा के हिस्टीरिया का व्हिसिल के साथ कुछ सम्बन्ध अवश्य प्रतीत होता है।'

'ओह भगवान् !'

मधुसूदन के ललाट पर पसीने की बूंदें दिखाई देने लगी।

'आपको घबराने की आवश्यकता नही है। यदि मेरा अनुमान सही है, तो हमे सतोष की श्वास लेनी चाहिये। यदि किसी मनोग्रन्थि का पता मिल जाये तो यह हमारा सौभाग्य ही होगा।'

'यदि व्हिसिल के साथ इस बात का कुछ सम्बन्ध हो तब—'

'रोग का उपचार सरल हो जायेगा। चाचाजी आप विश्वास रखें कि जब आपने अपनी लाडली के उपचार का भार विश्वास पूर्वक मेरे ऊपर सौंपा है, तो मैं आपके विश्वास को सार्थक किये बिना नही रहूंगा।'

'आप न भी कहे तो भी मैं, इसे समझता हूँ। आपकी भलाई का वास्तव म कोई पार नही है। परन्तु मेरी यह लाडली आपके किसी भी उपचार को कारगार नही होने देनी है। मात्र जड-सी है। किसी बात को समझती ही नहीं।

चाचा जी ! 'रोगी पर गुस्सा करने से कोई लाभ नही।'

मधुसूदन के साथ ही डाक्टर भी उप्मा की ढली हुई काया पर नजर डालते हुये मुस्कराकर कहने लगे 'रोगी आखिर रोगी ही है। रोगी सदैव सहानुभूति का पात्र होता है गुस्से का नही। गुस्सा करने से कोई उपचार कारगार नही हो सकता है। इसके विपरीत सहानुभूति से ज्यादा नही तो तनिक लाभ की सम्भावना अवश्य रहती है।

मधुसूदन ने अपने दोनो हाथो से अपना सिर पकड लिया। डाक्टर ने कहा

'जिस समय मैंने उप्मा का केस हाथ म लिया था, उस समय भी, मैं इस मुश्किल को जानता था। निराश होने की अपेक्षा मुझमे उत्साह का सचार हुआ है। यदि सच कहा जाये तो ऐसे रोग मे ही डाक्टर की कसौटी होती है। इस कसौटी मे खरे उतरने वाले को ही डाक्टर कहलाने का सच्चा अधिकार है। बाकी पल्स देखकर दवा तो आजकल कम्पाउन्डर भी लिख सकते हैं।

डाक्टर के चेहरे पर चमकता हुआ तज प्रकाश आज स पहले मधुसूदन ने कभी नही देखा था।

डाक्टर बहुत देर तक शय्या पर सो रही उप्मा को देखते रह।

थोडी देर म मधुसूदन की ओर मु ह करके बोले 'इसे स्मेईलिंग सॉल्ट सुघाकर होश म लाने की कोई आवश्यकता नही है। थोडी देर म खुद ही होश म आ जायेगी। इतना कहकर वह बाहर चले गये।

किन्तु कोरीडोर का आधा मार्ग पार करने पर उनको कुछ याद आया और वे लौट पडे और बोल 'आपको एक काम करना होगा।'

'कल रात लिजा का डान्स है। उप्मा के साथ आप भी आना।' यदि उप्मा डान्स देखने के लिए मना करे, तो भी उस समझा बुझाकर ले आना।'

'विचित्र लडकी है। डान्स देखन के लिय उसे साथ लेकर आना, क्योंकि डान्स के बीच म मैं, किसी बहाने से उसे ले जाऊ गा। आप थियटर मे ही बैठे रहना।'

बिना कुछ समझे मधुसूदन ने पूछा 'मुझे क्या करना होगा ?'

'आपको कुछ भी नही करना है। डाक्टर खिलखिला कर हँस पडे। 'आप डान्स देखना और जब डान्स खत्म हो जाये तो मेरे केबिन म आकर मेरी

कॉट पर सो जाना।'

'आपकी केबिन में ?'

'हाँ, कल रात, मैं उष्मा के साथ बिताना चाहता हूँ।'

बिना किसी हिचकिचाहट के स्वस्थता से डाक्टर ने कहा 'मुझे इसके साथ लम्बे समय तक एकान्त में रहना पड़ेगा। उष्मा को कुछ परेशान भी करना होगा। जिस रहस्य को उष्मा ने अपने मन की गाँठ में बान्ध रखा है, उससे उष्मा को होने वाली हानि से बचाने के लिये मुझे अपने तरीके से उस गाँठ को खुलवाने का प्रयास करना होगा ...पर इससे, उसे किसी प्रकार का दुःख नहीं होगा। आप व्यर्थ की चिन्ता मत करियेगा।'

'नहीं साहब ! आप जैसे देवतुल्य डाक्टर के हाथों में अपनी बेटी को सौंपकर, मैं चिन्ता-फिकर करूँ, इतना तो बेवकूफ नहीं हूँ।

मधुसूदन के चेहरे पर संतोष का भाव था उन्होंने कहा 'उपचार करते समय रोगी को कुछ तकलीफ भी हो सकती है, लेकिन चिन्ता की बात नहीं है, क्योंकि वह तकलीफ उसके अच्छे के लिये ही है।' मधुसूदन ने कहा 'आप निश्चिन्त होकर उपचार कीजियेगा।'

'इसके अलावा एक बात और है।'

'वह क्या ?'

'अब जब व्हिसिल बजे, तब आप विशेष ध्यान रखियेगा।'

'आप नहीं कहते, तो भी मैं इसका ध्यान अवश्य रखता।

'नहीं, ऐसा नहीं है। आज रात्रि में बार-बार व्हिसिल बजेंगे। एक के बाद दूसरे तथा दूसरे के बाद तीसरे। व्हिसिल का उष्मा पर क्या प्रभाव पड़ता है, यह आपको विशेष रूप से मार्क करना है।'

'ओह ! तब तो मात्र निदान के लिए ही व्हिसिल बार-बार बजाये जायेंगे, यही बात है ना ?'

'हाँ....'

'परन्तु इस प्रकार बार-बार व्हिसिल बजने से उष्मा की जो स्थिति होगी, उसे देखकर मेरी हालत खराब हो जायेगी।'

'मधुसूदन की बात सुनकर डाक्टर को एक ओर हँसी आई तो दूसरी ओर उनकी हालत पर तरस भी आया।'

मधुसूदन ने कहा 'आप स्वयम् उस समय उपस्थित रहे तो बहुत अच्छा रहेगा, डाक्टर साहब ! एक ओर उसे दौरे पड़ेंगे तथा दूसरी ओर मेरे पाँव काँपने लगेंगे।'

'ठीक है। तब मैं ही आ जाऊंगा''''तब हम एक दूसरा काम करें।'

'बताइये ?'

'आप उस समय केबिन मे मत रहना। यद्यपि आज डान्स नही है, परन्तु आप हवाखोरी के बहाने से डेक पर चले जाना और डेक पर घूमकर मेरे केबिन मे जाकर सो जाना।'

'ठीक है आज से ही ट्रीटमेन्ट शुरू हो करना हो तो कल का क्या काम ? शुभस्य शीघ्रम। रात आप समय पर आ जाना।'

'रात का खाना आज आपके ही साथ होगा।'

मधुसूदन के उत्तर की राह देखे बिना, डाक्टर जल्दी से कमरे से निकल गये।

ठीक इसी समय उष्मा होश मे आ गई।

००

रात का भोजन पूरा करके मधुसूदन अपने केबिन से बाहर जाने का बहाना ढूंढने लगे।

पाच दस मिनट तक सिर खुजाने रहे। वे उष्मा का म्लान मुख देखकर परेशान हो रहे थे।

किन्तु दुख के मनोभावो को दबाकर कहने लगे 'उष्मा मैं डेक पर हवा खाने जा रहा हूँ।'

'तुझे चलना है, तो चल।'

उष्मा ने गर्दन हिला दी।

वह मन ही मन सोच रही थी कि पिताजी इस प्रकार से घूमने जाने की इच्छा नही करते हैं। आज क्यों • ?

अब उनके घुटनो मे दर्द कम था। हंसते हुये उसने कहा 'आप घूम आयें।'

वास्तव मे मधुसूदन भी यही चाहते थे। उष्मा की बात सुनकर वे खडे हो गये, लकडी हाथ में ली और बाहर निकल गये।

अभी डेक पर पहुँच भी न पाये थे कि व्हिसिल की आवाज गूज उठी।

मधुसूदन को एकदम घबराहट हुई, फिर भी कलेजे पर पत्थर रखकर वे सीढियाँ चढने लगे।

सीढियो में ही डाक्टर से भेंट हो गई।

खुश होकर डाक्टर कहने लगे 'आप उपर हवा खाएँ, मैं वही जा रहा हूँ।'

डाक्टर ने जल्दी से जीना पार किया, और वे मधुसूदन के केबिन मे जा पहुँचे।'

व्हिसिल आज बहुत देर तक बजती रही, पर और दिनो की अपेक्षा इसकी आवाज बहुत धीमी थी।

डाक्टर के कमरे मे प्रवेश करने के बाद भी व्हिसिल की आवाज गूंजती रही।

डाक्टर ने देखा कि उष्मा दोनो घुटनों के बीच मे सिर को दबाकर ऐसे बैठी हुए थी, मानो कोई मुर्गी बनकर बैठा हो।

उष्मा"·

व्हिसिल की घनघोर गूंजती तीव्र ध्वनि, धारा की सतह पर तैरता हुआ यह प्रशात सम्बोधन, उष्मा की विवश श्रुतिका पर तमाचे के समान पड रहा था, इससे उसकी अस्थिर चेतना का रोम-रोम खलबला गया।

इस समय, डाक्टर को किसने आमन्त्रित किया है।

निष्फल क्रोध की दयनीय दशा मे पलकें उठाकर बहुत लाचारी से उष्मा, डाक्टर को देख रही थी।

हिमाशु कॉट के पास दीवार का सहारा लेकर खडा था। स्थिर"" अचल"" ।

बहुत शात स्वर मे डाक्टर ने कहा व्हिसिल बजने से यदि तुम्हे पीडा होती हो तो मुझे कह दो, मैं अभी फोन करके इसको बन्द करवा दूंगा।

पर उष्मा क पास बोलने के लिये कोई शब्द नही थे।

उठी हुई पलकें प्रतिक्षण बोझिल होकर ढल गई।

इसके साथ ही उष्मा भी लुढक गई।

डाक्टर को अब इस बात मे तनिक भी सन्देह नही रहा कि सागर की सृष्टि म सफर का सकेत करता हुआ स्टीमर का व्हिसिल किसी एक व्यक्ति के लिये तो अवश्य ही हिस्टीरिया का सदेश लेकर आया है।

कुर्सी खैंचकर कॉट की बाजू मे हिमाशु बैठ गये।

बेहोश हुई उष्मा को वे पाच मिनट तक टकटकी लगाये देखते रहे।

पाच मिनट बाद डाक्टर ने नाक के पास अमोनिया की बोतल रखखी।

एक धक्के का अनुभव करके उष्मा ने आँखें खोल दी। डाक्टर पर नजर पडते ही वह एकदम बैठो हो गई और साडी का पल्ला ठीक करने लगी।

डाक्टर ने उठकर पानी का गिलास भरा। गिलास सामने रखकर वे बोले लो, 'पी लो।'

'पानी पीने की इच्छा न होते हुए भी उष्मा ने, न जाने क्यो दो घू ट पानी पी लिया और साडी के पल्लु से होठ साफ करके अस्वस्थ स्वर मे उसने कहा 'मैं अब बिल्कुल ठीक हूँ, डाक्टर साहब, आप अब जा सकते हैं।'

'जा सकता हूँ ?'

'हाँ • '

'मुझे ऐसा लगता है कि मैं अभी जाने की स्थिति म नही हू।'

'तब आप बैठ जाइये। परन्तु ऐसे अकेले म नही। कृपा करके पिताजी को बुलवा लें। वैसे मैं अब स्वस्थ हू।

उष्मा, मैं तुमसे बात करना चाहता हू।

उष्मा यह सुनकर एकदम खीजकर बोली 'बातें की जाये या नही, यह ता मेरे सोचने की बात है।'

तुम्हार विवेक पर अधिकार करने की मेरी कतई इच्छा नही है। किन्तु एक बात तुम्हें याद रखनी चाहिये कि रोगी का विवेक, डाक्टर के सामने नही चल सकता है।

'रोगी । रोगी '!! रोगी !!! यह एक ही पाठ कब तक कहते रहेगे ?'

'तब क्या तुम रोगी नही हो ?'

'मान लिया कि मैं रोगी हूँ। किन्तु रोग के उपचार के लिए दवा लू या न लू, यह मेरी इच्छा पर निर्भर करता है।'

'यदि कोई पागल यह कहे कि मैं अपना उपचार करवाऊ या नही, यह मेरी इच्छा है। क्या डाक्टर अपने कर्त्तव्य से उस समय विमुख हो जायेगा ?

'परन्तु मैं तो पागल नही हूँ।'

'तुम हिस्टीरिया की रोगी हो, हिस्टीरिया के कई रोगी, दौरे के समय म पागलो जैसा ही व्यवहार करते हैं ?' मैंने ऐसे कई रोगियो का इलाज किया है, जो हिस्टीरिया के दौरे के समय मे बडी तेजी से चीखें मारते हैं, पागलो के समान प्रलाप करते हैं कपडे फाडते हैं, दूसरो के साथ मार-पीट भी करते हैं तुम्हारा केस उन सब केसो की अपेक्षा एक सामान्य-सा है। इस कारण से मैं बहुत होपफुल हू।

यदि आप मुझे पागल करार करके अपना काम पूरा करने का प्रयास करेंगे, तो मैं आपकी आशा को कतई पूरी नही होने दू गी।'

मुझे अपनी सीमा लाघने को आवश्यकता नही होगी और तुम्हे भी इसकी आवश्यकता नही होगी• । मैंने इसका उपाय पहले से ही ढू ढ लिया है। सम्भव है, ऐसा भी अवसर आ सकता है कि तुम मुझे अपने पास रहने के लिये प्रार्थना करो।'

क्रोध में होने के उपरान्त भी उष्मा को हँसी आ गई।

अलबत्ता यह एक क्षोभ पूर्ण हँसी थी।

इसी क्षोभ मे ओठ दबाते हुये उसने पूछा 'क्या माग सोचा है आपने? आप मन ही मन कितने भी षडयन्त्र बनाते रहे, किन्तु अभी आपने उष्मा को पहचाना नही है, डाक्टर साहब।

मेरा भी यही सतत प्रयास रहा है। तुम्हे वास्तविक रूप से जानने के लिये ही तो मैं यह सब माथा-पच्ची कर रहा हू।'

असह्य क्रोध मे उष्मा के मुह से यह वाक्य निकल ही पडा कि 'सिर पटककर मर जाओगे तो भी उष्मा को नही पहचान सकोगे।

'शब्द बदलकर उसने फिर कहा सिर भी यदि फट जाये तो भी आप उष्मा को समझने मे सफल नही हो सकेंगे, डाक्टर साहब।'

'इतनी अधिक रहस्यमयी बनी रहने का कारण क्या है?'

'रहस्यमयी ही तो नाम है जिसका कारण समझ मे न आये। अन्तिम सास तक भी नही।'

डाक्टर, भी उसी का नाम है, जो रोगी की मन की जटिल ग्रन्थियो को ज्ञात करके, अन्तत रोग का कारण ढू ढ ही ले अपनी अन्तिम सास तक''।

'क्या मेरा रोग जानने के लिये आप अपने प्राण न्यौछावर करने को तैय्यार है।'

यदि आवश्यकता पडी तो।'

शाहदत को इतनी मस्ती क्यो बना रहे हैं? प्राणो को सभालकर रखिये डाक्टर साहब! किसी अच्छे केस के लिए--अति महत्व के व्यक्ति के लिये प्राण देंगे तो प्राण देना सफल होगा। उष्मा के समान तुच्छ प्राणी के लिये कदाचित् प्राण न्यौछावर करेंगे ता इस ससार मे जीवन किसके लिये उपयोगी सिद्ध होगा? मेरे जीवन का अन्तत मूल्य ही क्या है?'

वात प्रारम्भ करते समय उष्मा की तीखी आवाज करुणा म रूपान्तरित हो गयी। न जाने क्या आवाज टूट-सी गई।

शांति से बैठे हुए डाक्टर की आखो से यह छिप न सका।

तुम्हारे जीवन का मूल्य तुम्हारे, अपने लिये या दुनिया के लिये कुछ भी न हो, किन्तु डाक्टर के लिये तो अपने सभी रोगियो के जीवन का मूल्य एक समान होता है। मानवता के नाते रोगी चाहे साधारण स्थिति का हो या वडी हैसियत का, डाक्टर के लिये सभी के जीवन का एक-सा मूल्य होता है। डाक्टर वास्तव मे ईमानदार है, तब वह चिकित्सक के धर्म से परे नही हो सकता। जबकि मैं, भली-भांति जानता हूं कि सभी डाक्टर अपना यह धर्म नही निभाते हैं—। सभी डाक्टर—।'

डाक्टर की बात को काटते हुये उष्मा कहने लगी, सभी डाक्टर आपकी तरह रोगी के रहस्य को जानने के लिये डीगें नही मारते हैं।

'तुमने मुझे केवल बेशर्म ही नही अपितु निर्लज्ज भी समझ लिया होगा। हो सकता है, वह समय भी आ जाए जब तुम मुझे इससे भी अधिक भयंकर समझने लगो। परन्तु इससे मैं अपनी प्रारम्भ की गई यात्रा को बीच मे ही समाप्त नही करने वाला हूँ, ऊष्मा ! मैं इतना अधिक कायर भी नही हूँ।'

'बहुत अधिक क्रोध मे उष्मा एकदम फूट पडी 'यदि निश्चय कर लू तो तुम्हे, तुम्हरी यात्रा का अन्जाम दे सकती हू। यही से मंजिल बता सकती हू। इस तरह भविष्य मे किसी केस मे बिना रोगी की इच्छा के इलाज करना भूल जाओगे ' और ---।'

'और क्या ? आज जो धमकी तुम, मुझे दे रही हो, तुम्हारे समान रोगी का केस हाथ म लेने से पहले इस सम्बन्ध मे नही सोचा था ?'

फिर इस धमकी को व्यवहार मे लाने के लिये मुझे क्या विवश कर रहे हैं ?

'मात्र इसलिए की तुम्हारे इस प्रकार के विपरित और अस्वभाविक व्यवहार से ही मुझे कदाचित तुम्हारे रोग का सुराग मिल जाये। याद रखो उष्मा ! 'मानसिक रोग से पीडित रोगी का प्रत्येक शब्द - प्रत्येक व्यवहार हर प्रकार का हाव भाव, निदान की दिशा मे डाक्टर को नई-नई बातें बतलाता है। इस पर भी मैं यह मानता हू कि अब तक मैंने, जितने रोगियो का उपचार किया है, उनमे तुम सबसे ज्यादा होशियार हो, इसीलिये तुम जाने-अन्जाने मे भी मुझे ऐसा कोई सुराग हाथ नही लगने दे रही हो।'

उष्मा को क्रोध के साथ साथ हँसी भी आ जाती थी। उसकी यह समझ म नही आ रहा था कि हाथ धोकर पीछे पडे हुये डाक्टर को किस प्रकार स टाल दिया जाये।

उष्मा को चुप बैठी देखकर डाक्टर ने कहा 'इस प्रकार की होशियारी का उपयोग तुम्हारे स्वजनों के लिए परेशानी का कारण हो सकता है।

'मेरे स्वजनो के दु ख का भार आप उठाने का प्रयत्न न करें। मेरे स्वजन होने के नाते पिताजी ने इतना इच्छित रुख तुम्हारी ओर न बनाया होता तो मुझे इस प्रकार तुम्हारे हाथो नाहक क्यो परेशान होना पडता ।'

एक हिचकी लेकर उष्मा बोली 'मैं आज ही पिताजी को कह दूगी।'

'क्या कहेगी ?'

'यही कहूंगी कि आप कृपा करके मुझे डाक्टर के जाल से मुक्त नही करेंगे तो मैं समुद्र मे डूबकर आत्म हत्या कर लूगी।'

अन्तिम शब्द कहते हुये उसकी आवाज मे करुणा की अनुभूति होने लगी। गहरी श्वास लेते हुये हिमांशु उठ खडे हुये ' 'बस उष्मा, यही सबसे

प्रचण्ड बलवान हथियार तुम्हारा है। मैं कहता हूँ कि तुम बडी होशियार हो। परन्तु आत्महत्या का मार्ग पकडकर तो तुम अपने पिता की जिन्दगी दूभर कर दोगी। तुम्हारे गम मे वे जल्दी ही मर जायेंगे। इससे तो वर्तमान की स्थिति ही अच्छी है। अच्छा, मैं चलता हूँ।'

डाक्टर उठ खडे हुए तथा दरवाजे की तरफ चल दिये।

प्रचण्डरूप से गू जती हुई व्हिसिल फिर बज उठी।

डाक्टर के पीठ की ओर आखें फाडकर देखती हुई उष्मा की आखें फटी की फटी ही रह गई।

दरवाजा पार कर चुकने पर भी डाक्टर ने फिर से एक कदम कमरे म रक्खा 'देखो, व्हिसिल हो रही है, यदि मेरी आवश्यकता हो तो मैं रुक सकता हूं।'

'आप जा सकते हैं, पिताजी को भिजवा दें।'

'उष्मा के मु ह से एक चीख निकल गई।'

और चीख के साथ ही सिर दबाकर वह बेहोश हो गई। हिमाशु मधुसूदन को बुलवाने नही गये।

लौटकर आकर हिमाशु कुर्सी पर बैठ गये। कुछ देर चुप-चाप बैठे रहे। इसके बाद टेबुल से मेगजीन उठाकर उसके पृष्ठ पलटने लगे।

अबकी बार डाक्टर ने अमोनिया या स्मेइलिंग सॉल्ट नही सु घाया।

कोई दस मिनट मे उष्मा, अपने आप होश म आ गई।

उसने डाक्टर की ओर नही देखा।

उष्मा ज्यो की त्यो पडी रही। आखिरकार उसने पूछा आप अभी भी यही चिपके बैठे हैं?'

मैगजीन पढते हुये डाक्टर ने कहा 'हाँ।'

'आपने पिताजी को क्यो नही बुलवाया?'

इस समय वे थियेटर मे हैं। थियेटर मे कोई सोलह मिलीमीटर की छोटी-सी फिल्म दिखाई जा रही है। सारे थियेटर म अन्धेरा है, इस अन्धरे मे, मैं तुम्हारे पिताजी को कहाँ ढू ढ सकता हू?

सहज मे ऊँचे उठे हुए हाथ उष्मा ने बिस्तर मे डाल दिये।

डाक्टर ने मेगजीन टेबुल पर रख दी। पहले की तरह ही खडे हुये, पानी का गिलास भरकर उष्मा के सामने रक्खा और कहा-'पी लो।'

'हिस्टीरिया से उठकर हर बार पानी पाने की मुझे आदत नही है।'

'चाहे आदत हो या न हो। हिस्टीरिया के दौरे मे शरीर के आन्तरिक अवयव मे जिस प्रकार की उत्तेजना होती है, इससे छाती मे सहज ही मे खुश्की आजाती है। इसलिये दौरे के बाद तुम्हे थोडा-पानी हरबार पी लेना चाहिये।'

'आपकी इस सलाह के लिये धन्यवाद।' उष्मा ने पानी की ओर हाथ लम्बा करने की अपेक्षा गिलास की ओर अपनी पीठ फेर ली।

उष्मा ने बैठे होने तक की चेष्टा नही की। अब तक भी उसका मुह दीवार की ओर था ··और डाक्टर की आंखो के सामने केवल पीठ थी।

डाक्टर की शात नजर-जल मे प्रतिबिम्ब किरणो की तरह पीठ के जूडे से पांव की एड़ी तक जा रही थी।

पाच मिनट इसी प्रकार की स्थिति मे बीत गये। हिमाशु आखिरकार खड़े हुए : 'तुम अब ओ. के. कहो, तो मैं विदा लू।'

'यदि मैं ओ. के. नही भी कहू, तो मैंने कब तुम्हे मेरी सेवा मे बैठे रहने की प्रार्थना की है।'

'मैं तुम्हे पहले से ही बता चुका हू कि डाक्टर रोगी के निमन्त्रण की राह नही देखता है।'

पीठ फेरे ही उत्तर देते हुये उष्मा की ओर एक मधुर हास्य करके डाक्टर दरवाजे की ओर बढे। इतने मे ही किसी जल राक्षस के नमूनो की तरह एक तेज व्हिसिल गूंज उठी। हिमाशु कुछ देर ठहर गये। कमान से छूटे हुए तीर की तरह आवाज करती हुई उष्मा बिस्तर मे बैठी हुई बोली : 'डाक्टर आज यह क्या हो रहा है ? आज एक के बाद दूसरी व्हिसिल क्यो बज रही है ?'

'मुझे भला इसकी क्या खबर ? कहो तो मालुम करू ?'

अपने स्वर मे बचे हुये श्लेष को देखने जितनी स्वस्थता अब उष्मा मे नही बच पाई थी। सिर धुनते हुये वह बहुत व्याकुल हो गई · 'हां···हां··· जरा देखिए, आज पाच पाच मिनट मे यह भू···भू···क्यो हो रही है। मेरा इससे सिर फटा जा रहा है।'

दोनो हाथो से उसने सिर पकड लिया।

हिमाशु दरवाजा पार कर चुका था। केवल चार फुट आगे चलकर वह कोरीडोर से लौट आया। जैसा सोचा था, उसी के अनुसार उष्मा बेहोश पडी थी।

वह फिर से कुर्सी पर बैठ गया। उष्मा पहले की भाति पाच मिनट मे ही होश मे आ गई।

अपलक टिकटिकी लगाकर देखते हुये, डाक्टर ने आख खुलते ही उष्मा से कहा : 'मालुम कर आया हूँ! केप्टेन से पूंछ आया हूँ।'

'क्या पूंछा ?'

'यही कि आज व्हिसिल बार-बार क्यो बज रही है ? उसने बताया है कि इस समय स्टीमर पोर्ट ब्लेश से केपटाऊन की ओर किनारे से सटा हुआ

जा रहा है। केपटाऊन बन्दरगाह पर लंगर डालना है, इसलिये स्टीमर को समुद्र में दूर नहीं ले जाया जा सकता है।'

'लेकिन सवाल यह है कि व्हिसिल बार-बार क्यों बजाई जा रही है?'

तुम्हारी बुद्धि भी समझ में नहीं आया? किनारे से सटकर चलने का मतलब कितनी बड़ी जोखिम। इसका क्या तुमने विचार किया है? समुद्र में कई अन्य छोटे बड़े जहाज तैरते होंगे। जगह-जगह खम्भों पर बत्तियां जल रही होंगी। किनारे के छोटे-छोटे बन्दरगाहों के पास लाईन क्लियर करवानी होती है। अतः व्हिसिल बजाकर सबको सावधान तो करना ही पड़ता है।'

'डाक्टर, स्टीमर के हेड पर इतनी बड़ी और तेज लाइट तो लगी हुई है। इसके अलावा और भी कई बत्तियाँ चारों तरफ झिलमिलाती रहती हैं। इस पर भी क्या लोगों को इतना बड़ा स्टीमर दिखाई नहीं पड़ता है और स्टीमर को व्यर्थ में ही राक्षस की तरह गर्जना करनी पड़ती है।'

'बात तो तुम्हारी बिल्कुल ठीक ही है, किन्तु इतनी तीक्ष्ण लाइटस् के उपरान्त भी व्हिसिल क्यों बजानी पड़ती है, यह तो हमें मैनेजमेन्ट से ही पूछने पर पता लग सकता है। यदि कहो तो यह भी पता कर आऊं।'

'उष्मा की नजरों से हिमाशु का कटाक्ष छिपा नहीं रह सका। किन्तु उष्मा के हाव-भाव बिना देखे ही हिमाशु केबिन से बाहर निकल गये।'

डेक पर जाकर देखता है कि समुद्र की ठण्डी हवा का आनन्द लेते हुये मधुसूदन रेलिंग पर पांव लम्बे करके कुर्सी पर आराम से सो रहे हैं।

मधुसूदन को सोते देखकर वह लौट पड़े। गेलरी पार करके वे केप्टेन के केबिन में गये।

केप्टेन अल्फान्सो रम पी रहा था। डाक्टर को देखकर उसे प्रसन्नता हुई। कुछ सिटपिटाते हुए उन्मत्त आनन्द में भाव-विभोर होकर उसने कहा 'मैंने लिजा को बुलाया था, किन्तु वह नहीं आई। थकावट के कारण वह जल्दी ही सो गई है। चलो, आप की कम्पनी मिल गई यह अच्छा ही रहा।'

पेग पूरा करके उसने बेरे को आर्डर दिया. 'दो-दो डब्बल जिन-रम, मिक्स करके ला.....।'

फिर हिमांशु के हाथ पर हाथ रखकर उसने प्रेम से पूछा 'क्यों डाक्टर ' मिक्स ठीक ही रहेगा?'

सामान्य रूप से हिमाशु को शराब अच्छी नहीं लगती थी। परन्तु यदा-कदा केप्टेन के आग्रह को वह ठुकरा भी नहीं सकता था।

धीमे-धीमे शराब की चुस्की लेकर हिमाशु ने कहा 'नीचे एन्जिन रूम

मे ड्राइवर को खबर दे दो कि आज अब और व्हिसिल बजाने की जरूरत नही है।

'हाँ, तो इसके बाद क्या हुआ तनिक बताओ ना डाक्टर, ! तुम्हारे रोगी पर व्हिसिल का क्या कोई असर हुआ या नही ?

'अभी वह असर नही हुआ, जिसकी मैं खोज कर रहा हू। पर इतनी बात जरूर समझ मे आ गई है कि व्हिसिल पूरी होने से पूर्व वह बेहोश हो जाती है।'

'व्हिसिल की आवाज से उसको कोई भयकर आघात अवश्य लगता है।'

पुअर गर्ल ! हाऊ डेन्जरस डिजीज। इससे तो सारे सफर मे बेचारी को बडी तकलीफ रहेगी। हाँ, जहाँ तक होगा, मैं व्हिसिल कम से कम बजवाऊगा।'

केप्टेन के सहानुभूति पूर्ण शब्द सुनकर हिमाशु ने सिर पीटते हुए कहा 'नही अभी व्हिसिल बजने दीजिये। सम्भव है कि व्हिसिल के कारण ही उसके रोग के रहस्य का पता लग जाये। परन्तु आज अब व्हिसिल बजाना बन्द कर दीजियेगा। कल क्या करना हैं, मैं आपको आकर बतला दू गा।'

केप्टेन ने वही बैठे-बैठे फोन से व्हिसिल न बजाने की सूचना ड्राइवर को दे दी।

इसके बाद केप्टेन के बहुत आग्रह करने पर उसने और शराब पी ली।

आधे घन्टे के पश्चात केप्टेन को गुडनाइट करके हिमाशु, पुन उष्मा के केबिन मे आये।

दीवार से तकिया लगाकर, पीठ फेरकर उष्मा उदासीन होकर बैठी हुई थी। उसने सोचा डाक्टर अब सो गए होगे। परन्तु डाक्टर के पुनं आगमन से उसके मुह पर आग भडक उठी। कुछ अस्वाभाविक भाव से हँसते हुये हिमाशु ने जोर से कहा 'उष्मा, मैं फिर से केप्टेन से मिल आया हू।'

'क्यो ?'

'तुम भूल गई ? तुम्ही ने तो कहा था कि हेडलाईट होने पर भी बार-बार व्हिसिल क्या बजाई जाती है ? मैंने इस विषय मे केप्टेन को पूछा तो उसने बताया कि मेरी बात बिल्कुल ठीक है, किन्तु जहाज तो समुद्री कानूनो पर चलता है, किसी की व्यक्तिगत इच्छा पर नही, इसलिए व्हिसिल तो बराबर बजती ही रहेगी।'

कुर्सी पर बैठते हुये उसने कहा 'मेरी रिक्वेस्ट के कारण केप्टेन इस बात पर राजी हो गये हैं कि अब रात्रि मे व्हिसिल नहीं बजेगी। तुम आराम

से सो सकती हो। यदि तुम्हे नीद न आये तो मैं नीद की गोली''''।

'हिमाशु कुछ और बोलें कि असाधारण आवेग मे उष्मा शेरनी की तरह उछलते हुये क्रोध मे लाल होकर चिल्लाई 'तुमने''''तुमने''''डाक्टर, शराब पी है।'

'शराब''। ओह शराब''''। हाँ''''जरा''''केप्टेन के पास—।'

उष्मा ने छलाग मारी। हिमाशु उसकी आखो का भाव देखकर हत-प्रभ रह गये।

कन्धे पर से हिमाशु का शर्ट पकडकर एकदम सारी शक्ति एकत्रित करके कातिल के स्वर मे उष्मा गर्ज उठी जाओ''''। 'अपनी केबिन मे चले जाओ''''।

मुह पर रूमाल रखकर हिमाशु कुछ सोचने लगे। उष्मा के चेहरे पर उठ रहे अथाह घृणित भाव तथा अकल्पनाशील अद्भुत रूप देखकर हिमाशु की हिम्मत काफूर हो गई।

हिमाशु को जहाँ का तहाँ अडिग देखकर उष्मा ने अपनी सारी शक्ति एकत्रित करके जोरदार आवाज मे कहा 'यू गेट आऊट'''। ब्लडी नोन सैंन्स। गेट आउट''''। गो अवे फ्रोम माई केबिन ।'

इतने अधिक आवेश के कारण उसे स्वयम् को एक गहरा झटका लगा, जिसके फलस्वरूप उसकी आखो के सामने अन्धेरा छा गया।

सिर दबाकर 'ओ माँ' की चीत्कार करके वह जल्दी से बिस्तर मे औधे मुह गिर पडी।

हिमाशु ने उष्मा को धीरे से उठाकर उसके बिस्तर मे लिटा दिया। बिस्तर मे लिटाकर उसने उसका पसीना साफ किया और तुरन्त कमरे से बाहर निकल आये।

शराब की बू न आये इसके लिये मुह मे इलायची के दाने डालकर, सिगरेट मुह मे दबाकर वह डेक पर जा पहुँचे और मधुसूदन से कहने लगे 'अकल! आप केबिन मे जाकर सो जाऐ।'

नीद से सोकर उठे हुये मधुसूदन एकदम हडबडाहट मे उठे तथा पूछने लगे, फिर''' फिर उष्मा का कुछ ट्रीटमेन्ट---।

मुह मे रूमाल दबाकर फीकी हँसी हँसते हुये हिमाशु ने बात का उत्तर दिया कि आज का कोर्स पूरा हो गया है, अब कल देखा जायेगा। आप जाकर केबिन में आराम करें।

केबिन मे आकर मधुसूदन ने देखा तो पाया कि उष्मा की आखें बद हैं' सास भी बडी तेजी से चल रही है।

इस अवस्था को निन्द्रावस्था मानते हुए, पुत्री की नीद को खराब न करने के

उद्देश्य से वे बिना कुछ आवाज किये चुपके से सो गये।

मधुसूदन को सोते ही नीद आ गई। किन्तु रात मे देर से होश मे आई उष्मा को प्रभात की प्रथम व्हिसिल बजने तक नीद नही आई।

उष्मा को जिस समय नीद आई उस समय सूर्य की किरणें चारो ओर फैल चुकी थी।

००

जिस समय उष्मा की नीद खुली उस समय....?

'ओह बेटी! क्या आज तू सारा प्रभात सोने मे ही व्यतीत करेगी?'

आँखें मलते हुये उष्मा, अति लज्जित होकर पूछने लगी : 'क्यो, पिताजी क्या दिन ज्यादा चढ आया है?'

'बहुत? चारो ओर सूर्य ने खपरेलो पर अपनी स्वर्णिम किरणें बिखेर रखी हैं, यह बात यहाँ तो प्रतीत नही होती है परन्तु समुद्र का रग अब सोने के बजाय चाँदी का हो गया है। तनिक खिडकी म देखकर, तुम मेरी बात का विश्वास कर सकती हो।

'क्या आप ने चाय-नाश्ता कर लिया?'

'चाय? बेटी, अब तो खाना खाने का समय हो चुका है।

पिताजी की बात सुनकर उष्मा एकदम लज्जित हो गई। टॉवल लेकर वह जल्दी से गुसलखाने की ओर चल पडी।

स्नान कर लेने से बाद भी उष्मा को लगा कि उसके नेत्रो की लालिमा व पलको का बोझ हल्का नहीं हो सका है। मधुसूदन ने उसकी यह स्थिति देखकर पूछा 'क्यो बेटी! क्या रात मे नीद नही आई थी?'

उष्मा ने तुरन्त उत्तर दिया 'नही, रात मुझे गहरी नीद आई थी।'

'—तब? क्या डाक्टर ने ऐसी कोई दवा दे दी कि उसका नशा अब तक नही उतर सका है।

उष्मा ने कोई उत्तर नही दिया।

'कल डाक्टर ने कहा था.... ।'

'क्या?'

'आज उष्मा का विशेष प्रकार से ईलाज करना है। इसीलिये तो तुझे अकेली छोडकर रात मे डेक पर चला गया था।'

सरल स्वभाव के कारण मधुसूदन ने जिस रहस्य का भेद खोल दिया था

उसे सुनकर उष्मा की आखें क्रोध मे लाल हो गई ।

'पिताजी', अब भविष्य म किसी को इस प्रकार मुझे सौंपकर आप कहीं मत जाइयेगा ।'

'क्यो ? क्यो ? ऐसी कौन सी बात हो गई थी ?'

'नही, कुछ न कुछ बात है, जरूर । तेरी आखें और चेहरे से यह स्पष्ट ज्ञात हो रहा है ।'

'रात्रि मे लगातार एक के बाद दूसरी व्हिसिल बजने के कारण नींद कैसे आती ?'

व्हिसिल ? डाक्टर ने भी मुझ से यही कहा था ।'

क्या ?'

फिट्स और व्हिसिल का उष्मा से क्या कोई परस्पर सम्बन्ध है ?'

'क्या डाक्टर के पास और कोई काम नहीं है ?' स्टीमर मे इतने सारे यात्री हैं पर वे न जाने क्यो मेरे पीछे ही हाथ धोकर पडे हैं ।

उष्मा की बात सुनकर मधुसूदन को हँसी आ गई । 'बेटी, क्या हम लोग डाक्टर के ऋण से कभी उऋण हो सकते है । मेरी अन्तरात्मा की यह ही पुकार है कि यदि तेरे रोग को ठीक कर सकते हैं, तो डाक्टर हिमांशु ही ।

उष्मा की अन्तरात्मा एकदम कडवेपन म परिवर्तित हो गयी ।

रात म डाक्टर साहब शराब पीकर यहाँ आये थे उष्मा की तीमारदारी करने को । पिताजी को कह देने के लिये यह वाक्य बारम्बार प्रबल वेग से उसके होठो तक आया किन्तु न जाने क्यो शब्दो का आकार धारण किए बिना ही यह वाक्य पुन अन्तर मे उतर गया । पिताजी को न जाने क्यो डाक्टर के प्रति इतनी श्रद्धा है ? आखिर व यह क्यो नहीं समझत है कि डाक्टर भी तो एक पुरुष ही है । मात्र डाक्टर बनने से ही पुरुष वग म व्याप्त सहज निबलताओ पर नियन्त्रण तो नही पाया जा सकता है ।

रात्रि मे व्हिसिल की आवाज देने वाली घोर गजना के समय वे कैसी क्रूर आखो से मुझे टकटकी लगाकर देख रहे थे ?

यह तो अच्छा हुआ कि सकट के समय मे न जाने कहाँ से उसमे ऐसी प्रचण्ड शक्ति जाग्रत हुई कि उसने डाक्टर को धक्के मारकर बाहर निकाल दिया । इसके बाद क्या हुआ, इसका तो उसे स्वयम् को भी पता नहीं था ।

चाहे जो कुछ भी हो उसके बाद डाक्टर उसकी ओर नही आये ।

ठीक अब तक भी ! नही तो जब तक तीन चार बार उन्हे आए बिना चैन कहाँ रहता ।

आज तो वास्तव मे उष्मा का दिल, बहुत ही कटुतापूर्ण हो गया ।

इतने पर भी जैसे-तैसे उसने अपने आप पर नियन्त्रण करके पिताजी के

सम्मुख कटुता का प्रदर्शन नही किया।

शाम तक डाक्टर हिमाशु को न देखकर उसने एक शाति की साम ली।

मधुसूदन को आश्चर्य हुआ। अन्त मे उसने अधीरता से पूछना शुरू किया : 'आज अब तक एक बार भी न जाने क्यो डाक्टर के दर्शन नही हुये ?'

किन्तु इस निरर्थक प्रश्न का उष्मा ने कोई उत्तर नही दिया।

दोपहर मे खाना लेकर आने वाले बैरे ने बताया कि 'डाक्टर साहब अब तक सो रहे हैं।'

'सो रहे हैं ?'

मधुसूदन का विस्मय पराकाष्ठा को पार करने को व्यग्र हो रहा था 'अब तक भी।'

इसके बाद उष्मा की ओर देखकर हँसते हुए कहा : 'तेरी तरह क्या डाक्टर भी रात भर जागे है ?'

दोपहर का खाना खाकर मधुसूदन खुद ही बाहर निकले और डाक्टर के केबिन तक जाकर देख आये थे।

दरवाजा अन्दर से बन्द था। किन्तु लगभग तीन बजे डाक्टर के केबिन से घन्टी की आवाज सुनाई दी। इसके ठीक दस मिनट बाद ही स्टीमर ने केपटाऊन के बन्दरगाह पर लगर डाल दिया।

यकायक माइक की घरघराहट सजीव हो उठी। इसके बाद स्पष्ट सुनाई दिया : पोर्ट केपटाउन पर स्टीमर एस एस अगोला चार घटे ठहरेगा .... जो पैसेन्जर बन्दरगाह पर घूमना फिरना चाहते हो, टिकिट और पासपोर्ट साथ लेकर जा सकते हैं ...... स्टीमर सात बजे स्टार्ट होगा। छ बजकर बीस मिनट तक हर यात्री बदरगाह पर लौट आयें। लेट आने वालो के लिये मैनेजमेन्ट की कोई जवाबदारी नही होगी।

'बेटी, क्या तुझे घूमने जाना है ?'

उष्मा ने सिर हिलाकर कहा 'नही'।

इसी समय डाक्टर हिमाशु सूट-बूट मे तैयार होकर बाहर निकले।

मधुसूदन के केबिन का दरवाजा सहज मे खोलकर, हाथ उठाते हुए बोले. 'यस अकल, मैं शहर घूम आऊ।'

'ओह ! तुम !'

'हाँ !'

बिना कुछ बोले डाक्टर जल्दी से केरीडोर मे आगे बढ गये।

उष्मा ने देखा कि डाक्टर ने उसकी तरफ नजर उठाकर भी नही देखा है। केवल अकल को सम्बोधित करके ही...... ।

इसके साथ ही उष्मा ने देखा कि डाक्टर के पीछे ही पट-पट करती हुई लिजा भी हाथ हिलाते हुए, मन्द-मन्द मुस्कराते हुये चली जा रही है।

'लिजा'''। डाक्टर के साथ में ही घूमने चल पड़ी या कुछ और है ?'

वुडनफ्लोर पर अब तक भी उसके ऊँची ऐड़ी के सेन्डलो की आवाज सुनाई पड रही थी।

लिजा ने सुनहरी जरी का स्कर्ट पहन रक्खा था। भूरे सुनहरे बालो को उसने रूपेहरी जाली मे बाध रक्खा था।

आखो मे काजल, गालो पर रुज-पाउडर, होठो पर लिपस्टिक और''' आधेक्षण मात्र मे उष्मा को बस यही दीख सका था।

तब हर बन्दरगाह पर लिजा डाक्टर को कम्पनी देती है, ऐसा ही है ना, वाह''' !

उष्मा ने मधुसूदन की ओर देखा। कदाचित् वह यह देख रही थी कि उनकी आखो मे कौन से भाव फूट रहे है। डाक्टर के साथ मे जा रही लिजा को उनकी आखो ने पकडा है या नही ?'

नि सन्देह-मधुसूदन ने लिजा को न देखा हो, ऐसा कैसे सम्भव था ? किन्तु उनके मन मे एक विभिन्न प्रकार का भाव उद्भव हुआ। इस भाव को व्यक्त किये बिना वे नही रह सके 'कैसी मस्त और खुश मिजाज लड़की है ! जब भी देखो, यह हँसती हुई दिखाई पड़ती है।'

'परन्तु पिताजी इस समय यह सर्टीफिकेट देने की क्या आवश्यकता आ पड़ी ?'

उष्मा की बात पर ध्यान न देते हुए मधुसूदन ने इस सर्टीफिकेट मे एक बात और जोड दी, 'जितनी यह हँसमुख है, उतनी ही यह प्यारी भी है'। तुमने देखा कि बेचारी ने मैना के लिये कितनी तकलीफ उठाई थी ? एक बार डाक्टर ने भी बताया था, कि उसकी कई दिक्कतें लिजा के सहयोग से बड़ी आसानी से हल हो जाती हैं।

'लिजा'' '''''

इस चुलबुली प्रकृती-वाली लिजा की बाँह मे डाक्टर की बाँह ! न जाने दाहिनी बाह या बाई बाह''' ! वह तो शहर मे डाक्टर के हाथो मे हाथ डालकर घूम रही होगी। दोनो एकदम निर्लज्ज हैं !

उष्मा की छाती मे एक गहरी चोट लगी।

इसी बात पर उसे ध्यान आया कि डाक्टर ने उसे या उसके पिताजी को इसीलिये साथ चलने का निमन्त्रण नही दिया'''। केवल औपचारिक रूप मे कहकर अपना मार्ग लिया।

वैसे तो रोज डेक पर घूमने निकलने पर भी आग्रह करने मे किसी प्रकार

की कमी नही रखते हैं। किन्तु आज तो साथ में लिजा जो थी। इसलिए आमन्त्रण क्यों देते। यदि किसी को साथ में लें ले तो फिर क्या मजा न बिगड़ जायेगा ? चार घन्टे तक लिजा के साथ मौज जो करनी थी।'

वह स्वयम् जाने की इच्छुक नहीं थी। आफर भी हुई होती तो भी वह किसी भी दशा मे उनके साथ नही जाती। इस पर डाक्टर की यह अवहेलना उष्मा को तीक्ष्ण काटे की तरह चुभने लगी।

आज पहली बार कुछ विचित्र-समझ न सकने योग्य अभाव हृदय को चारों ओर से घेरता हुआ उष्मा को बेचैन करने लगा।

सामान्यतौर पर हिमांशु इस प्रकार सूट-बूट पहिन कर नही घूमता था। आज उसका पहनावा····और उसके साथ लिजा के दीदार के कारण उसके मनोवेग जाग उठे।

ये लोग इस प्रकार तड़कीले भड़कीले कपडे पहिनकर क्या लड्डुओं का आनन्द लेने जाते हैं ? लिजा की बात तो ठीक है····नाचगान - यही उसका पेशा है····किन्तु डाक्टर को तो अपनी श्रेणी-व्यवसाय-प्रतिष्ठा का ख्याल करके अपनी मर्यादा मे ही रहना चाहिए।

इसके साथ ही उसके अन्तरमन ने उससे एक प्रश्न किया : 'डाक्टर के मर्यादाहीन व्यवहार की तुझे इतनी चिन्ता क्यों है ?'

उष्मा का दिमाग एकदम घूमने लगा।

आज तो व्हिसिल भी नही बज रही है। चार घटे पहले आज बजेगी भी नही। तदुपरान्त भी····।

तदुपरान्त भी····मन मे एक व्याकुलता ने जाने क्यो घर कर लिया है। भय का एक अदृश्य छत्र सिर पर चारो ओर चक्कर लगा रहा है····समय पर बिना चाहे ही व्हिसिल बज उठेगी····और तो—

---तब फिर कल की भाँति हिस्टीरिया अपने दलबल सहित हमला करने को आ जायेगा।

आज उसने दृढ निश्चय कर लिया था कि वह पिताजी को अपने पास ही रोक रखेगी।

उसने इधर उधर देखा तो पाया कि मधुसूदन एक किताब पढ़ने में तल्लीन हो रहे हैं।

'पिताजी ! चलिए हम लोग थोड़ी देर डेक पर घूम आए।'

अकथनीय बेचैनी से व्याकुल होकर वह एकदम खड़ी हो गई।

यह अनचीती प्रार्थना सुनकर मधुसूदन के आनन्द का कोई पार नही रहा।

किताब को जल्दी से एक ओर फैककर अतीव हर्ष से बोले, 'चलो

बेटी ! मैं भी बहुत देर से सोच रहा था कि---'

बाहर निकलकर मधुसूदन ने कहा 'आज तो तू मैना की कुशल क्षेम पूछने भी नहीं गई। चलो, पहले हम लोग उसके पास चलें। मैं तो कई, दिनो से उसकी कुशलता पूछने भी नहीं गया। 'चलो उससे मिलते चलें।'

मैना की खाट के पास इस समय उसका श्वसुर था। मधुसूदन से मिलकर वह बहुत प्रसन्न हुआ।

इसके बाद दोनों प्रौढ बातो मे इतने तल्लीन हो गये कि मधुसूदन को डेक पर जाने की बात याद तक नहीं आई।

यदि डेक पर जाने की बात मधुसूदन को याद भी आई होती तो उष्मा मना कर देती, क्योंकि वह मैना के साथ बातें करने में तल्लीन थी।

समवयस्क युवतियाँ जब बातो म तल्लीन हो जाती हैं, तो यह स्वभाविक ही है कि रसमाधुर्य का आह्लादक प्रवाह उनमुक्त होकर लज्जा---विवेक, मर्यादा को एक ओर रखकर न जाने किस ओर से किस ओर प्रवाहित होने लगता है। परन्तु इस समय और इससे पूर्व भी दोनो युवतियों को इतना अनुभव अवश्य हो चुका था कि इस पूर्ण वेग मे तनने की अपेक्षा दोनो के पाव किसी एक टापू पर ठिठके हुए हैं।

घर की, ससुराल की, पति की बातें करते हुए मुक्त-मुखर बनती हुई मैना को अपनी सीमा मे रहने का भान ही नही रहता था।

पति की--घर की--ससुराल की बात आते ही उष्मा चर्चा के विषय को जानबूझकर बदल देती थी। इस प्रकार की बातें सुनकर उसकी छाती तेजी से धडकने लगती थी।

मैना इस बात को बराबर देख रही थी कि ससुराल की बात निकलत ही उष्मा का शुभ्र ज्योत्सनिक चन्द्रवदन--अमावश्या की काली रात्रि के समान मलीन हो जाता है।

मैना ने यह बात डाक्टर को पहले भी बताई थी तथा डाक्टर ने इस तर्क को सच मान लिया था।

मैना की चर्चा, डाक्टर का नाम आते ही गाडी स्वत ही उस पटरी पर चलने लगती है। इस समय भी डाक्टर की बात आते ही उसकी प्रशसा करते हुए कहने लगी 'गजब के आदमी है, डाक्टर साहब, केवल तेरे लिए ही तो दवा लाने को वे बाहर घूमने गये हैं।'

'मेरे लिए ? उष्मा की भौंहे विस्मय भाव से ऊँची चढ गई।'

'हा--तेरे ही लिए तो ?'

इसके बाद उष्मा की ऊँची चढी भौंहे तेज अरुचि मे तनकर बद हो गई।

'तुझे किसने बताया ?'

'लिजा ने ।'

उष्मा ने दात पीसकर कहा ; 'तब अब सारे स्टीमर में मेरे रोग का ढिंढोरा पीटना उन्होंने प्रारम्भ कर दिया है ।'

'रोग का ढिंढोरा ? यह तू क्या कह रही है ?'

'नही तो और क्या ? मेरे इलाज के लिए अब उन्होंने तेरी और लिजा की कॉन्फ्रेन्स करना शुरू कर दिया है ?'

मैना तनिक व्याकुल होकर कहने लगी : 'सुबह लिजा मेरी कुशलता पूछने को आई हुई थी तो डाक्टर भी मेरी खबर लेने को आ निकले तब बातों ही बातों में डाक्टर ने मुझे बताया कि केपटाऊन बन्दरगाह पर जब स्टीमर ठहरेगा तो कुछ प्रमुख दवाईयाँ खरीदने को वह बाजार में जाने की सोच रहे हैं । डाक्टर की बात सुनकर लिजा ने भी साथ चलने को कहा था ।'

'ओह, ऐसा ! तब तो ।' उष्मा के मुंह पर एकदम लाली दौड़ गई : किन्तु लिजा को इस बात का पता कैसे लगा कि डाक्टर मेरे लिए दवा लेने को जाने वाले हैं ?

'लिजा तो डाक्टर की सबसे बड़ी सहायक है । डाक्टर लिजा को सभी बात बताते हैं ।'

'सहायक ·· ····।'

अन्तर का तुच्छाकार अनजाने ही शब्दों में फूट पड़ा ।

मैना की आनन्दविभोर आवाज कुछ कुंठित हो गई । वह कहने लगी : 'बहन, तू क्या जाने कि लिजा यदि डाक्टर के पाव धोकर भी पिये तो भी कम है । केवल इतना ही पर्याप्त नही होगा कि डाक्टर ने उसको जीवनदान दिया है, अपितु लिजा का जीवन भी डाक्टर ने ही बनाया है ।

'डाक्टर ? लिजा का ?'

'हाँ लिजा को, न जाने कितने कष्ट सहन करके--कहाँ से कहाँ पहुँच--कर आखिरकार आज उसे यह सुख का दिन देखने को मिला है, यह दिन उसे किस प्रकार मिला है, यह मैंने लिजा से ही सुना है ।'

मैना सास रोककर एकदम चुप हो गई······ ।

दूसरी ओर उष्मा ने····रुका हुआ श्वास छोड़ा······ ।

निर्ममता का कलेवर मोम की तरह द्रवित हो गया और उष्मा ने पूछा : 'लिजा क्या कहती थी ?'

इस पर भी मैना चुप रही ।

'मैना बहन कुछ बताओ भी ।'

'क्या बताऊं ?'

'अभी कह रही थी न, लिजा का जीवन---'

'हाँ ······! लिजा का जीवन ! किन्तु इस सम्बन्ध मे सुनने से पहले मुझे तुम एक बात का जवाब दो।'

'क्या ?'

'क्या तुमने लिजा को नाचते हुए देखा है ?'

'नही।'

'तब फिर अब एक बार थियेटर मे लिजा का नृत्य देखकर तुम यह भूल जाओगी कि तुम किसी लडकी का नाच देख रही हो। लिजा का नृत्य देखकर तुम्हे ऐसा अनुभव होगा कि मानो गगन मे बिजली चमक रही है या बर्फ की शिला पर कोई मछली तैर रही है। यद्यपि मैंने भी उसका नृत्य तो नही देखा है, किन्तु देखने वालो ने मुझे ऐसा बताया है।'

'होगा। किन्तु लिजा के नृत्य और उसके जीवन का परस्पर मे क्या सम्बन्ध है ?'

'सम्बन्ध केवल इतना ही है कि जिन लोगो ने आज से पाच साल पहले लिजा की जो दशा देखी है, वे लोग इस बात को कदापि मानने को तैयार नही होगे कि उसके सामने जो तितली उड रही है, वह वास्तव मे लिजा ही है।'

'कैसे ?'

'इसलिए कि लिजा के दोनो पाव घुटने से तलवे तक बिल्कुल बेकार थे।

'बेकार हो गये थे ? लिजा के पाव ?'

'हाँ बहन ! मैं भी तेरी ही तरह इस बात को मानने को तैय्यार नही थी। किन्तु लिजा ने स्वयम् ही मुझे जब यह बात कही तो कैसे विश्वास नही किया जाय ?

'लिजा ने क्या कहा ?' उष्मा ने अपनी विचित्र दशा मे स्पष्ट रूप से पूछा।

'यही तो ! दूसरी क्या बात ?' मैना एकदम हँसने लगी।

उष्मा को ध्यान आया। वह बोली 'लिजा को पोलियो हो गया होगा ?

'नही ! पोलियो तो बच्चो का रोग है। यह तो एक प्रकार से बडे अजीब कारण से हुआ था। ऐसा विचित्र कारण कि जिसका रहस्य वर्षो तक बडे बडे नही ढूढ सके थे। अन्त मे डाक्टर हिमाशु ने उसे ढूढ ही निकाला।'

'क्या ढूढ निकाला ?'

लिजा का रोग कोई शारीरिक रोग नही था, अपितु मानसिक कारणो से था।

'मानसिक कारणो से पाव का रोग ?'

उत्तर देने की बजाय मैना ने पर्दे की ओर दृष्टि की।

दोनों प्रौढ़ों ने, दो युवा सहेलियों को बातचीत मे दत्तचित रहने दिया और वे रेलिंग की तरफ घूमने को चल पडे।

मधुसूदन ने रेलिंग को इस प्रकार पकड रखा था, मानो उसके घुटनों का दर्द एकदम समाप्त हो गया हो।

सम्भवतया""इस रोग का उपचार करने को डाक्टर हिमाशु ने कोई मनोवैज्ञानिक उपचार तो नही किया।

थोडी देर बाद दोनो प्रौढ रेलिंग से गायब हो गये।

सम्भवतया वे डेक पर चले गए हो या केबिन""या फिर किनारे पर घूमने को निकल गय हो।

उष्मा को इस समय समुद्र छोडकर धरती पर उतरने मे कोई कष्ट नही था।

उसने अपना समग्र ध्यान एकत्रित करके मैना की बातो मे लगा दिया था।

बीच-बीच मे मैना का चुप रहना उष्मा को बहुत बुरा लग रहा था। उससे यह सहन नही हो रहा था। उसकी उत्सुक आँखें मैना की ओर लगी हुई थी।

'मैना बहन, तनिक बताओ भी ! लिजा को कैसा दर्द था ?'

मैना बोली —

'लिजा का बाप स्विडिश केन्या का निवासी था तथा स्टीमर की कम्पनी मे नौकरी करता था।'

पतवार खेनेवाले की"" ।

बिना माँ की लिजा, सदा अपने पिता के ही साथ रहती थी। पिता जिस समय नौकरी पर पतवार खेने का काम करता था, तो उस समय भी लिजा अपने पिता की बगल मे ही सोती थी।

उस समय लिजा की उम्र कोई दस बारह साल की रही होगी""।

एक समय की बात है कि स्टीमर ह्वेल मछली का शिकार करने को उत्तरी ध्रुव की ओर गया। दुर्भाग्य से स्टीमर बर्फ के एक भारी पर्वत से टकरा गया। रात का समय था, जहाज अपनी पूरी रफ्तार से जा रहा था कि यकायक अटलांटिक महासागर मे किसी भीमकाय चट्टान से टकरा गया और टक्कर के साथ ही जहाज उलट गया।

माझी भी अपने स्थान से उलट गया।

टक्कर के कारण स्टीमर का एन्जन बन्द हो गया और उसकी बत्तियाँ बुझ गई। माझी ने अपनी कर्त्तव्य भावना से प्रेरित होकर अपनी दोनो भुजाओ में किसी वस्तु को मजबूती से पकड लिया।

स्टीमर मे बडी तेजी से पानी भर रहा था। देखते ही देखते माझी का

केबिन भी पानी से भर गया। माझी और उसकी कन्या के लिए जीते जी यह केबिन जल कब्र बन गई।

ह्वेल मछली के शिकार के लिये कई जहाज एक साथ निकले थे। सारे जहाज आस-पास में ही चल रहे थे। वायरलेस से मदद-मदद की आवाज सुनकर आस-पास में चलने वाले जहाजो ने जितनी मदद समय थी, उतनी के लिए जल्दी से दौड पडे।

स्टीमर लगभग डूबने को था। मदद करने वालों ने जितने व्यक्तियो को बचाना सम्भव था, बचाने का प्रयास किया। परन्तु जिस समय स्टीमर डूबता होता है, उस समय अन्य स्टीमर्स को डूबते स्टीमर से दूर ही रहना चाहिये, क्योकि जिस समय जहाज डूब रहा हो, उस समय जहाज के परों का समुद्री हिस्सा खाली रहना चाहिये। जब यह स्थान रिक्त होता है तो उस समय समुद्रीय जल, जहाज के परो के साथ एकदम अन्दर को धँसता है, यदि दुर्भाग्य से उस समय कोई दूसरा जहाज पास मे हो तो वह भी जल की धसान के साथ ही समुद्र मे बैठ जाता है।

इस कारण से डूबते हुये स्टीमर मे से आस-पास के स्टीमरो ने जितने व्यक्तियो को बचाना सम्भव था, बचाकर दूर हटना शुरू कर दिया।

माझी के केबिन की काँच की दीवारें टूट गई थी। मद-मस्त समुद्री लहरो के भयानक सपाटे के कारण दो मानवीय आकृतिया स्वत ही बाहर आ पडी। ये मानवीय आकृतियाँ तरगों पर खिलाडियो के पैरो मे फुटबाल के समान इधर से उधर तैर रही थी।

गहन अन्धकार को बेधती हुई जहाज की सर्च लाइट की मदद से एक जहाज के कप्तान ने इन आकृतियों को देखा। कुछ ही क्षणो मे चार-पाच खलासियो ने डोरी के फन्दे से उन मानवाकृतियो को बचा लिया।

डूबते हुए स्टीमर से इन आकृतियो को दूर खींचा जाने लगा और आखिर मे इनको बचाकर सहायक जहाज तक ले जाया गया।

परन्तु अब तक काफी देर हो चुकी थी। बचाने के प्रयत्न मे केवल आधी सफलता ही मिल सकी।

जहाज के डाक्टर ने पल्स हाथ मे लेते ही कह दिया 'नो होप।'

माझी ससार छोडकर जा चुका था·····।

परन्तु उसकी बेटी···?

डाक्टर को उसकी पल्स देखने की आवश्यकता नही पडी। वह बच गई थी, यही नही वह पूरी तरह होश मे थी।

सब कोई इस बात को देख रहे थे कि माझी पिता के मजबूत हाथो मे पुत्री के दो नाजुक पाव मजबूती से पकडे हुए थे। इन मुट्ठियो को खोलना

कतई आसान नही था ।

मर जाने के बाद भी पिता के जड-निर्जीव हाथो ने मानो अपनी समग्र शक्ति से पुत्री के दोनो पावो को जकड रखा था ।

डाक्टर, कप्तान और सभी इस बात को भली प्रकार समझते थे कि माझी ने पुत्री के पाव इस भ्रम मे पकडे थे कि वे पाव न होकर पतवार के छोर हो ।

जीवन के अंतिम श्वास तक माझी को अपने कर्त्तव्य का पूर्ण भान था । माझी का यह कर्त्तव्य है कि जीवन के अन्तिम क्षण तक पतवार के छोर को न छोडा जाये ।

जहाज की पतवार---यह तो माझी के लिए जीवन-मरण का साथी है प्रत्येक माझी को पतवार हाथ म पकडने से पहले इस कर्त्तव्य भावना का ध्यान दिलाया जाता है ।

लिजा का पिता भी माझी के कर्त्तव्य को समझने वाला एक कर्त्तव्यनिष्ठ प्राणी था । पतवार हाथ से छूट जाने के बाद, पानी की धारा मे डूबते हुए जहाज म बेहोशी की दशा मे पतवार पकडने का प्रयास करते हुए---और इस समय अतीव भयभीत होकर पिता की कॉट के पास पडी हुई मासूम बच्ची के दोनो नाजुक पावो को पतवार समझकर पकड लिया ।

यह मृत्यु गाठ थी ।

यह गाठ किसी भी तरह नही खुल रही थी ।

पुत्री जीवित थी ।

पिता निर्जीव था ।

इन निर्जीव हाथो म दो सजीव पाव जकडे हुए थे ।

लिजा का गला चीखें मार-मार कर सूख चुका था । होश म होन पर भी उसके नेत्र स्थिर-अचल थे ।

पिता की मजबूत मुठ्ठियो म दृढता से पकडे हुए उसके पावो का खून जम चुका था । उसके पाव बेकार हो गये थे । उसे यह भी होश नही रहा कि उसके पाव किन्ही दो फौलादी पकड मे बध हुए हैं ।

आखिरकार डाक्टर ने शल्य चिकित्सा से मुट्ठिया खोली ।

अगुलिया काटने से पहले पिता के ठडे हो गए काले खून के कुछ धब्बे लिजा के पावो पर भी लग गये । लिजा ने इन खून के धब्बो को जब अपने पावा पर देखा तो ।

एक दारूण चीख मारकर वह बेहोश हो गई ।

तीन दिन तक वह बेहोश रही ।

तब तक उसके पिता को जलदाह दिया जा चुका था ।

दक्षिणी ध्रुव की यात्रा रद्द करके सहायक जहाज पुर्तगीज ईस्ट अफ्रिका

की ओर लौट पडे ।

लिजा के होश मे आ जाने के बाद लिजा की सेवा टहल करने वाले डाक्टर ने दवा का एक डोज देकर अपने हाथ का सहारा देकर उसे खडा करने का प्रयास किया।

किन्तु लिजा खडी नही हो सकी।

जमीन पर पाव टेकने के साथ ही वह धडाम से नीचे गिर पडी।

डाक्टर एकदम दातो तले अगुली दबाने लगा। उसने देखा कि लिजा के पांव मे किसी प्रकार की चोट नहीं है। बन्द हुआ खून का दौरा अब पुन यथावत है। किसी तरह का कोई दर्द भी नही है। इस पर भी लिजा अपने पावो पर खडी होने मे समर्थ नही है। लिजा ने पाव पर खडा होने का जब प्रयास किया तो देखा गया कि पोलियो के रोग से ग्रस्त बालक के समान उसके पावों को भी दोहरा किया जा सक्ता है।

कई उपाय किये गये, किन्तु सफलता नही मिली। आखिरकार लिजा को अस्पताल मे दाखिल करवा दिया गया। कई विशेषज्ञ सर्जनो और फिजिसियन्स् ने अपने-अपने उपचार किये। दवा, मालिश और विद्युत शॉक भी अजमाये गये किन्तु लिजा तो पगु की पगु ही बनी रही।

विशेषज्ञो को बडा ताज्जुब था, ताज्जुब का कारण लिजा की पगुता नही थी। ताज्जुब इस कारण से था कि रोग का निदान नही हो पा रहा था। दोनो पावो मे पूर्ण चेतना थी। खून की गति, पल्स की गति और स्पर्श सज्ञा सभी ठीक थे। सभी प्रकार के तर्क---अनुमान लगाकर वे एक ही निर्णय पर पहुचते थे कि लिजा को कोई रोग नही है।

इस पर भी कुछ तो था ही।

क्या था?

यह कौनसा गुप्त रोग था, जिसने इस बालिका के चेतना से थनगते हुये पावो को निर्जीव बना दिया था?

पराजित---थके हुए--उपचारो को आजमाइशकर, करके परेशान हो चुके विशेषज्ञो के पास मनोविशलेषण करने का अवकाश नही था।

लिजा के लिए वे कुछ कर सकने मे असमर्थ थे।

उन्होने लिजा को नेवी हॉस्पिटल से छुट्टी दे दी।

मात्र छ वर्ष मे मा के साये से परे हो जाने वाली इस मातृहीन अभागी बालिका के सिर से पिता का हाथ भी उठ गया।

वह अनाथ थी। लिजा का कोई घर नहीं था अपाहिज थी।

और इस अनाथ अपग बालिका के लिए अनाथालय के सिवाय कोई स्थान नहीं था।

दानवीरो की दया के अलावा अन्य कोई आधार नही था।

नेवीगेशन कम्पनी के मालिको ने इस अपग बालिका को उसकी मातृभूमि स्वीडन के किसी सरकारी अनाथालय मे प्रवेश दिलवाने का निर्णय लिया। स्विडीश एम्बेसी से पत्र व्यवहार शुरू किया गया। स्विडीश सरकार ने स्वीकृति दे दी। एक दिन क्यूनीन से एक जहाज ने स्टाकहोम का रास्ता लिया।

इसी स्टीमर मे स्टीमर कम्पनी की एक नर्स की देखरेख मे बारह साल की अनाथ और अपग लिजा को स्टाकहोम पहुचाया गया।

और उसी स्टीमर कम्पनी मे नवनियुक्त डाक्टर हिमाशु ने सर्वप्रथम चार्ज लिया।

कम्पनी के अधिकारियो ने हिमाशु को सेवा मे लेते समय लिजा को उसके हाथ सौंप दिया और आदि से अन्त तक सारी बात बता दी।

स्वभाव से ही हरएक केस मे गहरी रूचि लेने वाले डाक्टर हिमाशु ने लिजा के केस मे भी पहले ही दिन से गहरी रुचि लेना शुरू कर दिया।

जिन-जिन विशेषज्ञो ने लिजा का उपचार किया, उनकी सूचि मय विशेषज्ञो की रिपोर्ट के स्विडीश सरकार को लिजा के साथ जाने वाली नर्स के हाथ भिजवा दिया गया था। इन सभी रिर्पोटो को हिमाशु ने बडी गहराई से देखा, जो पूछना था वह भी सभा जान-पहिचान वालो से पूछ लिया गया।

इसके बाद लिजा से भी कई बातें पूछी गई। तथा मनोविज्ञान के इस प्रकाड विद्वान को अपने गहन अध्ययन के कारण यह समझने मे देर नही लगी कि लिजा की बीमारी शारीरिक, बीमारी नही·····यह एक मानसिक बीमारी का केस है·····।

प्रारम्भ से ही मनोविज्ञान मे रुचि रखने वाले डा. हिमाशु ने लिजा का मनोविश्लेषण करना शुरू किया। बहुत कुछ जानकर डा हिमाशु ने लिजा की मानसिक ग्रन्थियो को खोलने का प्रयास करना शुरू किया। परन्तु इतनी पूछताछ करने पर भी लिजा ने कोई ऐसी बात नही बताई, जिसका सहारा लेकर डाक्टर अपने उपचार को आगे बढाये रखते—।

प्राय किसी भी तरह के प्रश्न का उत्तर देने की अपेक्षा या तो लिजा डाक्टर को टकटकी लगाए देखती रहती या फिर रोना प्रारम्भ कर देती। इसके सिवाय कुछ भी वह सकने मे समर्थ नही थी।

आखिर एक दिन समझा बुझाकर डाक्टर ने लिजा को दवा का एक डोज पिला दिया।

बिस्तर मे सोते ही लिजा कहने लगी 'डाक्टर साहब ! डाक्टर साहब !!

'क्या है ?'

'मैं कहीं उड़ती जा रही हूँ ?'

'कहाँ ?

'मुझे मालुम नही । मैं आकाश में उड रही हूँ ।'

'अच्छा है, उड जा ।'

'ओह ! ओह·······! मैं खूब ऊंची चढती जा रही हूँ ।'

'चढती जा····!चढती जा····कोई बाधा नही आयेगी । मैं तेरे पीछे-पीछे आ रहा हूँ ।

'आपको मेरे पीछे आने की कोई जरूरत नही है ।'

'क्यों ? मेरे बिना आकाश में तेरी कौन देखभाल करेगा ?'

'मैं तो, मेरे पापाजी के कधों पर चढकर उड रही हूँ । अब मेरी समझ मे आ गया है कि मुझे, मेरे पापाजी आकाश मे ले जा रहे हैं ।

'जब तू पापा के साथ है, तो फिर क्यों चिल्ला रही है ?'

'मुझे उस समय इसका भान नही था ।'

'क्या तुझे अपने पापाजी के साथ जाना अच्छा लगता है ?'

'भला पापा के साथ जाना किसे अच्छा नही लगेगा ?'

'तब क्या तुझे अपने पापा के साथ ही रहना अच्छा लगता है ?

'हाँ, बिल्कुल !'

'सदा के लिए ?'

'नही तो क्या ? इस ससार में पापा के अलावा मुझे कौन सभाल सकता है ? मम्मी ने तो मुझे न जाने कब का छोड ही दिया है ।'

'परन्तु लडकी बडी हो जाने पर पापा के साथ नहीं रह सकती है । फिर तो उसे अपने पति के साथ ही रहना पडता है ।'

'पर मैं अभी इतनी बडी कहाँ हुई हूँ ?'

'मात्र छः ही वर्ष की हूँ ?'

'क्यों झूठ बोलती हो ! तुम तो केवल चार साल की हो ?'

'नहीं डाक्टर ! मैं केवल छ साल की ही हूँ। देखो मम्मी तो अभी मरी ही तो है । देखो, पापा क्या कहते हैं, आप जानते हैं ?'

'क्या कहते हैं ?'

'तेरे मम्मी-पापा मैं ही हूँ । मैं परमात्मा से प्रार्थना करता हूँ कि जब तक तू अपने पावो पर खडी न हो जाय, उस समय तक····उस समय तक परमात्मा मुझे जीवित रक्खे । तेरी मम्मी के समान मुझे तुमसे दूर न कर दें ।'

'ओह···· तू अपने पावो पर खड़ी हो जायेगी, उस समय तक तेरे पापा को जीवित रहना चाहिए, क्यो ?'

'उस समय तक तो वे जीवित ही रहे ।'

'तब तू अब अपने पावो पर खड़ी क्यों नही हो जाती है ?'

'नहीं, मैं अपने पांवों पर कैसे खड़ी हो सकती हूँ। मैं तो अभी छः वर्ष की बालिका ही हूँ, अपने पांवों पर कैसे खड़ी हो सकती हूँ ?'

'—तब तेरे पापा तुझे छोड़कर कैसे चले गये ?'

'बेकार की बात मत करो। पापा कहीं नहीं गये ? पापा तो मेरे पास हैं, यहीं हैं । तनिक ध्यान से देखो, वे मुझे कन्धे पर बैठाकर आकाश मार्ग में उड़ रहे हैं। मुझे भटकती छोड़कर वे भला कहीं जा सकते हैं ?'

'क्या तुझे इस बात का विश्वास है कि तुझे इस प्रकार छोड़कर नहीं जा सकते हैं ?'

'हाँ !'

'यदि इसी समय तू अपने पांवों पर खड़ी हो जाये, तब वे तुझे छोड़-कर चले जायेंगे ?'

'लिजा यह बात सुनकर चुप हो गई।'

मुंह बन्द हो गया।

उत्तर दे।

किसका उत्तर ?

'तू इसी समय—इसी क्षण, अपने खुद के पांवों पर अगर खड़ी हो जाय तो तेरे पापा तुझे छोड़कर जा सकते हैं या नहीं ?'

'कौन जाने ! पापा प्रार्थना करते समय यही तो कहते हैं, 'हे ईश्वर ! कुछ नहीं तो उस समय तक--कम से कम उस समय तक--तू मुझे कुशलतापूर्वक रखना, जब तक मेरी लिजा अपने पांवों पर खड़ी न हो जाय।'

'निःसन्देह अब तू अपने पांवों पर खड़ी रहना सीख गई है।'

'ओह, नो ...। नो ...। डाक्टर यू आर क्वाइट रोन्ग ! इट्स क्वाइट रोन्ग। यह एकदम झूठी बात है। इस समय तो मैं पापा के कन्धों पर बैठकर आकाश में उड़ रही हूँ।'

'तू इस समय कहाँ है ?'

'तारों के देश में।'

'तारों को अपनी मुट्ठी में पकड़ ले। विश्वासकर... पकड़े जा सकते हैं, या नहीं।

'ओह... ! हाऊ प्रेटी ! कैसा मनभावन दृश्य है ! कितने सारे तारे मेरी मुट्ठी में आ गये हैं ! देखो ! देखो ! कैसे चमक रहे हैं।'

'अपने हाथों को भली प्रकार घुमाना तो तुझे आता है ! मुट्ठी खोलना, बन्द करना भी आता है, क्यों ठीक है न।'

'सो ! इसमें कौन-सी बड़ी बात है।'

'तब फिर पांव घुमाना क्यों नहीं आता है ?'

'देखो आता है न ।'

'—तब पाव हिलाकर नीचे कूद जा, जरा मैं भी देख लूं ।'

'नही रे ! क्या मैं आकाश से जमीन पर गिरकर टुकडे-टुकडे हो जाऊ क्या ?'

'-- क्या है तब ?'

'देख, ठीक तरह से देख । नीचे चन्द्रलोक है, तारों से जेब भरकर चन्द्रलोक मे खेलने के लिए कूद जा ।'

'··· परन्तु मेरे पापा····?

'उनको परमात्मा के पास जाने दे ।'

'नही भाई ! पापा के बिना मे एक पल भी चैन से नही रह सक्ती हूँ ।'

'यदि मैं ही तेरा पापा बन जाऊ तब ? मैं भी तेरे पापा की तरह तेरी देख-भाल करूंगा ।'

'तुम ? तुम मेरी देख-भाल करोगे ?'

'हाँ····जब तक तू अपने पावों पर खडी नही हो जाती है, तब तक मे तेरे पापा की तरह ही तेरी देख-भाल करूंगा ।'

'किन्तु····, मैं नीचे किस प्रकार उतर सकती हूँ ? मेरे पाव तो पापा ने पकड रक्खे हैं ।'

'पापा ने नही पकड़ रखे हैं, मैंने ही पकडे हैं । मैं ही तेरा पापा हूं, बेटी ! मैं ही तेरी मम्मी हूँ····तनिक आखें खोलकर भली प्रकार से देख ले ।'

और इसके साथ ही डाक्टर हिमाशु ने लिजा के पावो को मजबूती से पकड लिया ।

लिजा ने आखें खोलने का प्रयास किया, किन्तु उसकी पलकें इतनी भारी हो गई थी कि वह चाहते हुये भी उन्हें नही खोल सकी ।

'हिमाशु ने पुन: जोर से कहा : 'आखें खोल ।'

'नही खोलती ।'

'क्यो ?'

'मुझे डर लगता है' ?

'किसका डर ?'

लिजा की आवाज यकायक रोने मे बदल गई : 'मेरे सामने मेरे पापा की लाश पड़ी हुई है ।'

'तेरे पापा को जीवित कर दूं तब ।'

'उदासी आवाज एकदम हर्ष मे बदल गई . 'तब तो मैं आंखें जरूर खोल दूंगी ।'

'खोल ।'

'पहले पापा को जीवित कीजियेगा ।'

'तुम्हारे पापा तो न जाने कब से जीवित हो चुके हैं।'

'इतना कहकर हिमाशु ने लिजा के पाव छोड दिये।'

एक बार पाव छोडकर पुन दुगुने जोर से पाव पकड लिये : 'अब देख, तेरे पापा ने ही तेरे पाव पकडे हैं। क्या यह सही बात है ?'

बिना आखें खोले ही लिजा ने उत्तर दिया 'हाँ।'

'तू इस समय कहाँ है, जानती है ?'

'चन्द्रलोक म।'

'नही।'

'तू अपने पापा के पास उनकी बगल मे ही बैठी है''''स्टीमर मे माझी के केबिन मे ही।'

'सचमुच ही''''?'

लिजा की आखें एकदम खुल गई।

सचमुच ही''''आँखो के सामने न तो चन्द्रलोक ही था, और न आकाश ही था। डाक्टर के कमरे मे बिस्तर भी नही था। स्टीमर मे,--माझी की केबिन मे--माझी की नरम गद्दी वाली कुर्सी पर लेटी हुई थी। उसके दोनो पाव किसी माझी ने मजबूती से पकड रक्खे थे।

किन्तु माझी का चेहरा साफ-साफ नही दिखाई दे रहा था, क्योकि मुंह पर नकाब पडी हुई थी। वेश-भूषा माझी की ही थी। यही नही, माझी की वेश-भूषा उसके पिता के समान ही थी। किन्तु''''किन्तु''''क्या वह माझी उसका वास्तव मे पिता था ?

उसकी लाल सुर्ख आखें क्षणभर मे पागल की भाति इधर-उधर घूम-कर माझी की नकाब पर जा ठहरी''''डाक्टर कहीं दृष्टिगत नही हो रहे थे।

'पापा ! पापा !' लिजा की व्याकुल चीखें छत को भेदकर, आकाश के साथ टकराकर नीचे आ गिरी।

ये चीखें कैसी थीं ? आशा के असीम आनन्द के आवेग की''या'''' निराशा के आघात की ?

माझी के वेश मे हिमाशु ने लिजा के पाव एकदम ऊचे करके खेंचे। औंधे मुंह लटकती दशा मे उसे पकडे हुए वह बाहर आये तथा इसी दशा मे समुद्र मे कूद पडे।

रात का समय था। स्टीमर ने फ्रीटाऊन बन्दरगाह पर लगर डाल रक्खा था।

समुद्र इस समय शान्त नहीं था। किन्तु इतना भयकर तूफान भी नहीं था कि तैरने मे तकलीफ हो। स्टीमर की हैडलाइट का प्रकाश समुद्र मे काले पानी को चीरता हुआ दूर दूर तक फैल रहा था।

स्टीमर, बन्दरगाह से कुछ दूरी पर था। आस-पास जहाजो की भरमार नहीं थी। काले पानी पर पहले से ही चार लाइफ बोट तैर रही थी। चारे

समुद्र मे स्टीमर के मद प्रकाश के अलावा कोई प्रकाश नही आ रहा था।

इस समय श्यामवर्ण पानी मे लिजा के पांव पकडकर हिमाशु ने हिम्मत करके एक डुबकी लगाई।

हिमाशु की अशान्त आवाज लहरों के साथ टकराकर टूटे फूटे शब्दो में स्पष्ट-अस्पष्ट सुनाई पड रही थी।

'लिजा........।'

'डाक्टर.........! तुमने मुझे कहा डाल दिया, डाक्टर !'

'मैं डाक्टर नही हूँ।'

'तब तुम कौन हो ?'

'तेरा पापा हूँ।'

'उछलती तरगो मे दो शरीर इधर से उधर गोतें खा रहे थे। इस समय भी हिमाशु के हाथ लिजा के पांव जकडे हुए थे। लगातार एक के बाद दूसरी डुबकी लगाने के कारण वह सुनने मे असमर्थ थी।

फिर भी लिजा ने हिमांशु की बात सुन ली।

'मेरे पाव छोड दो... ! छोड दो....।' उसने जोर से चीखें मारना शुरू किया।

'नही, मैं तेरा पापा हूँ। क्या तू अपने पावो पर खडी होना सीख चुकी है ?'

लिजा ने कुछ बोलने का प्रयास किया, किन्तु मुह मे पानी भर जाने के कारण वह कुछ भी नहीं बोल सकी।

एक तेज झटके से हिमांशु ने उसे ऊचा उठाया।

'बोल.......कुछ तो बोल.......!'

लिजा ने कोई जवाब नही दिया। कदाचित् दे भी नही सकती थी।

हिमाशु ने समय का हिसाब पहले ही रख रखा था। वह यह जानता था कि दवा के डोज का असर बराबर एक घटे तक रहेगा। इस घटे के आखिरी दस मिनट मे लिजा अर्द्धचेतनाअवस्था मे रहेगी। इस अर्द्धचेतनावस्था मे डाक्टर ने लिजा को गोद मे लेकर समुद्र मे डुबकी लगाई थी। हिमाशु जानता था कि पानी में गिरते ही लिजा को होश आ जायेगा।

सचमुच में ऐसा ही हुआ।

र मय पूरा होने से पहले ही लिजा पर दवा का असर खतम हो गया और वह पूरी तरह होश मे आ गई।

वह समुद्र मे गिर पडी है, ऐसा भान होते ही उसने अपने बचने का प्रयत्न करना शुरू कर दिया। तैरना न जानते हुए भी उसने हाथ हिलाना शुरू कर दिया।

हाथो के साथ पाव भी हिलाना शुरू कर....पाव हिलाना शुरू कर दिया।

लिजा ने चीख मारी।

'पाव कैसे हिलाऊ पांव तो तुमने पकड रक्खे हैं।'

मेरी मुट्ठिया बहुत मजबूत हो गई हैं। तेरे पाव अब मुक्त नही हो सकते हैं।

'ओ माँ ......। लिजा ने एक जोरदार दारुण चीख मारी।

हिमाशु ने उसे फिर से ऊचा किया 'तू अपने आप प्रयत्न करके मेरी मुट्ठियो से अपने पाव मुक्त करवा ले।'

तरगो मे उछलते हुये शरीर को इधर उधर करते हुए लिजा ने हिमाशु के हाथ पकडने का प्रयत्न किया।

जैसे ही उसके हाथ डाक्टर हिमाशु के हाथो को छुये कि हिमाशु ने उसके पावो को छोड दिया तथा लिजा से दो चार फीट दूर हो गये।

'हाय माँ ''! हाय माँ, मुझे बचाओ, मैं डूब रही हूँ। मुझे बचाओ ''

भयभीत हुई लिजा ने, डूबती हुई लिजा ने, अपने आपको निराधार समझकर चिल्लाना शुरू कर दिया।

एक लाइफ बोट उसके पास आ गई।

दूर से ही हिमाशु ने आदेश दिया : 'लाइफ बोट का तख्ता पकड ले, लिजा।

लिजा ने लपककर लाइफ बोट का तख्ता पकड लिया।

'ऊपर चढ जाओ।'

लिजा का श्वास भर गया था और उसे कपकपी आ रही थी। उसका समस्त तन मन व प्राण काप रहे थे। मृत्यु के समीप पहुँचने के पश्चात आखिरकार जीवन डोरी उसके हाथ मे आई थी। अतएव अपनी पूर्ण शक्ति से उसने तख्ते को पकड लिया।

डाक्टर हिमाशु उत्तेजित होकर आदेश दे रहे थे : 'तख्ते से अब लाइफ बोट में चढ़ जा''''। जल्दी''''एकदम जल्दी''''देख तेरे पापा के हाथो मे से तेरे पाव मुक्त हो गये हैं। तेरे पापा ने तेरे पांव इसलिए छोड दिये हैं कि अब तू अपने पावों पर खडी होना सीख जा''' तभी तू बच सकती है'' नहीं तो तू डूब जायेगी। सचमुच ही तू अब डूब जायेगी।'

'मैं डूब रही हूँ ' डाक्टर''''।'

'कोशिश कर'' कोशिश कर''''! भगवान ईशु को याद करके जीने का प्रयत्न कर बेटी! भगवान बहुत दयालु है। वे तुझे नही मरने देंगे।'

'मैं किस प्रकार प्रयत्न करूं ?

'छलांग लगाकर बोट मे चढ़ जा।'

'लिजा ने छलांग मारने का प्रयत्न किया, किन्तु सफलता नही मिली। दूसरी छलाग''''तीसरी''''हर छलाग के साथ बोट अधिकाधिक हिलती जा

रही थी, इससे उसे ऐसा लगा मानो बोट उलट जायेगी और वह डूब जायेगी।

भयभीत हुई लिजा ने अब अपनी शक्ति बटोर कर पांवो को हिलाना शुरू किया। कुछ समय जो पाव लकडी के समान जड, गतिहीन रहे, वास्तव मे अब गतिशील बन गये थे। परन्तु लिजा को इस गतिशीलता का ध्यान नही आया। अतएव एक एकबार फिर से उसने अपनी समस्त शक्ति एकत्रित करके बोट पर चढने को छलांगें मारना शुरू किया। एक दो तथा तीसरी छलांग मे वह बोट पर चढ गई।

लाइफ बोट मे बैठने को स्थान नही था, अतएव वह तख्ता पकडकर खडी हो गई।

पानी मे तरबतर हुई लिजा ने मुह का पानी निकालते हुये व्याकुल भाव से इधर उधर नजर फैलाना शुरू किया।

लाइफ बोट खाली थी। उसमे इसके सिवाय कोई नही था।

मात्र दो छोटी पतवार उसमे रक्खी थी।

हिमांशु अब इतना थक गया था कि उसको तैरने मे कष्ट अनुभव होने लगा। परन्तु अपने सामने का दृश्य देखकर उसकी सारी थकान एकदम स्फूर्ति मे बदल गई।

श्वांस भरे असीम उत्साह मे डाक्टर ने बडी तेजी से आवाज दी 'शाबाश'। लिजा, शाबाश!

लिजा की लाइफ बोट के पास मे दो दूसरी लाइफ बोट इधर-उधर तैरने लगी।

एक नाविक ने रेलिंग के पास की बत्ती पकडकर समुद्र मे प्रकाश किया। डाक्टर से पूछा 'सीढी डालनी है?'

तैरते हुए हिमांशु ने नकारात्मक उत्तर दिया।

अभी वह लिजा को थोडी और तकलीफ देना चाहता था।

बोट मे तख्ते को पकड़ते हुए लिजा अब तक भी बुरी तरह से कांप रही थी। उत्तुंग तरगो मे चल रही लाइफ बोट न जाने कब इन थपेडो मे समा जाय, कहा नही जा सकता था। बोट डोलने के कारण लिजा के हाथ बार-बार तख्ते से छूट रहे थे। तख्ते के गीले होने के कारण पाव फिसल रहे थे। तदुपरान्त भी जान की बाजी लगाकर वह स्थिर रहने का प्रयास कर रही थी।

हिमांशु देख रहा था, सब देख रहे थे कि लिजा तख्ते पर हाथ टिकाये सहज मे अपने पावो पर खडी है। हिलती हुई नाव मे पाव को टिकाये रखना कठीन होते हुए भी लिजा जैसे तैसे खडी थी। स्थिर""अस्थिर"" गिरने के भय से कापती---लडखडाती तथा अधिक दृढ बनने का प्रयास करती"" "।

और पाच सात मिनट के कठिन परिश्रम के बाद वह खडी हो गई । अपने पावो पर दृढ से खडे होकर उसने अपने मुंह पर आये गीले बालो को एक तरफ हटाया । अतीव व्यग्र-विकल आखो को वह न जाने किसकी खोज मे इधर-उधर घुमाने लगी । हिमाशु पर नजर पडते ही उसने एकदम जोर से पुकारा : 'डाक्टर···· मुझे बचाओ डाक्टर !'

'तनिक ठहर, मेरी बच्ची ! अभी कुछ देर रुक जा ।'

'मैं नही ठहर सकती हूं । बोट अभी डूब जायेगी ।'

हिमाशु खिल-खिलाकर हँस पड़ा : 'समुद्र मे कूद जा ।'

'नही····नही····नही····।' लिजा ने एकदम सिर हिलाया ।

'यदि तू स्वयम् अपने डर को नहीं निकालेगी तो मैं तुझे अपने हाथो से समुद्र मे ढकेल दू गा ।'

'ओह ! ऐसा मत करना····डाक्टर साहब ।' दोनों हाथ हिलाते हुए उसने भयकर चीख मारी ।

हिमाशु ने देखा कि लिजा बिना हाथो के सहारे पांवो पर ही बोट मे खड़ी है ।

किन्तु बोट के झोके के कारण वह फिसल गई और वह गिर पडी । किन्तु दूसरे ही क्षण वह तख्ता पकडकर पुन. खड़ी हो गई ।

अब उसने बार-बार चीखें मारना शुरू किया : 'बचाओ····मुझे बचाओ, निकालो····मुझे स्टीमर मे ले लो ।'

'एक शर्त पर तुझे स्टीमर पर लिया जा सकता है ।'

लिजा के मुह से एक भी शब्द नही निकला, किन्तु आखो मे आशा-भरी उत्सुकता, आतुरता एकदम जगमगा उठी ।

धीरे-धीरे तैरते हुए हिमाशु लिजा के पास पहुँच गया और बडे सन्तोष से कहने लगे, 'स्टीमर से खलासी सीढ़ी डालेंगे । तुझे अपने आप सीढी से ऊपर चढना होगा, कोई भी तेरी मदद नही करेगा । बोल क्या तुझे यह शर्त मन्जूर है ?'

हिमाशु की बात मे सहमति देते हुये लिजा ने जोर से कहा : 'स्वीकार है?'

इसी समय सीढ़ी उतारी गई । लाइफ बोट को धक्का लगाकर हिमाशु सीढ़ी के समीप ले आया ।

मौत के पजे मे जकड़ी हुई, जीवन को वरदान समान देखते हुये, असीम आतुरता से लिजा सीढ़ी के सामने आते ही अतीव आनन्द मे एक छलाग मारकर चढ़ गई और एक क्षण में वह सीढ़ी के सहारे स्टीमर पर चढ़ने लगी ।

बिना किसी हिचकिचाहट मे उसने सीढ़ी पार कर ली ।

अन्तिम सीढ़ी पर पहुँचते ही कप्तान ने उसे अपनी बाहों मे जकड़

लिया। देखते-देखते ही वह हाथो ही हाथो मे वह एक नाविक से दूसरे नाविक के हाथ मे जाने लगी।

स्नान ग्रादि से निवृत करवा के उसे पुन जब हिमाशु के पास लाया गया तो डाक्टर ने कहा, 'इसे हर घन्टे बाद एक पेग ब्रान्डी पिलाई जाये। सोने की यदि इच्छा हो तो उसे जब तक थककर चूर-चूर न हो जाये तब तक सोने न दिया जाये।'

किन्तु डेक पर थोडी देर घूमने-फिरने पर जब लिजा थक गई तो उसने हट किया 'मुझे सो जाने दें।'

वाइब्रेटिंग मशीन से डाक्टर ने लिजा के दोनो पावो को देखा। उसने दोनो पावो पर वायब्रेशन करना शुरू कर दिया।

थोडी देर की मालिश के बाद लिजा के पावो मे रुधिर मिश्रण की क्रिया ने जोर पकड लिया।

लिजा बता, थकावट दूर हुई या नही ?'

डाक्टर ने लिजा को उसके दोनो कन्धे पकडकर खडा कर दिया। हल्का-सा धक्का देते हुये उसने कहा 'एक बार तनिक दौडकर भी बता, तो देखू ।'

वायब्रेशन से खुद लिजा को ऐसा ग्रानन्द ग्राया कि उसने ग्रागे होकर नर्स को वायब्रेशन करने के लिये कहना शुरू किया ग्रौर ग्रतीव उत्साह से मालिश करवाना प्रारम्भ कर दिया।

डाक्टर ने नर्स को ग्रादेश दिया 'बस, मालिश करते रहो ग्रौर दौडाते रहो, इसे।'

केवल ग्राश्चर्यमुग्ध ही नही—ग्राश्चर्यमूढ बनकर केप्टिन ग्रौर दूसरे ग्रफसर हिमाशु को पूछ रहे थे 'यह क्या चमत्कार हुग्रा, डाक्टर! इस प्रकार ग्राख मूदकर खोलते ही तुमने इस ग्रपग बालिका लिजा को कैसे चलती-फिरती बना दिया ?

'चमत्कार! चमत्कार जैसा तो कुछ भी नही। केवल रोग का पक्का निदान होना जरूरी था। रोग के बाह्य निदान करने के उपरान्त भी किसी डाक्टर ने रोग का मूल कारण ज्ञात नही किया।

'मूल कारण क्या था ?'

मातृहीन बालिका को पिता ने इतने दुलार से रखा कि बालिका पराव-लम्बी बन गई। केवल शारीरिक रूप से ही नही ग्रपितु मानसिक रूप से भी। बालिका पिता के ग्रवलम्बन पर ही जीवित रह सकती थी। पिता की बोली ही बोल सकती थी। पिता के विचारानुसार ही विचार करसकती थी। उसके पास स्वतन्त्र विचार शक्ति नही रह गई थी। उसकी स्वयम् को न तो

स्वतन्त्र रूप से सोचने की शक्ति थी और न स्वयम् की इच्छा शक्ति ही। इसलिये उसका स्वतन्त्र मानसिक अस्तित्व भी नही रहा। इतने पर भी परावलम्बन का यह भाव इतना नुकसानप्रद नही हो सका होता, 'यदि उसके पिता ने इतनी दृढता से पुत्री के मस्तिष्क मे यह भाव न जमाया होता.....।'

इसका मतलब यह हुआ कि लिजा की अपंगता का कारण उसके पिता स्वयम् थे ?

'हाँ, एक भय उसके पिता को सदैव ही परेशान करता रहता था कि 'जब मैं, इस ससार मे नहीं रहूँगा तो मेरी लिजा का क्या होगा ? यही भाव मन मे रहने के बजाय बार-बार लिजा के सन्मुख फूट पडता था। पिता को भय था कि लिजा उसकी अनुपस्थिति मे पगु बन जायेगी। दूसरी ओर लिजा के मन में भी यह भावना दृढ हो गई थी। वैसे तो हर माता-पिता को ऐसी भय, चिन्ता सदैव अपनी सन्तान के लिये बनी ही रहती हैं। किन्तु लिजा को पिता के स्टीमर का माझी होने के कारण अपने जीवन की सुरक्षा का भय बार बार लिजा के सामने व्यक्त करते रहने के कारण, वह मानसिक रूप से इतनी परतत्र बन गई, कि उसके कोमल हृदय मे यह बात जम गई कि पिता के सहारे के बिना वह जीवित नही रह सकती है। इस कारण से पिता की की मृत्यु के पश्चात ही लिजा के अस्तित्व का भी एक अश मर चुका था। उसकी विचार शक्ति शून्य हो गई थी। मृत्यु के समय इसके पाव, पिता ने मजबूती से पकड रखे थे। पिता की मृत्यु हो जाने के बाद भी अपने पांवो पर पिता की मुट्ठियो की पकड को लिजा ने जीवन का आलम्बन मान लिया था। इसी कारण इसके पावो से पिता के हाथ की मुट्ठिया छूटते ही उसके पाव बेकार हो गये थे। मस्तिष्क मे शरीर के अवयवो को सचालित करने वाली कई ग्रन्थियाँ होती हैं और इन ग्रन्थियो के ज्ञानतंतुओ से शरीर के अवयवो का सचालन होता है। इन ज्ञानतन्तुओ मे से कुछ ज्ञानतन्तु जो पांव को सचालित करते थे बेकार हो गये। ये बेकार बने ज्ञानतन्तु लिजा की दुर्बल मन स्थिति के कारण सक्रिय नही हो पा रहे थे। अतएव किसी भी तरह इसको सक्रिय करने की आवश्यकता थी।'

'तुम्हें यह ख्याल किस प्रकार आया कि इस प्रकार ज्ञानतन्तु क्रियाशील बन सकेंगे।'

जब रोग का कारण ज्ञात हो सकता है, तब फिर इलाज करना कोई मुश्किल बात नही है। मनोविज्ञान मे पारगत किसी भी डाक्टर के लिये यह बात असम्भव नहीं है।

रोग का मूल कारण खोज लेना एक कठिन काम है। अपार जहेमत उठा करके, कई मुश्किलें हल करके आखिरकार रोग का कारण खोज

निकाला। पहले की सभी बातें सुनकर, लिजा की बीमारी की सभी रिपोर्ट्स पढकर, लिजा के साथ कुछ दिनो वातचीत करके उसके अन्तर्मन के इस भाव को भली प्रकार से जान लिया गया कि लिजा बिना पिता के अपने जीवन की कल्पना तक भी नही कर सकती है। अपने एकाकी अस्तित्व की स्वीकृति के विचार की, वह कभी सोच ही नही सकती थी। लिजा के पिता ही वस्तुत इस मानसिक पगुता के लिये उत्तरदायी थे। वे परमात्मा से सदा यह प्रार्थना करते थे कि लिजा को पावो पर खडे होने के समय तक उसे जीवित रक्खे। लिजा के मन मे इसी कारण यह ग्रन्थि घर कर बैठी कि यदि इस उम्र मे उसके पिता का स्वर्गवास हो जायेगा तो वह पगु बन जायेगी। जैसे ही पिता का स्वर्गवास हुआ कि लिजा ने मन ही मन अनुभव किया कि वह अपने पावो पर खडी होने मे असमर्थ है। वह ऐसी अवस्था मे नही है कि अपने पावो पर खडी हो सके। मन की इस ग्रन्थि ने मस्तिष्क को प्रभावित करके पावो के साथ सम्बन्धित ज्ञानतन्तुओ को बेकार कर दिया तथा लिजा के लघु मस्तिष्क ने शरीर के विभिन्न अगो को आदेश देते हुये भी पावो को आदेश देना बन्द कर दिया। इसी कारण से लिजा के पाव बेकार हो गये थे।

मात्र केप्टिन ही नही स्टीमर के सभी अधिकारियो ने दातों तले अगुली दबाकर इस अद्भुत दास्तान को सुना।

कल्पनातीत सफलता मिलने के कारण अतीव उत्साह मे आकर डाक्टर हिमाशु ने बताया कि 'रोग का भली प्रकार से निदान कर लेने के बाद रोग का उपचार करना कोई कठिन काम नही होता है। मूल बात तो यह थी कि लिजा के मन मे आत्मविश्वास उत्पन्न किया जाय। वैसे तो प्रत्येक बालक जन्म से ही आत्मविश्वास की भावना लेकर उत्पन्न होता है। इसी आधार पर वह दूध पीना सीखता है। रोना-बोलना-घुटनो के बल चलना और पैरो पर चलना भी आत्मविश्वास के आधार पर ही सीखता है। समयानुसार जैसा वातावरण होता है, उसी के अनुसार आत्मविश्वास का विकास या अवरोध हो जाता है। माँ की मृत्यु के बाद, पिता ने अपनी इकलौती पुत्री की बहुत अच्छी सेवा-टहल करना शुरू किया। सेवा-टहल के कारण लिजा अपने व्यक्तित्व तक को भूल गई। उसका आत्मविश्वास समाप्त हो गया। जीवन की प्रचण्ड इच्छा शक्ति प्रत्येक व्यक्ति मे जन्म के साथ ही उत्पन्न होती है, लिजा मे भी यह शक्ति थी। किन्तु पिता के जीवन पर ही उसकी जिन्दगी निर्भर है, ऐसा विचार आने के कारण यह इच्छाशक्ति लिजा का आत्म विश्वास जाग्रत करने की अपेक्षा पिता की आत्मा पर आधारित हो गई। इसी कारण से पिता की मृत्यु म ही लिजा अपनी मृत्यु देख रही थी, यद्यपि पिता की मृत्यु के साथ उसकी मृत्यु नही हुई, किन्तु इच्छाशक्ति की मृत्यु अवश्य हो गई। अतएव मन की पगु, लिजा शारीरिक रूप से भी पगु हो

गई। उपचार के लिये यह आवश्यक था कि शारीरिक पशुता को दूर करने के लिए मैंने अमुक प्रकार का ड्रग पिलाकर उसे बेहोश कर दिया। वस्तुत मस्तिष्क ही अचेतन था, जबकि मन पूर्ण चेतनावस्था मे था।'

'कौन-सा मन जागृत था! बाह्य या आन्तरिक?' बात मे रस लेते हुये केप्टिन ने हँसते हुये पूछा।

'बाह्य और गुप्त दोनो। ड्रग का यही तो सबसे बडा लाभ है कि यह मस्तिष्क को अचेतन बनाकर मन को चेतन बनाये रखता है।'

एक अमेरिकन यात्री भी इस चर्चा मे सम्मिलित था। बात को काटते हुए बोला, 'डाक्टर सच कह रहा है। आजकल अमेरिका में इस पद्धति का खूब प्रचलन है। हठी अपराधियो की जिनकी जान भी ले ली जाय तथा एकदम चुप हुए रोगियो को ऐसे ही ड्रग पिलाकर उनसे सत्य बात निकलवा ली जाती है। मैंने स्वयम् एक ऐसा ही केस देखा है, जबकि ड्रग का नाम कुछ और ही था वह नाम मुझे याद नही आ रहा है।

हिमांशु ने हँसते हुए कहा 'आप लोगो को दवा का नाम याद करने की कोई आवश्यकता नही है। इसमे कई तरह की दवाइयाँ होती हैं। अपराधियो को दी जाने वाली दवा को लाइडीटेकर के नाम से पुकारा जाता है। पर मैंने लिजा को जो दवा दी है, वह कुछ और ही है। यदि इस समय मैं आपको दवा का नाम नही बताऊ तो कोई विशेष नुकसान नही होगा।'

हम लोगो को दवा म कोई रुचि नही है, रुचि है तो आपके प्रयोग मे। अधीरता से बोल उठने वाले कप्तान की कौतूहलपूर्ण आंखों के सामने आखो मे ही हसते हुए हिमांशु ने बात को आगे बढाया 'मैंने लिजा को दवा पिलाकर उसके मन और मस्तिष्क का सम्बन्ध थोड़ी देर के लिये विच्छेद कर दिया। इसके कारण मन पर छाये हुये बाह्य सस्कार मन के मूल सस्कारो से पृथक हो गये और मन मे जो कुछ था वह बाहर निकल गया। इस प्रकार मैं लिजा को उस अवस्था में ले आने म सफल हो गया, जिस अवस्था मे वह अपने पिता के जीवन काल में थी। लिजा उस समय पिता की मृत्यु की याद भूल गई। अतएव पिता की मृत्यु के कारण उत्पन्न शारीरिक एवम् मानसिक पशुता की बात भी वह भूल गई। इस स्थिति के बाद अब उसके भ्रम को प्रशान्त रखने के लिये पिता को ही उसके सामने लाना आवश्यक था। मैंने स्वयम् लिजा के पिता का अभिनय करना उचित समझा। लिजा के पिता जैसे वस्त्र पहिनकर, वैसे ही नाविक के मैंने कपडे पहिन--टोप में मुह ढककर मैं उसके सम्मुख उपस्थित हुआ। अर्द्ध तन्द्रावस्था म लिजा को पिता के जीवित स्थिति का ध्यान आते ही वह असली लिजा बन गई। इस समय मैंने उसी स्थिति का पुनरावर्तन किया, जो स्थिति लिजा के पिता की मृत्यु

के समय मे थी। मैंने लिजा के पावो को उसी प्रकार मजबूती से पकड लिया। जैसे उसके पिता ने मृत्यु के समय जकड रक्खे थे और इसी स्थिति मे समुद्र मे छलाग लगाई। लिजा की बालबुद्धि ने उसके मन पर ऐसा आतक जमा दिया कि वह पिता के बिना आलम्बन के जीवित नही रह सकती है। अतएव उसका सुप्त मन यह चाहता था कि पिता के हाथो मे जकडे हुए उसके पाव कभी मुक्त न हो। इसके पिता के समान ही पाव पकडकर समुद्र मे कूद लगाने के बाद उसके पिता की तरह ही मैंने अधर मे इसके पाव छोड दिये···· इसलिये कि इसमे अपने पांवो पर खडा हो सकने का आत्मविश्वास उत्पन्न हो सके। इस प्रकार का आत्मविश्वास उत्पन्न करने के लिये जीवित रहने की इच्छा शक्ति को जागृत करना आवश्यक था। उसको जीवित रखने वाला पिता का आधार अभी जीवित है, ऐसी अनुभूति होते ही उसकी इच्छाशक्ति पहले की तरह स्वयम् ही सजग ही नही अपितु प्रबल रूप से सजग हो उठी। अब वह किसी प्रकार जीना चाहती थी। जीवित रहने के लिये पानी मे हाथ-पाँव हिलाना जरूरी था। लिजा ने हाथ-पांव हिलाने का अथक परिश्रम किया। इस समय वह उसी अवस्था मे थी, जबकि उसके पाव काम कर सकते थे। इस अवस्था मे उसका मन व बुद्धि यह भूल गया कि उसके पाव बेकार हैं। अनजाने ही मस्तिष्क के लघु ज्ञानतन्तुओ ने सतेज होकर पावो को सक्रिय होने का आदेश दिया। ज्ञानतन्तुओ के निष्क्रीय हो जाने के कारण बेकार हुए पाव, ज्ञानतन्तुओ के आदेश के कारण एकदम गतिशील बन गये। पाव की चेतना लुप्त तो हुई नही थी, पर पाव की चेतना लुप्त न होने की बात का ज्ञान लिजा को होना अत्यावश्यक था। एक बार पावो के सक्रिय होते ही यह ज्ञान स्वय ही गया तथा किसी की सहायता नही मिलेगी, इस बात को समझ लेने के बाद तैरना न आते हुए भी हाथ-पाव हिलाकर तैरने का प्रयत्न करके आखिर लाईफबोट का आश्रय ले ही लिया व बिना किसी के सहारे के छलांग मारकर वह लाईफ बोट म चढ गई। वह अपने पावों पर खडी रह सकती है, इस कल्पनातीत बात को वास्तविक रूप देकर इसका भय-सन्देह एकदम काफूर हो गया। नई उत्पन्न स्फूर्ति व अद्भुत उत्साह से धनगती हुई वह जल्दी से मोढी पर चढ गई ···· ।

एक क्षण चुप रहकर डाक्टर ने बात पूरी की . 'अब मुझे एक वस्तु की आवश्यकता है कि लिजा की जीवित रहने की प्रबल इच्छा इसी प्रकार सदैव बनी रहे। यह इच्छा शक्ति इसी पर बनी रहना सम्भव है, जबकि लिजा अपनी इच्छानुसार कार्य करे तथा इसी प्रकार के आत्म विश्वास की ज्योति उसके अन्तर मे उत्पन्न करना आवश्यक है।'

यह कठिन काम है। सज्जन कप्तान ने अति हर्ष से डाक्टर का हाथ

पकड लिया। डाक्टर का हाथ दबाते हुये हर्ष से कप्तान ने आगे कहा : हम इसे अपने स्टीमर में ही स्टीमर गर्ल की तरह रख लेंगे। यह अपनी तरह—अपनी विधि से जो काम करना चाहे वही सौंप दिया जायेगा।'

मेरा विचार कुछ भिन्न है। सिर पर तर्जनी अंगुली रखकर डाक्टर हिमांशु बहुत देर तक सोचते रहे। आखिर मे गहरी सांस लेकर डाक्टर ने कहा, 'यह स्टीमर के नाविक की पुत्री है, इसके सुख एवम् स्वतन्त्र भविष्य बनाने का उत्तरदायित्व नेवीगेशन कम्पनी का नैतिक कर्तव्य है। अभी तो यह नादान बालिका है। बालिका को यदि अच्छी शिक्षा दी जाये तो वह भविष्य मे स्वावलम्बी बन सकती है।'

आप कहे तो हम कम्पनी मे लिजा के लिये प्रार्थना पत्र दे दें।

'कहने की कोई आवश्यकता नही है ? इसी प्रकार होना चाहिये, सब अधिकारियो ने एक स्वर से कहा।'

इसके फलस्वरूप वेस्ट अफ्रीका स्टीम नेविगेशन कम्पनी के डाइरेक्टरो को सम्बोधित करते हुए एक प्रार्थना पत्र उसी दिन तैय्यार किया गया और उसी दिन गोनाफ्रीका बन्दरगाह से लुआण्डा के हैडआफिस को भिजवा दिया गया।

स्टीमर जब लिस्बन पहुँचा, तब तक हैडआफिस से बोर्ड का उत्तर प्राप्त हो गया।

प्रार्थना-पत्र स्वीकार कर लिया गया।

स्टीमर स्वीडन जा रहा था, हिमांशु फ्रान्स के लेहावे बन्दरगाह पर ही लिजा के साथ उतर पडा और वहाँ से पेरिस जाकर उसे एक नृत्यशाला मे भर्ती करवा दिया।

कई दिनो तक वह लिजा के साथ ही रहा। खर्च की व्यवस्था करके डाक्टर ने लिजा मे आत्मविश्वास की भावना उत्पन्न की। दूसरी तरफ लिजा अपनी हैडमिस्ट्रेस व बोर्डिंग सुपरिन्टेडेन्ट से मिलकर जी-जान से नृत्य का अभ्यास करने लगी, तब हिमांशु ने पेरिस छोडा। स्टीमर मे नौकरी शुरू करने पर पहले प्रतिदिन तथा बाद मे हर आठवें दिन डाक्टर लिजा को नियमित रूप से पत्र लिखता रहा।

ये पत्र, पिता पुत्री के पत्र थे। हिमांशु प्रिय पुत्री सम्बोधित करके पत्र लिखता। अन्त मे 'तेरे विरह से बेचैन रहता पिता लिखता।'

लिजा भी अब अपने असली पिता को भूल चुकी थी।

जब स्टीमर फ्रान्स के किसी भी बदरगाह पर लंगर डालता तो हिमांशु जैसे तैसे करके पेरिस पहुचता। वह लिजा के साथ एक दो घटे बिताकर अश्रुभरी आखों से विदा लेता। समय देखकर फिर मिलने आता....।

चार साल में लिजा नृत्य विद्या मे पूर्ण प्रवीण हो गई। नृत्य में पूर्ण प्रवीण होने पर हिमाशु ने सिफारिश करके वेस्ट अफ्रीका स्टीम नेवीगेशन कम्पनी मे लिजा को नौकरी दिलवा दी।

कम्पनी ने अपने दो तीन बडे जहाजो के थियेटरो में इसे नृत्य करने का काम सौंप दिया।

एस एस अगोला से डान्स हॉल की स्टेज पर थनगन-थनगन नृत्य करती लिजा को देखकर कौन कह सकता है कि जीवन की समस्त आशा उल्लास को खो बैठी कल की यह पगु किशोरी आज की यौवनमत्त नर्तकी बनकर पावो मे बिजली भरकर, हर ठेके पर आशा एवम् उल्लास के रगीन फव्वारे उडा रही है।

बेचारी मैना······।

यह बात, जिस प्रकार से उसने बताई, उसमे नमक-मिर्च लगाकर बताना भला उसे कहाँ से आ सकता था ? उसे तो लिजा ने ही यह बात बताई थी। लिजा डाक्टर हिमांशु के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करने के लिये प्राय हर-एक के सामने सक्षेप या विस्तार मे अपनी रामकहानी सुनाया करती थी। लिजा ने मैना के सामने बिना कुछ छिपाये अपनी रामकहानी आदि से अन्त तक सुनाई थी, क्योकि प्रसूतिकाल मे लिजा को एक रात बिना एक क्षण विश्राम किये बैठे रहना पडा था।

लिजा की बात सुनने के बाद मैना को इस कहानी मे इतनी रुचि उत्पन्न हुई कि उसने डाक्टर हिमाशु से भी इस सम्बन्ध म पूछा तथा हिमाशु ने भी मैना को कुछ अधूरी-सी बात बता दी थी।

आज उस कहानी मे से जितनी कहानी मैना को याद रह सकी, उसने वह कहानी जिस तरह से सुना सकती थी, उष्मा को सुना दी।

वैसे मैना अपनी मस्ती मे ही सब बात कह रही थी, फिर भी उसे एक बात का बहुत सतोष था कि कहीं भी लेशमात्र नाक-भौं सिकोडे बिना उष्मा आज बडे आश्चर्य से लिजा की रामकहानी सुन रही थी।

आमरोज की तरह उष्मा आज बिल्कुल उदासीन नही थी, बिना आखों की पलकें मू दे सारी बात सुन रही थी।

उष्मा कहानी सुनने मे इतनी मस्त हो गई कि उसे यह भी भान नही रहा कि कहानी समाप्त हो चुकी है, तथा अब कुछ भी कहने को शेष नहीं रह गया है।

'लिजा····। लिजा·· एक पगु किशोरी, पगुता से मुक्ति पाकर एक प्रज्व-लनमान प्रतिभाशाली नर्तकी बन गई।

लिजा···· !'

अभी कुछ देर पहले जब लिजा हिमांशु के साथ घूमने को निकली थी तो उप्मा के मन में न जाने कैसे-कैसे विचार आये थे ? पराये पुरुष के साथ बन ठनकर घूमने फिरने को तैयार हुई, सुन्दर नर्तकी के लिये इसके अतिरिक्त और क्या सोचा जा सकता था ?

किन्तु यहाँ तो स्वयम् लिजा, मैना की जबान से कह रही थी---'डाक्टर हिमांशु उसके धर्म पिता बनकर दत्तक पुत्री के समान उसका लालन-पालन किया है"""" ।

उप्मा---मैना के मुख से कहानी सुनकर लिजा"" लिजा और हिमांशु के बीच के कल्पित सम्बन्धों पर कैसा परिहास कर रही थी ।

बस ! यही तो उप्मा के पास एक अन्तिम दृष्टिकोण था ।

हाय ! यह कोई लिजा का परिहास नहीं, अपितु उप्मा मानो अपने आपका ही मजाक उड़ा रही हो !

हाँ ""यह वही हिमांशु है, जिसने हृदय की परतें उखाड़कर अपने अपत्र अधिकार के मार्ग को तय करती हुई लिजा न जाने कहाँ से कहाँ पहुच गई ।

अपने अन्तर के अन्तिम तल से पुकार-पुकारकर दुनियाँ को कह रही थी" मामो" 'मुझे पहचान लो, देखो यह वही डाक्टर हिमांशु है—जिन्होंने मृत्यु की काली कगार पर विचरित करती हुई एक अभागी किशोरी को अधर उठा करके जिन्दगी के हरे भरे किनारे पर ला छोड़ा है ।

यह वही डाक्टर है, जिन्होंने लिजा को जीवन दिया है"" ।

यह वही धर्मपिता हिमांशु है, जिन्होंने लिजा की केवल जिन्दगी ही नहीं बचाई""लिजा की जिन्दगी बनाई भी है"" ।

लिजा डाक्टर की पुत्री नहीं थी । सगे-सम्बन्धियों तक की पुत्री नहीं थी । राष्ट्र, धर्म, जाति, सम्प्रदाय, भाषा, वर्ण आदि से हिमांशु का लिजा से कोई सम्बन्ध नहीं था । मात्र एकसूत्र तन्तु दोनों का हृदय जोड़ सका था । मानव का मानव के प्रति प्रेम तथा कर्त्तव्य भावना का यह नाजुक बन्धन मात्र मानवता की भावनाओं के स्पर्श से मजबूत हो चुका था ।

डाक्टर हिमांशु ने कई बार इस बात को यह कहकर टाल दिया कि जो कुछ किया है, वह सिर्फ डाक्टर का कर्त्तव्य मात्र है ।

कल रात रिहर्सल के समय उप्मा की सुश्रूषा करते समय बाहर जाकर शराब पीकर लौट आना " क्या इस काम को भी डाक्टर का कर्त्तव्य कहा जा सकता है ?

न जाने क्यों उप्मा मन ही मन अधीर हो उठी"" ।

मैना को वह साफ-साफ बता दे कि " डाक्टर शराब पीकर उसके केबिन में घुस आया था"" और""और"" और "" ।

मैना से इतनी रुचिप्रद बात सुन लेने के बाद अब वह इस बात को अरुचिकर बनाने को व्यग्र थी'' इसके विपरीत स्वयम् की अनुभव की हुई बात मैना को बताकर वह मैना की रुचि को जागृत कर देना चाहती थी। ठीक इसी समय मैना ने पूछा 'कल रात डाक्टर शराब पीकर क्या तुम्हारे केबिन मे आये थे ?'

उष्मा ने एकदम चौंककर पूछा 'क्या ?'

'क्या तू नही समझी ? डाक्टर के मुह से शराब की बू, आते ही क्या तू पागल-सी उन पर नही टूट पडी थी। क्या धक्के देकर तूने डाक्टर को अपने केबिन से बाहर नही निकाल दिया था ?'

'तुम्हे किसने बताया ?

'डाक्टर ने ही कहा, दूसरा कौन कहता ?'

'क्या तुमसे'' तुमसे डाक्टर ने यह सारी बात कही थी ?'

'मुझे तो नही, किन्तु मेरे सामने हो लिजा को डाक्टर ने सारी बात कही थी। सुबह लिजा मुझे दवा देने आई थी, उसी समय डाक्टर भी मुझे देखने आये थे। बात सुनकर मैं और लिजा हँसते-हँसते लोट-पोट हो गई।'

'डाक्टर ने सम्भवतया सुबह भी शराब पीकर होश खो दिये हो और अपनी धृष्टता तुम्हें बता दी हो, किन्तु मैना बहन, आप लोगो को लज्जा पूर्ण बात सुनकर इतनी अधिक हँसी क्यो आई ?'

'हमे तेरी मूर्खता पर हँसी आई ? अभी तुमने डाक्टर को असली रूप म देखा ही नही है?

उष्मा की हृदयाग्नि अब लपटों मे बदल गई 'पहिचानने को अब क्या बचा है ? पहले मन मे जो थोडा बहुत सन्देह था, वह कल की घटना स एकदम साफ हो गया।'

मेरी बात तू सुन लेगी तब यह सम्भव है कि तेरी मूल धारणा बदल जाय! डाक्टर लिजा को कह रहे थे कि उष्मा का प्रत्याघात देखने को ही मैं शराब पीकर उसके सामने गया था ''व्हिसिल की आवाज तथा शराब की गध इन दोनों का उष्मा पर क्या प्रभाव पडता है ? तीसरी वस्तु का असर अब और देखना शेष रह गया है।'

उष्मा को समझ मे नही आया कि मैना का यह अकल्पित तमाचा एक मजाक है, या उष्मा की मौत का अफसाना—?

हिमाशु एक शराबी की तरह नही, अपितु प्रयोग के लिये ही शराब पीकर उसके सामने आया था ?

उष्मा को अब कुछ कहने को शेष नही रह गया था।

तेरी तनी हुई भौंह देखकर मुझे लगता है कि उष्मा, डाक्टर ने तुझे कुछ

तकलीफ दी होगी।

किन्तु बहन वह तकलीफ तो लिजा को दी गई तकलीफ के समान ही होगी। डाक्टर तेरी भलाई की ही सोचते हैं। तुझ तो उनकी भावनाग्रा का ग्रादर करना चाहिये।

ग्रादर ?

बहुत प्रयास करके उष्मा मात्र एक ही शब्द कह सकी। वह भी इस तरह मानो वह ग्रभी रो पडेगी ?

मना ने इसका भिन्न ग्रथ लगाया कि उष्मा पर उसके कहने का ग्रनुकूल ग्रसर हो रहा है। ग्रतएव उसने ग्रपने उपदेश को जारी रखत हुए कहा लिजा तो उस समय मात्र बारह या चौदह साल की नादान बालिका थी। परन्तु उष्मा तू तो कोई नादान बच्ची नही है। यही नही तू तो सब बातें सोच समझ सकने वाली एक नौजवान तथा विवाहित युवती है तुझ तो ग्रागे होकर डाक्टर को सहयोग देना चाहिये।

उष्मा के मन म ग्राया कि वह मैना के मुह पर एक मुक्का जड दे। इतन म व्हिसिल बज उठी।

उष्मा भय से कापती हुई खडी हो गई। सिर को हाथो मे पकडकर वह केबिन की ग्रोर दौडी।

बिस्तर पर गिरत ही उष्मा को ऐसा ग्रनुभव हुग्रा मानो उसके सिर पर कालचक्र घूम रहा हो। मौत का ग्रफसाना लेकर घूमता हुग्रा एक चक्र!

व्हिसिल की ग्रावाज ग्रभी ब द होगी उसी ग्राशा मे उष्मा ग्राख खोल-कर ग्रपना होश बनाये रखने का ग्रथाह प्रयास कर रही थी।

किन्तु ग्राज व्हिसिल बहुत लम्बी चली उष्मा को समझने म तनिक भी देर नही लगी कि ग्राज की ये लम्बी तीखी व्हिसिलें केवल डाक्टर हिमाशु का एक षडयन्त्र मात्र ही है।

उष्मा ने दात पीसे तथा दात खुल कि वह बेहोश हो गई।

००

यह तो ठीक रहा कि मधुसूदन जब डेक से लौटे, तब उष्मा का बेहोशो-पन ग्रपने काले पख समेटकर उड गया था।

मैना के श्वसुर भी मधुसूदन के साथ बातें करते करते डेक पर चले ग्राये थे। थोडी देर के परिचय क बाद दोना प्रौढो के मध्य इतनी निकटता का

सम्बन्ध हो गया कि रात का भोजन दोनो ने एक ही स्थान पर लेने का निर्णय किया। मधुसूदन ने उसे आज अपने यहाँ भोजन का निमत्रण दिया।

स्टीमर एस० एस० अगोना केपटाऊन से स्टार्ट होकर केप ऑफ गुडहॉफ के मार्ग की ओर झम ···झम ···करके आगे बढ रहा था।

अच्छे तथा परस्पर एक दूसरे की बात को धैर्य्य से सुन सकने वाले दो प्रौढो के मिल जाने से दोनों प्रौढ बहुत प्रसन्न थे। दिन प्रतिदिन बढती हुई महगाई-गोआ के बाद पुर्तगीज टैरीट्री मे हो रही हिन्दुस्तानियो की दुर्दशा ।

मधुसूदन के परिवार मे उष्मा के अलावा था ही कौन ? मधुसूदन ने सर्वप्रथम उष्मा के हिस्टीरिया रोग की चर्चा करना शुरू किया। इसके बाद हिस्टीरिया रोग के उपचार करने वाले डाक्टर हिमाशु की गुणगाथा प्रारम्भ हुई।

उष्मा को इस चर्चा के सुनने मे न जाने कब से ऊब आ रही थी, किन्तु चर्चा मे अपने विषय की बात छिड जाने पर वह एकदम व्याकुल हो गई। वह एकदम खडी होकर बाथरूम मे चली गई। मुह धोकर उसने टॉवल से मुह को इतना रगड-रगड कर पोछा कि मुह पर खून चमकने लगा। बाथरूम से बाहर निकलकर उसने मुह पर यू० डी० कोलन छिडका। इससे मुंह पर एकदम चमक आ गई।

उष्मा को जब यह अनुभव हो गया कि वह पूर्ण-रूपेण स्वस्थ हो गई है, तो कहने लगी 'बापूजी, मैं डेक पर घूम आती हूं, खाने के समय से पहले लौट आऊँगी। इतना कहकर, बिना पिताजी के उत्तर की प्रतीक्षा किये वह डेक की ओर चल पडी। उसे इस बात का ध्यान नही रहा कि केपटाउन पर वह ठहरा हुआ स्टीमर पुन कब का स्टार्ट हो चुका है।

उसे तो केवल इतना ही याद है एक लम्बी व्हिसिल बजी थी··· और उष्मा ने व्हिसिल के इस प्रत्याघात को भूल जाने का प्रयास किया था।

डेक पर एक फ्रान्सीसी युगल सामने की रेंलिग पर इस प्रकार से झूलता हुआ खडा था, मानो वह अभी समुद्र म उछलकर गिर पडेगा। दोनों एक दूसरे को भीचे हुए मस्त हो रहे थे। इस मस्ती में जब किसी का शरीर रेंलिग पर ज्यादा झुक जाता तो वे एक दूसरे को कमर से पकड लेते थे।

रात्रि का ठडा मद पवन इनकी मस्ती से महक रहा था।

ये यूरोपियन कितने मुक्त है' ।

कितने प्रसन्न·······हैं।

काश उष्मा भी इनकी तरह ही इस प्रकार मुक्त मन से जीवन की निर्बन्ध मस्ती का आनन्द इसी प्रकार लूट सकती होती ····।

पर उष्मा के भाग्य में यह नही बदा था, उसे ऐसे आनन्द की चाह कहाँ थी ? बेचारी फ्रेंच युवती को पुरुष की वास्तविकता का सच्चा अनुभव

प्रतीत नही हुआ है। उसने देखा कि एक साइबेरियन युवती कागो प्रदेश का एक हब्शी, पास आकर बात कर रहे थे। दोनो की बातचीत से यह प्रतीत होता था कि भिन्न-भिन्न देशो के निवासी होने हुये भी इनमे अच्छी मित्रता हो गई है।

साइबेरियन युवती और कागो का युवक··· फ्रान्सीसी दम्पत्ति और अन्य विदेशी इस सागर तट की आह्लादक साँझ मे मुक्त मन से मस्त होकर हँस रहे थे, किन्तु सुख से दु ख और भूख से पीडित भारतीय इस विशेषता मे देश से अलग होते हुये आनन्द और मस्ती कैसे मना सकते हैं ?

'ओह ! मॉई गॉड ! यह स्टीमर तो मात्र भारतीयो के लिये ही चार्टेड है, तब फिर ये ढेर से विदेशी कहाँ से फूट पडे हैं ?'

उष्मा यह सोचकर चौंक उठी। वह इस तीखे-मधुर स्वर से कोई अपरिचित नहीं थी।

लिजा····! लिजा किसके लिये पूछ रही है ?

वह पतगे के समान सीढियाँ लांघती आ रही थी लिजा की चाल से ऐसा दृष्टिगत होता था, मानो वह सीढियाँ नही चढ रही है, अपितु सीढियो पर उडते- उडते आ रही है।

क्या वह उष्मा को पूछने को ही आ रही है ?

यह सोचकर उष्मा पहले से अधिक चौंक उठी।

उष्मा ने देखा, लिजा के पीछे-पीछे हसते हुये हिमाशु भी आ रहे हैं।

समीप आकर उष्मा के प्रश्न का उत्तर देत हुये हिमाशु ने कहा : 'यह सत्य है कि स्टीमर भारतीयो के लिये चार्टेड है, किन्तु लुडरीज से पोर्ट एलिजाबेथ को जाने वाला एक स्टीमर केपटाउन के बन्दरगाह पर आकर खराब हो गया। इस स्टीमर मे यात्रा करने वाले यात्रियो की प्रार्थना पर पोर्टट्रस्ट के अधिकारियो ने इन्हे भी अगोला मे यात्रा करने की आज्ञा दे दी। चार दिन मे ये सब पोर्ट-एलिजाबेथ पर उतर जायँगे।

उष्मा अब तक अपने विचारो मे मग्न थी, और उसे अब ध्यान आया। स्टीमर एस अगोला केपटाउन से न जाने कब रवाना हो गया ···उसे यह भी ध्यान नही रहा कि अब स्टीमर कहाँ आ पहुँचा है।

कदाचित लिजा, उष्मा से यही प्रश्न पूछने जा रही थी कि इस समय डाक्टर की अन्वेषक दृष्टि उष्मा पर पडी और उसने कहा : 'हल्लो, हल्लो ·! उष्मा आज तो तुम सन्ध्या की हवा को भाग्यशाली बनाने के लिये डेक पर आ गई हो।'

उष्मा का मन हुआ कि मुह फेर लिया जाय, पर वह ऐसा नही कर सकी। बरबस हँसकर उसने कहा ' 'हवा तो डाक्टर लोगों के साथ ही भाग्यशाली होती है, रोगियो के लिये नही। सिवाय डाक्टर के हवा का

मूल्य कौन आंक सकता है ?'

'ओह ! क्या खूब कहा ! मुझे खुशी है, कि तुमने यह मान लिया कि तुम एक रोगी हो। मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई है और आज की यह मद-मस्त सन्ध्या भी तुम्हारी बात सुनकर कम प्रसन्न नहीं हुई होगी ?'

डाक्टर जब अपने स्वार्थ के लिये किसी रोगी के पीछे पड़ ही जाय तो वह भले-चंगे व्यक्ति को भी रोगी बना देता है।

उष्मा यह सुनकर ठगी-सी रह गई।

हिमांशु आज और दिनों की तरह से बात नहीं कर रहा था, उसकी आवाज और दिनों की अपेक्षा आज कुछ भिन्न थी। अब तक उसने कभी सीधा प्रहार नहीं किया था, किन्तु न जाने क्यों आज डाक्टर ने एकदम सीधा प्रहार कर ही दिया ?

उष्मा कई बार कठोर शब्दों का उपयोग डाक्टर के बारे में कर चुकी थी, लेकिन डाक्टर हिमांशु ने उन कडवे शब्दों को मधु समझकर ही पी लिया था। इन बिन्दुओं को पीते-पीते उसका मन भर गया था। अतएव वह मन ही मन हँस पड़ा।

किन्तु आज वह लिजा के सामने ही हँस रहा था....और' .।

शायद लिजा, उष्मा की परेशानी को समझ गई और उसने बात का रुख बदलकर कहा 'हम लोग जब शहर से लौट रहे थे, तो उसी समय हमने पोर्टट्रस्ट के आफिस के पास स्टीमर की व्हिसिल सुनी। इतनी बुलन्द और लम्बी व्हिसिल सुनकर डाक्टर तुम्हारी चिन्ता करने लगे, उष्मा" !' बिना कहीं एक क्षण रुके, बड़ी तेजी से दौड़ते हुये स्टीमर पर आ गये। सीधे तुम्हारे केबिन पर पहुँचे तो....जैसा सोचा था वैसा ही तुम्हें पाया।

लिजा की बात सुनकर उष्मा का क्रोध एकदम भड़क उठा। वह कहने लगी . 'क्या तुमने जान-बूझकर व्हिसिल नहीं बजवाई डाक्टर ? मैं तुम्हें अच्छी तरह से जानती हूं। मैं अब व्हिसिल सुनने की आदी हो चुकी हूँ, फिर भी तुमने प्रलय का शख फूंकती, ऐसी भयंकर व्हिसिल क्यों बजवाई। क्या मैं झूठ कह रही हूँ ?'

हिमांशु ने उसकी बात का कोई जवाब नहीं दिया। किन्तु उष्मा के अंगार उगलते नेत्रों के सामने ही जब लिजा हँसी नहीं रोक सकी तो फटी आखों से, गर्जना करती हुई उष्मा बोली 'किसी के प्राण विदारक कष्ट पर डाक्टर इस प्रकार खिलखिलाकर हँस सकता है, क्या लिजा ?'

" परन्तु....तुम तुम भी दूसरे को कष्ट में देखने की आदी होगी, ऐसी मुझे स्वप्न में भी आशा नहीं थी।

उष्मा, 'मुझे स्वप्न में भी ऐसी आशा नहीं थी, कि तुम किसी के सरल

हास्य का इतना अनर्थ कर डालोगी। मुझे इस बात की बिल्कुल कल्पना भी नहीं थी कि तुम अपनी किसी कष्टदायक घटना का आरोप किसी निर्दोष के सिर पर इतनी आसानी से डाल दोगी।

'निर्दोष के सिर पर? अच्छी या बुरी किसी भी घटना के लिये मैंने भूल से कभी तुमको उत्तरदायी ठहराया हो, ऐसा मुझे याद नहीं पडता है।'

'यदि मुझे नहीं तो डाक्टर को! बिना कुछ मालूम किये, आखिर तुमने यह कैसे मान लिया कि डाक्टर के कहने पर ही स्टीमर में व्हिसिल बजाई जाती है। शायद तुम यह बात भूल रही हो कि केपटाऊन के बन्दरगाह पर स्टीमर का चार घन्टे का हॉल्ट था! स्टीमर के रवाना होने के आधा घन्टा पहले सदा ही ऐसी जोरदार व्हिसिल बजाई जाती है। व्हिसिल इस कारण से बजाई जाती है कि घूमने-फिरने को बाहर गये हुये यात्री व्हिसिल की आवाज सुनकर जल्दी से लौट आयें।

उष्मा एकदम चुप हो गई।

केवल चुप ही नहीं हुई, अपितु लिजा के सामने क्षुब्ध भाव से ताकने लगी।

तेज गुस्से में उष्मा ने जो कुछ कह दिया था, उस भाप से अब वह स्वयम् ही जलने लगी।

उष्मा की सूरत देखकर लिजा की मस्ती और बढ गई। वह इस मस्ती में उष्मा से बोली 'तुमने बिना कारण के ही आक्षेप नहीं किया तो फिर मुझे यह मानना पडेगा कि इससे पूर्व तुमने स्टीमर में यात्रा नहीं की है।'

उष्मा कुछ उत्तर दे कि इससे पूर्व ही होठों पर मुस्कान लाते हुए हिमाशु ने पूछा 'तब क्या उष्मा तुम लोग बम्बई से केन्जएरा विमान से गये थे?'

उष्मा क्षणभर के लिये हिमाशु के सामने स्थिर - अपलक देखती रही।

कुछ देर बाद आर्तस्वर में उसने कहा 'मैं तो हिस्टीरिया की रोगी हूँ, डाक्टर! अतः यह भी सम्भव है कि बेहोशी की हालत में बम्बई से अफ्रीका पहुँच जाऊ।'

लिजा फिर से हँसने लगी। किन्तु इस बार हिमाशु को हँसी नहीं आई। वह उष्मा को टकटकी लगाये देख भी नहीं सका। मुह मोडकर उसने अपना सारा शरीर रेलिंग पर झुका दिया।

सन्ध्या बीत गई। स्टीमर के आगे के भाग में बत्तियाँ ऐसी झिल-मिला रही थी, मानो स्टीमर ने गले में हीरा का कोई अमूल्य हार पहिन लिया हो।

तेजी से बढ रहे एस. एस. अगोला के दोनों ओर फेन की दो लम्बी लकीरें विस्तृत श्याम जल पालव में जरी के काम सदृश्य प्रतीत हो रही थीं।

उष्मा की सफेद साडी के पालव में रगीन कसीदाकारी का काम था। उसे यह ध्यान नहीं था कि उसके उडते पालव के रगीन पक्ष हिमाशु के मुह

से ही टकरा रहे हैं।

यदि उष्मा को यह ध्यान होता कि उसका पालव हिमाशु के मुह से टकरा रहा है तो वह उसे समेटकर अपने गले म लपेट लेती। पर वह तो विचारो म खोई हुई थी यदि ऐसा नही था तो वह एक निश्चल अचल शून्य मे अपना मन मसोसकर खडी थी खडी रह या बैठ जाय या भाग जा य।

मात्र वहाँ स्टीमर की रेलिंग थी, उसका सह-शरीर झुका हुआ था, ठीक उसी तरह, जैसे हिमाशु का था ।

हिमाशु के दूसरी ओर खडी हुई लिजा अल्लहडपन और बेपरवाही से पाव हिला रही थी। चारो ओर उल्लास भरी दृष्टि फैलाती हुई वह कहने लगी ओह माय गॉड। सारे यात्री चले गये।

'हाँ, खान-पीने का समय जो हो गया है' हिमाशु ने बडी गम्भीरता से कहा ।

'क्या आज आपको खाना नही खाना है?,

'नही, आज मुझे खाने-पीने की कोई शीघ्रता नही है?'

'लिजा ने रिस्टवॉच की ओर देखा और बोली 'मुझे अब चलना चाहिये। खाना खाने के पश्चात एक घटे बाद मुझे स्टेज पर जाना है।'

'येस यू केन गो।'

हिमाशु ने जाती हुई लिजा की पीठ को देखने की अपेक्षा उष्मा के मुह की ओर देखना शुरू किया।

एस एस अगोला अब केप हॉफ गुडहॉफ की तूफानी सीमा म प्रवेश कर चुका था।

एक दो तीन चार ।

ओह! न जाने कितनी मीनार बत्तियाँ केप ऑफ गुडहाफ पर बनाई गई है! सभी लाइट्स गोल-गोल चक्कर लगा रही थी सागर की श्यामकाया लम्बे चक्कर काटती हुई धवल प्रकाश किरणो के साथ झिलमिल करती हुई तेज मुग्ध होकर प्रसन्नता मे झूम उठी थी।

किन्तु उष्मा के जमे हुए हृदय जल को हँसाने का सामर्थ्य इन प्रचण्ड-प्रमत्त प्रकाश किरणो मे कहाँ है?

मात्र इतना ही दीप मीनारो के चारो ओर घूमने हुये दीपो को देखने का उसका मन हो रहा था, तथा वह उनकी ओर टकटकी लगाये देख रही थी।

इन दीपो की अपेक्षा हिमाशु को उष्मा का दीपोज्जवल बदन देखना बहुत अच्छा लग रहा था।

इस प्रसन्नता मे उसके ओठ खुले 'उष्मा, तुम यह अवश्य जानती होगी कि हम लोग इस विराट भूमण्डल के किस स्थान के समीप आ गये हैं।'

तन्द्रा म खोई उष्मा चौंककर पूछने लगी 'क्या ?'

क्या तुम नही जानती हो ? उन दीप मिनारो को देखो क्षितिज अपनी अमख्य आखो से हमारी ओर देख रहा है हम दोनों को और दोनो स उत्तर माग रहा है।'

'डाक्टर ! आप से वह प्रत्युत्तर चाहता होगा, मुझसे नही। मैंने ऐमा कोई काम नही किया कि मुझे कोई उत्तर देना पडे।

उष्मा इस प्रकार की अवहेलना के लिये अभी बहुत समय मिलेगा ! एक डाक्टर की हैसियत से नही, अपितु तुम्हारे एक मित्र की हैसियत से मेरी प्रार्थना है कि इस समय तनिक गम्भीर होकर—'

डाक्टर, मेरा कोई मित्र नही है। मैं मित्र की अपेक्षा भी नही करती । मैं हर समय हर अवस्था म गम्भीर रहती हूँ। तुम मेरी एक प्रार्थना सुन सकते हो तो मेरा निवेदन है कि जब तुम मेरे सामने रहते हो तो मेरे समान ही गम्भीर रहा करो।'

तुम्हारी प्रार्थना को मैं कैसे ठुकरा सकता हूँ। अनायास ही मिले इस एकान्त अवसर मे मेरी बात सुन लो तो ठीक रहेगा।

उपहास के बदले म हिमांशु के शब्दो से स्पष्ट, झनकती हुई शान्त, भावना क सामने इच्छा न होते हुए भी उष्मा निष्ठुर नही रह सकी।

कुछ दर तक वह मौन रहकर बोली 'कहिये आप क्या कहना चाहते हैं ?'

'जिस स्थान पर हम लोग अभी थोडी देर म पहुच जायेंगे, उस स्थान का नाम केप ऑफ गुड होप है। शुभमगल आशा का अन्तरीप ! सुमगल भूमि का उन्नत मस्तक यहाँ सागर को मानो कोई शुभ सदेश सुना रहा है। इन तेजस्वी दीप मीनारो की शुभोज्ज्वल आखो से हम यह मानो कोई शुभ सदेश दे रहा है क्या तुम ऐसा अनुभव नही कर रही हो—इस सन्देश का स्वागत करने मे हमारा कल्याण ही है ?'

मुझ अलकारो म कोई रस नही मिलता है ! जो कुछ कहना है स्पष्ट कह दीजियेगा। पर शर्त यह है कि मेरी बीमारी-हिस्टीरिया, सम्बन्धी कोई चर्चा नही होनी चाहिये।'

उष्मा तुम्हारी शर्त मुझ स्वीकार है ?' हिमांशु क होठो से नि स्वर हास्य फूट पडा।'

अपनी बात पर दृढ रहकर डाक्टर हिमांशु ने कहा 'देखा जाय तो यह स्थान अपने नाम के अनुसार अपना महत्त्व रखता है। केप ऑफ गुड होप शुभ आशा देने वाला अन्तरीप भले ही कहलाए—परन्तु इसका समुद्र बहुत खतरनाक है। यदि हम सागर के अतीत की ओर हम देखें तो पता चलेगा कि इस खतरनाक सागर म अनेक जहाज समाप्त हो चुके हैं इसी

कारण यहाँ इतनी अधिक दीप मीनारें बनी हुई हैं।'

'—तब फिर यह स्थल किस बात का शुभ संकेत देना है ? समाप्त हो चुके जहाजों के आर्तनाद का ?'

'इस स्थान के नाम पर कटाक्ष करते हुए समुद्र की तरह तुम्हें भी कटाक्ष करना बहुत अच्छा आता है ! वस्तुत यह दानो कटाक्ष कोई महत्त्व इसलिए नही रखते हैं कि—केप ऑफ गुड होप इस समुद्र का नाम नहीं है— समुद्र का सीना बाधकर अन्दर घुस आये भूमि के एक छोर का नाम है। परन्तु यह भी सम्भव है कि रास्ता भटके कई जहाजो के लिये यह आलम्बन स्वरूप बना हुआ है। सम्भव है, तुम्हे यह ज्ञात होगा कि यूरोप से हिन्द की ओर रवाना, हुये इन साहसी प्रवासियों ने इसी कारण इस खतरनाक स्थल का नाम बैड होप से बदलकर गुड होप कर दिया है।

'आखिर इन सब चर्चाओ का क्या प्रयोजन है ! उष्मा इसे समझ नही पाई। तदुपरान्त भी प्रश्न करने की अपेक्षा उसने सहज मे सिर हिलाकर कहा 'मैं जानती हूं,

'क्या खाक जानती हो ?'

उष्मा को अब आभास हुआ कि उसके मन को घेरी हुई कटुता के कारण ही हिमांशु ने यह प्रश्न किया है। अतएव सीधा उत्तर देने की अपेक्षा पहले की तरह उसने उपहास का सहारा लेना पसन्द किया 'मैं किसी को पूछने नही गई थी कौन जाने कदाचित तुम किसी को पूछ आये हो" ।'

'हां मैंने उन लोगो से पूछा है । केवल उन्हे ही नही इतिहास के पृष्ठो उन प्रवासियो के समान मरने वाले लाखो काल के गाल मे जाने वाले व्यक्तियो से मैंने पूछा है। तुम यदि बात की सत्यता जानना चाहती हो तो पूछ सकती हो उष्मा ! मुझे विश्वास है, तुम अवश्य पूछोगी।'

'डाक्टर ! मुझे इसमे कोई दिलचस्पी नही है।

केप ऑफ गुड होप के प्रवासियो के विषय मे जानकारी प्राप्त करने के लिये इतिहास नही, अपितु भूगोल का अध्ययन करना पडता है।

'बिना भूगोल के अध्ययन के ही मैं इनका नाम जानती हूं।'

'वैसे तो स्कूल मे पढा हुआ प्रत्येक विद्यार्थी इनका नाम जानता है फिर भी ' फिर भी आज के विद्यार्थी से जब पूछा जाता है तो उसकी स्मरण शक्ति कोलम्बस के बजाय वास्कोडिगामा का नाम ही बतलाती हैं। मैं तुमको एक मजेदार बात सुनाता हूँ 'एक विद्यार्थी को मैंने मार्कोपोलो के विषय म पूछा। विद्यार्थी ने मार्कोपोलो सिगरेट मुझे दी। अतएव सम्भव है कि तुमने भी इसी प्रकार से दो चार नाम रट लिय हो और तुम्हारे ज्ञान की सीमा का अन्त आ गया हो परन्तु मैं तो ऐसे डेढ दर्जन भूमि-शोधक साहसिक विश्व

प्रवासियों के सम्बन्ध में जानता हूँ। यदि तुम नाम सुनना पसन्द करो, तो मैं, तुम्हें उनके नाम गिना सकता हूँ। 'तनिक बताओ कि क्या तुम आमंडसन या लिविंग्स्टन के सम्बन्ध मे कुछ जानती हो ?'

मैं तुम्हें कह चुकी हूँ कि केप हॉर्न गुड होप का नाम रखने वाले या किसी के जीवन-कार्यों के सम्बन्ध मे जानकारी करके, मुझे अपने ज्ञान को बढ़ाने की बिल्कुल भी इच्छा नहीं है।'

'तुम्हें ये सब नाम इसलिए नहीं बता रहा हूँ कि तुम अपने ज्ञान की सीमा को बढाओ।'

'तब फिर ?'

'तुम्हें इन सब प्रवासियों के नाम बतलाने को, इसलिए उत्सुक हूँ कि तुमको उन व्यक्तियों द्वारा उठाये गये कष्टों एवम् कठिनाइयों का तनिक ख्याल आये।'

'पर डाक्टर, मुझे उनके समान कष्ट उठा करके तथा कठिनाईयाँ पार करके क्या करना है ?'

'तुम्हें तो कुछ नहीं करना पर मुझे तो विजय प्राप्त करनी है।'

'—तब तुम इन प्रवासियों से प्रेरणा ले सकते हो। प्रवासियों ने ऐसी कोई शर्त तो नही लगाई है, डाक्टर साहब।'

'बेशक ! प्रेरणा देने वाले कभी किसी प्रकार की शर्त नहीं रखते हैं। यही नहीं, उष्मा मंजिल पार करने की इच्छा रखने वाला व्यक्ति, किसी के सहयोग की प्रतीक्षा में कभी चुपचाप बैठा नहीं रह सकता है""। अपनी मंजिल पर पहुँचने के पहले,, मैं तुमको यह बतलाना चाहता हूँ कि तुम अपनी ओर से चाहे जितनी ही रुकावटें मेरे मार्ग में खड़ी करो, तब भी मेरे बढ़ते हुए कदम पीछे नहीं हटेंगे।

इसका क्या मतलब !

मेरे कहने का मतलब यह है कि मैं एक डाक्टर हूं। इन साहसी वीर विश्व प्रवासियों के समान परिश्रमी और जीवन बलिदान करने वाला चाहे नहीं बन सकूं, किन्तु, इनके जीवन कार्यों की सफलता, असीम श्रद्धा में से प्रेरणा लेकर श्रद्धा को इतना दृढ़ अवश्य बनाना चाहता हूँ कि आगे कदम बढ़ाने पर मुझे किसी प्रकार का भय न सता पाये""। उष्मा ! 'अब भी तुम मेरी बात भली प्रकार नही समझ पाई हो तो कान खोलकर सुन लो कि एक डाक्टर के नाते, मैंने तुम्हारा केस हाथ मे लिया है। मैं इस केस को अधूरा नहीं छोड़ सकता हूँ, चाहे जितनी ही रुकावट क्यों न आयें। मैं उनको केप ऑफ गुड होप समझकर पार करूँगा""मैं कोलम्बस बनकर ही तुम्हारे

उष्मा के होंठ दांतों से इस प्रकार से भिच गये, मानो वह डाक्टर के शब्दों को नहीं, अपितु डाक्टर को ही चाबे जा रही हो। उसने बड़े कर्कश स्वर में कहा . 'यदि मूल कारण का निदान न कर सकें तब ?'

'—तब- मैं बम्बई के बन्दरगाह पर उतरने से पहले समुद्र में डूबकर मर जाऊंगा।'

हिमांशु की हिम शीतलता अब लुप्त हो चुकी थी। उसके अन्तिम वाक्य ने वज्र की शक्ति के समान बर्फ की शिला को टुकड़े-टुकड़े कर दिया था। अपूर्व निश्चलता से इतना कहकर उसने मौन धारण कर लिया।

एक क्षण···। उसने उष्मा की स्तब्ध आंखों पर अपनी दृष्टि स्थिर कर ली, तथा दूसरे क्षण में नेत्र झुकाकर वह जल्दी से सीढ़ियाँ पार कर गया।

कुछ देर पहले सामने दिखाई देने वाली दीपमीनारें अब पीठ की ओर थीं।

सन्ध्या ढलते ही डेक पर आई, उष्मा····डेक पर ही बैठी रह गई।

डेक पर अब एक भी यात्री नहीं था। डेक पर मात्र दो नाविक-स्टीमर के छोर पर बन्धी दो लाइफ बोटों के पोल में बैठकर हुक्का गुडगुडा रहे थे। इन दोनों के ऊपर मन्द बत्ती टिमटिमा रही थी।

सहसा एक रेडियो गीत माईक पर गूंजा

'दूर गगन के कोने में, जो चमक रहा ध्रुव तारा,

युग युग की अज्ञात प्रिया को देख-देख कर थक हारा····'।

तो क्या उष्मा भी किसी की प्रिया है ?

अज्ञात प्रिया···?

'जल सरिता का स्वप्न सजोती मलय पवन मतवाली !

आंचल अचल पूछता सागर, किसने मेरी नींद चुरा ली····?'

००

खलासियों की पाली बदलने की अभी व्हिसिल नहीं बजी थी, परन्तु ठीक समय पर हिमांशु की डोर बैल टणिग··· टणिग··· टणिग करके बज उठी।

मधुसूदन ने बार-बार बटन को दबाया, किन्तु न तो अन्दर बत्ती ही जली और न दरवाजा ही खुला। परेशान होकर फिर जब मधुसूदन ने बटन दबाया तो नेम प्लेट पर उनकी नजर गई, नीचे एक नन्हा-सा सिंगलवर्ड उपहास के संकेत में कह रहा था - 'आऊट'

मधुसूदन एकदम बहुत परेशान हो गये। डाक्टर न जाने कहाँ चले गये है ? इस समय इतने बड़े स्टीमर मे उन्हे कहा ढूढा जाय ?'

सिर खुजलाते हुये वे केबिन की ओर लौट आये। काल बैल बजाकर उन्होंने बॉय को बुलवाया : 'जा, तनिक डाक्टर को बुला ला।'

'कहाँ से बुला लाऊ !'

'यदि यही पता होता तो क्या मैं खुद ही नहीं बुला लाता ? जा, जरा जल्दी से ढूढ ला। डाक्टर से कहना की उप्मा को कै हो रही है। किसी तरह बन्द नही हो रही है। जल्दी से आकर दवा दे दें।'

कोई दस मिनट बाद बॉय लौटा। उसने बताया कि डाक्टर साहब ने कहा है कि वे थोड़ी देर बाद मे आयेंगे।'

'ऐसा ? क्यो, क्या वे अभी नही आयेंगे।'

'स्टीमर मे आज कई व्यक्तियो को कै की शिकायत हुई है, क्योकि समुद्र मे तूफान आ रहा है। जैसा आप जानते है कि एक के बाद दूसरे को देखने तथा दवा देने में समय तो लगता ही है।'

'अच्छा ! अब तू जा··· जा····। डाक्टर को कहना कि मधुसूदन बुला रहे हैं।'

बॉय दुबारा गया फिर भी खाली हाथ लौटा। उसने बताया कि डाक्टर साहब कहते हैं कि अभी थोड़ा समय लगेगा।

'क्या, मेरा नाम बताया था।'

'लिया था, जी ! तब भी नही आये ?'

'थोड़ा समय लगेगा।'

वॉश बेसिन पकड़े हुये उप्मा ने दो तीन बार बॉय की ओर मुह करके कुछ बोलने का प्रयास किया, परन्तु उबकियाँ ठहरती ही नही थी। जैसे ही वह बोलने का प्रयास करती कि उबकी आ जाती थी। अबकी बार उबकी को दबा करके कष्ट से उप्मा ने कहा 'बापू जी रहने दीजिये। डाक्टर की कोई आवश्यकता नही है।'

उप्मा ने एक बार फिर से 'ओ ओ ओ····क कहा, स्टीमर मे दूसरे भी यात्री हैं। हम कोई अकेले ही नही हैं।' बॉय की ओर मुंह करके बोली : 'जा····जा···· तू जा। बार-बार डाक्टर को बुलाने की कोई आवश्यकता नही।'

उप्मा की बात सुनकर मधुसूदन ने कहा : 'मेरी समझ मे नही आ रहा है कि तेरी तबियत को आखिर हो क्या गया है।'

स्पष्ट है कि जब समुद्र मे तूफान आता है तो कई व्यक्ति, सी-सिकनेस से पीड़ित हो जाते हैं। एक दो घन्टे मे स्टीमर का हिलना-डुलना समाप्त हो जायेगा, तब सब कुछ ठीक हो जायेगा।' परन्तु घन्टे, दो घन्टे की बजाय ..

तीन घन्टे पूरे होने को आये। न तो दरिया ही शान्त हुआ न स्टीमर का हिलना-डुलना भी कम हुआ, न उष्मा की कै ही बन्द हुई और न ही डाक्टर साहब आये।

उष्मा की बजाय अब मधुसूदन की तबियत ज्यादा बिगड गई। दो बार तो स्वयम् हाथ मे लकडी लेकर डाक्टर को ढूढने भी निकल पडे। पर डाक्टर का कही भी पता नही लग सका। बहुत ढूढने पर पता मिला कि डाक्टर परेता मे हैं। इतने विस्तृत परेता मे इधर-उधर भटकने की मधुसूदन की हिम्मत नही थी। वे चुपचाप लौट आये।'

परेता की यह दशा थी कि कही भी पाव या नाक सलामत रह सके ऐसा नही था। मछली बाजार से भी वीभत्स शोर-गुल यहाँ पर हो रहा था। असहनीय खट्टी बू से बचने के लिए हाथ से नाक को भी दबा लिया जाये, तब भी सिर भन्ना उठता था। चारो ओर उल्टी के रेले··· बू···अति भयानक दुर्गंध—पाव रखने को भी स्वच्छ जगह कही नही रह गई थी।

आस पास मे चलते-फिरते बीच-बीच मे स्थान पर बैठे हुए यात्री इस प्रकार की गडबड के कारण अपने स्थान पर नही रह सके। स्टीमर मे हिलने डुलने के कारण यात्रियो का सामान एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुच गया। यात्री अपने-अपने बिस्तरो को पकडकर जहाँ के तहाँ बैठें हुये थे। स्त्रियाँ अपने बिस्तरो मे ही बैठी-बैठी उल्टियाँ कर रही थी···और कै, के बाद वही बैठे-बैठे कुल्ले भी····। छोटे बालको की बात तो छोडिये, बडे बालक भी बिस्तरो मे पडे-पडे पेशाब कर रहे थे। कै, के साथ मलमूत्र की सयुक्त दुर्गंध ने सारे वातावरण को चारो ओर से ऐसा दूषित बना दिया था कि अच्छी हवा का प्रवेश होना अति कठिन था। इस धमाचौकडी मे आँखो के सामने होने वाली बात भी दिखाई नही दे रही थी। फिर भी मधुसूदन एक कोने मे खडे होकर विकल दृष्टि से चारों तरफ देखने लगे।

डाक्टर कही भी दिखाई नही पड रहे थे। परन्तु थोड़ी देर मे लिजा दिखाई दी।

लिजा····।

काला चुस्त फ्राक पहिने हाथ में दवा की ट्रे लेकर लिजा इधर से उधर चारो तरफ दौड रही थी। वह क्या कह रही थी, समझना तो मुश्किल था। लेकिन उसके हाव-भाव से प्रतीत होता था कि किसी को कुछ समझा रही थी, तो किसी को डाट रही थी····किसी खडे व्यक्ति को पकडकर बैठाती थी तो किसी बैठे व्यक्ति की गर्दन पकडकर खडी कर देती थी। एक-एक करके वह प्रत्येक स्त्री को सिंकविल टेबलेट या डायाट्रीनेट पुडिया देती जा

रही थी। किसी किसी को द्रव दवा भी दे रही थी। हाथ में लटकते भोले में से चार-चार लौंग या काली मिर्च देती जा रही थी। बार-बार हाथ के इशारे करके सबको समझा रही थी।

स्टीमर इतनी तेजी से हिलने लगा कि मधुसूदन को सीधे खडा रहना भी कठिन हो गया। बडी मुश्किल से एक हाथ में लोहे की सलाख तथा दूसरे हाथ में लकडी का सहारा लिये मधुसूदन जैसे-तैसे वहाँ खडे रहे। लिजा अपने भोले में से लौंग और काली मिर्च बराबर उन लोगों को बाटती जा रही थी। उस पर स्टीमर के झटकों का कोई प्रभाव नहीं हो रहा था। वह एक ऐसी अद्भुत स्फूर्ति से चारों ओर घूम रही थी, मानो जैसे स्टेज पर नृत्य कर रही हो।

इस समय लिजा को धन्यवाद देने के लिये मधुसूदन के पास कोई समय नहीं था और न ही भाव थे। यही नहीं अपितु वे स्वस्थ भी नहीं थ॰ ॰ मधुसूदन ने अपनी सारी शक्ति लगाकर लिजा को आवाजें देना शुरू किया। परन्तु समय था वहाँ, कि कोई उनकी आवाज सुने सके ?

मधुसूदन ज्यादा देर रुक नहीं सकते थे, उन्होंने कई बार लिजा का ध्यान अपनी ओर खींचा। तितली की तरह फुदक-फुदक कर उडती हुई आकर वह पूछने लगी 'क्या है ? क्या हुआ अंकल ?'

'डाक्टर कहाँ है ?'

'किसको पता ! सम्भवतया ऊपर होंगे। केबिन के कई यात्री सी-सिकनेस से पीडित हो गये हैं। उनमें से किसी को देखने गये होंगे !'

'कहाँ गये होंगे ? मैंने बॉय को दो बार उन्हें बुलवाने को भेजा था।'

'कब ?'

'कोई घटा डेढ हो गया होगा।'

'ओह ! उस समय मैं यहाँ नहीं थी। केपटाऊन के पास में खराब हुए स्टीमर के यात्रियों को यहाँ लाना पड़ा, क्योंकि उनकी दशा खराब थी।

'एक बार डाक्टर को उष्मा को भी तो सम्भाल लेना चाहिये था।'

'क्या उष्मा भी सी-सिकनेस से पीड़ित है ?' इसीलिए बेटी, डाक्टर को ढूंढने निकला हूं।'

'इसमें भला डाक्टर की क्या जरूरत ? चलो, उष्मा को मैं ही दवा दे आती हूँ। इतना कहकर लिजा एकदम आगे बढ़ गई।

दवा सब रोगियों के लिये एकसी होती है, अतएव दो-दो- गोली, और मिक्सचर का डोज देते ही उष्मा की तबियत ठीक हो गई। इस पर भी लिजा ने तीन टाइम की दवा दे दी। हर आधे घंटे बाद दवा लेने को कहकर, वह वहाँ से चली गई।

मधुसूदन की परेता के दृश्य के कारण उत्पन्न हुई अवस्था धीरे-धीरे दूर होने लगी। वे विमुग्ध स्वर से बोले ' 'मैंने लिजा-सी छोकरी कही नही देखी।'

डाक्टर ने भी कई बार लिजा की प्रसशा की थी। मैना भी कई बार अपने विचार व्यक्त किये बिना नही रह सकी। लिजा की स्फूर्ति—चचलता-कर्तव्य-भावना, सदा हँसमुख स्वभाव के कारण उष्मा उस पर सदैव मुग्ध हो जाती थी। पर आज इस समय पिता के मुह मे लिजा की प्रशसा सुनकर वह प्रसन्न होने के बजाय न जाने क्यो मन ही मन वितृष्णा की एक चिनगारी से जल उठी।

लिजा' ।

डाक्टर की कृपा मे एक नव-जीवन और नव-जीवन का सुख प्राप्त करने वाली एक गौरवर्णी नर्तकी'' । इसके विपरीत उष्मा'' । उष्मा क्या हर-एक को अच्छी लगती है''' कदाचित्'' ! परन्तु इस समय तो दूसरो की तो बात ही क्या—वह स्वयम् अपने ही लिये क्या बोझ के समान नही है ?'

पिता को वह प्राणो से भी प्यारी है। परन्तु इस समय तो वह इसके विपरीत अपने रोग के कारण पिता के लिए सिर दर्द बनी हुई है। पिता के सिवाय कोई अन्य स्वजन नही है, नही तो वह उनके लिये भी चिन्ता का कारण बन गई होती। उष्मा जानती है, वे दिन भी थे, जबकि वह भी लिजा के समान जीवन के प्राणोत्साह से थनगती थी। हर नव- प्रभात' नई आशा का मगल सदेश लेकर आता था''' प्रत्येक रात्रि अधकार को विदीर्ण करके आनन्द प्रदायी रोशनी के प्रमत्त तेज से जगमगाती थी। मधुसूदन ने सदैव यह प्रयास किया था कि मातृविहीन उष्मा को कभी माँ की स्मृति भूले भटके भी नही आ पाये। उष्मा का ससुराल ढ ढने मे भी बहुत अधिक सावधानी रक्खी थी। मात्र वर देखकर ही मधुसूदन सतोष करने वाले नही थे। वर और घर, कुल और कुल के मनुष्यों के स्वभाव, घर के आचार-विचार, रहन सहन सुख-समृद्धि आदि सभी बातो को बहुत बारीकी से देखकर, जानकारी करके, आखिर मे बम्बईवासी एक कुटुम्ब के साथ रिश्ता तय किया गया था।

मधुसूदन का हार्दिक विचार था कि ससुराल में ज्यादा आदमी नही होने चाहिये। देवर-जेठ-श्वसुर-सास-ननद-भतीजा-भाणेज की फौज मे उनके स्व-भाव, की लाडली परेशान हो जायेगी। अधिक प्यार के कारण उसकी भावनाए बहुत कोमल हो गई हैं। वे चाहते थे कि उनकी लाडली के भावो को कोई किसी प्रकार की ठेस न पहुचा पाये। केवल वर तथा वर पक्ष के सिवाय दूसरा आदमी घर मे नही था। उष्मा के पति अनग की पैतृक सम्पत्ति के अलावा स्वयम् की भी आमदनी का कोई पार नही था। उसका बम्बई मे एक सुन्दर फ्लेट था। सूरत मे भी उनका निजी मकान था।

इसके उपरान्त अनग और उसकी माँ का स्वभाव ।

खास बात तो स्वभाव की ही है। माँ बेटे मे से किसी ने भी वर-पक्ष से सामान्य तौर पर प्रदर्शित मान-अभिमान का कभी प्रदर्शन नही किया। इसके विपरीत अनग की माँ मधुसूदन को प्राय कहा करती थी अनग केवल मेरा ही नही अपितु तुम्हारा भी बेटा है। इसी प्रकार उष्मा मेरी बहु नही अपितु मेरी बेटी भी है।'

मधुसूदन के जीवन मे उष्मा और अनग की सुमगल जोडी को परम आनन्द मे विचरण करती देखने के समान कोई आनन्द शेष नही रहा था। उनकी हरी-भरी फुलवारी की सुगन्ध लूटते हुये वे परम शाति से अपना अन्तिम श्वास लेने के इच्छुक थे अपने आन्तरिक मन के शुभ आशीर्वाद से वे उष्मा के सारे जीवन को शक्तिशाली बना देना चाहते थे, इसके अलावा अब मधुसूदन की कोई इच्छा नही थी। परम कृपालु परमात्मा अब चाहे तो उन्हे अपने पास बुला सकता था ।

परन्तु कुछ दिनो तक उष्मा अपने ससुराल रहकर पुन बेन्जुएला आ गई और उसका बदला हुआ रग-रूप देखकर मधुसूदन की सभी आशाओ पर तुषारपात हो गया। जीवन के प्रति निर्मोही बने मधुसूदन आधे रास्ते से ही लौट पडे। अपनी शादी-शुदा सुकुमारी पर हिस्टीरिया के रोग का प्रभाव देखकर उनका अन्तरमन हाहाकार करने लगा।

निममता के कवच म कैद होने के लिय व्यग्र हो रहा मधुसूदन का पितृ वात्सल्य हृदय एक तीक्ष्ण झटके के कारण व्यग्र हो उठा। जब तक उष्मा का रोग नही चला जाता तब तक मधुसूदन को अब चैन मिलना कठिन था। स्टीमर म अनायास ही डाक्टर हिमाशु स भेंट हो गई, जिन्हाने स्वयम् ही उष्मा को रोग मुक्त करने का बीडा उठाया था। परन्तु मधुसूदन की यह समझ म नही आ रहा था कि उष्मा क्यो डाक्टर हिमाशु के रास्ते मे बाधा बन रही है ?'

उष्मा का डाक्टर के प्रति वह नकारात्मक व्यवहार एक ऐसा व्यवहार था, जो कभी कोई रोगी किसी डाक्टर के प्रति नही अपना सकता था और मधुसूदन, उष्मा के व्यवहार से बडे परेशान थे। यही नही, उष्मा का आजकल का हिस्टिरिया के अतिरिक्त हिस्टरिया के दौरे के समय का व्यवहार उसकी व्याकुलता तथा अकारण ही असहयोग मधुसूदन को और अधिक चिन्तातुर बना रहा था।

पिता की तरह उष्मा भी यह बात समझती है। यदाकदा वह पिता को प्रसन्न करने का यत्न भी करती, किन्तु उसे सफलता नही मिलती। वार्ता विनोद का ढग कृत्रिम हो जाया करता। यदाकदा उसे अपनी आदत पर

अफसोस भी होता था।

अपनी लाडली के सुख व सन्तोष के लिये सर्वस्व न्यौछावर कर देने वाले पिता के मन को सुख-शान्ति पहुँचा देने के लिये वह कुछ भी कर सकने में असमर्थ थी।

पिता की भावनाओं को ठेस न पहुँचाने के लिये—अपनी मर्जी के खिलाफ उसने डाक्टर हिमांशु की दवा लेना शुरू किया। वैसे वेन्जुएला में भी उसने दो चार डाक्टरों की दवा ली थी, किन्तु उसमें से किसी ने भी उप्मा के रोग में डाक्टर हिमांशु के समान गहरी रुचि नहीं ली थी।

हिमांशु ने उसे सचमुच में परेशान कर दिया था। परन्तु इस पर भी न जाने क्यों, पिता का अथाह विश्वास प्राप्त किए इस धूर्त डाक्टर का पिता के सामने ही खुले रूप में वह अनादर नहीं कर सकती थी। मात्र पिता को सन्तोष देने के लिये वह दवा पी लेती थी।

काश! बम्बई उतरने तक उसने बराबर दवा ले ली होती। परन्तु डाक्टर हिमांशु ने तो डाक्टर और रोगी के बीच रहने वाली मर्यादा का धृष्टता पूर्वक उल्लंघन कर डाला था। पिता का विश्वास प्राप्त करके—पिता की इच्छानुसार ही उसने पुत्री को परेशान करना शुरु कर दिया।

हिमांशु ने डाक्टर की हैसियत में यह धमकी दे दी है कि रोग का मूल कारण जानकर ही सतोष की सास लूंगा।

हिमांशु डाक्टर का आवरण हटाकर कुछ और बन रहा है...।

कोलम्बस की तरह यह खोज करने को निकल पडा है!

किन्तु उप्मा"

स्टेलिनबोश के तूफानी समुद्र में उप्मा को कै की शुरुआत होते ही उसके लाख मना करने पर भी मधुसूदन डाक्टर को ढूंढने को निकल पडे। रात्रि में चार बार समाचार भिजवाए, किन्तु हिमांशु नहीं आये। हर बार वही एक जवाब मिलता थोडी देर में आते हैं। सुबह हुई लेकिन डाक्टर नहीं आ पाये।

इसी बीच लिजा द्वारा दी गई दवा से उप्मा की कै तो बन्द हो गई थी। फिर भी यदाकदा उबकी आ ही जाती थी। लिजा ने जाते समय यह बता दिया था कि दवा के एक डोज से एक आध घन्टे ही आराम रहेगा। तीन घन्टों में तीन डोज पूरे करने थे''' अब तक तो केवल एक ही डोज लिया था। इसका मतलब यह हुआ कि— जब तक तीन डोज पूरे न हो जाय तब तक डाक्टर नहीं आयेंगे।

बापूजी व्यर्थ ही सिरपच्ची कर रहे हैं। लिजा ने दवा दे ही दी। हिमांशु भी इसके सिवाय और कौन-सी दवा देंगे? थोड़े समय बाद पिताजी

ने हाँफते हुये कहा 'डाक्टर अब तक क्यो नही आये ?'

तीव्र प्रतिकार से उष्मा ने कहा 'बापू जी डाक्टर का अब कोई काम नही है। मैं बिलकुल स्वस्थ हूँ, व्यर्थ मे डाक्टर को क्यो कष्ट देना चाहते हैं ?'

ठीक इसी समय दरवाजा खुला।

'तकलीफ ? रोगी चाहे या न चाहे तब भी डाक्टर को तो तकलीफ उठानी ही पडती है।' हिमाशु का उतरा हुआ चेहरा दरवाजे मे दृष्टिगत हुआ। खूब थके होने पर भी चेहरे पर परेशानी का कोई चिन्ह दृष्टिगत नही हो रहा था।

हिमाशु को देखकर मधुसूदन बहुत खुश हुए। बोले 'पधारिए''' पधारिए, डाक्टर साहब ! आपके दर्शन ही दुर्लभ हो गए हैं। आपको आज कितनी बार कहलवाया, तनिक तो सोचा होता कि आपके दर्शन बिना मेरी दशा जल बिन मछली जैसी हो जाती है।'

मधुसूदन की बात सुनकर हिमाशु जोर से हँस पडे : 'आप कहते हो जल बिन मछली''''परन्तु उष्मा तो कुछ और ही कहती है।'

'अरे, डाक्टर साहब वह भला क्या कहेगी ?'

'मुझे देखकर उष्मा की दशा एक मछियारे को देखकर जैसे मछली के प्राण सूख जाते हैं, वैसी ही हो जाती है।'

शब्दों में स्पष्ट प्रतीत होने वाली इस मजाक का गूढ अभिप्राय मधुसूदन समझ सकने में असमर्थ थे। वे बहुत ही धीमे स्वर मे बोले : 'अरे डाक्टर साहब, यह तो अभी एक नादान बच्ची है, आप तो जानते ही हैं कि बालक डाक्टर को अपना शत्रु ही समझते हैं।'

'माँ-बाप के अनुसार तो संतान सदा ही बालक होती है, क्यो ? फिर चाहे वह खुद भी पिता ही क्यो न बन जाये।'

हिमाशु की इस मजाक के कारण मधुसूदन को अब खिल-खिलाकर हँसना ही पड़ा।'

किन्तु जिसको लक्ष्य करके यह मजाक किया जा रहा था, उसको यह विनोद न तो हँसा ही सका, न लज्जित ही कर सका और न ही क्रोधित ही कर सका।

उबकियाँ अब तक नही रुक सकी थी, दवा का दूसरा डोज लेने का समय हो चुका था। परन्तु हिमाशु की उपस्थिति '। अब तक वह जिस उबकी को दबा रही थी, वह उबकी आखिर आ ही गई।

मधुसूदन की तरह डाक्टर हिमाशु ने चौंककर तुरन्त उष्मा की पीठ पर हाथ रख दिया. 'निजा कुछ दवा दे गई थी न ! इसने ली भी है या नही ?'

उष्मा ने पीठ को इस तरह हिलाया कि हिमाशु का हाथ स्वयम् वहाँ से हट गया। वह जल्दी से खडी होकर वॉश बेसिन की ओर दौड पड

मधुसूदन विकल भाव स डाक्टर से पूछने लगे 'रात्रि के दस बजे तो समुद्र बिल्कुल शान्त था फिर एकदम हिलने-डुलने क्यो लगा ? हिलन डुलना तो तेजी से हो रहा है, किन्तु इन झटको से मेरी भी तबियत ठीक न है। यह देखकर मुझे आश्चर्य होता है पर इससे भी अधिक आश्चर्य तो इस बात का है कि उष्मा की तबियत बिगड गई है। इसने तो स्टीमर पहले भी कई बार यात्रा की है।'

'उष्मा की तो दूसरे कारण से ही कै हा रही है।'

मधुसूदन ने चौककर पूछा 'अन्य कारण से ?'

'हां । छाती मे सतत् उठ रहे भय के कारण, इसकी वायु की प्रवृ ने जोर पकड लिया है। मन पर जब भय या चिन्ता का बोझ अधिक पड लगता है, तब स्टॉमक पर विपरीत प्रभाव पडता है। पाचन क्रिया अपना का बन्द कर देती है। खाना अच्छा नही लगता। वात और पित्त जब ज्याद जोर करने लगते हैं, तब उल्टियाँ होने लगती है।'

मधुसूदन ही नही, बॉस बेसिन को पकडे खडी उष्मा भी डाक्टर की बात सुनकर चौक पडी। सम्भवतया उसको अधिक चौकाने के उद्देश्य से ह हिमाशु ने बात को आगे बढाया। उष्मा को सी-सिकनेस नहीं है इस बात का प्रमाण यह है कि दरिया शान्त हो जाने पर भी उष्मा की उल्टियाँ बन्द नही हुई।

यह एकदम नई एवम् अजीब बात सुनकर मधुसूदन की अथाह व्याकुलता का कोई पार नही रहा। आश्चर्य मे डूबे हुये उन्होने पूछा डाक्टर, 'उष्मा को भला भय एवम् चिन्ता का बोझ कैसे हो सकता है ?'

एक तो विदित व्हिसिल का भय। यद्यपि इस समय व्हिसिल नही बज रही है। न जाने कब बज जाये इसके लिये कुछ भी नही कहा जा सकता है ? व्हिसिल बजने पर उष्मा स्वस्थ नही रह सकती है, यह तुम जानते ही हो । यह एक अधूरा कारण है। मैं इसको पूरा करता हुआ दूसरा कारण बतलाता हूं कि मैंने कल रात्रि मे डेक पर उष्मा को चेलेंज दे दिया था कि मैं तुम्हारे रोग का मूल कारण ज्ञात करके ही रहूंगा, यदि मुझे इसमें सफलता नही मिली तो तुम्हारे से अलग होने के पहले समुद्र मे कूदकर अपने प्राण त्याग दूंगा।'

मधुसूदन के केबिन मे गूंज रही अट्टहास की आवाज से यह स्पष्ट हो रहा था कि उष्मा के विषय मे मधुसूदन का भय हिमाशु के इन शब्दो से हवा हो गया था।

वे हिमांशु का हाथ पकडकर भाव विभोर होकर कहने लगे : 'सचमुच मे डाक्टर !'

कुल्ले करके नेपकिन से मुंह साफ करके उष्मा अकारण ही क्रोध मे भभक उठी : 'पिताजी ! आप क्या मुझे डाक्टर के प्रयोग का प्राणी समझकर मेरा बलिदान करना चाहते है ?'

भाव विभोर मधुसूदन एकदम, आश्चर्य मे डूब गये 'बेटी यह तू क्या कह रही है ?'

होठो मे हँसी दबाकर हिमांशु ने कहा : 'सुनो उष्मा ! मैं इस समय कोई हिस्टीरिया का इलाज करने नही आया हूँ, जो तुम व्यर्थ मे ही नाराज हो रही हो। तुम्हारी कै बंद करने के लिये ही अकल ने लगातार बुलावे भेजकर मुझे बुलवाया है। यदि दवा लेने की ही इच्छा न हो तो मैं जा रहा हूं।

मधुसूदन यह सुनकर बहुत अधिक व्याकुल हो गये। हिमांशु का कन्धा पकडते हुए कहा : 'ना, ना'''' । इसकी बात की ओर ध्यान नही दीजियेगा।

'उष्मा की बात की ओर ध्यान नही देकर डाक्टर ने कहा जाना आवश्यक है, अकल ! पेतरा मे कई यात्रियो की हालत खराब है। मुझे उनकी तिमारदारी तो करनी ही पडेगी।

'पेतरा की दशा देखकर छाती फट जाती है। वहाँ पर एक भी यात्री का कोई ठिकाना नही रहा है। इतना भारी तूफान एकदम कैसे जाग पडा, कुछ भी समझ मे नही आ रहा है।

अकल ! केप ऑफ गुड होप का समुद्र सदा ही तूफानी रहता है ! तूफान भी कोई अचानक नही आया है। अब तो ओगलुहाम तक ऐसी ही दशा रहेगी। यह वह स्थान है, जहा अटलांटिक सागर व हिन्द महासागर परस्पर मिलते हैं। जिस स्थान पर इतने बडे दो महासागर अपनी महाप्रचण्ड भुजाए फैलाकर परस्पर मिलते हो, वहा फिर उनकी काया भला कही शात रह सकती है ?'

अब तक स्टीमर ने हरमेनस पर लगर डाल दिया था, इससे झटके कुछ कम तो हो गये, किन्तु पूरी तरह बन्द नही हुए थे। मधुसूदन की कुर्सी यदाकदा खिसक जाती थी। कुर्सी का हत्ता पकडे मधुसूदन ने कहा : 'डाक्टर इस रास्ते से मैं पहले भी दो तीन बार यात्रा कर चुका हूँ, परन्तु ऐसा तूफान मैंने कभी नही देखा।

यह बात सही है कि आज समुद्र मे जबरदस्त तूफान उठा है और इसी कारण स्टीमर ने कुछ समय के लिये यहाँ पडाव डाला है। अब यह धीरे-धीरे सुबह तक मोगलुहास पहुँच जायेगा। वहाँ चार घटे का पड़ाव रहेगा।

'यदि तूफान का प्रभाव बराबर बना रहा तब ?'

'नही वैसे भी पडाव तो करना ही होगा। यहाँ स्टीमर पानी और ईंधन लेगा। केपटाऊन म खराब हुए स्टीमर के यात्रियो को भी उतार देगा।'

'यात्रियो को तो पोर्ट एलिजाबेथ पर उतरना था।

स्टीमर मे बहुत भीड हो जाने के कारण उन यात्रियो को बडी तकलीफ हो रही है। इसके उपरान्त अगोला के यात्रियो ने भी एतराज किया है, कि स्टीमर के चार्टेड होने के बाद भी अन्य यात्रियो को क्या लिया गया है ? इसलिये कप्तान ने श्रोगलुहास और केपटाऊन दोनो स्थान पर बायरलेस कर दिया है।

'चलिए यह अच्छा रहा, हमारे स्टीमर म भीड कम हो जायेगी।' एक शान्ति का श्वास लेते हुए मधुसूदन ने कहा 'किन्तु पेतरा के यात्रियो की दशा तो—'

'श्रोगलुहास मे जब स्टीमर का पडाव होगा तो सारे पेलरा को धोकर साफ किया जायगा। मैंने केप्टिन को राय दी है । यदि समुद्र शान्त रहेगा तब तो कोई परेशानी नही रहेगी। इतना कहकर हिमाशु उठा 'उष्मा क लिये यदि किसी दूसरी दवा की जरूरत समझें तो मगवा लेना, अकल।' परन्तु दवा की तत्काल कोई आवश्यकता महसूस नही हुई। हिमाशु के जाते ही उष्मा को गहरी नीद आ गई। वैसे स्टीमर चल चुका था, किन्तु उष्मा जब जागी तो स्टीमर ने श्रागलुहास के पास फिर स लगर डाल दिया था।

उष्मा की नीद टूटते ही कान म आ रहे शोरगुल ने बता दिया कि अधिक यात्री उतर रहे है और सफाई का काय शुरू हो चुका है।

यकायक बवडर की तरह अन्दर घुसी हुई लिजा ने कहना शुरू किया 'उष्मा, मैं तुमसे एक रिक्वेस्ट करने आई हूं।

'क्या ?'

मैंना को यदि चार घन्टो के लिये तुम्हारी कॉट दे दो तो ठीक रहगा। नीचे तो सब बडा उथल-पुथल हो रहा है। उस बेचारी को कही सुलाने का भी स्थान नही है।

'यह भी कोई रिकवेस्ट की बात है ?'

'थेक्स।' कहते हुये लिजा बिजली की चमक के समान वापस चली गई।

लिजा की आखें देखकर उष्मा की फटी आखें फटी की फटी ही रह गई। उसको न अपने बालो का भान था और न ही वस्त्रो का। सारे शरीर और कपडो पर दवा के धब्बे लगे हुये थे। रातभर जागने से आखें एकदम लाल सुर्ख हो गई थी इस पर भी चेहरे पर क्लान्ति की कोई झलक नही थी। आवाज मे किसी तरह की कोई परेशानी नही थी। पूरे बारह घन्टो

से वह लगातार बिना किसी परेशानी के बडी स्फूर्ति से दौड-धूप कर रही थी।' दूसरी तरफ वह स्वयम् है। जिसके मुह से यह भी नही निकल सका कि 'लिजा, मैं तुम्हे किसी तरह की हेल्प कर सकती हूँ।

हिमाशु कह गये थे कि उष्मा की कै का कारण सी-सिकनेस नही ·· भय · चिन्ता·· और।

जैसे ही दरवाजे के खुलने की आवाज हुई, एक हल्की-सी बच्चे के रोने की आवाज से केबिन गूज उठा साथ मे एक हाथ म बालक तथा दूसरे हाथ से मैना को सहारा देती हुई लिजा केबिन मे घुसी · ·। इन सब के पीछे था, मैना का श्वसुर।

मधुसूदन अब जाग चुके थे। मैना का श्वसुर उनकी बाजू म बैठकर भरे गले से बार-बार कृतज्ञता व्यक्त करने लगा।

उष्मा को इस बार न जाने क्या हुआ कि—मैना और उसके पास म बच्चे को सुलाकर जा रही लिजा का हाथ अपने स्वभाव के विरुद्ध बडे आवेग से पकडा और बोली लिजा, तुम कितनी थक चुकी हो। थोडी देर रेस्ट भी कर लो! आज सुबह की चाय तुम मेरे साथ पीओ, हम कुछ बात-चीत करेंगी, इसके बाद तुम चली जाना। कई आवश्यक कार्य होने पर भी इस सहज स्नेहपूर्ण आमन्त्रण को लिजा नही टाल सकी।

अब स्टीमर स्टार्ट हो चुका था।

उष्मा एकदम चौंकी। 'ओह भगवान' कहते हुए उसने अपने हाथो से सिर पकड लिया।

भगवान को याद करती हो यह एक अच्छी बात है, किन्तु उष्मा इस समय तुम्हें इस प्रकार सिर पकडने की आवश्यकता नही है। मैं तुम्हे विश्वास दिला-कर कहती हूं कि अब तुम्हे हिस्टीरिया का दौरा नही पडेगा।'

लिजा के हँसते-हँसते कहे अनुसार उपरोक्त शब्दो को उष्मा ने एक मजाक समझा और उसने आँखें फाडकर बडी करुणा से लिजा की ओर देखना शुरू किया।

'उष्मा, मैं सच कहती हूं। घबराने की जरूरत नही है। डाक्टर ने तुम्हे बडे गजब का टोनिक दिया है।' अब एक दो दिन इस प्रकार की हिडिमिन का तुम पर कोई असर नहीं होगा। हाँ ·· वैसे तो तुम कोई दवा नही लेती हो, इस कारण से उल्टी की दवा मे मिलाकर दिया गया है। अपनी विल पावर को जगाओ, ! उष्मा चाहे कितनी ही तज हिडिमिल क्यो न बज तुम्हारे पर इसका अब कोई प्रभाव नहीं पडेगा।

इतना कहकर लिजा हँसते हुए जल्दी मे चली गई।

लिजा की बात सुनकर उष्मा की तरह मधुसूदन भी आश्चर्य मे डूब गये।

किन्तु अन्तर इतना ही था कि एक की आंखो मे जहाँ आनन्द मिश्रित आश्चर्य था, तो दूसरे की आंखो मे आश्चर्य !

एक तेज व्हिसिल बजाता हुआ स्टीमर ओगलुहास का बन्दरगाह छोडकर वेलेनडाम की तरफ आगे बढने लगा। समुद्र का तूफान अब ऐसा शात था, मानो कोई बालक नटखटपन करके स्वत ही शात हो जाता है। किन्तु मैना का बालक बहुत देर से रो रहा था।

उष्मा चाहती थी कि बच्चे को गोदी मे लेकर खिलाये··· किन्तु न जाने हाथ क्यो नही लम्बे हो सके। मैना ने बालक को छाती से लगाकर थपथपाना शुरू किया, इससे उष्मा को लगा कि उष्मा की पीठ मे एक गुदगुदी हो रही है। पीठ मे भी और छाती मे भी····।

००

सागर के वक्ष की तरह उष्मा का मन भी इस समय स्वस्थ था—सन्ध्या होते-होते तीन बार व्हिसिल बज चुकी थी, इस पर भी उष्मा को हिस्टीरिया का कोई दौरा नही पडा था। परन्तु दिमाग म खून अवश्य जम जाता था। व्हिसिल बजने पर सारे शरीर में एक कपकपी आजाती थी। किन्तु पहले की तरह बेहोश होकर वह सोती नही थी। छाती को हाथ से दबा करके उसने मन को मजबूती से पकड रखा था।

शाम होते-होते मैना अपने स्थान पर चली गई, लेकिन लिजा नही आई। ····और डाक्टर भी····।

मधुसूदन कह रहे थे 'यदि तू यह दवा पीती रहे, तो ठीक रहेगा !

हिमांशु ने जानबूझकर व्हिसिल बजवाई थी···और उष्मा पर इसका प्रयोग किया गया था। वह किसी के प्रयोग का प्राणी क्यो बने ? वह हिमाशु के पिंजरे का कोई सफेद चूहा नहीं है। जीती जागती एक मानव प्राणी है।

डाक्टर हिमाशु····!

डाक्टर, आखिर एक पुरुष है! पुरुष वर्ग—पुरुषो के गुण धर्म से विमुख या अलिप्त किस प्रकार हो सकता है ? उष्मा की इच्छा के विरुद्ध बरबस ही उसने उपचार करना शुरू कर दिया है।

डाक्टर हिमाशु विनती करके उसे इस दवा के पीने को कहते तो वह नर्वाइन टॉनिक अवश्य ले सकती थी ···।

किन्तु····

सम्भव है इस प्रकार की प्रार्थना करने के लिये ही ढलती शाम डाक्टर हिमाशु यकायक आये हो ?

इस पर आज पहली बार उष्मा ने आखो से स्पष्ट अनादर के तीखे बाण बरसाने की अपेक्षा आखें नीची कर लेने का दृढ निश्चय कर लिया।

कमल मुख पर आदर की मधु मुस्कान आना तो किसी प्रकार भी सम्भव नही था ? फिर भी अनादर का जहरीला भौंरा आज पहली बार 'गूं गूं' करता भटक ही गया।

उष्मा ! मुझे लिजा ने बताया कि आज तुम बहुत स्वस्थ हो। यदि दवा तुम्हारे अनुकूल हो तो अब रात मे एक और डोज लेने मे मत हिचकना।'

उष्मा ने कुछ नही कहा, किन्तु मधुसूदन प्रोत्साहित होकर कुछ कहना चाहते थे कि डा हिमाशु बोले 'आज मैं बहुत थक चुका हूं। यहाँ कैदखाने म सडन के बजाय कुछ देर के लिये डेक पर ही चलकर आराम किया जाए।'

मानो इसी बात की प्रतीक्षा म बैठे मधुसूदन, हिमाशु का यह निमन्त्रण पाकर अपनी लकडी लेकर खडे हो गये। उष्मा को आग्रह पूर्वक कहने लगे . 'तुझे भी चलना है, बेटी !'

पर न जाने क्यो हिमाशु ने बात काटते हुए कहा 'इसे आराम करने दीजिये। डेक पर ठण्डी हवा है। इसलिये यह यही आराम कर तो ज्यादा अच्छा रहेगा।'

डेक पर पहुँचते ही इस विस्मय को समूलत नष्ट करने के लिये डाक्टर हिमाशु बोले 'मैं आज आपको यहाँ पर किसी खास कारण से लाया हूँ, अकल !'

'वह क्या ?'

'आज रात मैंने उष्मा को दवाई का एक डोज देने का निर्णय लिया है, किन्तु आपको अधेरे मे रखकर मैं कोई काम नही करना चाहता हूँ।'

'डोज ! किन्तु अब तो उष्मा स्वयम् ही डोज लेने को तैय्यार हो गई है।'

'हाँ, किन्तु वह व्हिसिल से परेशान होकर नर्वाइन टोनिक लेने को राजी हो गई है, किन्तु मैं तो उसे आज लाइसर्जिक दवा का डोज देना चाहता हूँ।'

'लाइसर्जिक, यह भला क्या होता है ?

'रोगियो के गूढ भेदो को ज्ञात करने के लिये यह एक विशेष प्रकार की दवा है। आपको इस सम्बन्ध म ज्यादा नही समझाया जा सकता है। आपको यहाँ लाने का मेरा यही अभिप्राय है कि इस विषय में आपकी सम्मति ले सकू।'

'डाक्टर तुम जो कुछ करोगे मेरी लाडली के हित मे ही होगा। यह विश्वास मैंने पहले ही कर लिया है, फिर भला मेरी सम्मति लेने की क्या

आवश्यकता रह जाती है' 'तदुपरान्त भी—'

'तदुपरान्त भी क्या ?'

'उष्मा को इससे कष्ट तो नहीं होगा ?'

'कष्ट ? आप उसे और अधिक स्वस्थ बल्कि पूर्ण स्वस्थ देख सकेंगे।'

हिमांशु का ऐसा आश्वासन सुनकर मधुसूदन बहुत खुश हुए।

'आपकी लाडली को एक रात्रि मेरे पास एकान्त में बितानी होगी। दवा के प्रभाव के कारण वह इस समय की सभी भावनाओं से दूर हटकर किसी अलग दुनियाँ में ही विचरण करने लगेगी, इसलिए उस समय किसी बात में आनाकानी करने का प्रश्न ही नहीं उठता। परन्तु उस समय आप चिन्तातुर न बन जाएं, इसलिये यह बात, मैं आपको पहले से ही बता रहा हूँ।'

'लो! डाक्टर तुम भी कैसी बात करते हो। तुम जैसे देवता पुरुष के हाथ में अपनी लाडली को सौंपकर चिन्ता सागर में डूबने वाला मैं कोई मूर्ख पिता नहीं हूँ। तुम खुशी से अपना इलाज शुरू करो। यदि तुम कहते हो तो मैं पहले ही दिन की तरह थियेटर में जाकर बैठ जाऊँगा!'

'नहीं, आप अपनी केबिन में ही आराम कीजिये। उष्मा के लिये मैंने अपने केबिन में व्यवस्था की है। इसके लिये मैंने सभी साधन और साज-सज्जा की पहले से व्यवस्था कर रखी है। किन्तु लाईसंजिक देकर उस पर प्रयोग करने तक आप उसे मत बतायें। यदि उसे बता दिया गया तब सम्भव है कि वह भड़क जायेगी और ईलाज कराने से इन्कार कर देगी।

डाक्टर की बात को अक्षरशः मानकर मधुसूदन ने अपने मुँह पर ताला लगा लिया।

उबकियों व कै के कारण उष्मा ने शाम को डाक्टर के कहे अनुसार बहुत हल्का भोजन किया।

भोजन करने के कोई आध घन्टे पश्चात मधुसूदन ने उष्मा से कहा 'जा बेटी! डाक्टर इस समय अपने केबिन में हैं। वह कहीं बाहर आये, इससे पहले तू एक दवा का डोज ले आ।'

उष्मा, डाक्टर के केबिन की ओर चल पड़ी।

आज केबिन की सजावट व साज सज्जा देखकर उसे बहुत आश्चर्य हुआ। केबिन के बीचों बीच कॉट पर एक मुलायम बिस्तर लगा है। उस पर एक सफेद चादर बिछी हुई है। बीच की टिपाय पर पाँच सात अगरबत्ती के भूरे धुँए से धूप की सुगन्ध आ रही थी। फूलदान में ताजे फूलों की खुशबू महक रही थी। ताजे फूल स्टीमर में मिलना असम्भव था। अतएव सम्भव था कि डाक्टर ने ये फूल ओगलुहास से लिये हों।

आज उसे चूहों के पिंजरे कहीं दिखाई नहीं दिये। पिंजरों के बजाय

दीवार मे दो तीन देवी देवताओ की तस्वीर लगी हुई थी ।

उष्मा कमरे की सजावट देखकर आश्चर्य सागर मे डूब गई ।

किन्तु इस कौतूहलपूर्ण वदन पर बिना दृष्टि डाले ही हाथ लम्बा करके हिमांशु ने कहा : 'बैठिये ! बैठिये ! आज मेरी केबिन मे तुम्हारे सुहावने कुंकुम भरे पाव देखकर मुझे बहुत आनन्द आ रहा है—इसकी कल्पना तुम नही कर सकती हो ।'

हिमांशु की बोली मे आज न तो कोई उत्तेजना थी और न ही उत्साह, अपितु हिम-सी एक ठण्डक थी ।

डाक्टर ने पूछा दवा से कुछ लाभ हुआ है । उष्मा ने स्वीकारात्मक मुद्रा मे सिर हिलाया । हिमांशु ने बिना उसकी ओर देखे एकदम उसके सामने लाल दवा का एक आधा गिलास रख दिया । अब डाक्टर ने कहा 'लो इस दवा को आख बन्द करके एक घूट मे ही पी जाओ ।'

सम्भवतया दवा का स्वाद कुछ खराब हो अतएव उष्मा डाक्टर के कहे अनुसार एक ही सास मे सारी दवा पी गई और गिलास खाली कर दिया⋯ ।

और⋯ ।

दवा पीते ही उष्मा को लगा कि उसकी आखों से धुआँ निकल रहा है ।

डाक्टर ने उसके हाथ से गिलास लेकर टेबुल पर रख दिया । ठीक इसी समय उष्मा के सिर पर सौ वॉल्ट की एक तेज बत्ती जल उठी ।

उष्मा के नथुने फूलने लगे । श्वास की गति तेज होने लगी⋯ आखें लाल सुर्ख होकर एक तन्द्रा मे डूबने लगी थी⋯।

⋯और लालसुर्ख हो रही आखों को देखने के बदले हिमांशु ने दोनो भवरो के बीच मे अपलक नेत्रो से टकटकी लगाये देखना शुरू किया ।

उष्मा कुछ बोलने को व्यग्र हो रही थी, किन्तु उससे बोला नही जा रहा था । होठो पर अपने आप ताला लगा हुआ था । उसने खडे होने का प्रयास किया, किन्तु वह खडी नही हो सकी । पावो मे बोझिल जजीरें पडी हुई थी । केवल फटी आखो से टकटकी लगाये देख रही थी⋯फटी आखें ।

धीरे-धीरे आंखो की लाली बढने लगी । जैसे ही आखो ने झपकी मारी कि तत्क्षण डाक्टर का आदेश छत के साथ टकराकर गूंज उठा : 'उष्मा सो जा, बिस्तर पर सो जा ।'

हिमांशु ने तुरन्त दूसरा आदेश दिया : 'पाव लम्बे कर दे । हाथों को ढीला छोड दे ।'

उष्मा का सारा शरीर शिथिल हो गया ।

हिमांशु ने सौ वॉल्ट की बत्ती बन्द कर दी, होल्डर से बल्ब निकालकर पहले के बल्ब के स्थान पर लाल बल्ब लगा दिया और बत्ती को पुन चालू

कर दिया।

दूसरा स्विच ऑन करके छत का पखा चला दिया।

पखे की तेज हवा में उष्मा के बाल फर-फर उडने लगे। हिमाशु ने बालों को सहज तरीके से खेंचकर पूछा उष्मा क्या हो रहा है ?

कोई उत्तर नहीं मिला।

हिमाशु ने बालो को ठीक करके गर्दन के नीचे दबा दिया। इसके बाद उसने उष्मा के वस्त्रो को ढीला किया।

कमर के नीचे हाथ डालकर कमर को थोडा ऊचा करके आदेशात्मक आवाज मे उसने कहा 'चल हम यहाँ से दूर चलें। बहुत दूर' 'बहुत दूर''' ।'

थोडी देर रुककर उसने धीरे-धीरे अपना हाथ खैंच लिया। मुह का पसीना पोछकर दूर पडी कुर्सी खेंचकर उस पर बैठ गये।

चारो ओर नीरव शान्ति थी। सारा वातावरण स्तब्ध था। फक्त स्टीमर के एन्जिन की धक-भक, धक भक आवाज' तथा घूमते हुये पोपेलर की तानबद्ध ध्वनि तथा सागर का गुजन' ।

करीबन दस मिनट तक बिल्कुल निश्चेतन-सी शान्त पडी रहने के बाद उष्मा ने एकदम चीख मारी 'ओह! मैं कहा हूं ? कहाँ जा रही हू'

'तू अपने पिता के घर है। यह तेरा ही घर है, उष्मा ! बता कहाँ जाना है ?'

'मुझे कही नहीं जाना, मुझे यहीं रहना है।'

'यही ? पर तू यहाँ कब तक रह सकेगी ?'

'मैं सदा के लिये यही रहूंगी। मेरे पिताजी की सेवा करूगी।'

यह सुनकर हिमाशु के मुह पर सतोप की एक चमक आई 'तू इस समय विद्यार्थी है, क्यो ठीक है न।'

हाँ ?

'पढती है।'

'हाँ'' '।'

'क्या पढती है।'

'एस एस सी।'

'एस एस सी पास करके कॉलेज म जायेगी ?'

'हाँ।'

'तेरे पिताजी अब कॉलेज भेजने के लिये मना कर रहे हैं।'

'क्या कहते हैं ?'

'तेरी शादी करनी है।'

उष्मा की उत्तेजना एकदम शान्त हो गई। फीके स्वर मे वह इतना ही बोल सकी 'तब शादी कर लूंगी।'

'शादी कर लेगी, किस कारण से शादी कर लेगी ?'

'पिता जी की इच्छा के लिये।'

'पिता जी ···। इसका मतलब तेरी खुद की इच्छा नही है।'

'नहीं।'

'क्या तेरी शादी करने की इच्छा नही होती है ?'

'होती है।'

'तब फिर शादी क्यो नही करती है ?'

'डर लगता है ?'

'किसका डर लगता है ?'

'ससुराल मे मुझे पीहर-सा सुख 'कदाचित् न मिले तब ! इस बात का भय !'

'—तब तू अपने भय को अपने पिताजी के सामने स्पष्ट रूप से क्यो नही व्यक्त करती है ?'

'पिता जी को दु ख होता है।'

'पिता जी को क्या दु ख होता है ?

'उनको भय लगता है, मेरी बेटी का क्या होगा ?'

'इसका मतलब यह हुआ कि तू अपने पिता जी की इच्छा की सतुष्टि के लिये शादी करना चाहती है, तेरी खुद की इच्छा नही ?'

'मेरी इच्छा और अनइच्छा का कोई प्रश्न ही नही।'

'क्यो ?'

'पिताजी की इच्छा ही मेरी इच्छा है।'

'झूठ····बिल्कुल झूठ। पिताजी मेरी शादी तुरन्त नही करना चाहते है, अपितु अच्छा वर मिले तो शादी करना चाहते हैं।'

'अच्छा वर मिल जाये तो भी तू शादी के लिये मना कर रही है।'

'—तब नही करूँगी। किन्तु वह अच्छा है, इसका पता कैसे लगे ?'

'सोच ले कि वह अच्छा है, ऐसा तुझे विश्वास हो जाये तब?'

'—तब शादी कर लूंगी।'

'राजी खुशी से ?'

'बिल्कुल।'

'तब फिर सत्य क्या है ? तू ने अपनी इच्छा से शादी की है या पिता जी की इच्छा से ?'

'पिता जी के सुख के लिये अपनी इच्छा से शादी की है।'

'तनिक सोच की शादी के बाद यदि तू दुखी हो जाये ? वर खराब निकले तब क्या तेरे पिता जी को दुख नही होगा ?'

'पिता जी को मैं बताऊंगी तब ही।'

इसका मतलब यह हुआ कि अपने पिताजी के सुख के लिये अपन दुख की सब बातें तू अपने मन मे ही छिपाए रहेगी। क्यो यही बात है ?

'बिल्कुल ठीक।'

हिमाशु के ओठो पर एक मधुर मुस्कान दौड आई। कनपटी पर अगुली लगाकर वे कुछ सोचने लगे।

सारे केबिन म लगभग पाच मिनट तक शान्ति छाई रही।

इसके बाद हिमाशु ने उष्मा के बाल पकडकर सहज म सिर हिलाया। कमर के नीचे हाथ डालकर कमर को कुछ ऊँचा उठाया 'चल हम तेरी शादी कर देते हैं। मान ले कि अब तू अपने ससुराल जा रही है, तनिक बता तो यह कौन-सा शहर है ?

'लो, तुम क्या इतना भी नही जानते हो कि यह बम्बई शहर है।'

बम्बई ? वाह! बडा अच्छा शहर है। क्या तुझे अच्छा लगता है ?

'नही।'

'क्यो ?'

पिताजी के बिना वहाँ कैसे मन लगेगा ?

'पिताजी कहा है ?

'पिताजी तो वेन्जुएला चले गए हैं।'

'ठीक ही तो है तुम वेन्जुएला नही जाना है ?'

'वाह ! अभी तो शादी हुई है, इस तरह जल्दी ही लौटना सम्भव नहीं।'

'तब कब जायेगी ?'

'पिताजी बुलायेंगे तथा सुसराल वाले जब खुशी से भेजेंगे ?'

'सुसराल म किसको पूछना होगा ?'

'मेरी सास से।'

'तेरे पति से नही ?'

'नही।'

'क्यो ?'

'मैं उनकी शक्ल भी नही देखना चाहती हूं।'

हिमाशु एक क्षण के लिए स्तब्ध होकर उष्मा के मुँह की ओर देखता ही रह गया। इस समय उष्मा की आखें बद थी, किन्तु उसके मुख पर घृणा की कठोर रेखाए स्पष्ट दिखाई दे रही थी।

अपनी बात-चीत को चालू रखते हुए उसने तुरन्त पूछा, 'तेरा पति बहुत

खराब है, 'क्यो यही ना ?'

'बहुत ही खराब ? अरे वह तो राक्षस है, राक्षस।'

'तब यह बात तू अपने पिताजी को क्यो नही बताती है ?'

'ऐसी बात कोई बताने की होती होगी ? वे ऐसी बात सुनेंगे तो उनकी छाती फट जायेगी। तुम नही जानते हो कि उनका हृदय बहुत कोमल है।'

'मुझे सच-सच बात बताओ।'

'तुम्हे क्या जानना है ?'

'मुझे जो कुछ जानना है, वह सब कुछ तुझे बतलाना होगा।'

हिमाशु की आवाज मे फिर से आदेशात्मक स्वर फूट पडा 'बता, अनग के प्रति इस सख्त घृणा का क्या कारण है ?'

'वह क्या कोई आदमी है ?'

'तुझे कितने पुरुषो का अनुभव है ?'

'हटो ! पति के सिवाय किसी दूसरे पुरुष का अनुभव मैंने नही किया है।'

'उष्मा।'

'जी'"।'

तेरे पति का तुझे अभी अनुभव नही हुआ है, तुझे अभी अनुभव करना है, समझी ?

'जी।'

तनिक देख ! आज तेरी प्रथम सुहाग रात है।

'जी"।'

'सब शृंगार पहिनकर अपने पति के कमरे मे बैठ जा।'

'बैठी हुई हूँ। मेरी एक दूर की ननद ने मुझे इस कमरे मे लाकर बैठा दिया है।

'तेरा पति अभी नही आया ?'

'नही।'

'सुहागरात को ही यदि पति रात्रि के बारह बजे तक न आये तो क्या कोई विचित्र बात नहीं है ?'

'विचित्र ? केवल विचित्र ही नही, यह बहुत बुरी बात है।'

'अपनी सास से पूछा कि वे क्यो नही आये ?'

'वह तो यही सोचती हैं कि अनग अपने कमरे मे है। मेरी ननद को उन्ही ने तो कहा था कि जा, उष्मा को अनग के पास छोड आ।'

'ठीक, तब अपनी सास को जाकर बता आ कि अनग अभी तक नहीं आया है।'

'नही, मुझे इसमे लज्जा आती है।'

'तब ठीक, प्रतीक्षा कर।'

इसके बाद हिमाशु ने पाच मिनट बीतने दिये। मेजरिंग ग्लास मे तैयार रखी दवा मे से एक एक करके तीन चार चम्मच डाक्टर ने उष्मा के मुह मे डाल दिये। इसके बाद ब्ल्यू लाइट बद कर दी गई और लाल बत्ती जला दी गई।

सामने की सपोर्ट लाइट की उग्र किरणें सीधी उष्मा के मुह व आखो पर गिरने लगी। यह प्रकाश स्थिर था। मुह पर मानो गरम पानी का प्रकोप हो, वैसे उष्मा के गालो पर गीलापन आने लगा। आखो ने पलक खोलकर एक झपकी ली, किन्तु डाक्टर ने हाथ रखकर उन्हे तुरन्त बन्द कर दिया।

'उष्मा ?'

'जी ।'

'इधर दरवाजे की ओर देख।'

हिमाशु जल्दी से दरवाजे की तरफ गये और दरवाजा खोलकर चर-चराहट की आवाज करने लगे।

'देख दरवाजा खुलने की आवाज आ रही है न ?'

'हाँ।'

'कौन आया ?'

'यह तो वही हैं।'

'क्या तेरे पति ही हैं ?'

'हाँ हाँ अरी माँ! मुझ तो डर लग रहा है!'

'किस बात का डर ?'

'देखो तो, यह लडखडा रहे है!'

इन्होने शराब पी है ?'

हाँ लगता तो ऐसा ही है! अरी माँ! तनिक इनकी आँखें भी देखिए! कैसी लाल सुर्ख हो रही है!'

'तेरे पति क्या कर रहे हैं ?'

'कुछ नही, मेरी ओर देखकर हँस रहे हैं!'

'और अब ?'

'पलग के पास आकर पलग का हत्था पकडकर खडे हैं!

'अब ?'

मैं उनकी ओर देख रही हूँ' भय से आखें बद कर लेती हूँ।'

'वे क्या कर रहे हैं ?'

'वे मेरा मुंह पकड़कर ऊंचा करते हैं। हाय माँ! मैं तो शर्म से डूबी जा रही हूं।'

'क्या तू उनसे कुछ नहीं कह सकती ?'

मैं उनसे कह रही हूं कि यह क्या कर रहे हैं? शराब पीकर आये हैं? 'सुहागरात मनाने के लिए आप शराब पीकर आये हैं?'

'अब ?'

'वे खिलखिलाकर हँस रहे हैं। हँसते हुए कहने लगे कि : 'वैसे मैं आज पीना नहीं चाहता था, किन्तु क्लब में गया, तो मित्रों ने आग्रह करके पिला दी। सभी कहने लगे कि सुहागरात मनाने के लिये शराब पीना अत्यावश्यक है। शराब से ही पुरुष, स्त्री के सामने अपने जौहर दिखा सकने में समर्थ हो सकता है, अतएव थोड़ी-सी शराब पी ली।'

परन्तु तू घबरा मत।

'और अब ?'

'इनके मुंह से निकल रही शराब की बू मुझसे सहन नहीं हो रही है। मैं उनको जोर से धक्का मार देती हूं।'

'इसके बाद ?'

इनको एकदम गुस्सा आ जाता है। एकदम बाघ की तरह छलांग मारकर मेरे हाथ पकड़ लेते हैं।

'इसके बाद।'

मैं चिल्लाती हूं। आप यह क्या कर रहे हैं? सुहागरात में तो सेन्ट और इत्र की महक होती है, फूलों की सुगन्ध और अगरबत्ती की महक होती है। आप इनके स्थान पर मुझे यह बू क्यों भेंट कर रहे हो?'

वे क्या कहते हैं?

'प्यारी! नाराज क्यों होती है! मैं तेरे लिये सेन्ट भी लाया हूं। देख यह रहा, तब इतना कहकर उन्होंने अपने जेब से एक शीशी निकाली।'

'फिर ?'

'मैंने शीशी फेंक दी और कहा : 'आप मेरे से दूर रहिए।'

मेरा इतना कहना था कि वे भूखे बाघ की तरह मेरे पर टूट पड़ते हैं। मेरे कपड़े खींचने लगते हैं। लड़खड़ाती जीभ से कहते हैं''''अंग्रेजी मेगजीन्स में विदेशी स्त्रियों के अब तक कई नग्न चित्र देखें हैं। आज जीना-जागता नग्न शरीर देखना चाहता हूं। चल कपड़े उतार''''' जैसे तैसे मैं उन्हें रोकती हूं, वैसे-वैसे वे जोर लगाकर कपड़े खेंचने लगते हैं।

'''''हाय''''हाय देखो! मेरे सारे कपड़े इन्होंने उतार दिये हैं! कैसी निर्लज्जता का व्यवहार कर रहे हैं। यह आदमी है या कोई राक्षस? अब **कहते**

है, चल खडी हो जा !' मैं अपने आपको चादर से ढक लेती हूँ, तथा पलग से कूदकर चिल्लाकर कहती हूँ 'मैं अभी बाहर भाग जाती हूँ।'

'इसके बाद तू क्या बाहर भाग जाती है !'

'मैं किस तरह भाग सकती हूँ ? जैसे ही मैं पलग से कूदी कि वे जल्दी से दरवाजे की कुण्डी बद करके ताला लगा देते है। मैं हिम्मत करके चाबी जेब से निकाल लेती हूँ, किन्तु एक झटका मारकर इन्होने मेरे हाथ से चाबी जमीन पर गिरा दी। अब मैं चिल्लाकर लोगो को इकट्ठा करने का भय बताती हूँ तो जेब मे से रूमाल निकालकर मेरे मुह मे डाल देते हैं" ओ माँ ! ओ " ओ 'ओ" माँ ! मेरा दम घुटने लगता है ! छाती मे एकदम दर्द होता है। मेरे को उठाकर ये पलग पर लिटा देते हैं और पूछते हैं, 'बोल अब फिर चिल्लायेगी ? इनकी आग के अगारो-सी आँखें देखकर मैं कहती हूँ नही और सिर हिला देती हूँ। मेरा यह भाव देखकर इन्होने मुह से रूमाल निकाल दिया। इसके बाद इन्होंने अपने सब कपडे उतारना शुरू कर दिया और बिल्कुल नग्न होकर आइने के सामने खडे हो जाते हैं" हाय" हाय" ! बिल्कुल निर्लज्ज !'

'अब"? अब क्या कर रहे हैं ?'

'कहते है, सो जा !'

'फिर।'

मैं दूर खिसकती हूँ, लेकिन ये मुझे जबर्दस्ती अपनी बगल म दबा लेते हैं। इसके बाद छाती पर जोर देकर, शरीर दबाकर इधर-उधर आँखें घुमाकर प्रलाप करते हैं। ओह ! प्रकृति की कितनी सुन्दर कला कृति है ! अपनी जाघ मे एक बत्तीसा लेने दे"" ! ओ माँ"" ! मैं तो मर गई ! कितनी जोर से बत्तीसा भरा है ? चिल्लाती हूँ और इसी समय वे पूरी ताकत से मुह पर एक मुक्का मार देते हैं। छाती पर कितना जुल्म कर रहे हैं ? अब शराब की दुर्गन्ध की बजाय यह जुल्म असहनीय हो रहा है।'

'अभी क्या जुल्म चालू है ?'

'अब इन्होने मेरे पाँव पकड लिये हैं। कैसा-कैसा बोल रहे हैं कि सुनते ही मैं लज्जा से डूब जाती हूँ। इनको क्या कोई लज्जा आती है ! बाप रे ! सीध ये छाती पर चढ बैठे ! ओ माँ ! मेरे से यह सब सहन नही होता है।'

'क्या तुझे घबराहट हो रही है ?'

'मैं घबराहट के कारण व्याकुल हो रही हूँ।'

'तेरी घबराहट से उसको आनन्द मिलता है, या नहीं।'

'ये तो पशु से भी गये बीते है। बाघ की तरह मुह फाडते हैं। दुर्गन्ध से मेरा सिर फटा जा रहा हैं।'

'इसके बाद क्या हुआ ? आगे बतला।'

'क्या कहूँ ? मेरे मुह पर इन्होने हाथ लगा दिया है। ओह भगवान ! मुझे कोई बचाओ ! अब मेरे पास कोई इलाज नही रहा। मैंने जोर से इनके हाथ मे बत्तीसा भरा। इन्होने जोरदार एक चिल्लाहट की और देखते ही देखते इन्होन मेरा कधा काट लिया।'

कापती हुई उष्मा ने कन्धा सहलाना शुरू किया।

हिमाशु ने हल्के से उष्मा के कन्धे का वस्त्र हटाया। एक नीला धब्बा ''' घाव भर जान पर भी' दातो के निशान स्पष्ट दृष्टिगत हो रहे थे।

उसके वस्त्रो को पहले की तरह ठीक कर दिया।

उष्मा। डाक्टर ने कान के पास जाकर जोर से पूछा 'अब क्या कर रहे हैं ? स्पष्ट बता दे।'

उष्मा सिसकियाँ ले लेकर रोने लगी।

उसका सारा शरीर ऐसा तडफ रहा था, मानो मछली को पानी से निकाल लिया गया हो।

हिमाशु कुछ समय शान्त रहे। उष्मा बराबर रोती रही तो लाईसर्जिक का प्रभाव समाप्त हो जायेगा। उसने दवा का एक चम्मच उष्मा के मुह मे डाल दिया।

उसके बाद सब बत्तियाँ बद करके सारे कमरे को अधेर गुप्प बना दिया।

रोती हुई उष्मा अब शान्त हो गई।

हिमाशु ने लाल बल्ब जलाया। इसका सीधा प्रकाश उष्मा की आखो पर पडने लगा।

उष्मा की खुली हुई पलकें फिर मुद गई। उसने जोर से चिल्लाना शुरू किया 'बत्ती बद कर दो मैं कहती हू, बत्ती बद कर दो।'

'किसलिये ?'

,मुझे नगी करके इस तरह मेरी इज्जत लेत हुए तुम्हे शर्म नही आती ?'

'पति अपनी पत्नी के शरीर का उपभोग कर, भला इसमे लज्जा लूटने की क्या बात हो सकती है ?'

इतना कहकर हिमाशु ने उष्मा के दोनो पैर पकड लिये।

'छोड दो''''छोड दो मेरे पाव छोड दो !

'उष्मा, क्या हो रहा है ?'

'आज की रात मुझे अकेली रहने दो।'

'फिर ?'

'कल बात करेंगे।'

'नही आज ही।'

अब हिमाशु ने पावों को छोडकर घुटनों पर अपने हाथ रख दिये।

लगातार जोर की चीखों से हिमाशु का केबिन गूंज उठा।

हिमाशु भी परेशान हो गया। वह सोचने लगा कि यदि इस प्रकार की चीख पास के केबिन में सो रहे मधुसूदन के कानों में पहुच गई ...और वे यहा दौड़े आयेगें....अतएव उसने पावों पर से हाथ हटा लिए। उसने फिर से लाइट बंद कर दी तथा विन्डस्क्रीन खोलकर कुछ हवा खोरी की।

हिमाशु सोचने लगे कि आगे कैसे बढा जाय। प्रसग कुछ विपरीत दिशा में जा रहा था।

हिमाशु ने मन ही मन सोचा कि एकदम पराकाष्टा पर पहुँचते ही उसने एक भूल की है। उसने सोचा कि उष्मा के मस्तिष्क को बेहोश बनाकर उसके सुषुप्त मन को जागृत करके, मानसपट पर चलचित्र की तरह चल रह प्रसगो का एक के बाद एक निर्देशन करना बहुत उचित था। अतीत की अति करुण एवम् कडवी स्मृतियो की प्रत्येक कडी, जिस प्रकार उष्मा विचार कर बोलती जा रही थी, वह वास्तव में ठीक था। परन्तु घुटनों पर हाथ रखकर हिमाशु ने अनग का स्थान ले लिया। दवा के प्रभाव के कारण उस समय बुद्धि या विवेक-सी किसी वस्तु का अस्तित्व रहना सम्भव नही था। जो कुछ था, वह सही था।

इन दारुण स्मृतियो को अतीत के आवरण से बाहर निकालकर हिमाशु ने उष्मा के अचेतन मन के मर्म भाग में छिपी उलझनों को विभिन्न प्रश्नो के द्वारा सुलझाता जा रहा था। दूसरी ओर उष्मा अपनी दारुण चीत्कारो के मध्य इन कडवी स्मृतियो को शब्दो का रूप देती जा रही थी। किन्तु स्पर्श की इस सहज भूल से उष्मा के भयभीत सुषुप्त मन ने दूसरी करवट ले ली। अब उसके अचेतन मन में स्मृतियो की शृंखला समाप्त हो गई। स्मृतियो पर सवार होकर अनग स्वयम् उभर आया था।

अनग को मानस पटल से हटाकर विधिवत गाडी को पुन पहले के मार्ग पर चलाना कठिन था, बहुत देर तक सोचने के बाद हिमाशु को एक युक्ति सूझी। एक तीखी तेज व्हिसिल बजे और उष्मा की मन श्रुति का इस ध्वनि का प्रहार सहन कर सके तो इसके प्रत्याघात में कुछ नई बात ज्ञात हो सकती है। इस ख्याल के आते ही हिमाशु म एक नया उत्साह भर गया।

उसने विचार किया कि सम्भव है, इस कार्य से उष्मा पर व्हिसिल से होने वाले प्रभाव का कोई नवीन रहस्य ज्ञात हो जाये ... ।

अत उसने तुरन्त इन्टर कम्यूनीकेशन का बटन दबाया, हल्लो केप्टिन साहब ?

'हाँ' ... ।' केप्टिन ने अपनी केबिन से तुरन्त उत्तर दिया।

प्लीज'' ! ऐन्जिन रूम में कहे कि एक फुल पावर पर व्हिसिल....!

हिमांशु ने एकदम सब बत्तियाँ जला दी।

कुछ ही देर में एक तेज व्हिसिल हवा में गूंजने लगी।

इस तेज व्हिसिल की आवाज कान पर पड़ते ही उष्मा का अचेतन शरीर हिलने लगा।

सारा शरीर एकदम उछला और पलग से नीचे आ गिरा।

'ओ, माँ! छोड़ दो....! मुझे छोड़ दो''''! मैं तुम्हारे पाँव पड़ती हूँ''''।'

उष्मा की हृदय विदारक चीखों से केबिन गूंज उठा।

हिमाशु ने उष्मा को बलपूर्वक गोदी में उठाकर बिस्तर पर सुला दिया।

'उष्मा ......।'

कोई उत्तर नहीं मिला।

हिमाशु को चिन्ता होने लगी। उष्मा की चीख की आवाज इतनी बुलन्द थी, कि यदि वह आस-पास के केबिन्स् में पहुँच गई हो तो? सम्भव है, कोई दौड़ आये!

अपनी केबिन का दरवाजा खोलकर डाक्टर बाहर निकल आये।

बाहर निकलकर हिमाशु ने देखा कि स्टीमर की गति बड़ी तेज है। ऐन्जिन की आवाज से सारा वातावरण काँप रहा था। ऐन्जिन की आवाज सुनकर ऐसा प्रतीत होता था, मानो स्टीमर किसी उन्माद में डूब रहा हो।

यह आवाज किस की थी''''' ?

मदोन्मत ऐन्जिन की तीव्र गति करने वाले स्टीमर की उद्दम छाती की सनसनाती हुई धड़कनें''''? या....प्रचण्ड प्रतिकार में उष्मा की छाती से निकल रही धड़कनें ...?

हिमाशु केबिन में लौट आया, तो ज्ञात हुआ कि अगले दरवाजे की काल-बेल बज रही है।

उसने धीरे से दरवाजा खोला।

सोचने के अनुसार सामने ही''''मधुसूदन खड़े थे।

'डाक्टर! मुझे ऐसा लगा कि उष्मा शायद चीख रही थी?'

माथे का पसीना पोंछते हुए हिमाशु ने कहा: 'अंकल, घबराने की जरूरत नहीं है। इस प्रकार के इलाज में ऐसा तो होता ही है। इससे आप ऐसा मत सोचिए कि उष्मा को किसी प्रकार की तकलीफ हो रही है।'

हाँफते हुए मधुसूदन कहने लगे: 'पहले भी एक दो चीख, मैंने सुनी थी। किन्तु दिल कठोर करके बैठा रहा। किन्तु इस चीख के बाद तो बैठा रहना सम्भव नहीं हो सका भाई।'

'कुछ नहीं, आप चाहें तो यहीं बैठ जाँय।'

कुछ देर द्विधा अनुभव करने के बाद मधुसूदन वहीं कुर्सी पर बैठ गये।

पुत्री को अचेतन दशा मे देखकर उनका हृदय कापने लगा।

'देखो''''देखो'''! डोरबेल बज रही है। माँ आ रही प्रतीत होती है। आप दूर हट जाए!'

मधुसूदन को उष्मा की बात समझ मे नही आई। वे परेशान हो गये, उन्होने पूछा : 'डाक्टर भला यह क्या बात है।'

'खोज का विषय है, अंकल! बकवास नही है, अपितु स्पष्टीकरण हो रहा है।'

'किसका स्पष्टीकरण?'

हिस्टीरिया का रोग किस प्रकार से प्रारम्भ हुआ, इस रहस्य का स्पष्टीकरण।

डाक्टर की बात सुनकर मधुसूदन पसीने मे नहा गये। उन्होने एक लम्बा सास लिया और बोले ओह! 'क्या तुमने कारण जान लिया डाक्टर?'

'हाँ'''किन्तु फिर भी अभी कुछ जानना शेष है। आपकी उपस्थिति मे मुझे आगे बढने मे सकोच हो रहा है। मेरा अनुमान है कि होश म आने के बाद यदि उष्मा को इस बात का पता लग गया तो वह लज्जित हो जायेगी।

सकेत समझकर मधुसूदन कुछ उदास मन से खडे हुए और कहा 'ठीक है, मैं जा रहा हूँ, परन्तु यह तो बतलाइए कि अभी कितना समय और लगेगा?'

होश म तो यह अब सुबह तक आयेगी पर मैं अपने पास इसे अब आधा घटे से ज्यादा नही रखूंगा।

जाते जाते भी मधुसूदन दरवाजे के पास आकर कुछ ठिठक गये।

हिमाशु ने इन्टर कम्यूनिकेशन का बटन दबाकर व्हिसिल बजाने की सूचना दी, केप्टन को।

किन्तु इस समय ...।

हाँ, व्हिसिल बजने पर भी उष्मा मे किसी प्रकार की कोई हलचल नही हुई। न तो कोई चीख ही थी और न ही किसी प्रकार का कोई उदगार निकला।

देखो!'हिमाशु ने धीमे स्वर मे कहा उष्मा अब पूर्ण-रूपेण बेहोश है। इसका मतलब यह है कि इसका सजग हुआ मन अब सचेत नही रहा। इसके दिमाग के आरपार मन मे व्याप्त व्हिसिल के प्रत्याघात का ही यह प्रभाव है।'

'क्या तुमने यह ज्ञात कर लिया कि व्हिसिल का ऐसा प्रभाव क्यो होता है?'

तर्क कर सकता हूँ, किन्तु रोग के साथ यह कैसे जुडा है, 'इसका पता लगाने मे अभी समय लगेगा तथा मेहनत भी करनी पडेगी।'

हिमांशु की बात सुनकर मधुसूदन बिना कुछ बोले धीरे-धीरे गहरा सास लेकर अपने केबिन की ओर चल दिये।

हिमांशु ने उष्मा को झकझोरना शुरू किया। उसने उष्मा को खूब झकझोरा। लेकिन किसी तरह का कोई उत्तर नही मिला। पुन एक दो बार व्हिसिल की आवाज से सारा वातावरण गूंज उठा। डोर बेल भी बजाई गई। उष्मा के कानो म मुह डालकर आवाजें भी दी गई।

किन्तु सब व्यर्थ रहा।

उष्मा के शरीर मे कोई चेतना नही, अपितु एक लाश पडी थी।

उष्मा की ऐसी दशा देखकर डाक्टर हिमांशु घबरा उठे। उन्होने उष्मा की पल्स टटोली। पल्स की गति तेज थी। असाधारण उत्तेजना के कारण पल्स की गति एक सौ बीस प्रति मिनट पहुँच चुकी थी....।

हिमांशु ने एक सतोष का श्वास लिया।

उसने देखा कि उष्मा पसीने मे नहा गई है, ऐसी दशा देखकर लगता था, मानो तेज बुखार के उतरने की शुरूआत हो चुकी है।

डाक्टर ने उष्मा का पसीना पोंछा। पानी मे थोडा यूडी कोलन डालकर उसके मुह, हाथ, गला, छाती को रगडकर साफ किया।

लाईसर्जिक देने के बाद जब तक इसका प्रभाव समाप्त न हो जाय दूसरी दवा देना उचित नही।

उष्मा की पल्स उसने पकड ली।

डाक्टर ने अनुभव किया कि उष्मा की उत्तेजना धीरे-धीरे कम हो रही है।

सारी बत्तियाँ एकदम बुझाकर एक मात्र मरकरी लाईट को ऑन रखा और चुपचाप कुर्सी पर बैठ गये।

बिखरी जुल्फो मे, अस्त व्रस्त वस्त्रो मे अव्यवस्थित पडी हुई इस गौर-नाजुक, दुर्भाग्य ग्रसित नारी को वह अपलक नेत्रो से देखते ही रहे।

रह, रहकर मन के किसी कोने मे एक हल्की-सी टीस जगने लगी।
यह रोगी...। मेरी पेशेन्ट....!

अपनी चेतनावस्था मे जो कभी भूले भटके भी हिमांशु को अपने समीप नही फटकने देती, वह आज बेहोशी के कवच म कैद होकर ...।

किन्तु . क्या यह बेहोश है ?

शिशिर की प्रातःकाल की धवल हिमकन्दरा मे एक तृप्ति तिलोत्तमा नाचते-गाते थककर लेट गई है....!

हिमशिला-सी शुभ्र धवल शय्या मे पडी हुई उष्मा के अस्त वस्त अगो से लावण्य की एक निष्कठ कविता मौन चुनौती से यह किसका आह्वान करती हुई अविरल रूप मे बह रही है ?

प्राणान्त हो जाए""किन्तु डाक्टर के सम्मुख अपना गुप्त रहस्य न खोले""।

ऐसी दारुण व्यथा को मन की अधेरी गुफा मे डालकर क्यो निर्वाचित का यह मजबूत ताला आखिरकार उसने लगा दिया है ?

पर लाईसर्जिक नामक दवा से यह ताला खुल चुका है और उष्मा""।

उष्मा बेहोश है डाक्टर होश मे है ।

उष्मा सो रही है""डाक्टर बैठे हैं ।

डाक्टर की सदैव की विरक्त आखो को आज कोई अगाध अनुरक्ति यकायक अपलक टकटकी मे बाध रही ह !

इच्छा न होते हुये भी डाक्टर की आखे उधर से नही हट रही थी ।

कई बार उसने सोचा आखें हटा लेने की कोई आवश्यकता भी नही है । उसने एक लम्बा सास लिया । उबासी ली""आलस्य मे शरीर को मरोडा""।

डाक्टर ने देखा कि उष्मा भी ऐसा ही एक गहरा सांस ले रही है । उसके फडफडाते हुए ओठो के अन्दर जुडे हुये दात""कुछ कहने का प्रयास कर रह हैं""।

एकदम उष्मा के पास जाकर हिमाशु ने उसके मुह मे अगुली डाली। इसके बाद जबडो मे अगुली डालकर जकडे हुए दातो को खोला ।

हो ' हो" आवाज करके उष्मा ने एक गहरी उबासी ली और इसके साथ ही खीचे हुए धनुष की तरह एक तेज मोड लती हुए उष्मा की काया उठने लगी । उष्मा ने एकदम हाथ लम्बे करक एक आलस्य लिया । इस पर भी बद आखे खुल नही सकी । एक बार सारा शरीर शिथिल हो गया । अद्धर उठी हुई उष्मा, अब 'ढीली हो गई थी ।'

हिमाशु ने उसके कान म मुह डालकर कहा 'उष्मा !'

'ओह ! मैं कहा हूं ?'

सहसा हिमाशु की आखो म कुछ चमक आ गई 'तू तू ..अपने पति क पास उसके साथ उसकी शय्या पर है ।'

'हाय ! हाय ! देखो भी यह क्या हो गया ?'

'क्या हो गया, उष्मा ?'

मेरा सारा शरीर लोहलुहान हो गया है । वे भी लोहू से तर-बतर है । सारी चादर लोहू से भीग गई है । अरे रे ! सुबह जब घर के लोग ये देखेंगे तो क्या कहेंगे ?

हिमाशु के चेहरे पर एक सतोष की मुस्कान दौड पडी ।

उष्मा उसी स्थान पर आ चुकी थी, जहा वह उसे ले जाने का इच्छुक था ।

अब हिमाशु ने अपनी आवाज बदली और आदेशात्मक स्वर मे कहा 'अनग को उठा और उससे पूछ कि यह सब क्या कर दिया ?'

'ये अब कैसे उठ सकते हैं ? ये तो नशे में धुत होकर पड़े हैं।'

इतना कहकर उष्मा ने अपना हाथ छाती पर रखा और बोली 'अरे बाप रे ! यहां तो बहुत तेज जलन हो रही है। तनिक देखो भी, छाती पर कितने नाखून गड़े हुए हैं ? वास्तव में यह मनुष्य है या कोई राक्षस ?'

'नाखून क्या गड़ाए हैं ?'

'अधीन होने को इन्कार किया था, इसी कारण से . .।'

'परन्तु तू तो बेहोश थी ?'

'हां, सम्भव है होश में लाने को ही नाखून गड़ाए हों किन्तु नाखूनों से ही अंत नहीं हो गया है ? गालों पर मानो धधकते अंगार रख दिए हों, ऐसा लगता है। देखो भी, ऐसा लगता है।'

'दाग दिया है या क्या ?'

उष्मा ने दोनों गालों पर हाथ फेरना शुरू किया।

गाल को स्पर्श करने को आगे बढ़े डाक्टर का हाथ स्पर्श करते ही एकदम रुक गया। उसने हाथ खींच लिया। उष्मा के किसी अंग को स्पर्श करके वह पहली भूल को दोहराने का इच्छुक नहीं था।

च च च च की आवाज करके उसने जोर से कहा, 'ओह ! गालों को तो काटा गया है !'

'मुझे झकझोर दिया है। कबूतरी को जैसे बाज पीस डालता है। अंग-अंग में भयंकर वेदना हो रही है। अब खड़े होने की भी शक्ति नहीं है। नहीं तो यह चादर तो धो लाती।'

इतना कहकर उसने जांघ पर हाथ फेरना शुरू किया, अभी तो यह सब साफ करना होगा। यदि कोई देख लेगा तो क्या कहेगा ?

शब्दों से प्रकट हो रही घोर अतीव वेदना से डाक्टर का कलेजा कांप उठा।

कठोर दिल करके उसी दृढ़ स्वर में उसने कहा, 'तुझे इस प्रकार नर्वस नहीं होना चाहिए। व्हिसिल बजते ही तू नर्वस क्यों हो गई ?

मैं व्हिसिल से नर्वस नहीं हुई। भला, व्हिसिल में भी क्या भय समाया होगा ? किन्तु जिस समय उन्होंने बलात्कार करना शुरू किया उस समय व्हिसिल बज उठी और दिमाग में विचार आया और मैं इस विचार के कारण बेहोश हो गई।

डाक्टर की आंखों में उस प्रकार की एक चमक आई, मानो समुद्र की गहराई में गोता खोर को कोई मोती मिल गया हो।

न जाने कितनी डुबकियों के पश्चात इस रहस्य का यह अनमोल मोती उसके हाथ में आया था। ओह ! इसका मतलब यह हुआ कि व्हिसिल की वह ध्वनि बलात्कार के अधम प्रसंग के साथ जुड़ गई है। इसकी स्मृति

को अनुमान लगाते देर नहीं हुई। सारी परिस्थिति का विश्लेषण करके हिमाशु ने यह अनुमान लगाया कि अनग के घर के पास कोई मिल होनी चाहिए। सयोग की बात होगी कि जिस समय मिल की व्हिसिल बजी हो। उसी समय अनग की पशुता भी पराकाष्ठा पर पहुँच गई हो… व्हिसिल की आवाज और बलात्कार की कटु स्मृति एक दूसरे मे इस प्रकार जुड गई है कि अब उष्मा यदि प्रयत्न भी करे तो सहज मे इन दोनो को अलग करने मे असमर्थ है।

व्हिसिल….।

उष्मा के जीवन के सबसे दुर्भाग्यशाली कटु प्रसग के साथ उसकी स्मृति मे जुडी हुई है। इसीलिए किसी के सामने सिर न झुकाने वाली उष्मा व्हिसिल बजते ही दोनो हाथो से सिर पकड लेती है।…

इससे अधिक जानने की अब कोई आवश्यकता नही थी, जो कुछ ज्ञात करना था, वह ज्ञात किया जा चुका था। मात्र चार घडी म डाक्टर ने वह सब ज्ञात कर लिया, जिसको उष्मा का अचेतन मन बहुत प्रयास करने पर भी कुछ भी बताने को तैयार नही था।

पर रात अभी शेष थी।

हिमाशु जानता था कि उष्मा इस समय हिपनोटिज्म की अवस्था मे है। चढती रात के पिछले समय मे खून से लथपथ दशा मे …।

वह देख रही थी कि कब चहल पहल हो और उठकर शरीर साफ कर आए। खून से लथपथ चादर साफ कर लाए।

हिमाशु ने बडी मृदुता से कहा 'उष्मा ! तेरे को अब घबराने की जरूरत नही है। अभी आधी रात है। अभी सो जा, बहुत सवेरे जब नल चालू हो तो उस समय बाथरूम मे जाकर स्नान कर आना।'

परवश उष्मा के होठ फडक उठे, किन्तु डाक्टर की सख्त आज्ञा के कारण दोनो हाथो से आखें दबा ली, मानो अब वह सोने को व्याकुल हो रही थी।

पाच मिनिट बाद हिमाशु ने आवाज दी 'उष्मा ।'

कोई उत्तर नही मिला।

थकान दूर करने के लिए उसने एक गहरा सास लिया।

थोडी देर बाद हिमाशु ने मधुसूधन के केबिन पर डोर बेल बजाई।

'अकल ! उष्मा सो गई है। चलो हम लोग चल कर उसे अपने पलग पर सुला दें।

मधुसूदन ने असमजस मे पूछा, 'बेहोश है या सो गई है।'

मैने उसे अचेतन अवस्था से निकालकर सुला दिया है। परन्तु इस पर भी दवा का प्रभाव तो रहेगा ही। उष्मा दवा के प्रभाव से सुबह तक मुक्त होगी। जब वह उठेगी तो उसे रात की कोई भी बात याद नही रहेगी।

परन्तु आप किसी प्रकार का सकेत मत करना।

'यदि उसको कुछ भी याद नहीं होगा तब फिर तुम्हारे कहे अनुसार उसका मन कैसे स्वस्थ रहेगा।'

'असल यही बात समझने की है।'

हिमांशु के ओठों पर एक हल्की-सी मुस्कान आ गई : 'मनुष्य जब चेतन अवस्था मे होता है तो बिना किसी कारण के ही अपने दिल की बात साफ-साफ नहीं कहता है। क्योंकि उस समय वह मन की अपेक्षा मस्तिष्क के अधीन रहता है। इसी कारण जो बात जैसे घटित हुई है, उस प्रकार नहीं अपितु अपने तरीके से कही जाती है। अतएव वह बात को कुछ छिपाता है तो कुछ झूठ बोलता है। परन्तु सच बात को अपने आप मे छिपाए हुये उसका अचेतन मन किसी प्रकार से भी इस बात के लिये गवाह देने को तैयार नहीं होता है। इसीलिये चेतनावस्था मे खुलकर बात करने पर भी ये बातें मस्तिष्क की आज्ञानुसार ही कही जाती हैं और मन हल्का नहीं हो सकता है" जबकि अचेतन अवस्था मे इसके विपरीत प्रक्रिया होती है। उस समय मस्तिष्क को अचेत करके मन को मस्तिष्क के चगुल से मुक्त करवा लिया जाता है। इससे अचेतन मन के गूढ रहस्य बाहरी मन द्वारा बाहर आ जाते हैं। ये गूढ रहस्य ऐसे होते हैं, जिसे मानव, चेतन अवस्था मे कहने की कभी हिम्मत नहीं कर सकता है "ये रहस्य जब प्रगट हो जाते हैं, तो फिर मन का बोझ स्वाभाविक रूप से स्वत ही हल्का हो जाता है।

'पर डाक्टर तुमने ही अभी बताया था कि जाग्रत अवस्था मे आने के बाद उसे कुछ भी याद नहीं रहेगा। तब फिर मन की स्वस्थता अधिक समय तक कैसे सम्भव रहेगी ?'

'मन स्वस्थ रहेगा। यह सही है कि मानव यह नहीं जानता कि उसने कौनसी रहस्यमयी बात कह दी है, किन्तु अचेतन मन तो इस बात को जानता ही है। जिस प्रकार किसी अपराधी को किसी अपराध से मुक्त कर देने पर वह हल्कापन अनुभव करता है, उसी प्रकार ही अचेतन मन जिन बातों से भारीपन अनुभव करता है, उनको वाणी द्वारा कह देने पर हल्कापन अनुभव करता है। व्यक्ति स्वयम् चाहे बात को न जान सके, परन्तु इसका हल्कापन तो अनुभव कर ही सकता है। इसीलिये चेतन मन की गति विधियों का सचालक अचेतन मन होता है। कई बार मनुष्य बिना किसी कारण के भय, चिन्ता या उद्वेग का अनुभव करता है, किन्तु अचेतन मन को इस बात का निश्चित रूप से ध्यान होता है तथा इसी कारण से विभिन्न प्रकार का अनुभव चेतन मन द्वारा प्रकट होते रहते हैं। आप स्वयम् ही कल से उष्मा के व्यवहार, बोलने-चलने और कार्य करने के ढग मे आश्चर्यजनक परिवर्तन का अनुभव

करेंगे। इस पर भी हम लोगों को यह अपेक्षा करनी चाहिए कि निर्भयता या निश्चितता की एक सीमा को वह कदापि लाघ नही सकेगी, क्योकि इच्छा न होने पर भी उसको ससुराल तो अवश्य जाना ही है।

अनइच्छित ससुराल ?'' अधीरता से हिमाशु का हाथ पकडकर अतीव आग्रह से मधुसूदन कहने लगे 'डाक्टर, आपने उष्मा से उसके ससुराल के सम्बन्ध म क्या रहस्य खुलवाया है, मुझे तुम्हे अवश्य ही बतलाना पडेगा ?'

'उष्मा की आज्ञा के पश्चात ही मैं आपको बता सकता हू। यद्यपि मैं यह प्रयास जरूर करू गा कि अनइच्छा की बात वह तुमसे नही छिपाये। मैं उसे इस बात के लिये समझाने का प्रयत्न करू गा।

मधुसूदन किसी गहरी चिन्ता म डूब गये। उष्मा के ससुराल की अन-इच्छा की बात जानकर मधुसूदन को एक और चिन्ता हुई, तो दूसरी तरफ यह सोचकर कुछ राहत मिली कि आखिर उष्मा क मन की बात बाहर तो आगई। जबकि उष्मा अपने पिता के सामने ऐसी कोई बात रखने को किसी भी दशा मे तैयार नही हो सकती थी!

उष्मा को अपने केबिन म सुला देने के बाद मधुसूदन ने हिमाशु को पूछा 'अब उष्मा को हिस्टीरिया का दौरा तो नही पडेगा न!'

हिमाशु को मधुसूदन के पितृ वात्सल्य पर एक हल्की-सी हँसी आई। मधुसूदन की चिन्ता के कारण कुछ दु ख हुआ। शान्ति से समझाते हुये कहा 'अकल, यह कोई हिस्टीरिया का इलाज नही था। मुझ हिस्टीरिया का कारण मालूम करने मे सफलता मिल गई है। हिस्टीरिया का उपचार तो अब करना पडेगा।

'ओह! बात अब मेरी समझ में आई।'

मधुसूदन ने हताश तथा कुछ राहत अनुभव करते हुए सिर हिलाया।

हिमाशु ने आश्वस्त होकर कहा 'सबसे बडी कठिनाई यह थी, कि हम यह मालूम नही हो पा रहा था कि हिस्टीरिया का रोग आखिर किस कारण से प्रारम्भ हुआ। उष्मा जानती थी कि इस बात से तुमको दु ख होगा। पिता को सुख पहुँचाने तथा इसको अक्षत रखने के उद्देश्य से एक पितृवत्सल सस्कारी पुत्री ने वह सब करके दिखा दिया, जो उसे करना था। सारी व्यथा मन मे छिपाकर उसने पिता के सामने सदैव प्रसन्न मुद्रा म रहना सीख लिया था। इतना करने पर भी जो मानसिक यत्रणा अपनी जडे जमा चुकी थी, उसे मात्र एक स्त्री ही सहन कर सकती थी।'

अपने साथ अन्याय करके उष्मा ने यह सब सहन कर लिया, किन्तु हिस्टी-रिया के रूप मे दिन प्रतिदिन के दौरो द्वारा यह अन्याय बराबर प्रगट हो रहा था। उष्मा हिस्टीरिया की बिमारी से तभी मुक्त हो सकती है, जबकि वह

भी आपके समान इस दुश्चिन्ता से मुक्त हो जाये।

हिमाशु की बात सुनकर मधुसूदन की आंखों के सामने अंधेरा छा गया। उन्होंने कुछ कहने का प्रयत्न किया, किन्तु गला रुन्ध जाने के कारण उनका सब प्रयत्न व्यर्थ रहा। मधुसूदन का कंधा पकडकर हिमाशु ने उन्हे बडे स्नेह से कहा 'अंकल, आप किसी प्रकार की चिंता न करें। जब मैं यहाँ तक पहुँच ही गया हूँ तो इसके बाद अब मैं नाव को किनारे लगाये बिना नही रहूँगा।'

डाक्टर के हाथ पर सिर रखकर मधुसूदन फूट फूट कर रो पडे।

स्टीमर ने आधीरात की व्हिसिल बजाई और दूर किसी अन्य जहाज की भी व्हिसिल से आकाश को गु जा दिया।

००

मनोविज्ञान सदैव नियमानुसार ही चले, ऐसी कोई बात नही है। कई बार आखिरी समय मे मनोवैज्ञानिक को धोखा देकर उसकी धारणा के विपरीत उल्टी दिशा मे चला जाता है।

उष्मा, भी इस प्रकार की एक लडकी थी, वे डाक्टर के लोजिक को जल्दी से सार्थक नहीं होने देती थी। डाक्टर हिमांशु को भी इस बात का बोध होने कोई समय नही लगा। वैसे अब उष्मा हल्की-स्वस्थ और खुश दिखाई देती थी। हिमाशु ने कुछ देर से जाने का विचार किया था, किन्तु इससे पहले ही लगभग दस बजे के आस-पास टाइफून की भांति उष्मा डाक्टर के केबिन मे आ घुसी। 'कल तुमने मुझे क्या पिला दिया था, डाक्टर? बताओ" सच बात बता दो।'

उष्मा ने डाक्टर के दोनों कन्धे उसी प्रकार पकड लिये जैसे कोई बाघिन शिकार पर पंजा लगाती हो"".

डाक्टर को स्वप्न म भी ऐसी आशा नही थी।

उसने उष्मा की कलाई पकडकर धीरे से कहा 'पहले तनिक शान्त हो जाओ! मेरी बात भी सुन ।

'डाक्टर तुमने मुझे तू" तू कहकर सम्बोधित किया।'

'हाँ उष्मा! अब तू चाहे नाराज हो या खुश! मैं तुझे तू कहकर ही पुकारूँगा।'

उष्मा ने आखें फाडकर कहा, 'मैंने आपको यह अधिकार कब से दिया,

कुछ याद नही आता है।'

समय निकल जाने पर भी यदि वांछित अधिकार कोई न देवे तो फिर अधिकार अपने आप मिल जाता है, हिमांशु ने स्वस्थ होकर निश्चलता लाने का प्रयास किया।

परन्तु इससे उष्मा की व्यग्रता और भडक उठी 'डाक्टर! 'मैं तुम्हे इस धृष्टता के लिए कभी क्षमा नही कर सकती।'

'मैं सजा की प्रतीक्षा मे हूँ....तुझे विश्वास दिलाता हूँ कि तेरे द्वारा दी गई सजा को, मैं हँसते हुए सहन कर लूगा। सजा लेते समय तेरे समान ज्वालामुखी की भाति नही फट पडूगा।'

'जब तुम यह जानते हो कि मैं, ज्वालामुखी हूँ, तो फिर तुमने इसके धधकते अगारो से अपनी रक्षा करने का प्रयास क्यो नही किया?'

इन अगारो मे तो मैं कई दिनो से बैठा हूँ और इस समय भी बैठा हूँ। मुझे किसी प्रकार की कोई शिकायत नही है और न मुझे इससे बचने का कोई प्रयास ही करना है। तनिक बता कि तू मुझे क्या दण्ड देना चाहती है।

'तुमने मुझे क्या पिला दिया, यह बता दो।'

'लाईसार्जिक।'

'क्यो?'

उष्मा यह एक दवा है, ऐसी दवा है, जो मानव को अतीत के अन्धकार से बाहर निकालकर उसके अतीत को किसी नये स्तर पर ला देती है। इस दवा की सहायता स मानसिक रोगियो के मन की दबी हुई ग्रन्थियाँ बाहर निकालकर उसे निरोगी बनाया जा सकता है। अचेतन मन की मनोभावनाओ की अभिव्यक्ति द्वारा मनुष्य का असली रूप सामने आ जाता है' और....।

'क्या तुमने' 'मुझे वही दवा पिलाई, जो तुमने निजा को पिलाई थी?'

'उससे अलग! किन्तु दवा इसी प्रकार की ही थी।'

'और इससे तुमने मेरी यह सब कहानी ज्ञात करली, जिसको मैं अपने अन्तिम क्षण तक भी किसी को नही बताना चाहती थी। उस रहस्य को मैंने अपने जीवन के मूल्य पर छिपा रखा था।'

'इसी कहानी को ज्ञात करने के लिये तुम्हें दवा पिलाई थी।

कुछ कहने को उष्मा के होठ हिले। किन्तु शर्म की आवेग की उत्तेजना और छलके आघात की वेदना इतनी भयकर थी कि बिना कुछ कहे ही उसका शरीर बुरी तरह कापने लगा, वह पसीने से नहा गई।

'डाक्टर! तुम्हे मेरी लाज लूटने पर लज्जा नहीं आई।'

उष्मा की दशा देखकर डाक्टर एकदम हक्का-बक्का रह गया।

बिलख-बिलख कर रोते हुए उष्मा कहने लगी 'रात मे जैसे ही मैंने

दवा ली कि चक्कर आने लगे। उसी समय मुझे सन्देह हो गया कि तुमने जो दवा लिजा को पिलाई वही आज मुझे भी पिला दी। किन्तु इसके बाद क्या हुआ यह मुझे याद नहीं आता है'''डाक्टर तुम विश्वासघाती हो! मैं तुम पर मुकद्दमा चलाकर तुम्हें जेल की हवा खिलाये बिना चैन से नहीं बैठूंगी।

'तू घबरा क्या रही है, उष्मा! ऐसा तो कुछ भी नहीं हुआ कि—।

'मेरे मन के रहस्यों को खोलकर तुमने मेरा जीवन बर्बाद कर दिया। तुम नहीं जानते, डाक्टर! तुमने केवल मेरा जीवन ही बर्बाद नहीं किया, अपितु मेरे पिता का जीवन भीबर्बाद कर दिया! तुमने उनकी सुख, और शांति छीन ली। किस श्रद्धा से तुम पर किये गये सहज विश्वास का दुरुपयोग किया है, तुमने।'

'उष्मा! तेरा यह भ्रम है, यदि तू चाहे तो मैं अभी तेरे पिता के पास चलने को तैयार हूं। मैंने उनको कुछ भी नहीं बताया है।'

कृपा करके अब आप अपनी सूरत हमें दिखाने के लिये मत आइयेगा।

आसू पोंछते हुए उसने पूछा . 'पिताजी की उपस्थिति मे ही तुमने मुझसे प्रलाप करवाया था ?'

उष्मा! 'जितना तू सोचती है, उतना मूर्ख मैं नहीं! तेरे पिताजी को कुछ ज्ञात नहीं है ?

तब फिर मैं तुमसे एक भिक्षा मागती हूं, कि पिता जी को इस सम्बन्ध में कुछ भी मत बतलाना। यदि तुमने कुछ भी बताया तो मैं, उनको अपनी सूरत दिखाने को जीवित नहीं रहूंगी। मैं समुद्र मे कूद पड़ूंगी''' सिसकते हुए इतना कहकर वह दरवाजा पार कर गई।

जाते हुए एक क्षण दरवाजे के पास रुककर उसने वाक्य पूरा किया : 'पर मैं अकेली समुद्र मे नहीं कूदूंगी। मैं तुम्हें भी साथ मे लूंगी। पहले तुम्हें धक्का दूंगी और बाद मे मैं गिरूंगी।

उष्मा तेरा दरिया मे कूदना सफल नहीं होगा। दरिया मे, मैं तुझे बचा लूंगा।

उष्मा ने फुंकारते हुये कहा 'मुझे बचाने वाली परोपकारी आत्मा अपना कर्त्तव्यपालन करे कि इससे पहले ही मैं उसका गला घोट दूंगी।

यह तो अच्छा रहा कि मधुसूदन इस समय बाथरूम मे थे और उन्हें किसी बात का पता नहीं चल पाया।

पूरे दिन उष्मा कमरे से बाहर नहीं निकली। दोपहर बाद डाक्टर भी अन्य रोगियो म ही व्यस्त रहा। काफी रात बीते थके मादे बिस्तर म आकर लेटे तो न जाने क्यो नीद नही आई। इसी प्रकार करवटें बदलते हुए अर्ध-तन्द्रावस्था मे मध्यरात्रि की व्हिसिल सुनाई दी। नीरव शान्ति की अति कोमल छाती को वह तीव्र ध्वनि का घाव तीर की तरह भेद रहा था।

किसी दूसरे की छाती को भी यह इसी प्रकार धडका देता है परन्तु आज उष्मा पर व्हिसिल का क्या प्रभाव हुआ यह जानने को उसका मन लालायित होने लगा। मन इस विषय म अधिक सोचने की प्रवृत्ति खो चुका था। उसने मन को रोकने का भरसक प्रयत्न किया मात्र डाक्टर का कर्तव्य निभाने को नही, या उष्मा के लिए नही। मात्र मधुसूदन द्वारा उसको सौंपी गई—अनन्त श्रद्धा की सार्थकता को सफल करने के लिए!

किन्तु उष्मा ने उसके सब प्रयत्नो को धूल मे मिलाकर व्यर्थ कर दिया था।

उष्मा एक अजीब लडकी थी !

हिमाशु ने अपने डाक्टरी ज्ञान से कुछ भी बाकी नहीं रक्खा था प्रथम भेंट से आज तक कोई ऐसा क्षण नही बीता कि जब वह अपमानित न हुआ हो। यदि कुछ शेष था तो यह कि मुह पर थूकना !

फिर भी लगातार एक अजीब धुन म उसके पीछे !

रेडियम की घडी न अधरे म पाँच बजने का सकेत दिया।

हिमाशु ने यह सोचकर कि अब नीद आना मुश्किल है बिस्तर छोड दिया और प्रात काल के कार्यों से निपटने को तैयार हो गये।

नहा धोकर सुबह की चाय मगवाने के लिए सोचा ही था कि उसी समय डोर बेल बज उठी। चौंककर दरवाजा खोला कि उसकी चमक और बढ गई। उसे अपनी आखो पर विश्वास नही हो रहा था।

आखें मसलते हुए उसने कहा उष्मा! तुम?

'हाँ ! पिताजी की तबियत यकायक बिगड गई है।'

क्यो, क्या हो गया?'

'समझ मे नही आता कि क्या हो गया?'

डाक्टर ने उष्मा की आवाज मे इतनी व्याकुलता, आज से पहले कभी नही देखी थी। इतनी व्याकुलता कि जिसका अन्दाज लगाना कठिन था।

हिमाशु को एकदम हँसी आगई। स्वयम् के लिए डाक्टर की साया तक न पडने देने वाली यह पुत्री पिता के लिए कितनी पागल होकर इधर-उधर दौड रही थी।

किन्तु हिमाशु मधुसूदन को देखकर स्वयम् ही चिंतित हो उठे।

बाह्य लक्षणो को देखकर चिंतातुर बनना आवश्यक हो गया था। बाहरी

लक्षणो के कॉरोनरी थ्रोम्बोसिस""? या हल्का हार्टअटेक ' ?' कुछ देर के निरीक्षण के पश्चात लक्षणो से बीमारी स्पष्ट हो गई।

मधुसूदन को दिल का हल्का दौरा पडा था। इस पर भी उपचार मे शिथिलता बरतने से खतरा और अधिक बढने मे कोई समय नही लगता।

हिमाशु ने तत्काल ब्लडप्रेशर देखा।

यह एकदम एबनार्मल''।

थर्मामीटर मे एक सौ पचास डिग्री से ऊपर जाता हुआ पारा बराबर खतरा बतला रहा था। तत्काल कॉर्डियोग्राम देना आवश्यक था।

मधुसूदन छाती को हाथ से दबाए आँख मीचकर पडे थे।

मुंह पर अन्तर व्यथा स्पष्ट दृष्टिगत हो रही थी। हिमाशु ने तुरन्त सीडेटिव का इन्जेक्शन लगाया। जल्दी से मिक्सचर तैयार करके एक डोज पिलाया, जब कुछ राहत मिली तो तुरन्त कॉर्डियाग्राम लिया गया।

वही"'।

कॉरोनरी थ्रोम्बोसिस या इसी प्रकार का कोई खतरनाक रोग नही तो हार्टअटेक तो जरूर था ही "उष्मा भयातुर होकर बैठी थी, मधुसूदन की अपेक्षा उष्मा का चेहरा अधिक पीला पड गया था।

'उष्मा ! चिन्ता मत कर, अकल आलराइट हो जायेंगे !'

आत्म विश्वास खोकर उष्मा बिलख-बिलख कर रोने लगी।

'अरे !, तुम पिताजी को ठीक करने की अपेक्षा उन्हे अधिक बीमार बना दोगी। चलो हटो, और मेरे केबिन मे जाकर आराम से बैठ जाओ।'

किन्तु उष्मा वही बैठी रही।

एक घटे तक लगातार सेवा चाकरी करने के पश्चात मधुसूदन की तबियत कुछ ठीक हुई।

एक विकराल रोग अपना राक्षसी जबडा अवश्य खोल चुका था, किन्तु यह जबडा मधुसूदन को निगले कि इससे पहले ही हिमाशु के शक्तिशाली मुक्के से वह चूर्ण-चूर्ण हो गया।

वैसे हार्टअटेक का यह सामान्य दौरा तात्कालिक उपचार से अवश्य ठीक हो गया था, किन्तु उसका आवेश बिल्कुल ही समाप्त हो गया हो ऐसी बात नही थी। मधुसूदन की हालत से हिमांशु बडे चिंतित थे।

दूसरी ओर उष्मा भी अब हिस्टीरिया के जबडे मे फस चुकी होती, यदि गत रात मे उसके अचेतन मन पर से भारी बोझ न उतर गया होता।

उष्मा और हिमाशु की अपेक्षा मधुसूदन अधिक स्वस्थ प्रतीत हो रहे थे। आज वे अपने हार्टअटेक के दौरे से इतने अधिक चिंतित नही थे, जितने कि

उष्मा के हिस्टीरिया के दौरे को देखकर ही जाया करते थे ।

मैं अपने लिये नहीं, किन्तु अपनी लाडली के लिए अभी कुछ वर्षों और जीना चाहता हूँ डाक्टर !

उष्मा एकदम उछलकर अपने पिता की छाती पर गिर पडी 'नहीं, पिताजी आप ऐसी अमगल बात मुह से न निकालें ।

उष्मा के बाल सहलाते हुए वे कहने लगे 'मेरी प्यारी बच्ची देख, मैं तो खुद ही जीवित रहने की बात करता हूँ, मरने की बात कहाँ कर रहा हूँ ।

दोपहरी मे हिमाशु ने यूरिन टेस्ट किया । गहरे आसमानी रग से स्पष्ट था कि मधुसूदन को डाईबिटीज नही है ।

हँसते हुए डाक्टर हिमाशु बोले 'यूरिन टेस्ट किया था । मुझे विश्वास था कि अक्ल को डाइबिटीज की बीमारी तो नही है । मैं यह भी जानता हूँ कि डाइबिटीज के रोगी को हार्टअटेक सामान्य तौर पर नही होता है ।

रोग निदान हो चुकने के पश्चात शक्कर खाने की मधुसूदन को छूट दे दी गई । परन्तु खाने मे नमक बन्द कर दिया गया ।

डाक्टर ने मधुसूदन को अब केवल पेय पथ्य पर ही रहने का निर्देश दिया । परन्तु स्टीमर मे केवल चाय के अतिरिक्त कोई पेय मिलना असम्भव था । इस पर भी हिमाशु ने कोशिश करके कई पेय पदार्थ स्टीमर मे उपलब्ध करवा दिये ।

मधुसूदन थोडी रात बीतते ही सो गये और उष्मा काफी रात बीतने पर ही सोई ।

हिमाशु ही एक ऐसा व्यक्ति था, जो रातभर जागता रहा और हार्ट-डिजीज सम्बन्धी मेगजीनस् पढता रहा ।

सुबह की स्टीमर की व्हिसिल सुनकर उष्मा जाग उठी और कहने लगी 'डाक्टर, आप अब तक भी यही बैठे हैं ?'

'यदि तुम आज्ञा दो तो जा सकता हूँ ।'

'नही नही' ! आप अपने केबिन मे मत जाइये । आप यही आराम करें ।'

'यहाँ कहाँ आराम कर सकता हूँ ?'

उष्मा, यह सुनकर सामने की कुर्सी पर आ बैठी और बोली 'लो ! आप मेरी खाट पर सो जाइये ।'

'नही, तुम्हारी नीद की कीमत पर मैं आराम करना पसद नही करूगा ।'

मैं खूब सो चुकी हूँ। आपका इस तरह मना करना ठीक नही । रात भर के जागरण से आप सुबह सूज हो जायेंगे । इस पर भी पिता जी की सेवा टहल मे भी बैठना पडेगा ! चलिये अब जल्दी करियेगा !

जीवन मे प्रथम बार इस प्रकार का उष्मा का व्यवहार सचमुच ही

अनुभव लगने जैसा था" । डाक्टर के मन म इसके कई कारण हो सकते थे। और कुछ नही तो पिता के कारण से ही "।

पिता के सतोष के लिये उष्मा अपना उपचार करवाने को तैयार नही थी, परन्तु पिता के लिए डाक्टर के साथ सभ्यता का व्यवहार करना अत्यावश्यक था। बिना इस प्रकार के भद्र व्यवहार के काम चलना असम्भव था।

बिना किसी प्रकार के वाद-विवाद के वह उष्मा के बिस्तर में सो गया।

इस बीच उष्मा ने उन्ही मेगजीन्स् को देखना शुरू कर दिया, जिनको अब तक हिमाशु पढ रहा था।

००

हिमाशु ने मात्र दो ही दिनो म मधुसूदन को स्वस्थ कर दिया। चलने फिरने की आज्ञा मधुसूदन को नही थी।

अब तक पुत्री के हिस्टीरिया का उपचार करने को मधुसूदन हिमांशु से प्रार्थना किया करते थे, अब मधुसूदन के स्थान पर उष्मा, मधुसूदन के उपचार के लिये प्रार्थना करती थी 'जैसे भी हो पिताजी का रोग जड मूल से मिटा दिया जाये। डाक्टर साहब आप ही एक ऐसे व्यक्ति हैं, जो इस काम को कर सकते हैं।

कदाचित हिमाशु की जिज्ञासा यह ज्ञान करने को ललचा रही थी कि उष्मा म ऐसी श्रद्धा की उत्पत्ति कहाँ से-और कैसे उत्पन्न हुई है। किन्तु अपनी इस जिज्ञासा को वह बराबर दबाये रहा।

मधुसूदन को किस प्रकार के इन्जेक्शनो की आवश्यकता है, इस बात को जानने के लिये पहले ब्लड टेस्ट करना आवश्यक था। इसलिये मधुसूदन का कुछ खून हिमाशु ने एक परख नली मे दोपहर के समय ले लिया।

हिमाशु ने मधुसूदन को एट्रोपीन मॉर्फिया का इन्जेक्शन दे दिया, जिससे वह प्राय नशे मे ही रहते थे।

जैसे ही डाक्टर टेस्ट ट्यूब मे ब्लड लेकर अपने केबिन मे पहुँचे कि पीछे-पीछे ही उष्मा आ गई और कहने लगी . 'यदि आवश्यकता हो तो कुछ मदद करू।'

कटाक्ष मिश्रित हास्य मे मिठास घोलते हुए डाक्टर ने कहा . 'थैंक्स।' चलिये, जब आप आ ही गई हैं, तो लीजिये ट्यूब को चिमनी पर गरम करिये।

उष्मा, डाक्टर के निर्देशानुमार काम करती रही।

कोई आधा घंटे मे एक्जामिनेशन का काम पूरा हो जाने के बाद हिमाशु ने एक शांति का सास लेते हुए कहा : 'ब्लड मे किसी तरह की कोई कमी नही है, इसलिये अकल को हालत ठीक होने मे कोई समय नही लगेगा।'

'डाक्टर, मैं स्वयम् इस बात की कोशिश कर रही हूँ कि पिताजी के मन पर किसी प्रकार का बोझ न पडे।' उष्मा की आवाज मे बहुत अधिक उत्तेजना थी। वह कहना नही चाहती थी, फिर भी उसके मुह से निकल ही गया। 'किन्तु डाक्टर, आपने मेरे सभी प्रयत्नो को मिट्टी मे मिला दिया।'

'मैंने ?'

'हाँ··· आप ही ने ? पिताजी को अब इस बात का पता लग चुका है कि मैं सुसराल मे इतनी प्रसन्न नही हूं, जितना कि मुझे होना चाहिये था। मेरे हिस्टीरिया का भी यह कारण है। पिताजी को इसी आघात के कारण हार्टअटेक हुआ है।'

'उष्मा यह तुम्हारा केवल भ्रम है। मैं तुम्हे कैसे समझाऊ ?'

'अब समझाने की आवश्यकता भी क्या है ? 'उष्मा ने एक गहरी सास ली। आप नही जानते कि पिताजी का हृदय कितना नाजुक है। सच बात तो यह है कि तुम खुद भ्रम म हो।'

'सम्भव है, तुम्हारी बात ठीक ही हो। पर मेरे अनुमान से तो पिता जी के मन के बोझ का कारण तुम्हारा हिस्टीरिया का उपचार न करवाना है। यही नही, इसका कारण छिपाने का प्रयास करते होगें और इसी कारण वे अधिक चिंतित बन गये हो।'

'इस पर भी अटेक नही हुआ होता।'

'अटेक का कारण यह है कि हृदय की प्रमुख नाडी मे सहज रूप मे चरबी जम गई है। हृदय का पम्पिग ठीक नही होता है और इस कारण से हार्टअटेक हुआ है। यह सम्भव था कि यह अटेक आज नहीं तो कल या दो दिन बाद हुआ होता। उस समय प्रमुख नाडी मे अधिक चर्बी जम चुकी होती और उपचार करने मे कठिनाई पैदा हो जाती।

डाक्टर की बात का, उष्मा कोई उत्तर नही दे सकी।

कुछ देर बाद हिमाशु ने पूछा 'क्या पिता जी कुछ कह रहे थे ?'

हां····' 'उसने एक बहुत गहरी सास लेते हुए, कहा ' 'मुझे ससुराल में किस बात का दु ख है, यह बात वे बार-बार पूछ रहे थे।'

'तुमने इसका क्या उत्तर दिया ?'

पिताजी ! मुझे ससुराल मे कोई तकलीफ नही। 'मैं आत्म प्रवचना नही करती हूं, अपितु सही बात कहती हूं। आप स्वयम् मेरे ससुराल जाकर देख

सकते हैं कि मुझे ससुराल मे किसी तरह का दुख या तक्लीफ नही है।

'ससुराल की बात नही। क्या तुम अपने पति की ओर से भी पूर्ण-रूपेण सन्तुष्ट हो ?'

'ससुराल मे पति भी आ जाता है। पति तो सर्वप्रथम आता ही है।'

'तब ठीक। मैं पिता जी को समझा दू गा।'

'क्या समझा देगें ?'

'मैं यह समझा दू गा कि इस सम्बन्ध मे उन्हे किसी प्रकार की चिन्ता करने की आवश्यकता नही है।' कुछ देर रुककर हिमाशु फिर कहने लगे 'उष्मा, मुझे यह जानकर बहुत प्रसन्नता हुई कि ससुराल मे तुम बहुत सुखी हो। तदुपरान्त भी जिस सुख को तुम इस समय भोग रही हो वह सदैव बना रहे, ऐसा आशीर्वाद नहीं दे सकता हूँ।'

उष्मा एकदम अवाक रह गई।

आती रुलाई को रोकते हुये उष्मा लडखडाते स्वर मे कहने लगी 'मैं आपके आशीर्वाद के लिए भिक्षा नही मागती हूं। परन्तु पिताजी को तुम्हे इस सम्बन्ध मे विश्वास जरूर दिलाना होगा।'

'किस बात का विश्वास ?'

'ससुराल मे मुझे सभी बातो का सुख है।

'डाक्टर! मेरी हार्दिक इच्छा है कि आज के बाद यह प्रकरण सदा के लिये समाप्त हो जाए। तुम मुझे चाहे आशीर्वाद मत दो, पर इतना तो कर ही सकते हो कि आज के बाद कभी इस विषय पर चर्चा न करोगे।'

खून की बूदो को स्लाइड पर साफ करते हुए हिमाशु ने निर्विकार स्वर से कहा 'ठीक है, यदि तुम्हारी यही इच्छा है तो मैं इस विषय पर अब कोई चर्चा नहीं करू गा।'

थोडी देर बाद उष्मा अपने केबिन म चली गई।

हिमांशु भी दूसरे रोगियो की खबर लेने को चल पडा।

परन्तु आज और दिनों की तरह हिमाशु का मन काम मे नही लग रहा था। सदैव के उत्साह व निरन्तर की निर्मम साधना के मध्य एक निराशा की दीवार डाक्टर के सामने न जाने कैसे आ गई ? चारों ओर महासागर के विस्तृत वक्ष की घनघोर गूज से न जाने क्या अभावों का गुजन सुनाई पड रहा है ? क्या इस लम्बे सफर मे लिया एक कठिन काम अपूर्ण रह जायेगा ? या इसके बाद कर्त्तव्य की एक नन्ही-सी अमिट मुद्रा की स्थापना के लिये अपनी डाक्टरी को भी दांव पर लगाना पड़ेगा।

उसी समय स्टीमर ने एक भयानक व्हिसिल लगाई।

व्हिसिल की आवाज पर हिमाशु केबिन मे आया।

उसे आज खाना खाने की इच्छा नहीं हो रही थी। नियम के अनुसार वह यदाकदा ही लिजा की कुशल क्षेम पूछना न भूला करते थे। पहले तो दोनो एक साथ ही खाना खाते थे, किन्तु आजकल ऐसी बात नही थी ।

रात मे भूख लगन पर उसने चाय टोस्ट ले लिया। खा-पीकर वह बिस्तर पर लेटा, पर उसे नींद नही आई।

हिमाशु को सोते-सोते ऐसा आभास हुआ कि उसकी बैचेनी कहीं पर रास्ता बना रही है। वह उसका पता लगाने मे असमर्थ था। बहुत समय बाद वह मन ही मन हँसने लगा।

अन्य व्यक्तियो का मनोविश्लेषण करने वाले डाक्टर को कहीं स्वयम् का ही मनोविश्लेषण न करना पड़े ?

वह इस बात को समझ सकता है, यह बैचेनी कोई बिना कारण नही है· डाक्टर के कर्त्तव्य भाव के कारण मात्र कर्त्तव्य भावना के कारण· ?

उष्मा का हिस्टीरिया हिमाशु के लिये क्या एक कर्त्तव्य का ही प्रश्न था, या इसके अतिरिक्त यह विशेष रूप से हिमाशु की प्रतिष्ठा का प्रश्न बन गया था· ?

उत्साही हिमाशु सीमा लाघकर आगे निकल गया। वह उस स्थान पर पहुँच गया था, जहाँ सफलता एवम् निष्फलता अपनी सीमाओ को समेटकर एक रहस्यमय कटाक्ष से उसको देखने को खड़ी थी· तथा इन सीमाओ के दूसरी ओर· हिमाशु के पाँवो के पास एक अदृश्य अवकाश दुर्बोध अट्टहास कर रहा था।

सामने की दीवार के पास ब्यूरेक मे कई साइको की खाली शीशियाँ पडी हुई थी।

डाक्टर हिमाशु ने नवाइन स्पेश्यलिस्ट की डिग्री तो इससे पहले ही प्राप्त कर ली थी। इसके अतिरिक्त उसन कई अन्य केसो मे न्यूरोस्पेटीस्ट के स्थान पर काम किया था और उसम उसे बहुत सफलता मिली थी। अब वह साइकीट्रियाटिक की स्टेडी पूरी करके साइको एनेलिस्ट की डिग्री के लिये एक बार फिर लन्दन जाने की सोच रहा था· बहुत ही नाजुक ऐसे दो विभिन्न विषयों की भिन्न-भिन्न डिग्रियाँ लेना आसान बात नही थी। सौभाग्य से ही कोई डाक्टर इतना अध्ययन कर सकता है। परन्तु मेडिकल कालेज मे पढ़त समय कई केसो का परीक्षण करके हिमाशु ने एक बात स्पष्ट जान ली कि मन और मस्तिष्क दो भिन्न-भिन्न वस्तुए है, फिर भी मानसिक रोगियो म दो म एक की ओर ही समग्र ध्यान केन्द्रित करने से उपचार होना सम्भव नही। साइको तथा न्यूरो इस प्रकार एक दूसरे से सम्बन्धित होत है, जैसे चक्र और धुरी ? धुरी बिना चक्र का घूमना सम्भव नही हो सकता है और न चक्र का

बिना धुरी को, अस्तित्त्व होना ही सम्भव है। ये परस्पर एक दूसरे से ऐसे जुड़े हुए होते है कि एक दूसरे से भिन्न कर देने से इनका कोई महत्त्व ही नही रह जाता है। मन और मस्तिष्क भी इस प्रकार एक दूसरे से जुड़े है कि एक की धुरी पर दूसरे की गति बराबर बनी रह सकती है। जिस प्रकार अन्य शारीरिक प्रक्रियाओ के साथ मानसिक व्यापार का प्रगाढता का सम्बन्ध होता है, उसी प्रकार मानसिक विभावो के साथ मस्तिष्क की क्रियाएं भी जुडी होती है। ठीक इसी तरह मन के विवर्तनो का बुद्धि तन के साथ जुडा होना आवश्यक है। वैसे मन और मस्तिष्क अपनी-अपनी शक्ति के आधार पर सचालित होते हैं, फिर भी अपनी शक्ति पर ही ये निर्भर नही हैं। अन्दर बाहर व्यवहारो म दोना शक्तियो के सयोजन से प्राप्त एक नवीन सम्बन्ध ही इनका केन्द्र होता है। मानव के सभी आचार-विचार-प्रवृत्ति-गतिविधि-भाव और कार्यों का यही उद्भव स्थान होता है। किन्तु इस सूक्ष्म अनुबधन की उपेक्षा करके केवल अचेतन मन के गूढ व्यापारो पर ही लक्ष्य केन्द्रित कर लेने स, लक्ष्य से बाहर रह जाने वाले अस्तित्व अकर्मण्य नही होते हैं""।

केवल थ्योरी के आधार पर ही नहीं अपितु काफी प्रेक्टिकल केसज का अध्ययन करने के उपरान्त हिमाशु का यह मन था कि मानस रोगिया की चिकित्सा के लिये एक बिल्कुल नई पद्धति की आवश्यकता है।

पागल रोगियो का पागलपन दूर करने म कई डाक्टर बिल्कुल सफल नही हो पाते है। ठीक इसी प्रकार हिस्टीरिया से मानसिक रोग का इलाज करने म भी इस रोग के विशेषज्ञ डाक्टर असफल रहते है, क्योकि ये विशेषज्ञ न्यूरेल और साइकिक के मध्य बने सूक्ष्म अनुबध को पहचानने के बदले दोनो म से एक को लक्ष्य करके उपचार करते हैं। इसका फल यह होता है कि जब साइकिक का उपचार किया जाता है तो रोगी न्यूरेल के उपचार से वचित रह जाता है और जब न्यूरेल का उपचार किया जाता है तो रोगी साइकिक के उपचार से वचित रह जाता है।

हिमाशु ने उष्मा को जो सर्वप्रथम दवा दी थी, वह केवल नर्वाइन टॉनिक के अलावा कुछ नही था। किन्तु उष्मा के विचित्र और प्रतिकूल व्यवहार से साइकलोजिकल ट्रीटमेन्ट का तकाजा जोरदार था।

और"' उष्मा किसी भी ट्रीटमेन्ट के लिये तैयार नही थी।

इसीलिये हिमाशु की इस केस मे बहुत रूचि थी।

इसी कारण" जिद् कर रही उष्मा को आगे होकर छेड़ने की हिमाशु ने भी जिद् पकड ली थी।

उष्मा का जो मनोविश्लेषण करता था, वह हिस्टीरिया के मूल मे बैठी मानसिक प्रक्रिया के सम्बन्ध म नही था, अपितु उस मानसिक प्रक्रिया का

दिश्लेषण करता था, जो इस क्रिया को स्पष्ट करवाने में बाधक थी।

वह इतनी जिद् क्यो कर रही है ?

लाइसर्जिक दवा की कुंजी के सहारे उष्मा का अचेतन मन इस जिद् का कारण खोल चुका था।

सब कुछ जान लेने के बाद जब रोगी की चिकित्सा करना बहुत ही सरल हो गया था, उसी समय चिकित्सा से दूर भागती उष्मा का मानस एक नई पहेली का सर्जन कर रहा था।

समस्या का हल ढूंढना डाक्टर हिमाशु के लिये एक प्रतिष्ठा का प्रश्न बन गया था।

समय व्यतीत होता जा रहा था। यदि बीच में किसी प्रकार की अडचन न आई तो जहाज अब बम्बई पन्द्रह दिन मे पहुँच जायेगा।

इस समय की हालत देखते हुये उपचार के लिये पन्द्रह दिन काफी नहीं थे। अतएव हिमाशु ने इधर-उधर के अटपटे तरीको मे समय खोने के बजाय सीधे ही उष्मा के हृदय को ढूंढने का निश्चय किया।

उष्मा ने तो स्पष्ट बता ही दिया था कि वह हिस्टीरिया के विषय मे किसी प्रकार की चर्चा करने को तैयार नही है। अतएव जब बात ही करना सम्भव नही तो फिर इस विषय मे चर्चा करके उसे कुछ समझा पाना बहुत कठिन था।

अब कवल एक ही उपाय शेष था॰ ।

एक विस्तृत पत्र लिखकर उष्मा को उसकी मानस तस्वीर बता दी जाये ।

जो कुछ मैं कर रहा हूँ, वह अब उष्मा को जान लेना चाहिये।

रात्रि के दो बजे हिमाशु ने पत्र लिखना प्रारम्भ किया।

सुबह की चार बजे डाक्टर मधुसूदन की कुशलक्षेम पूछने आया।

मधुसूदन उस समय गहरी नीद म सो रहे थे॰ ।

उष्मा जाग रही थी॰ ।

हिमाशु उष्मा के हाथ मे पत्र देकर विस्मय प्रकट करने का मौका दिये बिना ही जल्दी से अपने कबिन मे लौट आये।

oo

उष्मा॰ ?

तू यह पत्र पाकर आश्चर्य करेगी कि मैंने तुझे क्यो लिखा ? तू सम्भवतया सागर मे डूब जायेगी अथवा अपने स्वभावानुसार क्रोध म उत्तेजित होकर

आग बबूला हो जायेगी… ! चाहे कुछ भी क्यों न हो, किन्तु मैं ऐसा अनुभव कर रहा हूँ कि अब अधिक समय तक रहस्य को छिपाने की मेरी इच्छा नहीं है।

यह पत्र मैंने केवल इसीलिये लिखा है कि तू मेरे लिये एक महान् आश्चर्य बन गई है, किन्तु साथ ही साथ इतना ही एक दुखद आश्चर्य भी…।

मेरे सभी प्रयत्न तुमने उसी भांति व्यर्थ कर दिये हैं, जैसे कि अफ्रीका के दुर्भेद जंगल-अकेले ही प्रयास करते हुए साहसिक संशोधक (नई खोज करने वाला) के सभी प्रयास व्यर्थ कर देते हैं।

इस पर भी यह प्रयास नहीं रुका तथा मेरे इस कठिन प्रयास के साथ अठखेलियाँ करके मत रोक, यही मैं तुझ से फिर निवेदन करता हूं।

तेरी मानसिक अशान्ति को समाप्त करके, तेरे मन व बुद्धितंत्र को सुव्यवस्थित करने को मैंने कमर कसी है…यह सब मात्र इसलिये नहीं कि तेरी अपनी मान्यताओं के अनुसार तू मेरे प्रयोग के लिये कोई महत्वहीन प्राणी है…अपितु मैं इसी कारण प्रयत्न कर रहा हूँ कि प्रकृति की ओर से तू एक सुन्दर भेंट है…! तेरा यह अमूल्य मानव-जीवन, मात्र तेरे अबोध के कारण नष्ट हो रहा है। एक डाक्टर के रूप में, मैं इसकी सुरक्षा करने का अपना कर्तव्य मानकर तेरे सामने खड़ा हूं। उष्मा! तनिक अपनी नाराजगी को एक ओर रखकर तू केवल इतना ही सोच कि यदि तू स्वयम् डाक्टर होती और तेरा कोई स्वजन-अथवा स्वजन समान ही आत्मीयता रखने वाला तेरी-सी दशा में होता और वह तेरे सामने आ खड़ा होता तो तू क्या करती? यदि तुझ में मानव स्वभावनानुसार सहज चेतना होती तो मेरे ख्याल से तू वही करती जो मैं इस समय कर रहा हूँ।

तेरी इच्छा के बिना ही या इच्छा से, तेरी प्रथम भेंट में ही मैंने तुझे अपना एक आत्मीय माना है। मैंने स्वजन के रूप में तुझे देखा है" तथा इसी कारण तेरी ओर से हुआ घोर अपमान एवम् विडम्बना को पुरस्कार के रूप में मैंने स्वीकार किया है।

मेरा मनोविज्ञान मुझे यह बतला रहा है कि तेरे इस अटपटे व्यवहार में तेरा तनिक भी दोष नहीं है। उष्मा, तेरे जीवन के किसी दुर्भाग्यशील क्षण में सृजित कल्पनातीत कटु प्रसंग ने तेरे कोमल मानस तंत्र पर जो कुठाराघात किया है, उसी के कारण तेरी प्राण चेतना सुप्त हो गई है। तेरे अचेतन मन की गुप्त भावनाओं के मध्य एक भयानक विग्रह चल रहा है…इस विग्रह का प्रतिबिम्ब तेरे प्रतिकूल व्यवहार से बाहर आ रहा है…।

किन्तु यही उचित समय है, जबकि तुझे अपनी आन्तरिक भावनाओं की दुर्दशा देखने की सबसे ज्यादा आवश्यकता है…हाँ,…केवल तेरे ही लिये,

इस व्यग्रता का केवल एक ही कारण था कि एक पुरुष की बुराइयों का शिकार होकर तू अपने आप को समग्र पुरुष वर्ग की छाया से बहुत दूर रखना चाहती थी। जहाँ एक ओर इस प्रकार की सरक्षणात्मक वृत्ति का प्रवल खिचाव था""वहीं दूसरी तरफ तेरे प्रदीप्त नारी यौवन को भी प्रकृति की ओर से कुछ तकाजा था"" कही क्रोधित मत हो जाना। यदि तू क्रोधित भी होती है तो भी यह स्पष्ट बात तुझे स्वीकार करनी ही होगी कि अपने अथक प्रयत्नो के उपरान्त भी तू अपने स्त्री जाति के तकाजे की उपेक्षा करने मे असमर्थ थी।

इस गुप्त किन्तु सतत दहकती-भडकती बात पर राख किस प्रकार डाली जा सकती है ? केवल इसके लिये एक ही शर्त है कि इस उदीप्त कामना को जलाकर भस्मीभूत कर दे। इतनी प्रखर अग्नि की ज्वालाएँ हृदय मे सतत् भभकती रहे""।

इनको सदैव भभकती रखने के लिये ही तू ने पुरुष जाति की तेरी घृणित भावनाओ को फूंक देना प्रारम्भ किया। तेरे अन्तर मन की पुरुष तृष्णा की अपेक्षा तेरे बाहरी मन की पुरुष घृणा निसदेह अधिक बलवती थी। किसी पुरुष के ससर्ग से कदाचित घृणा की यह मजबूत रस्सी टूट जायेगी तब " ? इस चिन्ता मे तू व्यग्र थी। इसी कारण अपने वाह्य व्यवहार मे तू पुरुष के ससर्ग को बराबर टालती रहती थी। तेरा मन कुछ न कुछ ठोस बहाना ढूढने मे लगा रहता था। मन मे यह दृढ सकल्प करने के पश्चात कि पुरुष वर्ग खराब है, तू पुरुष आचरण मे किसी न किसी प्रकार की खराबी को ढूंढने का सतत प्रयत्न करती रही तथा पुरुष होने के कारण डाक्टर मे भी किसी न किसी प्रकार की बुराई जानने को तू बहुत उत्सुक थी। तेरी इस उत्सुकता को जानते हुये ही मुझे उस रात मे स्वाग करना पडा।

उष्मा ! तुझे याद होगा कि यात्रा प्रारम्भ होने वाली रात्रि मे, मैं अपने केबिन मे चूहो पर प्रयोग कर रहा था। चूहो के साथ खेलते-खेलते मैंने इस प्रकार पुचकारना शुरू किया मानो मैं किसी स्त्री को पुचकार रहा हूँ....। त्रास से सिसकती स्त्री की तरह मैंने जोरदार सिसकियाँ लीं"" स्त्री के साथ की जाने वाली बातें करी"" मैं यह जानता था कि वेन्टीलेशन के पीछे कोई दो आखें इस ओर अवश्य देख रही हैं। सच बात तो यह है कि इन दो आखो का कौतूहल उत्तेजित करने के लिये ही मुझे यह नाटक करना पडा था।

परन्तु तेरी दो आखों ने जो कुछ देखा, इससे मैं तेरे मन मे सृजित दुर्दशा को बराबर समझ सकता हूँ।

जहा एक ओर तू क्षुब्ध थी""वहीं दूसरी ओर इतनी ही रुष्ट....। तेरे रुष्ट होने का यही कारण था कि वेन्टीलेशन की दूसरी ओर के दृश्य ने तेरी

दृढ धारणा वाले मन मे इतनी ही दृढता से घाव कर दिया था ।

तेरी क्षुधित आतुरता मे खुले हुए विकराल जबडों मे मुझे भोजन देना था "पुरुष वर्ग की बुराइयो की जीती जागती साक्षियो की खुराक. .' तू इस प्रकार इसे पुष्ट करना चाहती थी । किन्तु अपनी धारणा के विपरीत पुरुष वर्ग का स्वभाव देखकर तेरे मन के साप ने फुकार मारना शुरू किया । यह फुकार तुझे कह रही थी कि उष्मा जो कुछ तूने देखा है, वह सच नही है, जो कुछ सच है, मैं प्रमाणित करके रहूँगा''''।

हा''''उष्मा'' ' डाक्टर, एक डाक्टर के रूप मे चाहे कितना ही अच्छा क्यो न हो परन्तु एक पुरुष के रूप मे वह बिल्कुल अच्छा नही हो सकता है, इस प्रकार तेरे मन को किसी भी तरह मानना ही था ।

पुरुष वर्ग के प्रति तेरी यह शत्रुता नि सदेह ठीक थी । साम्प्रदायिक दावानल में मुस्लिम हाथो से पाडित कोई हिन्दू समग्र मुस्लिम जाति से शत्रुता करने लगता है अथवा हिन्दुओ के अत्याचार से पीडित हुआ कोई मुसलमान समग्र हिन्दू जाति से घृणा करने लगता है, ठीक इसी प्रकार पुरुष के अत्याचारो से पीडित होकर तू समस्त पुरुष वर्ग से ही तिरस्कार की भावनाओ का अनुभव करने लगी ।

जिस प्रकार घृणान्वित हिन्दु या मुस्लिम को बाद मे जब कभी सामने वाले पक्ष का कोई अच्छा अनुभव हो तो वह सामने वाले पक्ष मे स्वार्थ की गध देखता है । ठीक उसी प्रकार उष्मा तुझे भी डाक्टर की सहृदयता मे पुरुष के विषय लोलुप स्वार्थ की गध आने लगी'''' ।

अतीव त्रास से कु ठित मन की यही दुर्दशा होती है । अभावो की विकृत छाया मे से मुक्त होकर पुन असली निर्विकार स्थिति मे आने के लिये वह उचित उपचार चाहता है ।

कभी कभी यह उपचार उसी प्रकार बुरा लगता है, जैसे कि बालक को कुनैन की गोली देने पर ... । इस समय डाक्टर को प्रतिकार सहन करना पडता है ।

इतने थोडे दिनो मे मैंने तेरे साथ जो भी व्यवहार किया वह सब एक प्रकार से उपचार का ही रूप था ।

मैंने तेरा कट्टर प्रतिकार सहन किया है तथा यदि और भी आवश्यकता हुई तो सहन करूगा । सम्भव है कि तू इसे एक चुनौती समझकर फिर मेरे सामने फुंकार मारने लग जाये । पर इससे क्या ? मैं तेरे मन के अभावों के विष को निचोड डालने का इच्छुक हूँ । मैं जान चुका हूँ कि तेरे अन्तर के किस कोने मे यह विष भरा हुआ है । तुने लाईसर्जिक पिलाकर तेरे मन के सभी गुप्त रहस्यो को मैं जान चुका हूं । यदि तू इसे मेरा अपराध ही समझती है तब फिर मैं किसी दिन इस अपराध के लिये क्षमा याचना कर लूगा ''और

यदि तू क्षमा नही करेगी तो जो भी सजा तू देगी, मैं हँसते-हँसते उसे भोग लूंगा। किन्तु इस समय....?

इस समय तो मुने तेरे अन्तर का दर्पण तेरे सामने ही रखना है....तेरा निरावरण चेहरा तू इसमे देख ले। यह कौनसी कैंची है, जिसने तेरे प्रकृति प्रदत्त स्त्रीत्व के आभूषणो को इतनी निर्ममता के काट दिया है ?

सुहागरात के कटु अनुभवो की काली स्मृतियां ?

पर उष्मा, तुझे नही भूलना चाहिए कि जिस प्रकार तू ने अपने प्राकृतिक सभ्रात स्वभाव पर इनको आधिपत्य जमा लेने दिया है, इससे तू कही की भी नही रही है।

तू स्वयम् ही सोच ..! पुरुष वर्ग के प्रति तेरे घोर तिरस्कार के सामने ही स्त्रियों के प्रति तुझे अपना कारण भय ऋतुभाव व्यवस्थित रखना चाहिए था। किन्तु क्या यह वास्तव मे रह सका ?

क्या तुझे ख्याल आता है कि लिजा को मेरे साथ घूमते फिरते देखकर तेरी आखो से आग के अगारे निकलने लगते थे....!

किस कारण से...?

'और मैना की ओर बाह्य रूप से ऋतु दिखाता तेरा अन्तर क्या वास्तव मे ऋजु था ?

'नहीं, कदापि नही ! और तेरे अचेतन मन का विश्लेषण करते समय मैंने इसका कारण भी ढूढ लिया है ..।

पुरुष जाति के प्रति तेरे घोर-गम्भीर धिक्कार के कारण तुझे अपने मन को जबरदस्ती इस बात को मनवाना पड़ता है कि हर परणिता तेरे समान ही दुखी है। तेरे समान ही पति के अत्याचारो का शिकार बन चुकी है। इसके कारण तुझे इन परिणिताओ पर सहज सहानुभूति होती है। इस प्रकार तू अपने आपको आश्वासन देती है पर आश्वासन का यह छल कब तक चलता है।

तेरी मान्यता के अनुसार ये स्त्रियां दुखी नही अपितु सुखी हैं और यह बात जब स्पष्ट हो जाती है तो तेरी सहानुभूति फिर ईर्ष्या मे परिवर्तित हो जाती है। तू इन स्त्रियो को पुरुष का खिलौना मानने को प्रेरित होती है। इसे इनकी ओर बरबस ही असहिष्णुता की भावना लाने को व्यथित हो उठती है। मैना का प्रसूती प्रसग इस कथन का पक्का प्रमाण है।

वह एक बहुत ही नाजुक समय था, जबकि कोई भी व्यक्ति मददगार बनने की मानव सहज भावनाओ की उपेक्षा करके भाग नही सकता है। यही नही यथा शक्ति मदद करके अपने कर्त्तव्य को पूरा करके आनन्दप्रद गौरव की प्राप्ति का लाभ लेकर सतुष्ट होता है। जबकि तुमने तो मानवता की सामान्य भावनाओ तक को भुला दिया और मैना के पास ठहरने के लिये बिल्कुल इन्कार कर दिया।

मुझे इस बात का पूरा विश्वास है उष्मा ! यदि मैना अपने पति से सुखी होने की अपेक्षा दुःखी होती तो तू किसी भी क्षण उसकी मदद को अवश्य ही दौड़ जाती।

इसके सिवाय एक अन्य बात से भी मैं यह कह सकता हूँ।

तू, भूले भटके भी मैना के बालक को खिलाने के लिये गोदी मे नही लेती है। सम्भव है, इच्छा होने पर भी तू उसे नही ले सकती होगी। इस प्रवृति के जड़ मूल मे क्या बात है। इसके पीछे कौनसा दंश है, कहे तो बताऊ ?

एक पुरुष के साथ एक स्त्री के सुखद समागम की यह फल श्रुति....!

तेरी अपनी कल्पित कल्पना से एकदम विपरीत, ऐसा यह एक अजीब आश्चर्य, जिसको तू स्वयम् स्वीकार नहीं करती, कोई स्वीकार करे, ऐसा भी तू नही चाहती। अपने जीवन मे तुझे स्वयम् को प्राप्त निराशा के कारण तू दूसरो के जीवन की आशा और उल्लास को सहन करने मे सर्वथा अयोग्य है। तू दूसरो के जीवन की आशा एवम् उल्लास को सहन नही कर सकती है।

यह सब एक तटस्थ निरीक्षण है, तथा मुझे इसके लिये कठोर परिश्रम करना पड़ा है। लिजा के सम्बन्ध मे सारी बात बतलाने को मैंने ही मैना से कहा था। मैं यह देखने का इच्छुक था कि तेरा प्रतिशोध किस ओर रुख लेता है।

लिजा और मेरे सम्बन्धो की तू गलत कल्पना कर रही थी, उष्मा ! उस समय तक तू कैसी सुखी थी। किन्तु लिजा मेरी प्रेयसी न होकर अपितु पुत्री तुल्य है, यह जानकर तुझे कितना आश्चर्य हुआ था।

लिजा मेरे हाथ मे एक नन्ही-सी कली के रूप मे आई थी तथा मेरी हथेली मे खिलकर वह एक फूल बन गई। मैंने यदि सोचा होता तो लिजा को अपना खिलौना बना लिया होता। उसकी खिलती जवानी का नाजायज फायदा उठाकर—और कुछ भी नही तो पुरुष वर्ग के सम्बन्ध मे तेरी कल्पना को पुष्ट तो कर ही सकता था।

इसी कारण कुछ समय के लिये मैंने लिजा के विषय मे तुझे भ्रम मे ही रखने की चेष्टा की थी। उसके हाथो मे हाथ डालकर मैं उसके साथ केपटाऊन के बन्दरगाह पर घूमने भी गया था.... ।

इसके कुछ ही दिनो पश्चात मैना ने तेरे सामने सारा भेद खोल दिया ! सम्भवतया उस समय मेरी स्थिति ठीक वैसी ही थी जैसा कि तू ने मुझे चूहो के साथ प्रयोग करते हुए देखा था.... ।

परन्तु लिजा कोई गुड़िया नहीं है। वह मेरी बच्ची है और उष्मा, मैं तुझे भी यही विश्वास दिलाता हूँ। जिस निःस्वार्थ भाव से प्रेरित होकर मैंने लिजा का जीवन सुधारा है, उसी भावना से मैंने तेरे जीवन मे प्रवेश किया है।

उष्मा ! मेरा तुमसे कोई स्वार्थ नही है, फिर भी यदि कभी मेरे किसी भी कार्य मे स्वार्थ तुझे दिखाई दे तो तू मेरे मुह पर थूक देना।

मैं आन्तरिक हृदय से चाहता हूँ कि तू जल्दी से जल्दी स्वस्थ हो जा। क्योकि तेरा उपचार करने के लिये मेरे पास केवल इतने ही दिन शेष रहे हैं, कि जितने दिनो मे यह जहाज बम्बई पहुँच सकता है।

मैं इस वास्तविकता से परिचित हू कि आघात-प्रत्याघात की मेरी परम्परा से तुझे बहुत कष्ट हुआ है। किन्तु यह सब कुछ रोग को पूर्ण रूपेण निदान करने के अतिरिक्त कोई अन्य प्रक्रिया की योजना नही थी। केप्टन मुझे शराब पीने के लिये कई बार आग्रह करते हैं। पर मैं शायद ही कभी उसके आग्रह को मान सका हूँ। इस पर भी यदि इस प्रकार शराब 'पी' भी लिया जाय तो भी मैं इतना मूर्ख नही कि शराबी की दशा मे ही तेरे सन्मुख आ जाऊ… ! मात्र तेरे प्रत्याघात को जानने के लिये ही मैं शराब पीकर तेरे सामने आया था…। रोग के निदान के लिये मैंने अति महत्व की इस कडी को पिरो दिया।

इसके बाद के ऐसे अनेक प्रसगो से तू स्वयम् भली प्रकार परिचित है। शराब के प्रति तेरी घृणा मात्र, इसीलिये है कि तेरे पति ने शराबी की दशा मे ही तेरे पर अत्याचार किया था।

लाईसर्जिक के प्रभाव के कारण मैंने अचेतन मन के गूढ रहस्यो का भेद तो खोला ही, किन्तु इसके साथ–साथ मैंने तेरे पतिदेव के मानस को भली प्रकार जान लिया और यह रहस्य अपने आप ही खुल गया।

मेरा यह दृढ विश्वास है कि क्लब मे मित्रो ने आग्रह करके शराब पिला दी, एकदम झूठ और व बुनियाद बात है।

शराबी पति भी सुहागरात को शराब पीकर नवोढा के समक्ष जाना पसद नही करता है। वस्तुस्थिति यह है कि तेरे पति अपनी कोई कमजोरी छिपाने के लिये अपने आप की रक्षा करने के लिये उस दिन शराब पीकर आये थे।

स्पष्ट बात तो यह है कि बिना शराब पिये, वे तेरे सामने सामान्य हालत मे आने की हिम्मत नही कर रहे थे।

किस कारण हिम्मत नही थी, ऐसा यदि तू पूछती है तो स्वयम् जानती है कि सुहागरात के बाद इस प्रकार के अनुभवों से वंचित रही है।

मैं दृढता पूर्वक यह कहने की हिम्मत कर सकता हूँ कि अनग किसी प्रकार की यौन सम्बन्धी विकृति का शिकार है। विकृति के कई रूप और कई कारण हो सकते हैं। यह विषय उष्मा, इतना अधिक लम्बा एवम् अटपटा है कि मैं इस समय इसका विस्तार से वर्णन नही कर सकता। और ने यह

सम्भव ही है। तदुपरान्त यदि मैं अनग के विषय मे कहूँ तो मुझ ऐसा लगता है कि बिना किसी प्रकार के नशे के वह स्त्री के पास मे उत्तेजना का अनुभव नही कर सकता हो। यह भी सम्भव है कि अनग की उत्तेजना पर-पीडन वृत्ति के साथ सम्बन्धित हो।

यह पर-पीडन वृत्ति क्या है ? मैं यह कुछ सक्षेप मे बता देता हू।

इस प्रकार के व्यक्तियो मे कामोत्तेजना उसी समय सम्भव होती है, जबकि ये व्यक्ति सामने वालेपर अत्याचार करें। मैंने अपने जीवन मे एक प्रसिद्ध फिल्म सगीतकार का केस देखा था। इस सगीतकार का यह हाल था कि जब तक वह अपनी दोनो बाहो म दो लडकियो को लेकर उनको काट, काट, कर नाखून गडा-गडा कर लहूलुहान नही कर देता और उनकी हृदय विदारक चीत्कारें नही सुन लेता तब तक उसमे वासना की चिनगारी प्रदीप्त नहीं होती थी।

एक महाराजा को ठीक इसकी उल्टी आदत थी। ये महाराजा जब तक रूप सुन्दरियो के हाथो से मार नही खा लेते तब तक इनकी काम शक्ति जागृत ही नही होती थी।

केवल पुरुष वर्ग ही नही अपितु स्त्रिया भी इस प्रकार की यौन विकृतियो से ग्रसित होती हैं। बचपन के कुसस्कारो के कारण या फिर वश परम्परा या किसी अन्य शारीरिक कमी के कारण इस प्रकार की विकृतियाँ सम्भव हो सकती हैं। अतएव एक पुरुष की अमानवीय विकृति से डर का समग्र पुरुष वर्ग को उस भयभीत दृष्टि से देखना कहाँ तक न्यायोचित है ?

किन्तु तेरा उर्मितत्र अतीव कोमल है। बल्कि कुछ एर्लजिक भी। इसी कारण जिस समय अनग ने तेरे साथ बलात्कार किया, उस समय की गू ज उठी, मिल की व्हिसिल की आवाज तेरे मानसिक आघात के साथ मिलकर एक रूप हो गई। किन्तु उष्मा, तनिक तू स्वयम् ही विचार करके देख कि जबसे मैंने साइकर्जिक का प्रयोग करके तेरे दृढ मन के गूढ रहस्यो को वाणी द्वारा कहलवा लिया है। क्या उसके बाद तेरे पर स्टीमर की व्हिसिल का कोई असर होता है ?

मेरी तुझ साग्रह सलाह है कि निराशा के विनाशक पन्जे मे अपने आप को ग्रस्त नही होने देना चाहिए। जिस प्रकार तेरे हिस्टीरिया का उपचार सम्भव है ठीक उसी प्रकार तेरे पति की विकृति का भी उपचार किया जा सकता है।

तथा तू यह याद रख कि बिना किसी डाक्टर की मदद के ही तू स्वय उसकी डाक्टर बन सकती है।

यदि अतीत के किसी मानसिक आघात के कारण यौन विकृति का रोग

हुआ है तो सबसे पहले उस आघात को भुलाने का प्रयास करना चाहिये। बुरी संगत के कारण या शारीरिक खराबी के कारण यदि रोग है तब पहले उसका विश्वास प्राप्त करना होगा। इसके बाद मार्दव स्नेह द्वारा उसे प्रोत्साहन देकर उसमें आत्मविश्वास जाग्रत करना होगा। जब उसे यह विश्वास हो जायेगा कि नशे के बिना ही वह स्त्री के समक्ष अपना पुरुषत्व दिखा सकता है, तो उसके मन की हीन भावना स्वयम् ही दूर हो जायेगी। परन्तु उसे उत्तेजित करके स्वस्थ पुरुष बनाना केवल तेरे ही हाथ में है, तथा यहां पर मैं यह भी स्पष्ट कर दूं कि तेरे हिस्टीरिया के रोग का उपचार भी तेरे पति के स्वास्थता में छिपा है। तेरे हिस्टीरिया की मूल जड़ में तेरे पति द्वारा किये अत्याचारों का कारण नहीं अपितु इन अत्याचारों के पश्चात तेरी अतृप्त रही वासना के साथ जुड़ा हुआ है। एक भयानक भय सुहागरात के पहले ही क्षण में तेरे कोमल अबोध मन को ग्रस्त कर चुका है। परितृप्ति का जो परम आनंद प्राप्त करने की तेरा स्वभाविक उत्कंठा थी वह मन चाहे ही इस वज्रपात से छिन्न-भिन्न हो गई तथा तेरे अतृप्त मन के सम्मुख यही प्रश्न सदा खड़ा रहा कि वर्षों से दिल में सजोये हुये सांसारिक सुख-भोग का स्वप्न क्या इसी प्रकार साकार करना होगा। परमात्मा का साक्षात्कार करवाने वाले दिव्य परितृप्ति के परम क्षण का निरतिशय रोम हर्ष क्या इस प्रकार लूट सकना सम्भव हो सकेगा?

उस अत्याचार को सहन करने की तुझ में हिम्मत नहीं थी। किसी भी स्त्री में ऐसी हिम्मत होना सम्भव भी नहीं। अतएव इससे बचने का केवल एक ही उपाय तेरे हाथ में रहा है कि पति से अलग रहा जाय।

इतना सब कुछ हो जाने पर भी तेरे उदात्त एवम् कुलीन संस्कारों के कारण तू इन सब रहस्यों को प्रगट नहीं करना चाहती थी। तू इन सब को इसलिये प्रगट नहीं करना चाहती थी कि पुत्री के भाग्य में आ पड़ी इस करुण विपदा का पिता को भान होने पर इस वृद्धावस्था में उन पर न जाने क्या असर पड़ेगा? उनकी दशा न जाने कैसी हो जायगी? अतएव तू यह चाहने लगी कि पिता के सिर पर चिन्ता का तनिक भी बोझ न पड़े तो श्रेष्ठ रहेगा और इसीलिये तूने इस बात को छिपाने का भरसक प्रयत्न किया।

किन्तु एक दुष्ट डाक्टर ने तेरे मन की सारी लज्जा आज लूट ली। अचेतन मन का पर्दाफाश करके उसकी नग्न तस्वीर आज तेरे सामने रख ही दी।

अब तेरे पास ऐसा कोई वस्त्र नहीं रह गया था कि जिससे तू इसको ढक सके।

पर लज्जित तुझे नहीं होना चाहिये।

डाक्टर और वैश्या के सामने पर्दा नहीं रक्खा जा सकता है। इस कहावत

का तू रहस्य समझ ले। तूने अपनी इच्छा से जब पर्दा नही हटाया तो डाक्टर को मजबूर होकर यह पर्दा हटाना पडा। कारण स्पष्ट है कि एक डाक्टर की अपेक्षा वह एक शुभ चिन्तक के रूप मे तेरे सन्मुख आया था और हित चिन्तक द्वारा पाराजित होने पर पराजित सुख की अनुभूति करता है।

जो कुछ भी हुआ इससे तेरे भावी सुख का मार्ग खुल गया है। यदि अब भी तू मेरी सलाह मान लेती है तो उष्मा, विश्वास रख कि लुटा हुआ सुख-सतोष और आनन्द को पुनर्जीवित होने हुये कोई समय नही लगेगा" और साथ ही साथ तेरे पिता को भी····मैं समझता हूँ कि तू यह भली प्रकार जानती है कि इस ढलती उम्र मे तेरे पिता की सुख-शाति केवल तेरी सुख शाति पर ही निर्भर है····।

उष्मा! विश्वास है कि जिस पिता ने अपनी पुत्री के लिये इतना बलिदान किया है, उस पिता के लिये तेरी-सी पुत्री भी किसी प्रकार का बलिदान देने मे हिचकिचाहट नही करेगी। तेरे सदृश्य पितृवत्सल कुलीन पुत्री से इतनी आशा तो अवश्य की जा सकती है!

अपने पिता के लिए तुझे कोई विशेष कार्य करने की जरूरत नही है। जरूरत है तो केवल इतनी ही कि तू किसी भी तरह से हिस्टीरिया के चिकने रोग से मुक्ति पा जा।

यदि तू चाहे तो यह काम कुछ ही दिनो में सम्भव हो सकता है। तू बहुत जल्दी ही इस रोग से मुक्त हो सकती है। यह बाजी अब तेरे हाथ मे होने के उपरान्त भी तू इस ओर प्रयत्न नही करती है तो यह दुर्भाग्य की ही बात होगी।

उष्मा! मुझे इस बात का अफसोस है कि एक डाक्टर के रूप मे मुझे इसलिये भी अफसोस है कि मेरे सब प्रयत्नो को तूने अकारण ही व्यर्थ बना दिया है। एक सहृदय मित्र के रूप मे इस कारण अफसोस है कि प्रकृति प्रदत्त एक ऐसा फूल जिसकी सुगध से ससार महक उठता है, वही फूल अपने द्वारा बनाई कुंठा के कारण अपने आप ही मुर्झा रहा है····।

इस सुन्दर फूल को अकारण ही मुर्झा न देने के लिए जो प्रेमी हाथ से इसे जलसिंचन को उद्यत हुए हैं तो उनके सामने तूने काटे रख दिये हैं।

किन्तु गुलाब मे पानी देने वाले माली को काटो का ध्यान पहले ही रहता है। तेरा विष निकाल लेने की बात जो मैंने ऊपर लिखी है, वह इन्हीं काटो को लक्ष्य करके लिखी है····तेरे मन की कुंठा पैदा करने वाले विकृत भावनाओं के काटे····।

मैं इन काटो को दूर करके तेरे अन्दर के खिल रहे गुलाब को पूर्ण रूप मे विकसित करने की इच्छा रखता हूँ। मैंने अपने प्रथम दर्शन मे ही इस टकी.

हुई सुगध को परख लिया था ।

इस पर भी यदि तू अपने अतर-बाह्य को सिकोड़कर इस सुगध के प्रवाह को रोकती है तो इसका अर्थ यह होगा कि तू जान बूझकर स्वयम् ही अपनी हत्या कर रही है । मुझे आशा है कि आत्म हत्या के इस पाप से तू अवश्य बचने का प्रयास करेगी । उष्मा यह मत भूल कि फूल की सुगध पर फूल का ही नही अपितु ससार का भी अधिकार होता है । अपनी जिन्दगी के नाजुक फूल के पौध से तू सारे ससार को महकता बना दे, उष्मा अपने अस्तित्व को समझकर ही उसे सार्थक कर दे""बस इतना ही ।

तेरा हितैषी

डाक्टर हिमाशु

००

बिस्तर मे सोते ही हिमाशु ने यह अनुभव किया कि आज उसका मन पिछले कई दिनो की अपेक्षा बहुत हल्का है ।

अपना कर्त्तव्य पूरा करने के पश्चात अतर के किसी अज्ञात कोने से एक गूढ सतोष की मधुर मुस्कान की आवाज सुनाई दे रही थी ।

आज विचार सागर मे डूबने को मन नही चाहता है । न जाने कब निद्रा देवी ने आखो की पलको को बन्द कर दिया ।

इस पूरी यात्रा के बीच मे आज यह पहला अवसर था, जबकि बहुत ही मीठी और गहरी नींद डाक्टर हिमाशु को आई ।

प्रात काल की व्हिसिल बजते ही उसकी आख खुल गई ।

कुछ देर करवटें बदलता रहा, परन्तु ऐसा अनुभव हुआ कि अब उसे नीद नही आयेगी ।

आज मन कितना हल्का हो गया था ।

आलस मरोड़ते हुए वह बैठा हुआ ।

रेडियो पर प्रभात सभा प्रारम्भ होने के पहले की घरघराहट सुनाई पड रही थी । उसने रेडियो का स्विच ऑफ किया और बाथरूम मे चला गया । नहा-धोकर बाहर आया तो उसने देखा कि छ बजने को हैं ।

इतनी जल्दी किस काम मे लगा जाये ?

जब कुछ भी समझ मे नही आया तो डेक पर जाकर हवा खाने की सबसे

सीधी राह उसने पकडी।

हिमांशु ने मन ही मन सोचा डेक पर इस समय कोई नही होगा। वह आराम कुर्सी पर बैठकर प्रभात की निसर्ग उष्मा को देख सकेगा।

एक हल्के उल्लास से हिमाशु का हृदय खिल उठा।

पर डेक पर आकर देखता है तो·····।

आखो पर विश्वास नहीं हो रहा था!

रेलिंग पकडकर—इस ओर पीठ करके खडी एक तरुणी....! दुग्ध-सी श्वेत साडी समीर तरगो पर चढ करके बडी तेजी से उड रही थी! आधी खुली हुई पीठ··· और ढीला जूडा··· और लावण्यमय ललित कटि का झुकाव पहली नजर मे ही पूर्ण परिचय दे चुका था।

'उष्मा·····!'

पावों की आवाज सुनकर चौंकी उष्मा, ने इस ओर मुंह फेरा। हिमाशु को देखते ही उष्मा की आखो मे एक ऐसी चमक आगई मानो उसने हिमाशु को न देखकर स्टीमर की ओर तेजी से बहकर आ रहे किसी हिम-शिला को देख लिया हो।

दूसरे ही क्षण उसने सीढियो की तरफ कदम बढाये।

गम्भीर स्वर मे हिमाशु ने कहा : 'प्रात समीर के रस भोगते हुए हृदय को तृषित रखकर किस कारण से भाग रही हो, उष्मा!'

'उष्मा ने तनकर गर्दन घुमाई और बोली क्या ?'

'क्या तुम नही समझीं ? आज का प्रभात कितना भाग्यशाली है। इसके शीत सौन्दर्य ने आज प्रथमबार ही उष्मा का स्पर्श किया है! अब इसके सौभाग्य का मर्दन करके तुम मत जाना। यदि मेरे आने से तुम्हारे आनन्द मे विघ्न पडा हो तो ठहरो! मैं चला जाता हूं।'

उष्मा कुछ बोले कि इससे पहले ही हिमांशु ने सीढ़ियो की ओर कदम बढाये।

'आप क्यो जा रहे हैं ?'

'फिर तुम क्यो जा रही हो ?'

उष्मा कोई उत्तर नहीं दे सकी। उसके समझ में नहीं आया कि कदम वह आगे बढ़ाये या पीछे।

परन्तु हिमांशु तो इससे पहले ही एक सीढ़ी पार कर चुका था।

रेलिंग की ओर सरकते हुए उष्मा ने बडी लापरवाही से कहा . 'यदि आपको बैठना हो तो आप बैठ सकते हैं।'

एक मद मुस्कान बिखेरते हुए हिमांशु पुन ऊपर आये 'उष्मा! तुम सच मानना कि मुझे ख्याल नही था कि तुम यहाँ होगी। यदि मैं यह जानता'

होता तो यहाँ हर्गिज नही आता। मैं ऐसी धृष्टता हर्गिज नही करता।'

'धृष्टता ? डेक पर आपको आने का अधिकार मुझसे प्राप्त नही करना था।

जिस उपलक्ष मे उष्मा ने यह कटाक्ष किया था, हिमाशु से छिपा नही था। किन्तु बिना हँसे वह उसी गम्भीरता से कहने लगा ' 'उष्मा, तुम्हारे दिये और बिना दिये सभी अधिकारो को मैं तुम्हारे चरणो मे अर्पित कर देता हू। अब तुम्हे कभी इस विषय मे मेरे से सघर्ष करने की आवश्यकता नही होगी, यदि इतना विश्वास हो। यदि, कहकर वह कुर्सी पर बैठ गया।

सामने ही दूसरी कुर्सी अपने साथ न्याय पाने की इच्छा मे उत्कठित हो रही थी, फिर भी उष्मा रेलिंग को ही धन्य करती रही।

आज समुद्र इतना शान्त था कि मानो वह दोनो की बातें सुनने को कान खोले प्रतीक्षा कर रहा हो।

दूर बहुत दूर दो छोटे-छोटे लालध्वज दो लाल पखी की फड़फडाती आखो के समान स्पष्ट-अस्पष्ट फहफडाते दिखाई दे रहे थे।

सहज मे आतुर हुई उष्मा की दृष्टि एकदम तीव्र हो जाती है।

कुछ देर मे पवन रूपी पखो पर सवार होकर एक तीखी-हवा की व्हिसिल-की ध्वनि, मदगति से हवा में गू जने लगी।

आखो की ही तरह उष्मा के कान खडे होने लगे।

हिमाशु को हँसी आ गई, वह बोला 'क्या इतनी दूर से आ रही व्हिसिल की ध्वनि भी प्रभाव डाल सकती है ?'

चौंकी हुई उष्मा ने प्रत्युत्तर देने की अपेक्षा प्रश्न किया 'क्या यह भी व्हिसिल की आवाज है ?'

हाँ देखो, वे दो जहाज जा रहे हैं, वे ही व्हिसिल बजा रहे हैं।

कुछ रुककर उसने कहा 'कदाचित तुम्हे देखकर ही तो इनका मन कहीं व्हिसिल बजाने को नही हो गया है।'

उष्मा का चेहरा तमतमा उठा। 'व्हिसिल मे किसी को दु खी करके अपने प्रयोग का शौक पूरा यदि होता हो तो व्हिसिल बडे मजे से बजाकर वह अपना शौक पूरा कर ले।'

किन्तु इन जहाजो मे डाक्टरो की कोई आवश्यकता नही नही होती है। ये जहाज मानव के लिये न होकर मछलियो के लिये हैं।

'ऐसा, किस तरह ?'

'ऐसा, इस तरह की इस प्रकार के जहाजो मे डाक्टर के स्थान पर शिकारियो को रखवा जाता है, ये रूस के जहाज हैं, जो दक्षिणी ध्रुव म व्हेल मछली के शिकार के लिये जा रहे हैं।'

'ये रूस के जहाज हैं, आप को कैसे पता लगा ?'

'यदि गौर से देखो तो तुमको भी इसका राज मालुम हो जायेगा। इसके लाल झण्डो को तनिक देखो, इन झण्डो पर हँसिया और हथौडे के निशान दिखाई पडेंगे।'

'मुझे तो नही दिखाई देते हैं।'

'तुम्हें देखना है ? तनिक ठहरो दूरबीन ले आता हूँ।'

हिमाशु तुरन्त उठकर नीचे चला गया। उष्मा को न तो हाँ करने का समय मिला और न ना ही करने का। जब दूरबीन आ गई तो""वह अनादर भी नहीं कर सकी।

उष्मा ने जीवन में पहली बार दूरबीन से सागर के दृश्यो का निरीक्षण किया। इन जहाजो पर रूसी झण्डे स्पष्ट दिखाई दे रहे थे। कितने अजीब, एक-दम विचित्र प्रकार के ये जहाज थे।

इनके प्रोपलर तेजी से घूम रहे थे। वैसे जहाजो के प्रोपलर सामान्य रूप से नही दिखाई देते हैं, किन्तु इन जहाजो की तो बनावट ही बडी विचित्र थी।

सूर्योदय से पहले स्वच्छ मद प्रकाश मे दूर-दूर के दृश्यो को देखने मे उष्मा को बडा आनद आने लगा। निशा-उषा के इस शांत सधिकाल के स्निग्ध उजाले मे एक भिन्न सृष्टि सामने दिखाई पड रही थी।

क्षितिज के छोर से रक्तवर्णिम चूनडी पहिनकर सूर्यागना की अरुणिमा हँसती मचलती ऐसी लचकती आ रही थी, मानो कोई लाडली पहली बार अपने ससुराल से मायके आ रही हो!

रग के फव्वारे छोडती गुलाबी बाहें नीले जल की लहरो के साथ इस प्रकार गले मे बाँहे डालकर ही मानो एक लम्बे समय के बाद दो सुकुमार सहेलियाँ मस्त होकर एक दूसरे से मिल रही हो।

अति सुलभ इस अनुपम दृश्य का इतने दिनो मे आनन्द प्राप्त करने का ज्ञान उष्मा को अब तक न जाने क्यो नही हुआ।

आज पहली ही बार""।

उष्मा की मनोस्थिति को भली प्रकार से जान चुकने के बाद हिमाशु ने एक हल्की आतुरता से कहा : 'इस टेलिस्कोप से सौ गुना पावरफुल मेग्निफायर कैप्टिन की केबिन मे है। इस मेग्निफायर से देखने पर इन्हीं दृश्यो को देखने मे बहुत अधिक आनन्द आयेगा। चलो, मैं तुमको वह भी दिखला दूँ।

उष्मा ने कधे मटकाकर कहा : 'मेरे लिये तो यही ठीक है।'

रूसियन जहाज अब नगी आंखो से नहीं दिखाई दे रहे थे। हिमांशु ने पूछा - 'टेलिस्कोप मे क्या ये जहाज दिखाई दे रहे हैं।'

'बहुत साफ दिखाई दे रहे हैं।' कौतुक पक्षी की सदैव ही चढ़ी हुई त्यौरी वाली उष्मा के स्वर में आज पहली बार मुक्तभाव से निकला - 'जहाज""

जहाज ही नही इसके अन्दर बैठे आदमी भी" ।

आदमी भी···· ?

रेलिंग पर कुछ विचित्र प्रकार के बैठे पक्षी भी स्पष्ट दिखाई दे रहे हैं।

'ओह····!' हिमाशु सरल भाव से हँसने लगा . अरे वह तो पेंग्विन पक्षी है····पेंग्विन···· !

'पेंग्विन ! क्या आप देख सकते है ?

'मुझे तो जहाज ही नही दिखाई दे रहा है।'

'—तब बिना देखे आपको कैसे पता चल गया ?'

कारण कि दुनिया के हर प्रदेश की मैं यात्रा कर चुका हू। मैं हर प्रदेश के सजीव व निर्जीव पदार्थों मे परिचित हू।

'ओह····! इसका मतलब यह हुआ कि आप मात्र एक डाक्टर ही नही, अपितु सर्वसंग्रह का एक ज्ञान कोष हैं—एनसाइक्लोपीडिया यूनिवर्सल"' । पर इतना इठलाना ठीक नहीं डाक्टर साहब ! सम्भव है, आखरी समय पर धोखा हो जाए !

'इस प्रकार का धोखा तुम्हारी ओर से किया जाये तो उष्मा, मैं बिल्कुल दु खी न होकर खुश होऊँगा।'

'परन्तु मैं ज्ञानी होने का दावा नहीं करती हू।'

'क्यों इतनी विरक्त होती हो ? कौतूहल वृत्ति को तुम सदैव तेज रक्खो, उष्मा ! इससे स्वत ही ज्ञान बढता जायेगा।'

सहसा उष्मा ने अब टेलिस्कोप से मु ह इस तरफ उठाया, आपने मुझे फिर बहुवचन से क्यो सम्बोधित करना शुरू किया ?'

उष्मा के नेत्रो मे असहज चमक देखकर हिमाशु बहुत प्रसन्न हुआ। अपनी प्रसन्नता को छिपाते हुए कृत्रिम निर्लेपता से उसने कहा 'मैंने कहा था कि बरबस ही एकत्रित किये सब अधिकार तुम्हारे चरणो मे समर्पित कर देता हू····चार दिनो का हमारा यह हमसफर पूरा हो जाने के बाद, मैं नही चाहता कि तुम उन अनइच्छित स्मृतियों मे घुटती रहो।'

'तुम जितने परमार्थी हो उतने ही उदार भी हो। किन्तु इतनी उदारता अच्छी नही है, डाक्टर ! उदारता की सीमा लाघ जाने वाला व्यक्ति फिर अनुदार हो जाता है।'

हिमाशु के लिये इस कटाक्ष को समझ लेना सरल नही था। उष्मा क्या कह रही है, यह जानने के लिये उसने उसकी आखो पर टकटकी लगाये देखना शुरू किया।

किन्तु उष्मा ने इतनी देर मे अपनी आखें पुन टेलिस्कोप पर लगादी। रुसी जहाजो को कृतार्थ करके पेंग्विन पक्षियो का झुण्ड अब इसकी ओर

आ रहा था। टेलिस्कोप मे से इनको देखती हुई उष्मा अतीव आनन्द से कहने लगी 'देखो! देखो! ये पेंग्विन पक्षी, साम्यवाद का सदेश लेकर इधर आ रहे प्रतीत हो रहे हैं।'

हिमाशु मुक्त भाव से एकदम हँस पडा 'इतनी अच्छी मनोरजन प्रवृत्ति अब तक कहाँ छिपाकर रखली थी, उष्मा!'

मैंने अपनी मनोरजन वृत्ति डाक्टर साहब ठीक उसी स्थान पर छिपादी थी। जहाँ पर किसी की नाजुक भावनाओं के आघात-प्रत्याघात की परम्परा मे फूट पडती निर्दय आनन्दवृत्ति को तुम दबाये बैठे थे। ठीक उसी जगह और दूसरे स्थान पर कहाँ?

इस तीखे कटाक्ष के बाद इसका परिणाम देखने को उष्मा ने उसकी ओर मुह नही फेरा।

दूसरी ओर उष्मा के मुह की ओर देखने के बदले हिमाशु की दृष्टि पेंग्विन के उड्डयन मे ठहर गई।

लचक-मचक से सभी पक्षी रेलिंग पर कतार बाधकर ऐसे बैठ गये थे, मानो सेना के सिपाही एक पक्ति मे सिलसिले से बैठे हो।

दूरबीन से आख हटाकर, उष्मा मुग्ध कौतूहल से बोली 'कितने अद्‌भुत पक्षी हैं, नही! मानो लिलिपुट के बौने छोटे मानव, लम्बा ओवरकोट पहिनकर बैठे हो।'

'बौने मानव?'

'नही तो? दोनो मे केवल इतना ही अन्तर है कि पहले के मुह होता है और पेंग्विन के चोच।'

'क्या तुमने लिलिपुट के बौने देखे हैं?'

मैंने तो मात्र कहानी पढी है। वास्तव मे दुनियाँ के हर प्रदेश के विभिन्न प्राणियों को देखने का सौभाग्य तो आप जैसे किसी विरले ही आदमी को प्राप्त हो सकता है।

हिमाशु कुछ कहना ही चाहता था कि इसी समय माईक पर प्रभात का गीत गूज उठा।

उष्मा का विस्मय एकदम सहस्त्र पखुडियो म खिल उठा अरे! 'यहाँ इस समय गुजराती गीत कैसे?'

यहाँ तो प्रतिदिन सुबह गुजराती गीत सुनाये जाते हैं। स्टीमर म कई यात्री गुजराती हैं। अतएव मैनेजमेन्ट गुजराती गीत बजाना ही पसन्द करता है।

उष्मा के कौतुक के छोर तथा हिमांशु के हास्य के छोर पर गीत की कड़ियाँ सुनाई देने लगी 'बुलबुल हजु का गाय दे प्रभात की आवी घड़ो।'

प्राची दिशा में रक्त शी आछी रही रेखा पड़ी।' (हे बुलबुल तू प्रभात की इस बेला मे अभी कहां गा रही है, तनिक देख प्राची दिशा मे रक्त-सी एक सुन्दर रेखा दृष्टिगत हो रही है !)

'ग्रोह ! *शायद सिगर ने पेग्विन को ही बुलबुल मान लिया प्रतीत* होता है।'

हिमाशु के विनोद को समझे बिना ही उप्मा ने पूछा : 'क्या ?'

'यहा कोई बुलबुल नही गा रही है ग्रौर पेंग्विन तो इच्छा होने पर भी बेचारा कैसे गा सकता है ?'

बडी ग्रद्भुत बात है। गाना तो दूर, यह तो कूक भी नही सकता है।

'हाँ''''*किन्तु ग्रब ध्यान ग्राया।*' फूटते हास्य को ग्रोठो मे दबा करके, नकली गभीरता से हिमाशु बोला 'सिगर ने किस बुलबुल की ग्रोर लक्ष्य करके गीत गाया, ग्रब मैं समझा सकता हूँ।'

'क्या ?'

'स्टीमर के एक बुलबुल ने ग्राज प्रथम बार डेक पर ग्राकर मन के भावो को गीत के साथ पिरो दिया है। मैं सोचता हूँ, सिगर ने सम्भवतया इसी *बुलबुल की ग्रोर लक्ष्य करके ग्रपना यह विस्मय प्रदर्शित किया है।*'

हिमाशु के शब्दो का मर्म समझते ही उप्मा का गौर मुखारवृन्द प्रात. कालीन सूर्य की रक्त बिम्ब-सा लाल हो गया।

किन्तु यह रग किसका है ? हिमाशु यह नहीं समझ सका कि इस रग मे लज्जा है, या गुस्सा है, या कोई ग्रन्य बात जानने की उत्सुकता।

फिर इस भाव को समझ लेने का विचार उसने छोड दिया ग्रौर बात को बढाते हुये बोला 'यदि वास्तव मे ऐसी ही बुलबुल को लक्ष्य करके रेडियो ने चुनौती दी हो तो यह कहना पडेगा कि रेडियो के पास प्रतिभाग्रो को परखने की कोई मशीन है। वस्तुत इस समय तो उसने ही चुनौती दी थी, बुलबुलो मत गा यहा। गीत सुनना है मना''''। (हे बुलबुल यहा गीत सुनना मना है। ग्रत तू गीत मत गा।)

टेलिस्कोप एकदम हिमाशु की गोद मे पटकते हुए रिक्त स्वर मे उप्मा बोली, 'ग्राप ग्रपनी इच्छानुसार भले ही बुलबुलो को ललकारते रहें'''। मैं तो जा रही हूँ।

'उप्मा।'

सीढी की पहली सीढी पार करती हुई उप्मा रुककर कहने लगी : इतनी चर्चा करके तुमको इस प्रकार बहकाने का मौका देकर मैंने भूल की। 'डाक्टर साहब ! पर क्या बताऊ मुझे इसका ध्यान बहुत देर बाद ग्राया।

डाक्टर कुछ कहे, इससे पहले ही उप्मा सीढी को कपाती हुई नीचे

उतर पडी।

हिमांशु अपने स्थान पर बहुत देर तक स्तब्ध—अवाक होकर बैठा रहा।

तत्पश्चात् बरबस हँसने का प्रयत्न करके आँखो पर टेलिस्कोप लगाकर सागर सृष्टि के अलौकिक प्रात दृश्यो का रसपान करने लगा।

कुछ देर बाद उसे ध्यान आया कि अब तक चाय तक भी नही पी है। चाय यही मगवा लेने का विचार करके, आर्डर देने को जैसे ही इधर-उधर नजर दौडाई तो उसी समय 'सीढी पर प्रभात म फीके चन्द्रमान के समान चन्द्र-मुख ने दर्शन दिया 'उष्मा !'

उष्मा की आँखो से आँसू निकल रहे थे ! 'देखिये भी' पिताजी अभी तक नही उठे हैं। मैंने कई बार उन्ह झकझोरा फिर भी कोई उत्तर नहीं दिया ! डाक्टर साहब जरा जल्दी चल जल्दी चलियेगा।'

खडे होने की अपेक्षा डाक्टर ने गम्भीरता से कहा 'पिताजी को मैंने एट्रोपिन माफिया का इन्जेक्शन दिया है । वे चौबीस घण्टे नशे मे पडे रहेंगे। घबराने की कोई जरूरत नही है !'

'चौबीस घटे नशे म ? ऐसा इन्जेक्शन देने की क्या आवश्यकता थी ?'

इस प्रकार के रोग म यह आवश्यक होता है। हार्ट को इस तरह से आराम मिल सकता है। जागृत अवस्था में शरीर के काम करने के कारण वाछित आराम नही मिल पाता है समझी ? अतएव अभी इस प्रकार के और इन्जेक्शन भी देने पडेंगें। बिना किसी प्रकार की चिन्ता किये तुम जाओ और पिताजी के पास बैठी रहो।

मैं अकेली नही बैठ सकती हू, तुम भी चलो' ' तुम्हे चलना ही होगा।'

इतना कहकर बहुत आवेग म उष्मा ने हिमांशु की बाह पकड ली और हिमांशु को जबरदस्ती खडा करके अपने साथ ले गई।

००

चार दिन बिना किसी विशेष घटना के व्यतीत हो गये।

जहाज अभी तक पोर्ट एलिजाबेथ पेहाम्स टाउन, विंग्स विलियम्स, ईस्ट लन्दन और पोर्ट शेपस्टोन पार करके डरबन के समीप पहुँच रहा था।

मधुसूदन अब पूरी तरह स्वस्थ दिखाई देते थे, किन्तु पाचवें दिन डाक्टर की डोर बेल सुबह ही अचानक उसी विकल ध्वनि में बज उठी।

आँखें मसलते हुये हिमांशु ने दरवाजा खोला तो सामने ही चार आँखें

किये अति व्याकुल भाव से घबराये हुये स्वर मे उष्मा कह रही थी . 'देखिये भी ! पिताजी को पुन, तेजी से घबराहट महसूस हो रही है"" !

निरीक्षण करने के तुरन्त बाद ही हिमाशु एकदम समझ गया कि यह हृदय रोग का दूसरा अटेक हुआ है ' ' ।

अब हिमाशु ने झूठे आश्वासन न देकर बात को स्पष्ट रूप से बताया । इन्हे हॉस्पिटल मे दाखिल कराना पडेगा । काफी समय तक उपचार करवाना होगा ।

उष्मा की छाती मे एकदम धक्का लगा । वह टूटे हुये स्वर मे बोली : 'तो "" तो क्या अब आपकी दवा कोई काम नही करेगी ?'

दवा तो काम करेगी किन्तु यहाँ पर पूरे साधन कैसे और कहाँ से मिल पायेंगे ? 'उष्मा, तुम हिम्मत मत हारो ! हॉस्पिटल मे एक दो महीने दवा लेने पर तुम्हारे पिताजी आलराइट हो जायेंगे ।

भीतर की असह्य उत्पन्न हुई अदम्य उत्तेजना मे आज पहली बार उष्मा ने हिमाशु के हाथ पकड लिये 'आप ही आलराईट कर दीजियेगा डाक्टर साहब ! पिताजी को स्वस्थ करने मे आप ही समर्थ हैं । आपके सिवाय आज तक इनको किसी भी डाक्टर पर इतनी श्रद्धा नही रही है ।'

'तुम व्यर्थं मे क्यो घबरा रही हो ? यदि आवश्यकता हुई तो मैं भी इनके पास रहूँगा ।'

'हाँ आपको अपनी नौकरी से छुट्टी लेकर भी हमारे साथ रहना पडेगा । मैं पिताजी को अब एक क्षण भी आपसे अलग नही रहने दूगी ।'

उष्मा की विवश भावनाओ ने उसे मर्यादा तोडने को बाध्य कर दिया था । सागर मे डूबता मानव जैसे तिनके को पकडने को छटपटाता है, वैसे ही डाक्टर के पजे को मुट्ठी मे दबाते हुए गिडगडाते हुए वह कहने लगी 'डाक्टर साहब जिस तरह भी हो सके मेरे पिताजी को ठीक करना ही पडेगा ! आप इन्हे अच्छी दवा देकर शीघ्र ठीक करें । इसके बाद जैसा भी आप कहेगे वैसे ही मैं अपने रोग की दवा भी आपसे अवश्य लूगी ।

एक क्षण के लिए हिमाशु चौक उठा । मुह पर दूसरे ही क्षण फीका हास्य लाते हुए वह बोला 'तुम्हारे लिये अब उपचार की आवश्यकता नहीं है, उष्मा ! अब तुम अपना उपचार स्वयम् ही कर सकने मे समर्थ हो ।'

मधुसूदन ने कहा—'बेटी तूने भली प्रकार से उपचार करवाया होता तो फिर मुझ यह रोग क्यो होता ! तेरी चिन्ता से ही मुझे एक जबरदस्त धक्का लगा है ।'

मधुसूदन की बुलन्द आवाज आज एकदम टूट-सी गई थी ।

बाप की गोदी मे मुह छिपाकर उष्मा बिलख-बिलख कर रोने लगी । हृदय के टूटते बन्धनों के सामने कोई उपचार सफल नही हो रहा था । अन्तर

के हाहाकार को अब आसुओ से बहा देने के अतिरिक्त कोई अन्य मार्ग नही था।

उष्मा का हृदय विदारक क्रदन स्टीमर की निकल रही भाप के साथ मिलकर सागरपट पर कुहरा जमाने लगा।

मधुसूदन की अपेक्षा उष्मा का बदन अब और अधिक शिथिल एवम् ठडा पड़ने लगा।

पुत्री की व्याकुल दशा से द्रवित होकर पिता की दु खान्त दृष्टि डाक्टर की ओर देखने लगी।

पास मे आकर डाक्टर ने उष्मा के कधे पकड़े। उसे उठाकर बैठा दिया, मार्दव भरी वाणी मे उसने कहा पिताजी को ठीक करने का उत्तरदायित्व मैं अपने सिर पर लेता हूँ, उष्मा! 'तुम कहती या नही कहती तो भी मैंने यह उत्तरदायित्व उठा लिया है। तदुपरान्त भी यदि तुम ही हिम्मत हार रही हो तो फिर मैं अकेला कर भी क्या सकता हूं। यह समय कोई रोने का नही है। हमे अपनी पूरी शक्ति से पिताजी की सेवा-टहल मे लग जाना चाहिए। तभी तुम्हारा हिस्टीरिया का रोग स्वत ही समाप्त हो जायेगा।'

मधुसूदन ने फिर आखें खोली। उष्मा का सिर शिथिल हाथो से सहलाते हुये स्नेह भरे स्वर म उन्होंने कहा 'मेरी सुश्रुषा मे लगी रहने से ही मेरी लाडली का रोग मिट सकता है तो मैं सदा के लिये बीमार ही रहना पसन्द करू गा।'

अन्तर के घोर विषाद को छिपाते हुये वे जोर से हँस पड़े।

किन्तु इस हास्य म हिमाशु ने साथ नही दिया।

हिमांशु दिनभर मधुसूदन की सुश्रुषा म लगा रहा। पूरे दिन वह उष्मा को धीरज बधाता रहा। उसने दोपहर व शाम का खाना भी नही खाया। उष्मा को भी खाना खाने की रुचि न होने पर भी बहुत आग्रह करके उसको भी कुछ खिलाया।

पैथेडीन के इन्जेक्शन के कारण एक बार फिर मधुसूदन गहरी नीद मे सो रहे थे। अभी सोये हुये थे और डाक्टर हिमाशु के कहे अनुसार अब वे पूरे बारह घण्टे तक सोते रहेंगे।

उष्मा भी उदास चितातुर आखें टकटकी लगाये यह सब देखती रही।

पिताजी इतनी तेजी से श्वास ले रहे थे. मानो अभी थोडी देर मे ही वह छाती फाड़कर निकल जायेगी।

क्या होगा पुत्री की चिन्ता मे सदैव ही व्याकुल रहता प्राण श्वास …?

पिता को चिन्ता मुक्त रखने के लिये तो उसने कमर कसकर सदैव अपना दुख शोक दबाये रखा। अपने अन्तर की सभी गुप्त मन्नाओ को

अपने होठो पर लाये बिना वह मन ही मन घुटती रही' 'तथा अपने गम को दबाने के प्रयत्नो ने ही पिता को रोगी बना दिया था।

डाक्टर तुम झूठ कह रहे हो, कारण दूसरा ही है। आज से दो दिन पहले ही पिताजी ने मुझ बताया था कि मेरे ही कारण उन्हे सदमा पहुचा है। और कोई अन्य कारण नहीं है।

ससुराल से पहली बार मायके आने पर पुत्री की तबियत खराब देखते ही मधुसूदन बहुत व्याकुल हो उठे थे। बम्बई का पानी स्वास्थ्यकारक नहीं था, इस बहाने ने उन्हें कुछ दिन चिन्ता मुक्त अवश्य रक्खा""।

किन्तु उसी समय"" मैं, हिस्टीरिया के रोग से पीडित हो गई थी। पिताजी को इस बात का भान हो गया।

पुत्री के लिए खोजा हुआ सुसराल उनकी मान्यतानुसार चाहे सोने की लका-सा रहा हो, किन्तु यह स्वर्ण लका मदोदरी के भाग्य-सी सौभाग्यशालि नही थी। वह सीता के लका निवास-सी थी। इस लका मे सब ओर स्वर्ण का ढेर होने पर भी ढेरो मे से एक कण भी उसके लिये उपयोगी नही था।

सर्व सम्पन्न सुसराल मे उष्मा की दशा सम्भवतया"।

किन्तु अपने अथक प्रयत्नो के उपरान्त भी मधुसूदन, उष्मा के दिल की बात नही जान सके।

आज अपनी रुग्णावस्था मे सिर को धुनते हुए उन्होने स्वीकार किया 'उष्मा उस दिन से ही जिसने मेरे विरुद्ध प्राणो पर सवारी कर ली है, ऐसी निराशा, चिता और दुःख के विविध बोझ के नीचे दबा हुआ मेरा हृदय इस बोझ को अब अधिक समय तक सहन करने मे समर्थ नही रहा""।'

कुछ रुककर वे उष्मा से पुन कहने लगे' 'तेरी उपस्थिति या अनुपस्थिति मे डाक्टर हिमाशु को तेरे उपचार के लिये, मैं सतत आग्रह जो कर रहा था, इसमे उष्मा केवल तेरे रोग का ही उपचार करने का इच्छुक नही था, अपितु इस आग्रह की पृष्ठ-भूमि मे मेरे स्वयम् के रोग की बरबस याद आ रही व्यथा के प्रत्याघात को भी सतोष देना था।

क्या वह इस प्रकार के किसी प्रत्याघात से स्वयम् ही अनजान थी? या फिर पिता की हृदय दुर्बलता से परिचित पुत्री भी इसी प्रकार के किसी प्रत्याघात के विचार से ही स्वयम् के रोग की आन्तरिक भयकरता के वास्तविक रूप से पिता को अनजान रखना चाहती थी?

उष्मा की यह आन्तरिक इच्छा थी कि उसके विषय की चिन्ता की कोई नन्ही-सी चिनगारी भी भूले भटके पिता को किसी प्रकार से न सुलगा सके।

उष्मा के सब प्रयत्न इस ओर लगे हुए थे, किन्तु उष्मा की आवश्यकता

से अधिक सजगता ने ही पिता को इस ओर सजग कर दिया।

लम्बी अवधि से चिंता और दुख का फलता-फूलता गोला अन्ततः हार्टअटेक के रूप मे प्रकट हो ही गया।

उष्मा ने पिता के मुंह से ही सब कुछ सुना है। पिता के रोग का कारण वह स्वयम् ही है। स्वयम् ने ही विचित्र और विपरीत व्यवहार से रोग को उभारने मे सहायता दी है।

गहरी निद्रा मे सोये पिता के दुखी और क्लात मुख को अपलक नेत्रो से देखकर उष्मा आत्म सवरण नही कर सकी। उमड़ती हिचकियो को रोकने के लिये उसने पालव मे अपना मुंह छिपा लिया। किन्तु पीडित छाती के बेखबर तूफान को वह रोकने मे असमर्थ थी। उस नीरव शांति मे निर्ध्वनित सिसकियाँ भरती हुई वह न जाने कब तक फूट-फूट कर रोती रही····इस समय····अब इस समय इनके सिवाय उसका कोई आधार और अवलबन नही रह गया था।

इस समय केवल एक ही ऐसा व्यक्ति था, जो उसे आश्वासन दे सकता था। वह भी मानो एक उपेक्षा की भेंट देकर उसके केबिन से चलता बना ····।

गत दिनो के सभी प्रसग एक-एक करके उसकी आखो के सामने छाया चित्र की तरह उभरने लगे।

डाक्टर की स्नेह पूर्ण सलाह मानकर, प्रथम दिन के परिचय से ही उसने उपचार लेना प्रारम्भ कर दिया होता तो ?

सम्भव है, इससे उसका रोग चाहे न गया होता, किन्तु कम से कम पिताजी को तो कोई चिंता नहीं रहती और वे व्यर्थ मे ही हार्टअटेक की परछाईं से तो दूर ही रहते।

यही नही आखिरकार उसे विवश होकर असहायता की अनिरुद्ध चीखो मे हिमाशु का भी हाथ पकडना ही पडा !

उष्मा, को इस बात का पूरी तरह भान था कि उसने हिमाशु का पजा अपने हाथ मे पकडा है····हिमाशु ने धीरे से उसके हाथो मे से अपने हाथ खीच लिये थे। प्रत्युत्तर मे उसने उष्मा की हथेलियो को सामने से पकड़ने की अपेक्षा केवल आश्वस्त रूप से उसकी पीठ थपथपा दी थी और वहाँ से चल दिया।

उष्मा जहाँ की तहाँ रह गई।

दूसरी ओर पास की केबिन मे प्रभात की ठंडी मस्त हवाओ के झोको मे हिमाशु मीठी नीद ले रहा था।

आज वास्तव मे वह गहरी नीद सो रहा था····?

या फिर डाक्टर की निद्रा को भी मधुर स्वप्न भंग कर रहे होगें····?

दूसरी बार के हार्टग्रटेक के हमले से मधुसूदन, हिमाशु की आशा के विपरीत बहुत जल्दी स्वस्थ हो गये थे।

हिमाशु जैसे विवेकी डाक्टर के उपचार से मधुसूदन इस बार केवल चार दिन मे ही ठीक हो गये। चार दिन मे ही वे इधर-उधर घूमने लगे।

किन्तु इन चार दिनो ने तो मानो सारा नक्शा ही बदल दिया हो। जो दुर्भेद अन्तर पट के पीछे अदृष्ट रहकर सबकी तरग लीला का परस्पर परिहास करता रहा था, वही दुर्भेद आज स्वत ही बाहर आकर अपने अपरिचित मुक्त हास्य से सब को मुग्ध कर रहा था"।

दूसरे ही दिन हिमाशु की उपस्थिति मे मधुसूदन ने कह दिया 'डाक्टर ने तुझे जो पत्र लिखा था, वह मैंने पढ लिया है, बेटी! पुत्री को सम्बोधित किया हुआ पत्र पढना पिता के लिये चाहे, कितनी ही धृष्टता का काम क्यो न हो, तब भी मैं इस बात के लिये अपनी धृष्टता स्वीकार नही करूगा" ! क्योकि प्राणो को लेने वाली एक मजबूत रस्सी का फदा अब छूट गया है, तथा मुझे इस बात के लिये बहुत प्रसन्नता है।

उष्मा, पिताजी की बात सुनकर स्तब्ध रह गई।

हिमाशु भी अवाक"!

बहुत देर बाद हिमाशु के मु ह से निकला 'अकल ! मैं यह नही चाहता था कि पत्र आप तक पहुँचे। पत्र मे मैंने जो कुछ भी जिस प्रकार प्रस्तुत किया था, वह सब उष्मा को लक्ष्य करके उसके हित के लिये लिखा था। पत्र लिखने का कारण भी था और इसीलिये पत्र लिखा गया। सारा पत्र आपके पढ लेने से सम्भव है"।'

'सम्भव है कि डाक्टर ने भी अपनी मर्यादा का उल्लघन किया है। ऐसा ही मुझे उष्मा के समान प्रथम दृष्टि मे आभास हुआ था। मधुसूदन ने बीच मे ही बात काटते हुए कहा। पर परिस्थितियो के पूर्व आधार से जो व्यक्ति पूरी तरह परिचित हो वह डाक्टर की चेष्टाओ को एक दूसरे दृष्टिकोण से ही देखने का प्रयास करेगा।'

हिमाशु का ऊपर का सास कुछ नीचे आया और उसने कहा 'डाक्टर की इस अनाधिकृत चेष्टा को आपने किस दृष्टिकोण से देखा है अकल ?'

सब कुछ जान लेने और समझ लेने पर मैं तुम्हारी चेष्टाओ को अनाधिकृत चेष्टाए कहने की हिम्मत नही कर सकता हूं। परन्तु मेरा तुमसे एक निवेदन है कि यह तो ठीक है कि तुमने बहुत समय तक उष्मा को यह सब जानबूझकर नही बताया, किन्तु मुझे तो तुमने बिना किसी कारण के इस दुःख कथा से वचित ही रक्खा। यदि मुझे पहले से ही इस बात की जानकारी मिल गई होती तो अब तक इस व्यथा का समाधान हो चुका होता।

हिमांशु ने कनपटी पर अंगुली लगाकर कहा 'तनिक, अंकल आप ही बतायें कि उष्मा, की बिना रजावंदी के मैं आपके सामने यह सब कैसे बता सकता था ? मैं तो यह मानता हूँ कि उष्मा ने तो मुझे आज तक भी इस बात की अनुमति नहीं दी है।'

उष्मा चुपचाप सुनती रही।

यह भी सम्भव है कि आपको यदि पहले से ही इसकी जानकारी हो गई होती तो दिल को और भी जबरदस्त धक्का लगा होता।

'तो डाक्टर तुमने मधुसूदन को पहचानने मे, उसकी लड़की के समान ही धोखा खाया है ! ' मैं तुम्हारे प्रति कुछ और ही धारणा रखता था। तुम्हारी स्पष्टता, स्पष्ट व कर्तव्य और बात के कहने के ढंग के साहस से मैं प्रभावित होकर तुम्हारे स्वभाव मे अपने स्वभाव का प्रतिबिम्ब देखा करता था'''। सम्भव है ऊपर से मैं तुमको शांत-गम्भीर तथा भीरू लगता प्रतीत होऊ, किन्तु डाक्टर मैं भी एक बार किसी निर्णय पर पहुँचने के बाद उससे तनिक भी हटने वाला नहीं हूँ। डाक्टर, कम से कम तुम्हें इतना तो सोचना ही चाहिये था कि जो व्यक्ति अपने घर पर सुख शांति से रह रहा हो और उस सुख शांतिमय जीवन को एक ओर रखकर दूर परदेश मे निकलने का साहस कर सकता है, वह क्या केवल मिट्टी का ही पुतला मात्र होगा ! जाने या अनजाने म यदि एक बार कोई भूल हो भी जाय तो उसे दूर ही करने के लिये मैं अपने प्राणों की भी आहुति देने को तैयार हूँ डाक्टर, मैं सच कहता हूँ ! आज तक मैं सदैव ही भ्रम मे रहा था कि जीवन मे कभी अलग न होने के कारण ही पुत्री को अथाह दु ख हुआ होगा और इसी दु ख मे वह इस रोग से ग्रसित हुई होगी। मैं अन्तर के रहस्यों के विषय मे सदैव कई कल्पनाएँ किया करता था। मैं इन कल्पनाओं से व्यथित हो उठता था, किन्तु अपनी कल्पनाओं का कोई ठोस आधार न बना सकने के कारण, मेरा भय स्वत, ही व्यर्थ हो जाता था' किन्तु जो जानकारी अब इस विषय मे हुई है, इससे तो मैं एक निश्चित लक्ष्य तक पहुँच सका हूँ।

मधुसूदन के दृढ वाक्य तथा अटल स्थिरता ने केवल हिमांशु को ही नहीं अपितु उष्मा को भी चकित कर दिया। वे दोनों यह समझने मे असमर्थ थे कि आखिर मधुसूदन किस आधार पर यह सब कुछ कह रहे हैं।

हिमांशु कुछ कहना ही चाहता था कि इसी बीच उष्मा न सहसा ऊंचा मुंह करके यकायक अस्वभाविक अधैर्य से पूछा - 'क्यों डाक्टर ! हम अब बम्बई कितने दिनों मे पहुँच जायेंगे ?'

'ज्यादा से ज्यादा दस या बारह दिन....।'

दूर लटकते हुए फल को बीच मे बेध देने के तीरन्दाज के सनसनाते तीर

के समान उष्मा ने पुन 'दूसरा प्रश्न सीधा ही किया 'क्या डाक्टर तुम इतने निपुण हो कि मेरा हिस्टीरिया इतने दिनों मे जड़मूल से समाप्त कर सकते हो ? मैं तुम्हारी इच्छानुसार सब ट्रीटमेंट लेने को तैयार हूँ।'

उष्मा, तुम्हारा हिस्टीरिया का रोग तो कभी का ही समाप्त हो चुका। सम्भवतया तुम स्वयं यह नहीं जानती हो" "कारण स्पष्ट है कि अभी तक तो तुम्हे इस विषय मे सोचने तक का ही अवसर नहीं मिला। जरा बता लाइसर्जिक पिलाने के बाद तुम्हे कितनी बार दौरा पडा।

उष्मा के बजाय मधुसूदन ने ही उत्तर दिया 'केवल एक ही बार।'

यह एक ही बार इस कारण से कि उष्मा के मन मे सतत हिस्टीरिया का विचार आता रहता था। डाक्टर की ओर से धिक्कार पूर्ण वृत्ति के कारण उसका अन्तरमन हिस्टीरिया से मुक्त होने को इन्कार करता रहा। डाक्टर को मिलने वाले यश के सन्मुख यह प्रतिरोध उष्मा को छोड देना चाहिये था। किन्तु वह इस हस्तक्षेप को इसी कारण से सहन करने की इच्छुक नही थी, क्योकि यह हस्तक्षेप एक पुरुष की ओर था ' इसके सिवाय उष्मा, इस हस्तक्षेप को धृष्टता का हस्तक्षेप समझती थी न कि शालीनता का "।

होठो मे मुस्कान भरते हुए मधुसूदन कहने लगे 'तुम्हारी इस सारी मनोवैज्ञानिक चर्चा के रहस्यमय जाल मे हमे अपनी ओर से कोई नोक-झोक नही करनी चाहिये ! मैं तो इतना ही कह सकता हूं कि तुम्हारे तथा उष्मा के अदृश्य युद्ध के बीच मे एक ओर उष्मा अपने जी जान से टक्कर लेती रही तो दूसरी तरफ तुम शान्ति से उसके एक के बाद दूसरे हथियारो को बेकार करते गये। डाक्टर तुम चाहे कितने ही भ्रम मे क्यो नही रहो, किन्तु तुम इतना अवश्य समझ लो कि मेरी दृष्टि से कोई काम अदृश्य नही है।'

'आप से कुछ भी छिपा नही, यह जानकर मेरे मन का बोझ उतर गया है। यह मेरा अन्तर्मन ही जानता है। उष्मा द्वारा अकारण लादे हुए लाछन से, मैं आपकी साक्षी मे ही मुक्त हो गया हूँ ! नहीं तो उष्मा ने मेरा अपमान करने में किसी प्रकार की कोई कमी नही की थी। मेरे मुह पर थूकना ही केवल शेष रह गया था।

मधुसूदन मुस्कराते हुये पुत्री की पीठ सहलाते हुए कहने लगे : 'तुम जितना मेरी लाडली को उदण्ड समझते हो इतनी उदण्ड तो यह नही है।'

उदण्ड है या नही। किन्तु मैं इतना अवश्य कह सकता हूँ कि यदि मेरे मुह पर थूका होता तो इसके इस व्यवहार से इसके मनोभावो का एक नवीन स्तर सामने आया होता। रोगी के ऐसे-वैसे उदण्ड व्यवहार-अविनय से व्याकुल होकर मैं इसका पीछा छोड दूं ऐसा गया गुजरा मैं भी नहीं हूँ।

कुछ देर रुककर उसने कहा : 'मेरे तर्क के कारण यदि शत-प्रतिशत नही तो कुछ प्रतिशत सफलता अवश्य मिली है। जिस दिन से आपको दिल का दौरा पडा और उष्मा आप की सेवा शश्रुषा मे तन्मय हो गई, इसके बाद उसे एक बार भी हिस्टीरिया का दौरा नही पडा है। यह दौरा इसीलिये नही पडा कि उसे अब हिस्टीरिया के दौरे के विषय मे विचार करने का अवकाश ही नही मिला।

हिस्टीरिया का दौरा तो विशेषकर इसीलिए बराबर पडता था कि इसके विषय मे अधिकाधिक विचार किया जाता रहा और उष्मा भयभीत होती रही।

इस समय इस व्याकुलता के क्षणो मे उष्मा को ऐसा प्रतीत हुआ कि उसे काल्पनिक भयोद्वेग के कारण ही हिस्टीरिया का दौरा पडता रहा हो।

हिस्टीरिया के कई कारण हो सकते हैं। क्या आप जानते हैं।

मधुसूदन और उष्मा दोनो यह बात नही समझ सके कि आखिर यह प्रश्न किससे पूछा गया है। किन्तु जब उष्मा ने कोई जिज्ञासा नहीं बताई तो मधुसूदन ने ही प्रश्न किया : कौनसा ?

'ढोग.....।'

'ढोग.. ? हिस्टीरिया मे क्या ढोग भी चलता है ?'

'यह एक ऐसा रोग है, जिसमे ढोग का स्थान सर्वोच्च होता है। पेट और सिर दर्द मे कई बार बहुत अधिक व्याकुलता होने पर कई डाक्टरो के कम ज्यादा उपचार करवा लेने के बाद रोगी को अपने रोग मे फायदा होना स्वीकार करना पडता है। हिस्टीरिया एक ऐसा रोग है, जिसमे रोगी डाक्टर को सफल नहीं होने देता है। इस रोग मे रोगी अपने ढोग को वर्षो पर्यन्त चलते रहने दे सकता है.....। तदुपरान्त रोगी जब किसी कुशाग्र बुद्धि डाक्टर के हाथो मे पड जाता है, तब उसकी विशिष्ट तर्क बुद्धि की पकड मे जब ढोग पकड लिया जाता है, तब सारी कलई खुल जाती है। मैंने इसी तरह एक स्त्री का ढोग पकड लिया था।'

हिमाशु जब ऐसा कह रहे थे तब उष्मा के कौतूहल का कोई ठिकाना नही रहा। आतुरता मे उसने स्वमेव ही पूछा, किस प्रकार ?'

'इसी प्रकार स्टीमर मे यात्रा करते समय एक स्त्री का केस मैंने हाथ मे लिया। वैसे यह दम्पत्ति कपाला मे रहता था, किन्तु वृद्ध माता-पिता की सेवा के लिये घर पर किसी के न होने के कारण उसने अपनी पत्नी को देश मे छोड दिया था। किन्तु स्वामी भक्त पत्नी तो पति के पास अपनी में ही रहना चाहती थी। उसने देश मे न जाने की हट ठान ली। जब उसकी सभी उछल-कूद व्यर्थ रही तो उसने अपने अन्तिम अमोघ शस्त्र के रूप मे हिस्टीरिया

का सुदर्शन चक्र घुमाना शुरू कर दिया।

स्टीमर मे ही सुबह–शाम, समय-कुसमय बिना कुछ देखे हिस्टीरिया के दौरे पडने लगे। पति घबरा गया और मेरे को इलाज करने को कहा। पति से सारी हकीकत सुनकर तर्क के आधार पर मुझे सन्देह हो गया। इसके बाद मैंने स्त्री का निरीक्षण किया तो मेरी बात की पुष्टि हो गई। एक दो दिन के उपचार के बाद मैंने उसके अमोघ शस्त्र सुदर्शन के सामने ऐसा ही वज्रमुष्टिक रामबाण उपचार अजमाया। उस समय मेरे पास मदद को लिजा के सिवाय एक होशियार कम्पाउन्डर भी था। मैंने उनको सब समझा कर पहले से ही तैयार कर रक्खा था। दूसरे दिन जैसे ही उस स्वामी भक्त को हिस्टीरिया का दौरा पडा कि कम्पाउन्डर व लिजा उसे उठाकर मेरे केबिन मे ले आये। मैंने खूब धमा चौकडी मचाकर सारे वातावरण को कोलाहल पूर्ण बनाकर लिजा को हिस्टीरिया की दवा की बोतल लाने का आदेश दिया। जैसे ही लिजा दवा लेकर आई कि मैंने एक-एक करके चार चम्मच उस स्त्री के गले मे डाल दिये। इसके बाद बोतल का लेबल पढकर मैंने एक दर्दनाक चीख मे कहा 'अरे तुमने मेरे हाथ मे यह कौन-सी बोतल दे दी? इसमे तो पोइजन था, पोइजन''' ! बहुत तेज जहर'''। अरे इसमे ऐसा जहर था कि रोगी पानी तक नही माग सकता है'। अब जल्दी भागो'' । उल्टी की दवा ले आओ''''! अब इसको कै करवानी होगी''' ! तुम लोगो ने आज मेरी मौत का सारा सर अजाम इकट्ठा कर दिया। सालो कम–बख्तो ! यह तुमने क्या कर दिया कुछ तुम्हे होश भी है या नहीं ? मेरे हाथो मे आज जरूर हथकडी पड जायेगी। जीवन भर मेरे भाल मे कलक का टीका लगा रहेगा''''जाओ-जाओ जल्दी से इसके पति को बुला करके लाओ''''।

पति को बुलवाने तो कोई नही गया, परन्तु लिजा दौडकर कै की दवा के बदले मैं पानी की बाल्टी ले आई।

किन्तु पानी की बाल्टी अभी आई भी नही थी कि दोनो हाथो से पेट दबाती हुई ओय मा'''। ओय मा'''। की चीखे करती हुई स्त्री ओ''' क ओ''' क''' की गर्जना से सारा वातावरण को गु जाती हुई, डाक्टर ! मुझे जल्दी उल्टी करवाइये। मेरे पेट मे ऐंठें लग रहे हैं।

'ठहरो, ठहरो !' मैंने उसके कधे पकडकर पुन लिटा दिया।

उसी समय वह फटी आवाज मे रोने लगी 'ओ मा रे! इस मूर्ख डाक्टर ने मुझे मार दिया! बचाओ ! बचाओ'' !'

आवाज केबिन के बाहर न पहुँचे, ऐसी नही थी। इससे मैं बेफिक्र था। मेजर गिलास मे पानी की बोतल उडेलते हुए मैंने बडे धीमे से पूछा : 'तुम तो हिस्टीरिया मे बेहोश थी न ! यकायक ऐसे किस प्रकार बैठी हो गई ?

या फिर यह हिस्टीरिया का कोई एक बहाना है ?

मानो कोई आश्चर्यजनक बात सुनने के समान उस स्त्री की आखे फटी की फटी रह गई। मेरी बात सुनकर वह स्तम्भित रह गई।

उसके कान के पास मुंह ले जाकर मैंने कहा ' 'मैंने तुम्हे जो दवा पिलाई है, वह जहर है। यह बात सच है, किन्तु यह दवा उन रोगियों के लिये है, जिन्हें हिस्टीरिया का रोग न हो.....। यदि हिस्टीरिया होता है तो फिर उसी दवा से ठीक होता है। यही नही यह दवा हिस्टीरिया के लिये तो जहर के स्थान पर अमृत की तरह है। अत तुम्हें घबराने की कोई जरूरत नही है। इन सबके बावजूद यदि तुम्हे वास्तव मे ही हिस्टीरिया रोग का है तो इस दवा से वह जड समेत समाप्त हो जायेगा।

इशारा मात्र..... ।

स्त्री समझ गई। वह बहुत तेज थी, अतएव बिना अधिक स्पष्टता के इशारे मे सारी बात समझ गई, बिना ज्यादा ठहरे जल्दी से चली गई।

उसके बाद उस स्त्री को कभी हिस्टीरिया का दौरा नही पडा।

केवल उष्मा ही नही अपितु, मधुसूदन को भी बडी जोर से हँसी आगई। मारे हँसी के दोनों लोट-पोट हो गये। इसके बाद उष्मा बोली : बेचारी को पति के सामने तो मुंह बतलाना ही कठिन हो गया होगा !'

नहीं पति के सामने उसके हिस्टीरिया की मैंने लज्जा रखली थी। मेरे प्रयोग के समय मैंने उसे उपस्थित नही रहने दिया था। अत. वह तो बेचारा यह मानने लगा कि डाक्टर की रामबाण दवा ने ही सहधर्मचारिणी को स्वस्थ और ठीक बनाया है। उसने खुले दिल से सारे स्टीमर मे मेरी खुब प्रशसा की। वह उपचार की फीस देने आया किन्तु मैंने फीस नही ली। इससे वह मेरा और अधिक आभारी हो गया। अपनी कृतज्ञता व्यक्त करने वह दूसरी बार की यात्रा के समय मेरे लिये एक अच्छी भेंट लेकर आया।

इतनी बात कहकर हिमाशु उष्मा की ओर मुडा . 'तुमने जो टेलिस्कोप देखा था, वह उसी के द्वारा भेंट किया गया है।

उष्मा एकदम मुग्ध हो गई।

और मधुसूदन आश्चर्य सागर मे डूब गये।

तब इसका मतलब यह हुआ कि इस प्रकार के ढोंग करने वाली स्त्रियां भी इस ससार मे मौजूद हैं।

हँसते हुए हिमाशु ने बात को आगे बढाया : 'इसीलिये ऐसे केसों में पहले से ही विश्वास करना पडता है। मैंने उष्मा के हिस्टीरिया के विषय में प्रथम बार ही निर्णय कर लिया था कि उष्मा हिस्टीरिया का ढोंग कर रही है।

कनखियो से बिना चौंके डाक्टर हिमाशु को देखकर अर्थ भरे स्वर में उष्मा

पूछा . 'तनिक बताइये आपने किस प्रकार इस बात का निश्चय किया !'

सामान्यतया ढोंगी स्त्रियाँ उपचार के लिये मना करने की हिम्मत नहीं कर सकती है। तुमने तो पहले ही दिन से प्रबल विरोध करना प्रारम्भ कर दिया था, यह निश्चय !

एक क्षण के लिये उष्मा की आखो मे तेज किरण के समान चमक आई। किन्तु दूसरे ही क्षण होठ चबाती हुई कहने लगी 'तब तो डाक्टर, आप बहुत प्रसन्न अपने आपको मानो ! मुझे वास्तव में कभी हिस्टीरिया का रोग नही था। मैंने यह हिम्मत इस कारण से की कि पिताजी मुझे अपने आपसे दूर न करें।'

तुम्हारी हिम्मत वास्तव मे बहुत प्रशसनीय है !

किन्तु डाक्टर के आगे के शब्द मधुसूदन क बुलन्द हास्य म न जाने कहा खो गये। वे कहने लगे 'बात सच्ची है, भई ! यदि इसने यह उपाय न किया होता तो तनिक विचार कीजिये कि अब एक क्षण भी दूर न करन की सद्बुद्धि मुझे परमात्मा ने कहा दी होती !'

इतना कहते ही मधुसूदन की आखे छलछला आई।

बापूजी··· !

उष्मा का क्षण भर पहले का हास्य हवा होकर अब करुण विलाप में बदल गया।

उसने जल्दी से अपना सिर पिताजी की गोदी म डाल दिया 'नही पिता जी अब आप मुझ एक क्षण के लिये भी अपनी आखो से दूर मत करना।'

इसी समय सन्ध्या की व्हिसिल गूज उठी।

सागर के घनघोर गुंजन मे एक नई लय सम्मिलित करक स्टीमर की गति एकदम तेज हो गई।

भीने भीने श्वास को प्रलम्ब उच्छ्वास पर चढाकर हिमाशु धीरे-धीरे केबिन की ओर बढ गया।

००

लौरेन्भ्रा मार्कवीस··· बेइरा··· बेक्वलीमन और नवाला··· ! मोभाम्बिक के सभी बदरगाहो को पीछे छोडकर एस एम अगोला दारेसलाम आ पहुँचा।

लकडी के सहारे से··· तथा इससे भी अधिक वृद्धावस्था की ओर न बढने के लालच से मधुसूदन पुत्री के कन्धो पर हाथ रखकर डेक पर हवा खाने

को आते हैं। कई दिन तक वे नीद मे सोते रहे। अब उनको अट्रोपीन मॉर्फिया या पेथेडीन के बिना ज्यादा नीद नही आती थी।

सन्ध्या होते होते वे डेक की लालसा को दबा नही पाते हैं। गत तीन दिनो से मधुसूदन नियमित रूप से डेक पर आते हैं। किन्तु इन तीन दिनो मे हिमांशु से डेक पर मुलाकात नही हुई।

सागर की शय्या पर विभावरी के प्रगाढ आवरण तक पिता पुत्री डेक पर ही बातो मे खोये रहते थे। किन्तु उष्मा फिर भी बातो मे इतनी तल्लीन नही हो पाती थी। तनिक-सी पदचाप सुनकर या न सुनकर भी उसकी नजर अपने आप ही सीढियो की ओर चली जाती थी।

समझ मे नही आता था कि वह किसकी प्रतीक्षा करती थी? उष्मा स्वयम् भी यह बात समझ सकने मे असमर्थ थी। सम्भव है कि समझने का साहस होने पर भी वह अपने साहस की आजमाइश करने की चेष्टा नहीं कर सकती थी।

सम्भव था, कदाचित मन नही तो आखें हिमाशु की प्रतीक्षा करती हो....।

उद्वेग की तीक्ष्ण करवट उष्मा के नाजुक दिल को काटती जा रही थी।

हृदय का यह तूफान कैसा? क्षोभ....लज्जा?

नितात अकारण. .!

हिमाशु की प्रतीक्षा केवल मात्र इसलिये है कि यदि वह आजाए तो पिताजी का समय बडी आसानी से बातो मे निकल जाये। वह स्वयम् आखिर कब तक बात करे?

जबकि हिमाशु के सहयोग मे एक मोहिनी-सी थी। केवल वह वाचाल ही नही था, अपितु विवेकी और तर्कशास्त्री भी था....।

हिमाशु की उपस्थिति मे मधुसूदन अपने रोग को भूल जाते थे और इससे उष्मा को बडा सतोष मिलता था।

आज डेक पर आते ही जैसे ही मधुसूदन कुर्सी पर बैठे कि छाती को हाथ से दबाने लगे। सम्भवतया ऐसा उन्होने कमजोरी के कारण किया हो।

मधुसूदन को हाथ से छाती दबाते हुये देखकर उष्मा ने पूछा : 'पिताजी क्या बात है?'

उष्मा की व्याकुलता को मुस्करा करके दूर करते हुये मधुसूदन ने उत्तर दिया : 'कुछ नही है, सम्भवतया सर्दी के कारण छाती मे कुछ दर्द होने लगा है।'

बिना समय नष्ट किये वह डाक्टर को ले आई।

स्टेथेस्कोप से छाती का निरीक्षण करके हिमाशु ने हँसते हुये कहा : 'न तो सर्दी ही है और न गर्मी। दर्द का कारण कमजोरी है....। कमजोरी मे

सीढी चढना ठीक नही होता। अतः अभी दो चार दिन यदि आप डेक पर घूमने न आयें तो ठीक रहेगा।'

स्टेथेस्कोप घुमाता हुआ मुस्कराते हुये वह सीढियो की ओर बढा कि उष्मा ने पीछे से खीजे हुये स्वर मे कहा 'ऐसी नाजुक दशा मे पिताजी को अकेले छोडकर चले जाने मे क्या आप कुछ सोच विचार से काम ले रहे हैं?'

किन्तु बेटी डाक्टर के लिये कई दूसरे रोगी भी तो होते हैं। उसे अपनी दूसरी जिम्मेदारिया भी तो पूरी करनी ही होती हैं। या बस एक तेरे पिता की नब्ज पकडकर चौबीस घटे उसी के पास बैठा रहे ?

गत तीन दिनो मे चौबीस घन्टो की बात तो छोडिए, मुझ तो यह भी याद नही कि इन दिनों डाक्टर तुम्हारे पास चौबीस सैकिड भी बैठे हो।

पिता के सामने उष्मा की ऐसी खीजी-खीजी बाते सुनकर हिमाशु सीढी के पास से पुन लौट पडा।

'डाक्टर को कसम खिलाकर पूछा जाय कि क्या वह शाम के समय मे किसी रोगी को देखने जाता है ?'

डेक पर रोकने के लिए यह दृढ आवेग एक ओर जहा रहस्यमय और व्याकुल बना देने वाला था, वहाँ दूसरी ओर आकर्षण भी था। अतएव बिना किसी प्रकार का भान करवाये उसने कुर्सी पकड ली।

स्टीमर के घूमते हुए प्रोपेलर शात अर्णवनी रक्तनील के वक्षस्थल पर झागो से भरत के दो अद्भुत पट्टे बन रहे हैं। क्षितिज के सुनहरी बादल बुलबुलो मे नया रग भर रहे थे।

इन बुदबुदो के साथ म टकटकी लगाकर उष्मा की मुग्ध नजर को लक्ष्य करके हिमाशु ने पूछा 'क्यो, उष्मा क्या देख रही हो ? प्रकृति की सुन्दरता या प्रकृति की कला ?'

उष्मा, चौक गई। एक मीठी हँसी 'प्रकृति अपने बल पर नहीं, कलाकार की दृष्टि से ही शोभित हुआ करती है।'

किन्तु जिन बुदबुदो को तुम देखती हो ये तो क्षणिक हैं। किसी कलाकार की नजरा मे समाने से पहले ही ये पूर्णतया नष्ट हो जायेगें।

हिमाशु किस चीज के उपलक्ष मे यह मर्म की बात कह रहा है, उष्मा नहीं समझ सकी।

बिना समझने का प्रयास किये ही उसने कहा . 'बुदबुदे तो क्षणिक हैं, बुदबुदो मे रग भरती प्रकृति की लीला तो क्षणिक नहीं। पुराने बुदबुदे नष्ट होगें तो नए बुदबुदे उत्पन्न होगें'''''रगो की यह वर्षा तो इसी प्रकार होती रहेगी।'

'इस पर भी रग वर्षा को इतना अधिक महत्व देने की कोई आवश्यकता नही है। यह भी तो देखिए कि क्षण भगुर बुदबुदे क्या जीवन की साधकता

को स्पष्ट नहीं करते हैं ? तुम्हारी सदा ही बनी विरक्त नजरो के क्षण को पूर्ण करने को यह आकर्षित कर रही है, तथा यही इन बुदबुदो की सबसे बडी सफलता है।'

'विरक्त दृष्टि, के कटाक्ष पर उष्मा एकदम तिलमिला उठी। वह कहने लगी 'डाक्टर, तुम हर समय हर चीज की तुलना मेरे साथ क्यो करते हो ?'

'तब क्या इसके लिये पूरी तुलना ही की जाय ?'

मधुसूदन इस मर्म व्यजना को नही समझ सके, प्रतिवाद कर रही पुत्री की बाह्य व्याकुलता को लक्ष्य करके हिमाशु का अर्थहीन बचाव करते हुए वे कहने लगे 'प्राणी मात्र के जीवन को इसी कारण से मुमुक्षाओ ने बुदबुदो से तुलना की है, बेटी। डाक्टर, कोई गलत बात नही कह रहे हैं।

इसके साथ ही उन्होने एक कविता मद स्वर मे कहना प्रारम्भ किया।

जेवो घुमाडानो गोटो, जेवो पापी नो परपोटो, जेवो सुन्दर काच नो फोटो, वे ओ आ ससार है खोटो। (यह ससार धुँए का बादल पानी के बुदबुदे एवम् काँच में भ्रम से सुन्दर दिखाई देने वाले फोटो के समान असत्य है।)

हिमाशु और उष्मा एक साथ हँस पडे।

हिमाशु ने वादविवाद को आगे नही बढ़ाया, किन्तु उष्मा बोली : 'धुँए के बादल, पानी का बुदबुदा, काँच का फोटो इन सब का स्वतत्र नियत स्थान है नियत काय है, नियत ही आदि एवम् अत है। इसमे कोई असत्यता नही है सब सत्य है, तब फिर ससार असत्य कैसे हो सकता है ? हाँ मात्र ससार को नियत गति मे रखने का उत्तरदायित्व जिन्होने बिना कहे अपने हाथ म ले लिया है, ऐसे मानव वास्तव मे असत्य अवश्य हो सकते हैं।

उष्मा ने उपरोक्त बात किसको और किस कारण से की, हिमाशु नही समझ सका।

अतएव जैसे पहले उष्मा बोली उसी प्रकार इस बार हिमाशु बिना समझे ही कहने लगा 'तनिक विचार करो कि यदि इस समय स्टीमर यहाँ से नही चले तो झाग नही उठेंगे यदि झाग नही भी होगें तब भी सागर और सध्या तो होगी ही 'अरे किन्तु तुम जिन्हें झाग-झाग कहते हो वे झाग आखिर हैं क्या ?'

उष्मा की इस प्रकार की उत्तेजना पूर्ण बात सुनकर मधुसूदन एकदम चौंक पडे और आंख फाडकर पूछा - 'तब यह है क्या ?'

'पिताजी ये जल पुष्प हैं। इन पुष्पो को जल परियो ने तोडकर सागर म फैंक दिया। ये पुष्प अब न जाने किसकी वेणी की शोभा को बढायेंगे'' ।'

चकित डाक्टर की मुग्ध आंखो के साथ अपनी रहस्य मुद्रित आखें बद करके होठों से हास्य बिखेरते हुए उष्मा ने डाक्टर से कहा 'तुम प्रकृति की

शोभा की बात करते हो डाक्टर, परन्तु प्रकृति के अलकारो को पहचानने की तुम्हारी शक्ति कहाँ है ? किसी स्त्री के सिर दद को दूर करने को जाने समय क्या तुमने कभी ध्यान किया है कि उस वेणी की शोभा को बढाने के लिये कितन फूलो ने अपने प्राण न्यौछावर किये हैं ।'

'यह व्याकुल अनवरत रसिकता किस अगोचर विवर म छिपा रखी थी, उष्मा ! यदि मुझे इस बात का पहले ही ध्यान होता, तो मैं तुम्हारे उपचार के लिये एक अलग ही तरीका अपनाता ।'

'जिस प्रकार चीरफाड के साथ म जो विद्या सिखलाई जाती है, डाक्टर, इसक लिये किसी भी पद्धति का सहारा ले अन्तत तो वह पोस्टमार्टम के सिवाय और क्या है ? डाक्टर यदि यह सोच करके कि चारो ओर सुगध फैलाने वाले फूल की सुगन्ध न जाने कब उसके मुर्झा जाने से समाप्त हो जायेगी। फूल को तोड ले तो उसका यह कार्य ठीक है, किन्तु डाक्टर उस सुगन्ध का कारण शोधने के उद्देश्य से फूल को पूर्णतया तोड-मरोड कर ही चैन की *सास लेते हैं, जबकि वह अपनी सुगन्ध से सबको मदमस्त कर रहा होता है ।'*

अवाक होकर उष्मा की बात सुन रहे डाक्टर को अपने कटाक्ष का अन्तिम वाक्य कहते हुये उसने कहा 'आपन मेरे उपचार के लिये चाहे कोई भी पद्धति क्यो न अपनाई होती, किन्तु अन्तत उसमे इसके सिवाय और क्या प्राप्त होता !

बेचारे मधुसूदन ! इस वेमायने बात क तीरों के मर्म को समझने की कोशिश कहाँ स प्राप्त कर सकत थे ? अतएव फिर स हिमाशु का बचाव करने को तत्पर हो उठे 'उष्मा ! डाक्टर की इस प्रकार मजाक उडाना कोई न्याय सगत बात नहीं है ! हिमाशु ने जिस तरह दो दिन की दवा से मुझे स्वस्थ कर दिया है, इसको देखने से ऐसा प्रतीत होता है और इस बात को मानना पडेगा कि इनकी प्रद्धति

इनकी पद्धति, ये मानव को आग म डालकर सर्दी शात करन की पद्धति है बापूजी ! सभी डाक्टर की यही एक पद्धति होती है। आपके हार्ट का इलाज *करने के लिए इन्होंने आपको गहरी नींद मे सुलाने की दवा देकर* हार्ट को आराम पहुँचाया। यदि पिताजी मुझ से पूछा जाय तो सच यह है कि इन डाक्टर लोगो को सही पद्धति का ज्ञान नहीं होता है ।

इतनी अविरत तीर वर्षा के पश्चात तीरन्दाज शिकारी को सतोष हुआ या नहीं, इसका किसको पता ! किसका-कितना-क्या वेधा गया, इसका उसको पता लगा या नहीं इसकी किसको खबर ।

किन्तु जिस एक व्यक्ति को लक्ष्य करके एक के बाद एक तीर छोडे गये थे, उसी व्यक्ति को ये घाव सहन करने म इतना अधिक मजा आ गया था कि

हृदय के आर पार सनसनाते तीर निकल जाये, तब तक उसने कोई ढाल लगाने का प्रयत्न ही नहीं किया और न फिर पीछे से बह रहे खून को रोकने को ही हाथ लगाने का प्रयत्न किया।

दोनो जहाजो पर यूनियन जैक लहराते हुए देखकर मधुसूदन बोल उठे ओह! ये ब्रिटिश जहाज इस तरफ कहाँ जा रहे होगे ?

ये जहाज दक्षिणी ध्रुव मे व्हेल मछली पकडने जा रहे हैं। अभी इन दिनो एशिया की प्रतिस्पर्धा मे ब्रिटेन भी व्हेल मछली के शिकार मे प्रतिस्पर्धा करने लगा है। इनकी स्पर्धा बडी ही तेज है। किन्तु इनकी स्पर्धा म दक्षिणी ध्रुव से ब्ल्यू व्हेल मछली का मूल से निकदन कर देना है।

'जैसे डाक्टरो की स्पर्धा मे रोगी का निकदन निकालना मूल उद्देश्य होता है।'

उष्मा ने यह बात डाक्टर के कानो मे इतनी चुपचाप कही कि मधुसूदन न सुन सके।

हिमाशु को हँसी आगई, जैसे ही जहाज समीप आये, वह खडा होकर रेलिंग के पास पहुच गया। डाक्टर के पीछे-पीछे ही उष्मा भी पहुँच गई। मधुसूदन अपने स्थान पर जैसे थे, वैसे ही बैठे रहे।

हिमाशु ने धीरे से कहा 'डाक्टरो के हाथो से रोगियो का निकदन निकल जाने पर ही मुझे तो रोगियो की सख्या मे कोई कमी प्रतीत होती नही दिखाई देती है। जबकि व्हेल मछली का शिकार करने वाले विशेषज्ञो का यह पक्का दावा है कि आने वाले दशक मे एक भी ब्ल्यू मछली शेष नही रहेगी।

'मैं भी पक्के दावे के साथ कहती हूँ कि डाक्टरो की स्पर्धा म....'

'हाँ जी...। हाँ ..! किन्तु मुझे ऐसा लगता है कि तुम्हारी गिरवी रखी बुद्धि म यह समझ के बाहर है कि डाक्टर से परस्पर की स्पर्धा से रोगियो के लिये नुकसानदायक न होकर लाभदायक ही होती है।'

'किन्तु उन डाक्टरो की स्पर्धा लाभदायक नही होती, जो प्रयोग के उद्देश्य से की जाती है! प्रयोग रूपी जानवर के रूप मे डाक्टरो की शोध के चगुल मे जो रोगी आ जाते है, उनके लिये डाक्टरों की स्पर्धा कैसे लाभदायक सिद्ध हो सकती है ? जब किसी की मृत्यु पर एक नई शोध की जाती है तो उस समय रोगी का कोई महत्त्व नही रह जाता है। उस समय महत्त्व रहता है मात्र दर्द का! यदि मेरी यह धारणा असत्य हो तो डाक्टर तुम मेरी भावनाओं को एक ओर रखकर मेरी इच्छा के प्रतिकूल मेरे पर इतना अत्याचार करके मेरे दर्द का मूल कारण शोध निकालने को परेशान नहीं होते।'

इतना कहकर उष्मा जल्दी से पिता के पास आकर बैठ गई।

हिमांशु यह देखकर स्तब्ध रह गया।

क्षण भर पहले ही होठो की मुस्कान इस प्रकार उड गई, मानो किसी ने जोरदार मुक्का मुह पर मार दिया हो।

मानो कोई बात हुई न हो इसी प्रकार उष्मा ने बहुत ही शान्त और सरल भाव से आवाज दी : 'डाक्टर, तुम्हारा मुफ्त मे मिला टेलिस्कोप तो मगवाओ। जहाज देखने मे आनन्द आयेगा।

'अतीव समीप आये जहाजो को देखने के लिये जिसे टेलिस्कोप की आवश्यकता हो, वह हाथ मे आये टेलिस्कोप को किस प्रकार देख सकेगी ?'

'टेलीस्कोप ! मधुसूदन प्रसन्न होकर कहने लगे : 'वाह ! तब तो मुझे भी इससे आनन्द उठाने का मौका मिलेगा।

परन्तु इस समय कोई टेलीस्कोप लेने नही गया।

ब्रिटिश जहाजो की छत पर उड रहे पक्षियो की ओर देखते हुए उष्मा ने आश्चर्य से पूछा · 'डाक्टर ये कौन से पक्षी है ?'

'हमारे देश मे इनको परमार के नाम से जाना जाता है।'

'ये पक्षी जहाज के साथ-साथ क्यो उड रहे है ?'

'किसी भोज्य पदार्थ की आशा से, और क्या ?'

'कितने प्यारे श्वेत पक्षी है ! पेंग्विन से एकदम भिन्न प्रकार के रूप रग के। उस दिन टेलीस्कोप से देखने पर पेंग्विन बहुत ही सुन्दर दिखाई देते थे। इसी कारण आज भी मैंने टेलीस्कोप मगवाया था।'

'किन्तु इतने पास से टेलीस्कोप की सहायता से इन पक्षियो को देखा गया तो ये पक्षी परमार के स्थान पर रोक पक्षी बन जायेंगे, ठीक उसी प्रकार जैसे पेंग्विन पक्षी दूर दूर से पक्षी का आकार मिटाकर ओवर कोट धारी मानव बन गये थे।'

'अब पेंग्विन कहो दिखाई नही देते हैं !'

'ये एन्टार्कटिक के पक्षी हैं। समुद्र लाघकर ये पक्षी अधिक से अधिक अफीका के दक्षिणी सिरे तक आयेंगे। वे धरती पर इससे आगे नही जायेंगे।

'नितान्त निर्दोषिता से गर्दन तिरछी करके उष्मा ने पूछा · 'क्यो ?'

'इनको धरती के मानव पर विश्वास नही।'

'ओह'''उष्मा के होठ न जाने क्यो आश्चर्य मे थिरकने लगे : 'तब पेंग्विन तो सद्भागी है !' जिनका विश्वास नही उनसे बचने को दक्षिणी ध्रुव मे आसरा ले सकते हैं, किन्तु वे दुर्भागी कहाँ जायेंगे जिनको धरती के सिवाय आसरा नही !'

'इन दुर्भागियो मे एक—इनसे भी अधिक दुर्भागी तुम 'ठीक है न ?'

'बिना चौंके उष्मा हँस पडी . 'यह सीधा ही व्यग रहित एक स्पष्ट अभिद्रव !'

'अभिद्रव नहीं '! तुम्हारे अभिद्रव के सामने एक मात्र आर्तनाद !'

'खूब परेशान हो, नहीं, हिमाशु ?'

हिमाशु एकदम चौंक पडा 'डाक्टर के बदले मे आज यह सम्बोधन !'

कई दिनो तक मेरे पर प्रयोग करके तुमने मेरे प्रत्याघात सहन किये हैं। किसी दिन बदला लेने का मुझे भी तो अधिकार है। क्यो ठीक बात है ना ?'

बिना किसी प्रकार की शब्दो की फेरफार के तीव्र गम्भीरता से उष्मा टकटकी लगाये हिमांशु को ताकती रही।

मधुसूदन दूर के सिरे पर बैठे थे।

आज जीवन मे पहली बार मधुसूदन की उपस्थिति से डाक्टर हिमाशु को व्याकुलता का अनुभव होने लगा।

मधुसूदन की ओर बढते हुए डाक्टर हिमाशु ने कहा 'सन्ध्या के ठंडे पवन से अधिक प्रीति रखना अभी ठीक नहीं, अक्ल ! आपको अब चलना चाहिए।'

हो· हो· हँसते हुए मधुसूदन लकडी के सहारे खडे हो गये। पिता का हाथ पकडते हुए उष्मा ने भाप लिया 'हिमाशु की वाक्य रचना तोड-मरोड कर आखिर 'प्रीति' शब्द का प्रयोग कर ही लिया था… वह अब कैसे सह सकता था ?'

उसके उष्ण नेत्र किरणो ने तीर बनकर हिमाशु के नेत्रो पर टकार किया। इसी समय स्टीमर की सहस्त्रो बत्तिया एक साथ जगमगा उठी। हैडला-इट की दीर्घ चमकती तेज किरणें…।

उष्मा के दुर्दान्त नेत्र, तेज को सहन हँस उठी दीप्ति दृष्टि से हिमाशु इम प्रमत्त प्रकाश पुज पर तैरने लगे।

सीढी पार करते हुए उसे आज ऐसा अनुभव हुआ, मानो निरावृत मानव मन की कोई अनुध्वनित सवेदना की प्राण दीप्ति से उसका खाली मन परिपूर्ण हो गया हो। वह यह समझ सकने म असमर्थ था कि यह आज कैसे और किस तरह से परिपूर्ण हो गया है !

जिस प्रकार उष्मा ने आज की सन्ध्या को सौभाग्यशाली बनाकर उसे समुद्र के नीले जल से सिंचित करके आनन्दमयी बना दिया था, उसी प्रकार आज मधुसूदन, उष्मा के इस कार्य से निरतिशय आनन्द जल मे डुबकियाँ ले रहे थे।

मधुसूदन की इच्छा हुई कि शाम के भोजन के लिय डाक्टर को बुलवा लिया जाय, किन्तु नीचे आते ही "डाक्टर तो न जाने कहाँ चले गये हैं।

••

दो दिनो के पश्चात् उष्मा एक दिन आराम से सोये हुये अपने पिताजी को अकेला छोडकर केबिन से निकलकर बाल्कोनी मे आकर खडी हो गई।

बाहर की ओर देखा तो हिमाशु रेलिंग पकडकर धीरे-धीरे झूल रहा था···।

हिमाशु की आखो मे आज एकान्त की मस्ती के बजाय कुछ और व्यग्रता ही दृष्टिगत हो रही थी···। एकान्त का विषाद···।

विषाद और हिमाशु की आखो मे ?

कदाचित उष्मा को भ्रम हो गया हो !

'डाक्टर!' उष्मा ने मीठे स्वर मे धीमी-सी आवाज दी।

बिना चौंके हुये हिमाशु मुस्कराते हुये बोला तुम······? पिताजी सो रहे हैं क्या ?'

हाँ····! आज पूछ रहे थे कि दो दिन से तुम एकदम कहाँ गायब हो गये थे ?

'मैं एक नये काम म व्यस्त हो गया था।'

'कौन-सा नया काम ?'

'सम्भवतया लिजा ने तुम्हे बता दिया होगा।'

'नही, वह कौन सा काम था ?'

'आने वाले रविवार को लिजा का विवाह सरकार होगा।'

'लिजा····! विवाह कर रही है ?'

'हाँ··! उष्मा ने स्पष्ट देखा....रोकने का प्रयत्न करने पर भी हिमाशु के शान्त शब्द सपाट पर एक खिन्न तरग बुदबुदा बिगड गया।

साहस करके उष्मा ने सीधा-सा प्रश्न किया 'तब आज तुम लिजा के विवाह के कारण ही उदास हो ?'

'उदास हूँ ?' मैं खुश हूँ। वह बरबस हँस पडा।'

'यदि खुश नही भी हो तो तुम्हे खुश रहने का प्रयत्न करना चाहिये। तुम उसके धर्म पिता जो हो।'

स्वर मे किसी प्रकार का कोई व्यग नहीं था, अपितु सरलता और स्वभाविकता थी। उष्मा के बात करने का ढग आज हिमाशु को न जाने क्यो बहुत ही अच्छा लगा।

'सम्भवतया इसी कारण से उदासीनता होगी। उष्मा, तुम तो जानती हो कि पुत्री की विदा, पिता के लिये आनन्द प्रेरक नही अपितु विषाद प्रेरक होती है······।'

फटते हुये निश्वास को उष्मा ने छाती मे दबा लिया और फिर वह बोली 'लिजा कहाँ लग्न करेगी तथा किसके साथ करेगी ?'

'यही स्टीमर पर ही ... वायरलेस ऑपरेटर मिस्टर पिन्टो के साथ... । मुझे तो इस बात का पता नहीं चल सका कि इस लम्बे सफर में कब और किस तरह दोनों ने एक दूसरे की आंखों में विश्राम खोज लिया ।'

यदि तुमको पता भी लग गया होता तब क्या लिजा की आंखों पर पट्टी बांधने का तुम प्रयत्न करते ।'

'किसलिए ?'

'कौन जाने ? तुम कदाचित प्रसन्न हो हो सकते हो । किन्तु मैं तो हर्गिज खुश नहीं हूँ, डाक्टर !'

'क्या लिजा ने ऐसा कोई काम कर दिया है, जिससे तुम उससे ईर्ष्या करने लगी हो ?'

'ईर्ष्या ? ईर्ष्या किसलिए ? तुमने पत्र में भी इसी शब्द का प्रयोग किया था । वस्तुतः ईर्ष्या भाव से नहीं, अपितु उसकी शुभ चिन्तक सखी के रूप में, मैं उसे विवाह न करने और विवाह से दूर रहने की सलाह दूंगी ।'

'यदि उसने तुम्हारी सलाह न मानी तब ?'

'कुछ भी नहीं तो मैं उसका अभिनन्दन तो नहीं करूंगी ।'

'उष्मा ! मैं तुम्हारी मानसिक प्रक्रिया जानता हूँ, किन्तु अब तुम्हें इससे मुक्त ही होना चाहिये ।'

'हटो ! तुम्हारे तर्क बेकार साबित हुये हैं । मैं जो कहती हूँ, इसका कारण भिन्न है । पर मैं अभी उन कारणों को नहीं बताऊंगी ।

हिमांशु एकदम हँसकर कहने लगा मैं उन कारणों को जानने की इच्छा भी नहीं करता हूँ । परन्तु इतनी प्रार्थना अवश्य करूंगा कि लिजा को ऐसी अप्रस्तुत और अनुचित सलाह देकर तुम उसके उत्साह को ठंडा करने का प्रयास मत करना ।'

'किन्तु तुम लिजा के लग्न की बात से ज्यादा उदास हो ।'

'हाँ किन्तु यह एक पिता की उदासी है वर्षों के मधुर सानिध्य के पश्चात् मुझे फिर अपने नीरव एकान्त विवर में जाना पड़ेगा । क्योंकि इस वियोग के विचार से मुझे अपने आपको एक विवाद का विषय बनने का अधिकार नहीं है ?

'सभी मानव स्वयम् के अन्तर में सदैव ही वियोग की एकांत गुफा में निवास करते थे ।'

'उष्मा, तुम यह नहीं जानती हो कि मेरे इस आन्तरिक निर्मम एकान्त में लिजा की निर्व्याज ममता ने मेरा कितना साथ दिया था ।'

'किन्तु पिता पुत्री का सम सान्निध्य तो कभी टूटना सम्भव नहीं होता है । तुम सच कहती हो । वह स्थान जहाँ मानव निर्मम की एकान्त धारा में भी

निवास करता है, उस स्थान पर वह मन, माया-मोह से मुक्ति पाने की अपेक्षा उसमे अधिकाधिक लवलीन होता है""चाहे मुझे इस बात का बोध बहुत ही देर से हुआ हो, किन्तु इससे मेरा भावी मार्ग निर्बाध होगा। मेरा यह निरालम्ब अस्तित्व यदि किसी नई लिजा की शोध मे हाथ लम्बा करेगा तो मैं उस हाथ को वहाँ तक पहुँचने ही नहीं दूंगा।'

'दत्तक पुत्री के प्रति आपका ममत्व लामिगरेबुल के वालज्या का स्मरण ताजा करता है। निराधार दुखी बालिका कोजगेट को अपने आश्रय मे लेकर कितने अनुराग से पाला-पोसा, किन्तु एक दिन न जाने किस अज्ञात दिशा मे से दौड़कर तरुण मेरियस आया और उसने युवदीप्त हृदय के सकल स्नेह भंडार पर अपना आधिपत्य जमा लिया""उस समय वालज्या भी आपकी तरह उदासीन था, किन्तु हँसते हुये कोजेट को मेरियस के हाथो मे सौंप दिया और उसी निर्मम के अंक मे आश्रय लेने को स्वयम् प्राकृत निःशब्द एकान्त मे चला गया।'

हिमांशु अचभित रह गया।

आज उष्मा के गम्भीर मुख पर झलकती अपूर्व आभा किसी मन्तरशील ज्योति का तेज चारो ओर फैला रही थी।

सदा की उष्मा से आज की उष्मा भिन्न दृष्टिगत हो रही थी""। नितान्त भिन्न!

जब वालज्या–स्वयम् के द्वारा दिये गये उदाहरण से डाक्टर को किसी प्रकार का प्रत्याघात लगा प्रतीत नही हुआ तो सहसा उष्मा ने अन्य बात शुरू की 'लिजा तो कई दिनो से दिखाई ही नही दे रही है। चलो, हम लोग उसकी केबिन मे ही चले चलें।'

'केबिन मे नही मिलेगी, मैंने भी उसे कई दिनो से नही देखा है। आजकल वह ज्यादातर पिन्टो के साथ ही रहती है। इन दिनो लिजा और पिन्टो अपनी ड्यूटी भी पूरी नही देते है। यदि हम लोग लिजा के केबिन मे चलेंगे तो उनकी एकान्त लीला में विघ्न पड़ेगा और यह उन्हे अच्छा भी नही लगेगा।'

'मुझे ऐसा लगता है कि लिजा ने अपने प्रारम्भिक प्रेम को आपके सामने प्रगट नही किया है तथा उससे आपको बहुत धक्का पहुँचा है। उसी अभाव से आप बैचेन है।'

'कैसा अभाव?'

'हिमांशु की आवाज से उष्मा को यह समझने मे समय नही लगा कि इस बार वह चौक पड़ा है।'

'कौन जाने! मैं तुम्हारे समान कोई मनोवैज्ञानिक नहीं हूँ। परन्तु साइकीक विद्या तुम्हारी कृपा से समझ सकती हूँ। साइक्कि विद्याध्ययन के पश्चात

ती यदि मैं किसी समस्या का समाधान भी कर दू तो मुझे कोई साइकीट्रिक्ट की डिग्री नहीं मिलने वाली है ।

न जाने कब से म्यान मे रखी तलवार आखिरकार बाहर आकर के ही रही ।

उष्मा ने हिमांशु को अविचलित नेत्रो से उसी प्रकार देखा । मानो, वह हिमांशु की डाक्टर हो और हिमांशु, उष्मा का रोगी····· ।

एक वास्तविक हँसी मे हिमांशु ने उष्मा की पीठ थपथपा दी . 'उष्मा, मुझमे इतना साहस नही है कि तुमको मैं किसी विषय के अध्ययन हेतु अपनी शिष्या बना सकू , किन्तु यदि तुम्हारी इच्छा हो तो गुरु के पद पर तुम्हारी प्रतिष्ठा करके····· ।'

'छि·· क्या बात करते हो डाक्टर ! गुरू, शिष्य के नकली आडम्बर के बिना भी हमने एक दूसरे से बहुत कुछ सीखा है · इस थोडे समय के साथ रहने की स्मृतियाँ आजीवन बनी रहेंगी, डाक्टर ! क्योंकि मेरे जीवन के कष्ट-दायी दिनों की तुम्हें अर्पित की गई भेंट को यदि मैं विस्मृत करने का प्रयास करू तो सरल काम नहीं होगा ! हिमांशु हतप्रभ होकर इधर-उधर देखने लगा । बोलते-बोलते उष्मा के नथुने इतने फूल गये थे, मानो फुंकार कर रहे हो ।

आनद स्फुरित श्वास यकायक न जाने क्यो अग्नि स्फुरित क्रोधाग्नि में परिवर्तित हो गये, यह हिमांशु की समझ मे नही आया ।

हिमांशु को एकदम ख्याल आया कि उष्मा का क्रोध न तो नया ही है और न अनइच्छित ही । गत कई दिनो के उष्मा के ससर्ग मे हर्ष और रोष की इसी प्रकार की व्याकुलता-अगम्य अनुभूति वह बराबर देखता रहा था ।

किन्तु अब उसमे न तो अन्वेषण का ही उत्साह है और न विश्लेषण की वृत्ति··।

हिमांशु ने देखा कि उष्मा की नासिका एकदम लाल सुर्ख हो गई है ।

सागर की ओर देखते हुए, अत्यन्त बेपरवाही से शरीर झुलाती हुई, पवन मे उडती उदड अलक लटाओं को वह जूडे मे बाधने लगी ।

हिमांशु भी उष्मा की तरह अपने शरीर को झुलाना प्रारम्भ किया ।

उष्मा की प्यारी–प्यारी नवीनता सी हुई आंखों में मद सुगन्ध आ रही थी । सागर तरगों से टकराकर आती हुई वायु चारों ओर खारेपन की मादकता फैला रही थी । चारों ओर का वायु मन्डल ढलती सन्ध्या मे खारा-पन लिए हुये था ।

दूर-दूर मोगादीशु के बदरगाह के द्वार पर धुंधले दिखाई दे रहे स्टीमरों पर विभिन्न देशों के ध्वज राष्ट्रीय [illegible] उन्मत्त होकर ऐसी अदा से उड [illegible] फर-फर कर [illegible] वे परिहास कर

रहे हो !

उष्मा वहीं खड़ी रही । हिमांशु, स्टीमर मोगाडीश के बन्दरगाह के दरवाजे में प्रवेश करके वह अपनी केबिन में चला गया ।

रात होने से पूर्व मोगाडीश पीछे रह गया । इटाला ' मारेक ओविया । सोमालि रिपब्लिक तक पहुँचने में अभी दो दिन और लगेगें और इससे पहले रविवार आ गया ।

लिजा की कुंवारी जिन्दगी आज करवट बदलेगी । इसके सिवाय भी न जाने क्या और बदलेगा । केप्टिन की आज्ञा से आज स्टीमर की रौनक में बड़ा भारी परिवर्तन हो गया था""आज लिजा के लग्न का दिन था । केप्टिन ने अपनी ओर से एक छोटी-सी पार्टी का आयोजन किया था । इसके सिवाय दूसरी बड़ी पार्टी हिमांशु की ओर से होगी । सदा के रीति रिवाज के अनुसार जिस दिन स्टीमर विषुवत् रेखा पार करता है, इसी प्रकार के उत्सव का आयोजन किया जाता है । हिमांशु इस उत्सव के साथ में अपनी पुत्री के विवाह की पार्टी भी दे देगा ।

थियेटर का आरकेस्ट्रा आज विशेष रूप से लिजा के सम्मान में बजाया गया । लिजा ने आज पिन्टो के साथ टिवस्ट किया और न जाने उसने कितने ही गीत गाये ।

रात का भोजन प्रारम्भ होने से पूर्व कॉक्टेल''' पार्टी ! दूसरे अधिकारियों की बात तो छोड़ दीजिए आज स्वयम् डाक्टर ने भी दो पैग लिये ।

उत्सव में उष्मा और मधुसूदन सारे दिन उपस्थित रहे । किन्तु ये लोग शराब के दौर के साथ ही वहाँ से चल दिये और भोजन के समय पुन उपस्थित हो गये । रात्रि के बारह बजे हिमांशु ने अपने हाथों से पहले से तय की गई केबिन में नवदम्पत्ति को बंद कर दिया ।

यह केबिन उष्मा की केबिन के ठीक सामने ही थी । आज न जाने क्यों उष्मा ने स्वयम् ही एक उत्तरदायित्व बिना किसी के कहे ले लिया था ।

'नवदम्पत्ति का शयन कक्ष, मैं आज अपने हाथों से सजाऊंगी । अपनी इच्छानुसार अपने हाथों से""।'

उष्मा ने शयन कक्ष सजाने में कोई कमी नहीं रक्खी । आज जीवन में पहली बार हिमांशु को उष्मा की कलात्मक अभिरुचियों की जानकारी हुई । किन्तु इससे उष्मा की आन्तरिक मनोभावनाएं पहले से अधिक रहस्यमयी हो गई ।

उष्मा का अन्तर जाने-अनजाने लिजा के प्रति ईर्ष्[illegible] [illegible]वित था । डाक्टर के इस प्रकार के आरोप का खण्डन करने में [illegible] इतना अधिक उत्साह नहीं दिखलाया होता ।

कौन जाने ! अब इन दिनों वह मैना के बालक को प्राय गोद मे लेकर चुम्बन करती रहती थी और उसे खिलाया करती थी । अब वह मैना के सुसराल की बातें प्राय बडी रुचि से सुनती थी । यदा-कदा मैना तथा उसके बालक को अपनी केबिन मे ले आती । यही नही, अब वह यदा कदा मैना के बालक को भी अपनी केबिन मे ले आती थी ।

मैना अब स्वस्थ हो चुकी थी ।

यदि माँ का दूध अच्छा हो तो बालक भी स्वस्थ एवम् हृष्टपुष्ट होता है । मैना का दूध अच्छा होने के कारण बालक स्वस्थ और हृष्टपुष्ट था और इसी कारण, उष्मा बालक को प्राय खिलाती रहती थी ।

कदाचित इस प्रवृत्ति मे निमग्न होकर वह हिमाशु से दूर रहने का प्रयास कर रही थी ।

परन्तु विधि का विधान हर समय एकसा तथा अनुकूल नही रहता है । कई बार ऐसे कारण सामने आ जाते हैं कि डाक्टर की सहायता के बिना आगे कदम बढाना असम्भव हो जाता है ।

एक दिन दोपहरी मे जबकि आसमान बादलो से ढका हुआ था और दोपहरी के कारण सब प्रकार से खामोशी थी, मधुसूदन अपनी लकडी हाथ मे लेकर घूमने निकल गये थे । उष्मा, मैना के बालक को खिलाने को ले आई । वह बडे लाड प्यार से बालक को खिला रही थी कि सहसा बालक ने आखें फेर दी, उष्मा की सारी उमगों पर पहाड टूट पडा ।

बालक को क्या हो गया है, यह उष्मा की समझ म नही आया । बालक के हाथ-पाव और नाजुक नन्हा-सा शरीर धनुष की प्रत्यचा के समान खिच गया ' एक तेज झटका....। मात्र एक ही " ।

दूसरी खीच मे गर्दन टूट गई ।

व्याकुल बनी उष्मा बालक को गोदी मे लिये हिमाशु के केबिन की ओर दौडी, देखो डाक्टर ! इसे क्या हो गया है ?'

हिमाशु ने बालक को गोदी म लिया, देखा । पर अब देखने जैसा उसमे कुछ भी नही था । जो हाथ मे था, वह बालक नही अपितु उसकी लाश मात्र थी ।

हिमाशु जोर से चिल्लाए 'इसकी माँ को बुलवाओ ' जल्दी बुलवाओ !'

माँ, हिरन की सी चौकडियाँ भरती हुई आ पहुँची । देखा ' हृदय विदारक चीख मारते हुये उसने सिर पकड लिया....।

केबिन की छत फटते-फटते रह गई । मैना की उग्र पछाड के कारण फ्लोर टूटता-टूटता, बचा ।

एक भयकर चीख... इसके बाद सभी चीखें छाती मे समा गई ।

मैना बेहोश होकर जमीन पर गिर पडी।

स्टीमर में ही प्रसूता बनी मैना की अतीव लगन से सेवा शुश्रुषा करके ऐसी विषम परिस्थितियो में भी मैना को मातृपद के उल्लास में चमका देने वाले डाक्टर हिमाशु के भाग्य मे सम्भवतया यश नही लिखा था।

अभी प्रसूति काल से पूर्णतया स्वस्थ भी न हो पा सकने वाली मैना के लिये यह भयकर आघात मौत का सदेश लेकर ही आया। वह इस धक्के को सहने मे असमर्थ थी। मस्तिष्क मे खून चढ गया था। इसके साथ ही वह बडी बुरी तरह से गिरी। मैना का सिर केबिन की लकडी के साथ इस तेजी से टकराया कि मस्तिष्क की प्रमुख नाडी फट गई।

हिमाशु, मैना के मुंह पर सोजिश चढी देखकर चौक उठा। उसने मैना के शरीर को देखना शुरू किया।

सामने खडी मैना का श्वसुर फटी आखो से यह सब देख रहा था " इसके पीछे-पीछे सारे निम्न श्रेणी के पैसेन्जर खडे थे।

डाक्टर ने मैना का शरीर बार बार देखा। छाती देखकर डाक्टर ने वृद्ध श्वसुर के सामने देखा और सिर पीटना शुरू कर दिया।

'क्यो, डाक्टर साहब मेरी बहू को क्या हो गया है ?'

'हैमरेज" ! मस्तिष्क की नाडी फट गई है।'

'हैं....?'

यह सुनकर वृद्ध के पाव लडखडाने लगे, पास मे खडे लोगो ने यह सोचकर कि कदाचित वृद्ध की भी यही दशा होगी, जो मैना की हो चुकी है, सभाल लिया।

'हाय....! मेरा पौत्र तो गया सो गया, क्या बहू भी जायेगी। हे भगवान ! यह मुझे तू किस जन्म के पाप का दण्ड दे रहा है !'

वृद्ध के हृदय विदारक रुदन के सामने हिमाशु अपने कलेजे पर पत्थर रखकर मैना को होश मे लाने का प्रयत्न करने लगा।

किन्तु डाक्टर के सभी प्रयत्न विफल रहे।

हिमाशु पूरे छ घटे तक यमदूतो से झगडता रहा।

छ घटे बाद यमदूत विजयी रहे।

हिमाशु पराजित हो गया।

रात्रि के ठीक बारह बजे मैना के प्राण पखेरू उड गये।

अभी केबिन की फर्श पर बालक की लाश सफेद कपडे मे लिपटी पडी ही थी कि मैना की काया भी अपने प्राणो का मोह छोडकर अपने बालक की आत्मा से मिलने को अनत पथ को प्रस्थान कर चुकी थी।

आकाश मे घनघोर बादल छाये हुये थे। आकाश मे एक भी तारा टिम-

टिमाता नजर नहीं आ रहा था ' " तथा दूर किनारे पर एक मीनार बत्ती जल रही थी ।

माँ की साड़ी मे बालक को लपेटकर डाक्टर की केबिन मे रख दिया गया ।

केप्टिन की केबिन मे स्टीमर के अधिकारियो की एक इमरजेन्सी मीटिंग हुई । इस मीटिंग में यह तय हुआ कि माँ, बेटे की लाश को कल प्रात जलदाग दे दिया जाये ।

दूसरे दिन का सूर्योदय हुआ '।

सूर्योदय होने वाला था । सूर्य रश्मियाँ बादलो में से अपना प्रकाश चारो ओर फैला रही थी । इस समय स्टीमर ठीक दसवें अक्षास पर था । केप्टिन के आदेश से स्टीमर ने समुद्र के बीच में लगर डाल दिया । स्टीमर ठहर गया ।

कैप्टिन उसके सहयोगी, पतवार खेने वाले मल्लाह, इजीनियर, ड्राईवर, वायरलेस आदि व्यक्ति शोक मुद्रा पर डेक की रेलिंग के पास खडे हो गये ।

सभी अधिकारी अपनी अपनी टोपियाँ उतारकर, शिष्टाचार व्यक्त करत हुए खडे थे ।

आठ दस खलासी लकडी का एक भारी सन्दूक डेक पर ले आये ।

इसके बाद ये ही खलासी नीचे से माँ और बेटे का शव उठाकर लाये और उन शवो को सन्दूक मे रख दिया गया ।

इनके पीछे पीछे दो आदमी म्यूजिक कन्सर्ट हाथो म बिगुल लेकर आये ।

आज से दो दिन पहले जिस ऑर्केस्ट्रा ने लिजा के विवाह के समय मगल स्वरो से सारे स्टीमर के वातावरण को आनन्द मग्न कर दिया था, आज वही ऑर्केस्ट्रा मैना की मृत्यु के कारण करुण स्वर बजाकर सारे वातावरण को शोक मग्न बनायेगा, यह कौन जानता था ?

स्टीमर का ध्वज रात्रि मे ही आधा झुका दिया गया था ।

स्टीमर के अन्य पैसेन्जरो को खलासियो ने सीढ़ी के पास रोक दिया था । अत ये लोग सीढी के पास ही खडे हो गये ।

सगीत मास्टर की आज्ञा से बाजे वालो ने करुण धुन बजाना शुरू किया । प्रभात के स्तब्ध वातावरण मे शोक की लहरें तैरने लगी ।

मातमी धुन की समाप्ति पर स्टीमर ने एक तीखी तेज व्हिसिल से दिवंगत आत्माओ को अपनी ओर से सलामी दी ।

शव पेटी म माँ और बेटे की लाशो को एक साथ सन्दूक में रख दिया गया । इसके बाद पेटी के साथ एक भारी लोहे का टुकड़ा बांध दिया गया । दोनो सिरो के कुन्दों मे आकडेदार रस्से डाल दिये गये और सन्दूक को आठ खलासी उठा करके रेलिंग के पास ले आये ।

रस्सों को पकड़कर शव सन्दूक को धीरे-धीरे समुद्र मे उतारा जाने लगा।

चारों ओर का वातावरण निस्तब्ध था"" ।

निष्पद" ।

अवाक्""" ।

सागर की उत्तग तरगें इस समय बहुत शात थी।

इसी शात सागर के स्थिर जल मे सन्दूक को धीरे-धीरे नीचे उतारा जा रहा था।

कृपालु जल देवता अपनी विशाल तरग बाहु फैलाकर उसको सौंपे जाने वाले दो मानव शवो को स्वीकार कर रहा था।

सागर के तल मे पहुँचने के साथ ही रस्सी स्वमेव ही सन्दूक से खुल गई।

उमग एवम् आशा भरी युवा माता तथा उसके नवजात शिशु को सागर की उदार गोदी मे सुलाकर खलासियो ने रस्सियाँ ऊपर खींच ली।

आधे घण्टे मे मैना और उसके बालक की जलदाह क्रिया समाप्त हो गई।

जलदाह का विधान सम्पूर्ण होते ही हवा मे एक घनघोर व्हिसिल गूज उठी।

दो मानव देह सागरराज को सौंपकर एस एस. अगोला आगे चल पडा।

○○

उष्मा को अब तक जो हो चुका था उसका ध्यान ही नही रहा। ख्याल ाते ही वह पागल-सी बातें करने लगती। अर्ध चेतना मे वह प्रलाप करने ागी

'क्या हुआ ? बालक के मेरे हाथ मे आते ही उसकी गर्दन कैसे टूट गई ?'

उष्मा को सभालने मे ही मधुसूदन को रुक जाना पडा और इसी कारण ष्मा और मधुसूदन में से कोई एक भी मैना की अन्तेष्टि के समय डेक पर ही पहुँच सका।

जलदाह की क्रिया समाप्त हो चुकने पर हिमाशु मधुसूदन की केबिन मे ाया • 'हाय रे डाक्टर ! देखो भी ! मेरे हाथ कितने दूषित है ? मेरा सारा स्तित्व ही अभिशापित है ! बालक को मैंने जैसे ही हाथो म लिया कि उसके ाण पखेरू उड गये।'

हिमांशु ने उष्मा को समझाने का प्रयास करने के उद्देश्य से कहा 'उष्मा ' क्या पागलपन कर रही हो ! बच्चे को नसो का तनाव रोग हो गया था। से हम तानी रोग भी कहते हैं, यदि बालक माँ की गोद मे भी होता तो

भी ऐसा ही होता। बच्चे का तेरे हाथ मे होना—यह एक अकस्मात था ही संयोग था।'

'क्या तूने आज अपनी अक्ल किसी के पास गिरवी रख दी है ?'

'अब तो बुद्धि जैसी कोई चीज मेरे पास शेष नहीं रही, डाक्टर ! अब मैं किसके सहारे जीवित रहूं ! मुझे अब मर जाने दो डाक्टर ! नहीं, मुझे अब मत रोकना··मुझे अब वहीं जाना है, जहाँ मैना और उसका बालक····।'

उष्मा इतना कहकर विद्युत के झटके के समान अपने स्थान से उठकर रेलिंग की ओर तेजी से दौड पडी।

मधुसूदन ने घोर आर्तनाद से चीख मारी 'बचाओ'' अरे पकडो''' कोई तो पकडो ।

हिमांशु दौड पड़ा उसके पीछे पीछे मधुसूदन भी दौडे'''। दूसरे पैसेन्जर भी दौड पडे। रेलिंग की ओर लपककर समुद्र मे कूदने को उत्सुक उष्मा को हिमांशु ने कमर से पकडकर एक झटके मे ही अपनी ओर खींच लिया।

'डाक्टर''''।'

एक हृदय विदारक दारुण चीख मारकर उष्मा ने डाक्टर की छाती पर सिर डाल दिया।

हिस्टीरिया के भयानक रोग को जिस महा मुसीबत से दूर रखने का उष्मा अथाह प्रयास कर रही थी, वही रोग अन्तत अपना अवसर देखकर उष्मा को घेर बैठा।

लगभग एक घटे बाद उसको होश आया। होश म आने के बाद उसकी आखें अगार-सी लाल हो रही थी, होंठ काप रहे थे और उसके मुख से उद्दाम विकल चीख पुकार··!

उसका सारा शरीर बुरी तरह से काप रहा था। शिराओ से प्रवाहित रक्त में मृत्यु की झलक दिखाई दे रही थी। उष्मा के बदन पर मौत की स्पष्ट रेखाए दिखाई दे रही थी।

लिजा और पिन्टो ने उष्मा को कसकर पकड लिया और डाक्टर ने जबरदस्ती उसको नीद का इन्जेक्शन लगा दिया।

डाक्टर ने इन्जेक्शन लगाकर सतोष का सास लिया, क्योकि अब चौबीस घटे तक किसी तरह का कोई भय नही था।

बेचारे मधुसूदन का होश हवास तो कल रात से ही गायब था। प्रतिक्षण बढ रही विपदा और विपत्ति के कारण उनको फूट पडने मे कोई समय नही लगने वाला था।

एक ओर उष्मा, जैसे ही नीद मे सोई कि दूसरी तरफ डाक्टर की बाजू पर सिर रखकर वे फूट फूट कर रोने लगे।

डाक्टर को अभी मैना के श्वसुर की भी देखभाल करनी थी।

डाक्टर सूचना पाने को कप्तान के पास चुपचाप बैठा रहता था।

उस दिन से मधुसूदन भी गुमसुम से बन गये। दूसरो की तो बात ही छोडिये डाक्टर के साथ भी वह ज्यादा बातचीत नही करते थे। उष्मा के साथ बातचीत करने का तो कोई प्रश्न ही नही रह गया था। उसे लगातार तीन दिन तक बेहोश रखना पडा।

चौथे दिन जैसे ही आख खुली तो उसने कहा : *'मैं आत्महत्या नही करूगी। मुझे व्यर्थ मे अब इन्जेक्शन मत लगाओ।'*

जैसे ही उष्मा स्वस्थ्यता और स्पष्टता से बोली तो मधुसूदन का रोम-रोम हर्ष से फूला नहीं समाया।

बेटी के मुंह से मुह लगाकर वे फूट फूट कर रोने लगे।

उष्मा यह भली प्रकार से जानती थी कि इस ससार मे मधुसूदन को सबसे अधिक दुःखी करने वाली वही है।

रोते हुए पिता को आश्वासन देती है 'नही पिताजी! अब मैं आपको इस प्रकार दु खी नही करूंगी''''पिताजी, आप रोये नही! अब मैं ऐसे उन्माद *से पागल नही होऊगी। मैं, आपकी सौगन्ध खाकर कहती हू कि अब मैं ऐसी* मूर्खता नही करूंगी। अब आप को दु खी नही करूगी''''। आपको छोडकर वैसे ही मैं कही जाने वाली नही थी, पिताजी!'

बेटी, मैं भी तो यही कहता हूँ कि यदि तुझे मरना ही हो तो फिर मुझे भी साथ लेकर मर जा! तेरे बिना मैं यहा अकेला क्या करूगा? अकेला कैसे जीवित रह सकूगा, तनिक बता भी?

'नही, अब आप ऐसी बात न करें। पिताजी व्यर्थ की चिन्ता करने से पुराना हार्टअटेक की बीमारी फिर से शुरू हो जायेगी। अब केवल एक बार बम्बई पहुँच जाय फिर आप का इलाज शुरू करवाना है।'

'बेटी, मुझे तो कुछ नही होगा। मेरी चिंता छोड कर यदि तू अपने आप को सभाल ले तो मेरे लिये सब ठीक हो जायेगा।

मधुसूदन ने कहने को तो कह दिया कि कुछ नही, किन्तु लगातार बढ रही व्याकुलता के कारण उनके आन्तरिक मन की स्थिति बिगड चुकी थी। हिमाशु की दी हुई गोलिया और दवा वह नियमित रूप से ले रहा था, तथा वह यह भी भली भाति समझ रहा था कि इन गोलियों और दवा के ही कारण वे हार्टअटेक के नये खतरे से बच सके हैं''''।

दूसरे दिन स्टीमर विपुवत् रेखा को पार कर चुका था। दो यात्रियो के *कारण विपुवत् रेखा लाघने का पूर्व प्रस्तावित आयोजन रद्द कर दिया गया।* अब तक उत्तर दिशा की ओर बढ रहे स्टीमर ने पूर्व की ओर बढना शुरू कर

दिया। इसका स्पष्ट अभिप्राय यह था कि बिना किसी हॉल्ट के स्टीमर अब बम्बई ही जाकर ठहरेगा।

जैसे ही प्राची दिशा मे भगवान् सूर्य आकाश मे चढने लगे कि हिमाशु अपनी दूरबीन पर आखें गडाये बालकोनी म खडा था। कुछ देर दूरबीन को इधर उधर घुमाकर वह एक कुर्सी पर बैठ गया। चाय मगाकर एक घूट ली ही थी कि कोरीडोर मे से उष्मा बालकोनी की ओर आती दिखाई पडी। उसने आवाज दी 'डाक्टर।'

'क्या कह रही हो ?'

'कभी 'तू' कहकर तथा कभी 'आप' यह किस कारण से ?'

'न जाने क्यो मुझे कुछ भी ख्याल नही रहता है। जब कभी भावनाओ मे बह जाता हूँ तो एक बचन से सम्बोधित कर देने का साहस कर लेता हूँ' कदाचित। वैसे मैंने होश मे सदैव ही तुम्हे बहुबचन से सम्बोधित करने का दृढ निश्चय किया है।

उष्मा को एकदम हँसी आ गई 'अभी तो तुमने एक ही वाक्य मे 'तू' तथा 'तुम्हे' कह ही दिया और यह एक सुन्दर वाक्य बन गया !'

उष्मा को हँसते देखकर हिमाशु को भी हँसी आ गई 'यदि तू नाराज न हो तो उपरोक्त वाक्य को पुन दो भागो मे विभाजन करके वाक्य मे से तुम्हें, शब्द का बॉयकाट करने म मुझे बहुत आनन्द मिलेगा।'

'बहुत अच्छा ! डाक्टर, मैं यह कहना चाहूंगी कि यदि तुम मेरी प्रसन्नता और अप्रसन्नता का ध्यान न रखकर अपनी ही प्रसन्नता का ध्यान रखो तो मैं अधिक प्रसन्न रह सकूं गी।

हिमाशु ने सोचा कि बादल फिर रग बदल रहे हैं सम्भव है, आकाश का वास्तविक रूप देखने का सौभाग्य अब बम्बई पहुचने से पूव नही मिल सकेगा।

हिमाशु ने उष्मा की ओर चाय का कप बढाते हुये कहा 'ले, चाय पी।'

'मैं पीकर ही आई हूं।'

'इस पर भी मेरी बात मानकर तू आधा कप तो पी ही ले।'

'अब मैं आधा कप न पीकर पूरा कप ही पीऊगी तथा आपको पूरी तरह से आभारी बनाकर ही सतोष की सास लू गी।'

उष्मा की बात सुनकर हिमांशु ने घटी बजाई। नौकर को दूसरी ट्रे लाने का आर्डर दिया गया। ट्रे आते ही उष्मा ने कहा - 'जब चाय ही मगवाई गई है तो फिर टोस्ट मगवाते हुये क्या हो गया ? डाक्टर, मुझे आज बहुत तेज भूख लग रही है।'

खा-पी कर उष्मा ने डाक्टर से दूरबीन लेकर, उष्मा ने क्षितिज की ओर

देखना शुरू कर दिया 'डाक्टर, अभी तक तो बम्बई का छोर दूर तक कहीं भी नही दिखाई दे रहा है।'

'बस बम्बई पहुँचने मे इतनी ही देर है कि किनारा नही दिखाई दे रहा है। जैसे ही किनारा दिखाई दिया, बस बम्बई आई समझो।'

कुछ रुककर उसने कहा 'बम्बई का किनारा देखने को लिजा भी तुम्हारे समान बहुत व्यग्र हो रही है।'

'मेरे समान ? वह नवविवाहित है। यह समझ मे आने वाली ही बात है कि वह हनीमून मनाने को व्याकुल हो रही होगी। पर मैं व्याकुल हो रही हूँ, ऐसा भ्रम तुमको कैसे हो गया है ?'

'तुम व्याकुल नही हो ? मेरा भ्रम मिथ्या हुआ यह जानकर मुझे बहुत प्रसन्नता हुई है। इसके विपरीत लिजा ने स्वयम् ने व्याकुलता व्यक्त की थी। लिजा और पिन्टो ने अब स्टीमर की नौकरी छोडने का निश्चय कर लिया है। बम्बई पहुँचकर ये लोग कम्पनी को नोटिस दे देंगे। जैसे ही स्टीमर वापस लौटेगा, पिन्टो लोरेन्मोमार्कवीस मे उतर जायेगा और वही नौकरी की तलाश करेगा।'

'ओह ! किन्तु तुम··· ? तुम तो स्टीमर मे ही रहोगे, क्यो ठीक बात है न ?'

'मुझे कौन अपनाने वाला है ? यदि तू अपना सकती हो तो मैं तेरे साथ ही चला चलू !'

उष्मा को ऐसा लगा कि हिमाशु की बात केवल मजाक ही नहीं है, अपितु मजाक की ओट मे एक हृदय वेधक गुप्त हा-हाकार दहक रहा है। यह नीरव वेदना किस प्रकार की है ? उष्मा उस वेदना को समझने मे असमर्थ थी। उसे कभी डाक्टर के व्यक्तिगत जीवन के विषय मे जानने की उत्कठा नही हुई।

आज यकायक सदैव की इस निर्लिप्त वृत्ति म एक प्रबल उत्कण्ठा उत्पन्न हुई। उसने पूछा 'डाक्टर, तुम्हारे माता-पिता कहा है ?'

'कोई नही हैं। माँ-बाप नही है। न कोई भाई-भतीजा ही है।'

'पत्नी ? क्या आपने विवाह किया है ?'

'नही।'

'क्यों ?'

'ऐसी कभी इच्छा ही नही हुई।'

'मैं यह मानने को कदापि भी तैयार नही हूँ कि इच्छा नहीं हुई हो। कही निष्फल प्रेम के आघात मे तो विवाह की इच्छा समाप्त नही हो गई है ?'

हिमाशु वैसे ही हँस पडा। डाक्टर की हँसी से उष्मा ने ऐसा अन्दाज लगाया कि डाक्टर हँसने के बजाय यदि रो पडा होता तो अधिक अच्छा होता।

'बो लो'' 'बो लो !'

'क्या बोलूं ?'

जो कुछ भी कहना हो, तुम कहने मे क्यो हिचक रहे हो ! काश तुम्हारी तरह मैं भी तुमको लाइर्सजिक पिला सकी होती। परन्तु मेरे लिये यह सम्भव नहीं है। यदि मौका मिल जाय तो शरबत मे मिलाकर तुमको पिला दूं तो एक भिन्न बात होगी।

'तेरी तो आखो और आवाज में ही लाइर्सजिक मिला हुआ है, उष्मा ! कोई चाहे कितना ही इसे न पीने का प्रयास करे, किन्तु उसे पीना ही पडता है। परन्तु मैं तो बिना लाइर्सजिक पीये सब कुछ बता देने की स्थिति मे हूँ। मैं कोई ऐसा रोगी नही हूँ, जिसे प्रेम का कोई आघात लगा हो। मैं ऐसा रोगी नहीं हूँ, जिसको अपनी प्रेयसी की मृत्यु का आघात लगा हो।

उष्मा डाक्टर की बात सुनकर दग रह गई।

उसने स्पष्ट रूप से देखा कि हिमाशु की आखो मे एक मौन व्यथा तैर रही है। शात सौम्य मुखश्री पर दीप्तिमान गर्व की प्रखर तेजोश्लेषा दमकने लगी थी।

स्थिर अपलक नेत्रो मे कुछ गौरव दीपो के सहस्त्रो प्रतिमान प्रज्जवलित हो रहे थे।

बिना किसी प्रकार के सकोच के स्वस्थ मन से हिमाशु ने कहना प्रारम्भ किया।

'मेरी प्रेयसी तेरे समान ही एक तज स्वभाव वाली थी। गर्वीली और मान करके बैठने वाली.... ! आत्म सम्मान की तेजोज्जवल गौरव शिखा को बुझने से रोकने के लिये उसने मृत्यु का आश्रय लिया''' उस समय मे, मैं काश्मीर के मोर्चे पर लड रहे हिन्दुस्थानी सैनिको का मिल्ट्री डाक्टर था। वह इस स्थान पर मेरे साथ मेरी मदद करने को नर्स बनकर आई थी। पशु समान जगली कबायली प्रदेश मे कोई भी स्त्री नर्स बनकर आने को तैयार नही थी। वह भी तैयार नही थी। वह भी मेरे साथ केवल इसलिए आई थी कि वह मुझे अकेला भटकता नही रहने देना चाहती थी।'

कुछ देर तक रुककर हिमाशु ने गला साफ किया और कहने लगा : 'एक दिन बारामूला के मोर्चे पर एक मेजर साहब घायल हो गये, उस समय हमारा केम्प पुंछ की पहाडियो पर था। उसे केम्प मे छोडकर मैं मेजर के उपचार करने को मोर्चे पर गया। उसके पीछे''''बीच के किसी अरक्षित स्थान से कबायलियो की एक टुकडी ने मौका देखकर जबरदस्त हमला कर दिया। केम्प पर हमला करके इन लोगो का नारा था : 'अल्लाह हो अकबर''''इनकी

एक ही मांग थी औरत दो.....! सोना दो..... ! लडकी दो..... ! माल दो ! इस प्रकार की पुकार करते हुए और लूट खसोट करते हुए ये लोग हाथ मे पडी सभी लडकियो का अपहरण करके चलने बने ! उसको भी उठा लिया गया। परन्तु उसके पास आत्म रक्षा के लिये सर्विस पिस्तौल थी। छ गोलियो से भरी पिस्तौल..... ! अपने को उठाने वाले दो कब्बायलियो को अपनी पिस्तोल का निशाना बनाकर स्वयम् ने अपनी कनपटी पर गोली दाग ली.....मैंने लौटकर देखा तो केम्प नष्ट भ्रष्ट हो चुका था। मुझे नौशेरे की छावनी मे उसकी लाश पडी मिली ! उसका कोई निकट का सबधी नहीं था। मैंने अपने हाथों से उसको दफन कर दिया।'

'दफन ? तो क्या वह मुसलमान थी ?'

'हाँ ...काश्मीरी मुसलमान ! उसका घर बारामूला मे था। कब्बायलियो के विरुद्ध लडते हुए उसके माँ-बाप काम आ चुके थे। वह उस समय श्रीनगर मे पढती थी, इसलिये बच गई। माँ, बाप के मर जाने पर उसका कोई सहारा नही रह गया था। मैंने उसे आश्रय दिया। वह लगातार छ महीने तक मेरे साथ रही.....उसने.. उसने आगे होकर मुझसे शादी करने की इच्छा व्यक्त की.....युद्ध समाप्त होते ही दिल्ली आकर हमने शादी करने का निश्चय लिया था। किन्तु इससे पूर्व ही वह अपने माँ, बाप से मिलने को स्वर्ग लोक जा पहुँची, अपने प्रिय डाक्टर को छोडकर वह चल बसी।'

ढलती शाम की हवा मे एक सनसनाहट गूज रही थी।

उष्मा स्तब्ध होकर अपलक नेत्रो से डाक्टर को देख रही थी।

समुद्री बुगलो का एक झुण्ड कहीं अदृश्य से उडता हुआ दूर दूर शान्त सागर के तट पर उतर पडा। उन्होंने एक के बाद दूसरी मछली का शिकार करना शुरू किया।

सम्भवतया ये समुद्री बुगले न होकर कब्बायलियो का एक समुह कमसिन काश्मीरी सुन्दर ललनाओं का अपहरण करने वाला हो.....।

किन्तु उष्मा को ही इस बात का भान था कि डाक्टर हिमांशु इस समय अतीत के किन्ही गहन विचारो मे खो गये हैं।

इसी प्रकार बहुत देर तक हिमांशु और उष्मा चुपचाप बैठे रहे।

इसके बाद कुछ टूटे हुये स्वर मे उष्मा ने कहा : 'उसका नाम तो तुमने बताया ही नहीं !'

'हिमांशु ने उष्मा की बात नही सुनी।

उष्मा ने फिर से ऊँची आवाज मे पूछा : 'नाम' !'

'नाम भी तुम्हारी तरह का था। अर्थ व्यंजक..... ! स्वभाव की परिपूर्ण मार्मिक अभिव्यक्ति को सार्थक करता हुआ था..... । तुम उष्मा हो न ! उसका

नाम था आतिशा··! तुम तो मात्र गर्मी ही हो··वह तो भभकती आग का दहकता हुआ अगार थी। हृदयाग्नि जब तक भरी रहती है तब तक ही ठीक रहती है। जब कभी भभक उठती है तो मैं ऐसा परेशान हो जाता हू कि तुम्हारा अपमान उसके सामने कोई मूल्य नही रखता।'

'इसी कारण मेरे अपमान की चिनगारियाँ तुम्हें जला सकने मे असमर्थ थी, नही ? तुम्हे तो इसकी खूब आदत हो गई है !'

हिमाशु पुन: अपने विचारो मे खो गया।

शून्य दृष्टि बुगलो के फड़फड़ाते पखो मे खो गई।

हृदय अतीत के किसी गहन कन्दरा मे भटकने को चला गया।

डाक्टर को उसी अवस्था मे छोड़कर उष्मा वहाँ से चली गई। पिताजी के भोजन का समय हो चुका था।

खा-पीकर वह आराम से सो गई। उसने मन मे विचार किया कि हिमाशु भी खाना खाने चला गया होगा। किन्तु काफी देर बाद लगभग तीन बजे के उसने बॉलकोनी मे आकर देखा तो हिमाशु उसी दशा मे स्थिर अचल बैठा हुआ है, जिस दशा मे वह छोड़कर गई थी।

'डाक्टर ! तुम खाना खाने भी गये या यही बैठे हो ?'

'जवाब नही मिला। उष्मा को लगा कि वह निन्द्रा मे है।'

'डाक्टर····।'

तब भी डाक्टर की अधर खुली आखें पूरी नही खुली।

'हिमाशु ···।'

सहसा डाक्टर की आख खुल गई तुम····? क्या कह रही हो ?

'खाना खाने नही गये ?'

'नहीं।'

आज खाना खाने की इच्छा नही है।

'चलो उठो, खाना खा लो।'

परन्तु हिमांशु ने खड़े होने की कोई चेष्टा नहीं की।

सागर तट पर अब बुगलो का झुण्ड दिखाई नहीं दे रहा था··· यह मछलियों का सौभाग्य ही था कि दूर बहुत दूर एक हल्की सफेद रेखा दिखाई दे रही थी ···क्षितिज····! किनारा····!

हिन्दुस्तान का किनारा····।

रेलिंग पर अपने शरीर के बोझ को टिकाकर उष्मा झूलने लगी। उसे इस समय सायबेरियन युवती के ये शब्द याद आने लगे। सागर आकाश के अधूरे वृत के पास से क्षितिज मे उसको स्पर्श कर रहा है··· इस क्षितिज के दूसरी ओर बहुत दूर नया क्षितिज है। यह वह स्थान है, जहां आकाश धरती को पास [illegible]

सूर्यास्त होते ही किनारे की हल्की रेखा स्पष्ट दिखाई देने लगी।

oo

बम्बई....!

बहुत तड़के ही स्टीमर ने व्हिसिल बजाकर संकेत किया कि मंजिले मक्सूद आ रही है।

व्हिसिल बजने के दस मिनट बाद ही लाउडस्पीकर से सूचना प्रसारित की गई 'एस. एस अंगोला बम्बई के बंदरगाह मे घुस चुका है। ठीक साढे आठ बजे पायलेट जहाज आयेगा....इसके एक घंटे बाद" ठीक साढे नौ बजे स्टीमर डेक पर पहुँचेगा....!'

निश्चित समय से आधा घन्टे लेट अर्थात् दस बजे एस एस अंगोला ने बेलार्डपियर के डेक पर लंगर डाल दिया।

मुसाफिरो को डेक पार करने मे शाम के चार बज जायेगें। कस्टम की सख्त चौकी पार करना आवश्यक है। विदेश से भागकर फटे हाल मातृभूमि की गोद मे सिर छिपाने को आये दुर्भाग्य पीडित देश वासियो को भी देश के कस्टम तथा इमिग्रेशन विभाग की कठोर जांच पडताल से मुक्ति मिल सकना सम्भव नही।

डाक्टर की सिफारिश के कारण मधुसूदन को कस्टम वालो से बहुत जल्दी छुटकारा मिल गया।

बारह बजे के लगभग हिमांशु, मधुसूदन को लेकर जहाज से बाहर निकले। मधुसूदन की ओर देखकर अतीव क्लांत स्वर मे हिमांशु बोला 'अंकल, आप अब तुरन्त हॉस्पिटल मे दाखिल हो जाना। इस काम मे कतई देर मत करना।'

कुछ देर रुककर फिर कहा 'तुम्हारी सेवा चाकरी मे रहने का मैंने आपको वचन दिया था, किन्तु मुझ लौटते जहाज से ही वापस जाना पडेगा। मैं अपना बचन पूरा नही कर पा रहा हूँ, इसको सख्त अफसोस रहेगा।'

'पर इससे क्या हुआ।' टेक्सी स्टैण्ड की ओर पांव बढाते हुये मधुसूदन अति स्नेह भाव से हँसने लगे 'यह तो एक संयोग की बात है। चाहे इस समय तुम न मिल सको और मेरे साथ नही रह सको तो कोई बात नही, किन्तु यदि फिर कभी बम्बई आओ तो बिना मिले मत जाना।'

'जरूर....।'

डाक्टर हिमाशु ने मधुसूदन की टैक्सी का दरवाजा खोला।

जब तक सामान रखा गया तब तक मधुसूदन टैक्सी मे बैठ गये। उष्मा टैक्सी के पीछे खिसक गई, जिससे उस पर पिता की नजर न पड सके। धीरे से सिसकती हुई वह बोली : 'हिमाशु।'

हिमाशु तो न जाने कब से उष्मा के मुह की ओर देखते हुए उसके मनोभावो को जानने का प्रयास कर रहा था। उसने मन मे सोचा था कि उष्मा अलग होते समय उदास हो जायेगी। दो आसू गालो पर से बह कर मिट्टी मे मिल जायेगें… सम्भवतया आग्रह पूर्वक कहेगी 'फिर कब मिलोगे? स्टीमर मे तो तुमने मेरी बहुत देख भाल की, किन्तु अब कभी कुशलक्षेम पूछने को घर आयेगें या नही ?'

किन्तु…! हाय…! पर उष्मा तो स्टीमर से उतरते ही घर पहुँचने के उत्साह मे स्वजनो के मिलन के अतीव आनन्द मे फूली नही समा रही है। वही किंचित भी आवाज मे धडकन दृष्टिगत नही हो रही है। वियोग के तीव्र विषाद की बात तो अलग, कहीं किंचित मात्र ग्लानि तक का आभास भी नही था।

कलेजे को हाथ मे बिना पकडे ही डाक्टर ने अपने मन पर काबू पा लिया। उष्मा ने फिर हिमाशु को अपने पास क्यो बुलाया। यह हिमाशु समझ नही सका।

फिर भी धीरे से उष्मा के पास जाकर, विदा होने से पूर्व एक अर्ध गभीर मजाक करते हुए बोला : 'तेरा दर्द मैं जडमूल से नष्ट नही कर सकू तो बम्बई के सागर मे डूब जाऊगा, ऐसा मैंने उष्मा से वायदा किया था। किन्तु अपने वायदे को पूरा करने की मैंने बम्बई मे आकर कोई परवाह नही की। उष्मा! यदि कभी यह सूचना मिले कि हिमाशु समुद्र में डूब कर मर गया तो यह अन्दाज लगाना कि मैं किसी दूसरे कारण से ही समुद्र मे डूबा हूँ। मैं अब अपनी इस प्रतिज्ञा के कारण कदापि नही मरूगा और इसलिये तुम भी भूल कर कभी इस बात का गर्व मत कर लेना।'

हिमाशु की बात सुन कर उष्मा खुले मन से एकदम हँस पडी : 'तुम ने अपनी प्रतिज्ञा क्यों नही की, इसका कारण मैं भली प्रकार जानती हूँ। किन्तु इस समय मैं बताने मे असमर्थ हूँ। लो, यह पत्र लो, इसमे मैंने यह कारण स्पष्ट कर दिया है।'

इतना कह कर उसने जल्दी से एक कवर हिमाशु की शर्ट के जेब मे डाल दिया : 'स्टीमर पर जाकर पढना… पढ कर फाड देना। भूले भटके भी पत्र का रहस्य किसी को मत बतलाना…और…और उष्मा को सदा के लिये भूल जाना। पिताजी ने तुम्हे फिर कभी बम्बई आओ तो मिलने को अवश्य—

कहा है, किन्तु मेरी अब प्रार्थना है कि यदि तुम पुन मिलने का प्रयास न करो तो अच्छा है। हम दोनो के नव मिलन से अब किसी प्रकार के कल्याण की आशा करना व्यर्थ है""उसके विपरीत अकल्याण की ही ज्यादा गुंजाइश है" तुमसे भी अधिक मेरे अकल्याण की गुंजाइश है। हिमाशु तुम तो जानते हो""। तुम सब कुछ जानते हो।

धीमे-किसी प्रकार की उत्तेजना के बिना वह अति शात भाव से इतना कह कर जल्दी से टैक्सी मे बैठ गई।

असख्य टैक्सियों की घर घराहट मे एक टैक्सी की घरघराहट स्वत: ही शात हो गई।

मधुसूदन ने हाथ ऊचा किया। उष्मा ने भी""। टैक्सी के टर्न लेने के कारण हिमाशु का मुह उसकी बेक मे आ गया। टैक्सी के पीछे के विन्ड शील्ड से उष्मा का हृष्टपुष्ट जूडा परिहास पूर्ण एवं उन्मत्त हास्य फैला रहा था। किन्तु उष्मा ने एक क्षण के लिये भी मुंह फेर करके कांच मे से नजर फैंक कर हिमाशु को अपनी विदा की अन्तिम मुस्कराहट बतान की भूल करके भी चेष्टा न की।

वह आखिर तक हँसती ही रही।

निर्लेप" निरासक्त""!

अत्याधिक बेपरवाही से मुह फेर कर उष्मा ने अपने घर का रास्ता पकड लिया।

हिमाशु तब तक टकटकी लगाये टैक्सी को देखता रहा जब तक कि वह आखो से ओझल नही हो गई। बिना किसी कारण के इस प्रकार टकटकी लगा कर टैक्सी को देखते रहने पर वह फिर स्वयम् ही मन ही मन लज्जित हुआ और स्टीमर पर लौट आया।

स्टीमर मे आकर देखा तो हिमाशु को पता लगा कि लिजा और पिन्टो ने भी जाने की तैयारी कर रक्खी है। लिजा, हिमाशु के पावो मे गिर कर, पावो को आसुओ मे धोते हुए भरीई आवाज मे कहने लगी "'हमने अब अपना प्रोग्राम बदल दिया है। अब हम लोग यहाँ से काश्मीर जायेंगे। काश्मीर मे हनीमून मना कर एक महीने बाद हम लोग लिस्बन जायेंगें। लोरेन्स, मार्क्वीस हम लोग क्रिस्मस तक पहुँच सकेगें "।

हिचकिया लेते हुए वह आगे बोली 'हमे आप आशीर्वाद दें" किन्तु मात्र इसी समय आशीर्वाद देने से काम नही चलेगा" मेरी यह प्रार्थना है कि आपकी मौन ममता एवम् अदृश्य और अश्रवण आशीर्वाद का वरद् हस्त सदैव हमारे मस्तक पर रहे""। हमे अब आप विदा होने की आज्ञा दें।

हिमाशु के सूखे आसू न जाने कौनसा मजबूत बाध तोड कर एकदम बाहर

निकल पड़े। उसने अपने आंसू पोंछे। पहले स्वयम् के तथा इसके बाद लिजा और पिन्टो के भी....।

शाम के समय लिजा और पिन्टो एस. एस. अंगोला छोड़कर ताजमहल होटल में चले गए।

रात के समय काफी अंधेरा हो जाने तक हिमांशु गुमसुम डेक पर बैठा रहा। इसके बाद डेक की बत्ती के मंद प्रकाश में कवर खोल कर उष्मा का पत्र पढ़ने लगा।

'डाक्टर हिमांशु....!'

'मैं प्रिय का विशेषण नहीं लगा रही हूँ। तुम्हारे लिये मैं प्रिय और अप्रिय दोनों प्रकार के भावों से ऊपर उठी हुई हूँ। वैसे तो मैं आदि से अंत तक हर प्रकार के भावों से सदैव ऊपर उठे रहने का भरसक प्रयत्न करती रही और तुम अपने जी-जान से मुझे अपनी भावनाओं के बंधन में बांधने का बराबर प्रयास करते रहे.... परन्तु खेद है कि तुम्हें अपने लक्ष्य में सफलता नहीं मिल सकी। मैं इतनी अधिक व्यर्थ में तुम्हारे सानिध्य में न आ पाई होती, किन्तु मैना और उसकी सन्तान की दुःखद मृत्यु के कारण मैं न चाहते हुए भी तुम्हारे बहुत पास में आ गई। यह मेरा सौभाग्य था कि मैना और संतान की मृत्यु उस समय हुई जबकि यात्रा का अन्तिम चरण था। नहीं तो.... ।

'हां, डाक्टर। तुम्हें यह पढ़कर अति आश्चर्य होगा, किन्तु तुमने स्वयम् ही अपने आप जो मन में सन्देह का अम्बार खड़ा कर लिया है, उन सन्देहों के पीछे जो नग्न सत्य है, उसको मैं स्पष्ट करना अति आवश्यक समझती हूँ। मैं तुमको यह स्पष्ट बतला देना चाहती हूँ कि मेरे सम्बन्ध का तुम्हारा सारा तर्क एकदम असत्य और निर्मूल था। जैसा तुम्हारा विश्वास है, उस अनुसार तुमने मेरे अचेतन मन के भावों को जान कर कुछ भी नहीं पाया है। हां, यह बात सत्य है कि मेरे पति ने सुहागरात की रात में मेरे पर अत्याचार किया। पर यह बात जान लेना कोई खास बात नहीं है। कोई भी सामान्य आदमी तनिक गहराई से मेरी बातों से इस सत्य को जान सकता था। तुमने इसी बात से यह मान लिया कि मेरी गुप्त मनोवृत्ति पुरुष की छाया से ही दूर रहने का प्रयास करती है तथा इसी कारण मुझे पुरुष जाति से घृणा है। इस प्रकार पुरुष जाति के प्रति अस्पृश्य भाव के कारण मैं अपने आप के आवेगों का दमन करती रही हूँ। इन आवेगों का शमन पूर्ण रूपेण न होने के कारण ही मैं सुखी दाम्पत्य का सुख भोगने वाली अन्य स्त्रियों के प्रति ईर्ष्या रखती हूँ।

'डाक्टर, तुम्हारे यह सब तर्क मात्र हवाई किले के और कुछ नहीं हैं। नहीं नहीं, डाक्टर तुम्हें यह पढ़ कर आश्चर्य होगा कि मैं पुरुष जाति से अस्पृश्य भाव न रख कर तुम्हारे प्रति ही अस्पृश्य भाव रखती हूं। प्रथम

परिचय को प्रथम भेंट से ही-किसी कुछ विपरीत अनुभूति के कारण मैं तुमसे सदैव दूर रहने का प्रयास करती रही। समस्त पुरुष जाति के प्रति इतनी घोर घृणा करने से पूर्व मैं इतना तो भली प्रकार से सोचती ही हू कि मेरे पिताजी भी तो पुरुष जाति मे से एक हैं''''किन्तु जैसे पिता-पुत्र-भाई- पुरुष होने के सिवाय भी कुछ और होते हैं, उसी प्रकार एक डाक्टर भी पुरुष होने के अतिरिक्त पुरुष होने से कुछ कम नही होता है। अति खेद के साथ यह नग्न सत्य स्पष्ट कर देने मे तनिक भी दु ख नही कि तुम मेरे लिये एक डाक्टर न होकर एक अनइच्छित पर पुरुष बने हुए थे।

'डाक्टर अपने अन्तर को खोज करके देखो''''।

'स्टीमर के दूसरे सभी रोगियो की ओर ध्यान न देकर तुम रात दिन मेरी ओर मेरे पिता की टहल चाकरी मे क्यो व्यस्त रहते थे? क्या इस प्रकार एक वेतन भोगी डाक्टर के रूप मे तुम अपने कर्त्तव्य से च्युक्त नही हुए? क्या तुमने अपना कर्त्तव्य पूरी तरह पालन किया? तुम केवल मेरे रोग का निदान करने मे ही व्यस्त नही थे? तुम मेरे अचेतन मन के भेद जानकर मेरे रोग का मूल कारण ज्ञात करने को परेशान थे? परन्तु तुमने मेरे रोग का निदान किया, इससे पूर्व मैंने तुम्हारे रोग का निदान कर लिया था। तुम स्वयम् जिससे अज्ञात थे। उस तुम्हारे गुप्त रोग का मूल कारण मैंने खोज लिया था।

बात को अब मैं स्पष्ट लिखू डाक्टर! तुम मुझे चाहते थे। मैंने प्रथम भेंट मे ही तुम्हारी आखो मे दहकते हुए अगारो के ताप को जान लिया था। मैं यह बात स्वीकार करती हूँ कि मेरे रूप-लावण्य पर मोहित होकर तुम मेरे से प्यार करने लगे हो, ऐसी कोई बात नही थी। यदि मैं ऐसा आक्षेप करू तो यह मेरी मूर्खता होगी, वस्तुत मुझसे प्यार करने का कोई दूसरा ही कारण था?

किन्तु पहले मैं उस कारण को नही जान सकी। किन्तु मुझे खुशी है कि प्रवास के अन्तिम दिनो तुम्हारे मु ह से ही आतिशा की कहानी सुन कर मैं तुम्हारे रोग का कारण जानने मे सफल हो गई।

तुम्हारे प्रवेश के साथ ही पिताजी ने मेरा परिचय देते हुए मेरा नाम बताया 'उष्मा।'

मेरा नाम सुनते ही तुम्हारे अन्तर की दहकती आग की ऊपर की राख उड गई और उस चिनगारी ने जोर पकड लिया। आतिशा के साथ मेरा नाम कितना मिलता-जुलता है और इसी कारण तुम उस दिन से ही अपनी खोई हुई आतिशा, को खोजने मे लगे हुए थे। उष्मा की ठडी निर्मम आखो मे तुम आतिशा, आतिशा की स्नेह पिपासु आखें ढू ढ रहे थे तथा उष्मा के शात निर्विकार चेहरे मे आतिशा का प्रेमासक्त चेहरा''''तथा उष्मा के सदैव

के विरोधात्मक तेज स्वभाव में तुम आतिशा का संवेदनात्मक होने पर भी अभिमानी तेज स्वभाव की खोज कर रहे थे।

यही कारण था कि तुम्हें मेरी ओर से अपमान-फटकार-शोला-लाछन एवम् विडम्बना के दहकते अंगारे मिलने पर भी तुम उन्हें हँसते हुए झेलते रहते थे। मेरी ओर से पुरस्कार में प्राप्त अपमान और शोलों से तुम्हारा प्यासा वियोगी मन संतोष की एक सांस लेता था। यही कारण था कि तुम अपनी सम्पूर्ण शक्ति से सदैव मेरी सेवा चाकरी करते रहते थे। मेरा रोग जड मूल से शमन करने का तुमने प्रण ले रखा था, यही नहीं मेरा रोग न शमन होने की स्थिति में तुमने सागर में डूब कर मर जाने की नितांत शक्य इच्छा भी व्यक्त की थी।

यद्यपि तुम्हारा प्रण शंकित था''किन्तु मैंने इस प्रण को यदि चुनौती दी होती तो मेरा यह दृढ निश्चय था कि मेरा हृदय जीतने को तुमने यह अन्तिम मौका भी हाथ से नहीं जाने दिया होता और तुम सागर में कूद पड़े होते।

डाक्टर, तुम्हारे इस अपूर्व एवम् अत्यधिक प्यार के इस उन्मत्त आवेग पर मुझे बेहद खुशी है""किन्तु तुम्हारी बेचैनी को समेटने का पाप मैं नहीं करना चाहती हूं। तुम्हारे कठिन मार्ग में मैं अपने हाथों से सफलता के पुष्प बिखेरने में असमर्थ हूं। मेरा धर्म तो यह है कि मुझे लक्ष्य करके तुम जिस मार्ग से मेरी ओर तेजी से बढ रहे हो, उसमें कांटे बोती रहूँ। यही सोचकर मैंने अपनी सम्पूर्ण शक्ति से इस मार्ग में सदैव कांटे ही बोये हैं। एक ओर मैं अपनी समग्र शक्ति से तुम्हें अपने नजदीक आने में बाधा डालती रही तो इसके विपरीत दूसरी ओर तुमने अपनी समग्र शक्ति से मेरे पास आने का भरसक प्रयत्न किया।

मुझे असीम प्रसन्नता है कि मैं अपने प्रयत्न में सफल रही। तुम मुझे निष्ठुर अवश्य मानोगे, भले ही मानो। किन्तु डाक्टर, तुम्हें यह नहीं भूलना चाहिये कि उष्मा एक परणिता नारी है। मुझे अपने पति से चाहे कितनी ही घृणा क्यों न हो, किन्तु मुझे उसके साथ ही अपना जीवन व्यतीत करना है। मेरे जीवन में आये इस भयंकर उपद्रव के अतिरिक्त मेरे पिताजी अब कोई उपद्रव बर्दाश्त नहीं कर सकते हैं, यह बात मेरी तरह तुम भी भली प्रकार से जानते हो। सदैव हँसती रहकर अपने पिता के अन्तिम दिनों को अच्छा बनाये रखना यह मेरा परम पुनीत कर्त्तव्य है।

इसी प्रकार रोगी को मात्र रोगी की तरह देखने के सिवाय किसी अन्य दृष्टि से न देखने का तुम्हारा पुनीत कर्त्तव्य है।

कभी कोई नई आतिशा उत्पन्न होकर तुम्हारे मन के अभाव को यदि पूरा

सूचना दे रहा था " और इलेक्ट्रोमीटर""?

केप्टिन एकदम चिल्लाया . 'मेगनेट पर रेडियो की एक्टेविटी का प्रभाव है। कुतुबनुमा सही दिशा नही बता रहा है "" । पल्सोमीटर चालू कर दिया जाय " और स्पीडोमीटर नियन्त्रित किया जाय।

स्पीडोमीटर की सूई बीस पर आगई। केप्टिन ने मेगनीफायर की ओर देखना शुरू किया। चारो ओर अन्धेरे के कारण कुछ भी दिखाई नही पड रहा था। केबिन के विण्डस्क्रीन पर वाइपर्स तेजी से आगे पीछे घूम रही थी। धनघोर वर्षा के कारण आज ग्लास साफ नही दिख रहे थे। हाइग्रोमीटर की सूई अपनी सीमा लाघ कर थर थर काप रही थी। एनीमोमीटर""बेरोमीटर " गेसोमीटर ! मेरीनर्स कम्पास गलत दिशा बता रहा था। केप्टिन यह नही सोच पा रहा था कि अब क्या किया जाय। व्याकुलता के कारण उसे एक क्षण का भी अवकाश नही था।

अतल फूटने के समान समुद्र घोर गर्जना कर रहा था। हाइड्रोमीटर को देखकर केप्टिन ने फिर से स्पीड बढाने का आदेश दिया"" फुल स्पीड' ! स्पीडोमीटर घूमकर आकडे बताने लगा, बीस"" तीस"" चालीस "" पचास ! पचास पर जाकर काटा रुक गया। प्रोपेलर्स की अति तीखी आवाज से ऐसा प्रतीत हुआ मानो यह टूट टूटकर अभी टुकडे टुकडे हो जायगें। स्टीमर गोलाकार वृत्त मे घूम रहा है। पतवार खेने वालो के हाथ से पतवार छूट पडी थी।

प्रलयकारी ताण्डव नृत्य प्रारम्भ हो गया"" केप्टिन इधर उधर भाग दौड कर रहा था " और अधिकारीगण"" ?

आधा घंटे तक टाइफन तूफान का भयकर प्रभाव रहा। एनीमोमीटर के पीछे की ओर आ रही सूई इस बात का सकेत स्पष्ट रूप से दे रही थी कि वायु का दबाव कम होने लगा है""वर्षा का शोरगुल और बिजली की कडक"" और तरगो की गर्जना " थके यात्री के समान सरलता से धीमी होने लगी। केप्टिन के पास कुछ खिसककर हिमाशु ने पीछे नजर घुमाकर देखा"" ।

उसके ठीक पीछे ही उष्मा खड़ी थी।

धीमे किन्तु निर्भीक स्वर मे बोली : 'तूफान अब समाप्त होता जा रहा है, क्यों क्या तबियत ठीक नही है ? चलो हम अपने केबिन मे चलें।'

हिमाशु कुछ कहे कि इससे पहले ही उष्मा ने उसका दृढता से हाथ पकड़कर कोरीडोर की ओर कदम बढ़ाये। यत्र के समान उसके पीछे चलते हुये हिमांशु ने गूढ रहस्य मे कहना शुरू किया 'मैं यह नही समझ सका हूँ कि""तू तू""!'

'मैं यहाँ पर कैसे आगई। मैं किस कारण से आई—किसके बहकावे से आगई—यही सब बातें है न ? केबिन का दरवाजा खोलते हुए अगलम्भ हास्य

बिजलियो की कड़क की"" सागर के गर्जना की ""हवा के तूफान की "" ! यात्रियो की व्याकुल चीखों की"" ।

पागल हुई वायु ने नगा नाच प्रारम्भ कर दिया । समुद्र ने अपनी मर्यादा लाघ ली""टाइक्न के ताडव नृत्य के पहने ठेके मे स्टीमर के लात मारी ।

देखते हीदेखते तरगो की राक्षसी सहस्त्र बाहुओ मे स्टीमर फदे मे पड गया। स्टीमर पर एक पर्वतीय तरग का झोका आया । किन्तु पाच ही क्षण मे यह तरग शान्त हो गई"" मात्र स्टीमर उलटते उलटते बच गया"" ! किन्तु हिमाशु नही"" ! हिमाशु गिर गया । सामने खडी उष्मा, हिमाशु पर जा पडी । किन्तु वह जल्दी से खडी हो गई । दीवार का सहारा लेकर, दूसरे हाथ से हिमाशु का हाथ पकडकर उसने कहा चलो, चलो केबिन मे चलो"" !

ऊपर से केप्टिन तथा दूसरे अधिकारी सीढी पार करके एन्जिन रूम की ओर दौडने लगे । डाक्टर को देखकर केप्टिन चिल्लाया : 'ऐन्जिन रूम मे आओ"" जल्दी आओ"" ।'

ऐसे नाजुक समय मे डाक्टर को स्टॉफ के बीच मे रहना आवश्यक होता है । दुर्भाग्य से यदि किसी को चोट लग जाये तो उसकी तात्कालिक चिकित्सा की जा सके । इसके लिये सब तैयारी रखना जरूरी होता है ।

बैग लेकर हिमाशु ऐन्जिन की ओर दौडा । हिमाशु के पीछे पीछे उष्मा भी""! तरगो के कारण स्टीमर मे एक बार फिर उथल पुथल मच गई फिर उथल-पुथल मची"" इस प्रकार का क्रम बराबर चलता ही रहा । एन्जिन रूम मे भी सब उथल-पुथल हो गया । धधकती हुई भट्टी मे से चारो तरफ अगारे बिखर गये ।

फायरमेन और एक दो दूसरे खलासी आग से जल गये । स्टार्ट के खम्भे से टकराकर मशीनमेन का सिर फट गया । डाक्टर ने जल्दी से तात्कालिक सहायता का प्रबन्ध कर दिया । केप्टिन ने ओटोमेटिक मीटर की सूई देखी—भाप की गति को देखा और इजीनियर को कुछ हिदायतें दी । मशीनमेन को जल्दी से तेज गति करने का आदेश दिया गया । इसके बाद वह अपने केबिन की ओर दौड पड़ा । उसके पीछे-पीछे उसके सहायक""सहायको के पीछे डाक्टर ""पीछे-पीछे उष्मा । स्पीडोमीटर की सूइयाँ तीस लॉग की गति बता रही थी, किन्तु तरगो के कारण प्रोपेलर्स अपना काम पूरी तरह से नही कर रहा था । स्पीडोमीटर की सूई चालीस पर जा पहुँची, किन्तु वास्तविक गति दस से ज्यादा नही हो सकी । केप्टिन ने क्रोनोमीटर की सूई को देखा । स्टीमर इस समय विषुवत् रेखा के बहुत ऊपर बीसवें अक्षांस से बहुत नीचे निब्बे रेखाश के बिल्कुल मध्य मे चल रहा था । किन्तु स्टीमर वास्तव मे नैरत्य दिशा मे ही चल रहा था ! मेग्नोमीटर-क्षेत्रीय वातावरण की उथल-पुथल की

सूचना दे रहा था ...और इलेक्ट्रोमीटर....?

केप्टिन एकदम चिल्लाया : 'मेगनेट पर रेडियो की एक्टेविटी का प्रभाव है। कुतुबनुमा सही दिशा नही बता रहा है ... । पल्सोमीटर चालू कर दिया जाय... और स्पीडोमीटर नियंत्रित किया जाय।

स्पीडोमीटर की सूई बीस पर आगई। केप्टिन ने मेगनीफायर की ओर देखना शुरू किया। चारो ओर अंधेरे के कारण कुछ भी दिखाई नही पड रहा था। केबिन के विण्डस्क्रीन पर वाइपर्स तेजी से आगे पीछे घूम रहे थी। घनघोर वर्षा के कारण आज ग्लास साफ नही दिख रहे थे। हाइग्रोमीटर की सूई अपनी सीमा लाघ कर थर थर काप रही थी। एनीमोमीटर....बेरोमीटर ....गेसोमीटर..! मेरीनर्स कम्पास गलत दिशा बता रहा था। केप्टिन यह नही सोच पा रहा था कि अब क्या किया जाय। व्याकुलता के कारण उसे एक क्षण का भी अवकाश नही था।

अतल फूटने के समान समुद्र घोर गर्जना कर रहा था। हाइड्रोमीटर को देखकर केप्टिन ने फिर से स्पीड बढाने का आदेश दिया..... फुल स्पीड . . । स्पीडोमीटर घूमकर आकडे बताने लगा, बीस.... तीस.... चालीस ....पचास ! पचास पर जाकर काटा रुक गया। प्रोपेलर्स की अति तीखी आवाज से ऐसा प्रतीत हुआ मानो यह टूट टूटकर अभी टुकडे टुकडे हो जायगें। स्टीमर गोलाकार वृत्त मे घूम रहा है। पतवार खेने वालो के हाथ से पतवार छुट पडी थी।

प्रलयकारी ताण्डव नृत्य प्रारम्भ हो गया... केप्टिन इधर उधर भाग दौड कर रहा था... और अधिकारीगण....?

आधा घटे तक टाइफन तूफान का भयंकर प्रभाव रहा। एनीमोमीटर के पीछे की ओर आ रही सूई इस बात का सकेत स्पष्ट रूप से दे रही थी कि वायु का दबाव कम होने लगा है....वर्षा का शोरगुल और बिजली की कडक.... और तरगो की गर्जना.....थके यात्री के समान सरलता से धीमी होने लगी। केप्टिन के पास कुछ खिसक्कर हिमाशु ने पीछे नजर घुमाकर देखा.... ।

उसके ठीक पीछे ही उष्मा खडी थी।

धीमे किन्तु निर्भीक स्वर मे बोली : 'तूफान अब समाप्त होता जा रहा है, क्यो क्या तबियत ठीक नही है ? चलो हम अपने केबिन में चलें।'

हिमांशु कुछ कहे कि इससे पहले ही उष्मा ने उसका दृढता से हाथ पकड़कर कोरीडोर की ओर कदम बढाये। यत्र के समान उसके पीछे चलते हुये हिमाशु ने गूढ रहस्य से कहना शुरू किया · 'मैं यह नही समझ सका हूँ कि....तू तू....!'

'मैं यहाँ पर कैसे आगई। मैं किस कारण से आई—किसके बहकावे से आगई—यही सब बातें है न ? केबिन का दरवाजा खोलते हुए प्रगलभ हास्य

करती हुई उष्मा बोली : 'मैं सब बता दूंगी....किन्तु प्रकृति के अभी आये तूफान की तरह तुम्हारे मन मे आये तूफान को भी कुछ शात होने दीजिये।'

कॉट पर लेटते हुये हिमाशु को ऐसा लगा कि उसके मन मे मानो एक भयकर तूफान आ रहा है।

उष्मा के विचार, दर्शनो के साथ-साथ मानो उसके अ तर-बाह्य का सम्मान सज्ञा वह खो चुका है और वह किसी अगम-निगम की रहस्यमय सृष्टि मे पहुँच गया है। जहाँ पहुँच कर विचार शक्ति स्वत ही लुप्त हो जाती है और प्राण..... ...।

अरी माँ! 'तुमको कितना तेज बुखार है। ऐसी हालत मे अब तुम बाहर मत निकलना। उष्मा ने हिमाशु की कलई को सहज रूप मे जोर से दबाया.... और छोड दिया, बस, दूसरो की सेवा टहल मे ही आप व्यस्त रहेगे या फिर अपने शरीर का भी कुछ ख्याल रक्खेंगे ?'

'शरीर का ख्याल ?'

व्यथित हिमाशु हृदय चीरने वाली हँसी हँसा : 'मेरे रोग का निदान तो मेरी बजाय तुमने ही बहुत भली प्रकार कर लिया है। सम्भवतया तुमने मेरे रोग का वह निदान किया है, जो ससार का कोई डाक्टर कर सकने मे समर्थ नही....।'

'हाँ....अब भी मैं अपने निदान पर दृढ हूँ।' उसने दृढता से कहा : 'तुम्हारा रोग किसी भी डाक्टर को मालूम हो सकना सभव नही था। तुम्हारे गुप्त रोग को मात्र मैं ही जान सकने मे समर्थ हो सकी हूँ। किन्तु मैं इस बात को स्पष्ट रूप से स्वीकार करती हूँ कि रोग का निदान करते समय रोग को मिटाने के लिये मेरे पास दवा भी थी, किन्तु दवा का प्रयोग कर सकने मे मैं असमर्थ थी। तुम्हारे रोग का इलाज मेरे पास होने पर भी मैं उसका प्रयोग कर सकने की उस स्थिति मे नही थी।'

अब क्या मेरा दर्द मिटा करके मुझे उपकृत करने को आई हो ?'

'रोग मिटा करके यदि आपको उपकृत कर दिया जाये तो फिर तुम्ह मेरी आवश्यकता नहीं रहेगी।' उष्मा मुक्त भाव से हँसने लगी : 'हिमाशु! मैं इतनी भोली डाक्टर नही कि रोगी को समझने के लिये अपने हाथ से रोगी को निकल जाने दू ''।

कुछ क्षण रुककर उसने फिर कहना शुरू किया : *एलोपैथी की यह कह-कर आलोचना की जाती है कि इस पद्धति मे पुराने रोग को मिटाकर नया रोग पैदा कर दिया जाता है*....मैं आतिशा के विरह की आतिश में जल रहे प्रेम मग्न हताश डाक्टर का पुराना दर्द मिटाकर उसे नया दर्द बख्शीश करने को आई हूँ.... ! हाँ यह बात सही है कि पुराने दर्द की अपेक्षा यह नया दर्द

कम दुखदायी होगा। आतिशा की उग्र भडकनी हुई शिखाओ को सहन करने की अपेक्षा उष्मा की गर्म भाप मात्र को ही सहन करना होगा।

हिमाशु के बढ़ते हुए ज्वर ने मन-प्राण-शरीर में से इस गर्मी को निकालना शुरू किया। कापती आवाज मे उसने मैमने की तरह कहना शुरू किया 'जिस दर्द को मैंने व्यर्थ मे ही अपने सीने से लगा लिया है, उसके स्थान पर अब मैं नया दर्द सहन करने मे असमर्थ हूं। उष्मा, अब तुम मुझे आतिशा की प्रचण्ड ज्वाला की अपेक्षा महासागर के ठण्डे जल मे विलीन हो जाने दो। मुझे अब पृथ्वी की इच्छा नही, मुझे अब बर्फीले ध्रुव की इच्छा है।'

धरती की अपेक्षा सागर तिगुना बडा है, हिमांशु! अब यदि तुम्हे धरती की गोद मे घूमने की इच्छा नही है तो हम महासागर की गोदी मे घूमते रहगे" सदा, सदा के लिये घूमते रहेंगे। हम लोग जुलेवन के केप्टिन नेमो की तरह अपने जीवन और मृत्यु को महासागर के प्रेम भरे हाथो मे सौप देंगे।'

'उष्मा! अपने पत्र मे मेरे पर लगाये गये कलक को स्वीकार करने के उपरान्त भी क्या तू मेरे साथ जीवन यात्रा पूर्ण करने का निश्चय कर चुकी है?'

'हिमाशु तुम्हारा कलक चन्द्रमा के कलक समान है।' उष्मा ने आज प्रथम बार शान्तिपूर्ण वास्तविक हँसी, हँसी 'चन्द्र को उसके कलक सहित ही स्वीकार किया जाता है। बिना कलक के चन्द्र को स्वीकार करने मे वह केवल अधूरा ही नहीं, अपितु अशोभनीय भी प्रतीत होगा।'

उष्मा की बात सुनकर हिमाशु को ऐसा प्रतीत हुआ, मानो एक अद्भुत स्वप्न की चिर-परिचित धरा पर किसी अवर्णनीय गीत की इधर-उधर बिखरी हुई कडिया जोर कर एक बार फिर महासागर की ठडी हवा उसके सन्मुख नवीन गुंज-गमक फैलाती गाती हँसती लहरा रही हो। उष्मा अपनी सारी कहानी बूद बूद करके टपकाती जाती, मेघमाला के समान शनै शनै सुनाने लगी 'मैं यह भली प्रकार जानती हूँ कि मैंने तुम्हें बहुत सताया है। किन्तु तुम तो जानते हो कि मेरे सारे प्रयत्न पिताजी को प्रसन्न रखने के लिये थे। मैं उनकी सदैव की सुखमयी जिन्दगी के आखिरी दिन भी इसी प्रकार निष्कटक रखना चाहती थी" "इसी कारण मैंने अपनी आतक प्रज्जवलित अग्नि से अपनी समग्र शक्ति से राख मे लवलीन रखा" किन्तु पिताजी तो चले गये और जिस क्षण उन्होने प्राण छोडा, ठीक उसी समय मेरे सासारिक जीवन को बन्धन से बाधने वाली प्राण हरने वाली नवली रस्सियो की गाँठें ढीली हो गई। पिताजी की मृत्यु के साथ ही।

'मैंने स्वेच्छा से स्वीकृत पितृ-सुख की वांछना करने वाले अदृश्य भावना ततुओं के बधनों को अपने हाथों से तोड़ दिया "मैं निर्बंध हो गई"। विगत के पर्दे फाड़कर मैंने वर्तमान की मुक्त धरती पर सर्व प्रथम श्वास लिया""।'

'पिताजी को क्या फिर से हार्टअटेक हुआ था ?'

'हाँ'''। बम्बई के अस्पताल मे दाखिल होते ही उनको दिल का दौरा पडा। डाक्टरो ने अपनी ओर से किसी प्रकार की कमी नही रखी, किन्तु इस अन्तिम अटेक ने उनकी जान ही ले ली। अपने जीवन के अन्तिम क्षणो मे मेरा मुह पकड कर, आसू ढलकाते हुए कहने लगे. 'बेटी, तेरा दर्द मेरे से छिपा नही है, मुझे सब कुछ मालूम हो चुका है। मैंने अपनी मूर्खता से जल्दी म बिना आगे पीछे का विचार किये तुझे नर्क मे धकेल दिया ! किन्तु इस पर भी मेरी इच्छा अभी पूरी नही हो सकी है बेटी ! मैं अब जा रहा हूँ, किन्तु मेरी आशातुर आत्मा अपनी अन्तिम इच्छा की पूर्ति की सदैव प्रतीक्षा करेगी।'

मैंने एकदम चौंक कर पूछा - 'पिताजी, आप क्या कह रहे हैं ?'

चढते श्वास मे हिचकी दबा कर वे कहने लगे बेटी, तूने अपने मन की बात छिपाने का लाख प्रयत्न किया है, किन्तु इस पर भी मैं सब बात जान गया हूँ। तेरा सतृप्त हृदय यह सब छोडकर कही अन्यत्र स्थान पर जाने को व्यग्र हो रहा है। तेरा निराधार प्राण डाक्टर हिमाशु की शीतल छत्र छाया की याचना कर रहा है। बता तो सही कि क्या मैं झूठ बोल रहा हूँ ?'

अपने पिता की अन्तिम घडिया देखकर सब लाज सकोच को त्याग कर मैंने कह दिया 'पिता जी आप सही बात कह रहे हैं।'

'स्टीमर मे मैंने यह सब कुछ देख लिया था बेटी ! वे अतीव आनन्द मे फिर से कहने लगे - 'अनग को समझाना, बेटी ! अपने सभी सम्भव प्रयत्न करके उससे तलाक ले लेना। परन्तु सम्भव है कि तरे से यह सब नहीं हो सके, अतएव तू डाक्टर की मदद ले लेना। डाक्टर को कहना, जिसको तुमने अपने अन्तर की आत्मा से सदा ही अकल के नाम से सम्बोधित किया है, उसी तुम्हारे बुजुर्ग की यह अन्तिम इच्छा, यह थी। इस ससार के करोडो व्यक्तियो म मात्र वही एक ऐसा व्यक्ति है, जो यदि चाहेगा तो तेरा उद्धार अवश्य कर सकता है। डाक्टर हिमाशु ही तेरा उद्धार करने के लिये सक्षम व्यक्ति हैं !'

इतनी सारी बात लगातार एक ही श्वास मे कह देने के बाद उष्मा एकदम चुप हो गई। हिमाशु का बुखार जो अब तक सौ पर था, सहसा एक सौ दो पर पहुँच गया। खांसी का वेग इतना जोर से हुआ कि वह ठहर नहीं सका।

हिमाशु की व्यग्र छाती पर उष्मा ने हाथ फेरते हुए पूछा - 'खासी की दवा कहाँ रक्खी है ?

हिमाशु, उष्मा को उत्तर देने मे असमर्थ था। उसे उष्मा की आवाज किसी पारलौकिक सृष्टि से आ रही किसी गूढ आवाज-सी लगी। वह साहस

एकदम चौंक पडा। उसे उष्मा की आँखो मे एक तेज प्रकाश चमकता हुआ दृष्टिगत हुआ ! हिमाशु के अशान्त मन को विद्युत गति से शात करके चैतन्यमान अणुओ को समूलत नष्ट कर दिया। स्वप्नलोक से सुनाई पड रहे किसी अतरिक्ष भेदी स्वर उसकी श्रुतियो पर कैसा अगम्य रखकर फैलाता हुआ कोई तारक पंख फड़फड़ाता हुआ जा रहा था ?'

इन्द्र, अट्टालिका से खडी होकर सुधामृत की बूदे बरसाती किसी देव कन्या के समान–उसके ललाट पर उष्मा के स्नेहसिक्त हाथो से सुधा माधुरी टपक रही थी !

उष्मा ने अपने आप खासी की दवा ढूंढ कर एक गोली डाक्टर हिमाशु को दे दी।

रात्रि मे उष्मा ने टेम्प्रेचर लिया····एक-सौ चार····। रात मे सर्दी खूब तेज थी। रात भर हल्की जोरदार वर्षा होती रही। तदुपरान्त एकदम तूफान शुरू हो गया। प्रभात समय मे वर्षा एकदम बद हो गई। स्टीमर तेज गति से आगे बढता जा रहा था। बहुत आगे····। उस स्थान पर जहा पर वर्षा, बिजली–तूफान-वायु का नामोनिशान ही नही था। क्षितिज को छू रहा निर्मल आकाश विस्तृत सागर का आलिंगन करते हुये ऐसा प्रतीत हो रहा था, मानो भगवान् शिव का नदी गगा का जल पान कर रहा हो !

उष्मा बुखार मे तडफते हुये तन्द्रासुप्त हिमाशु के पास रात भर जागती बैठी रही। सुबह होते ही उसने फिर से टेम्प्रेचर लिया।

'ओह !' सतोष की सास लेते हुए उसने कहा 'एकदम नार्मल !'

उठो, चलो प्रात कालीन कार्यों से निवृत्त होकर स्फूर्ति मे आ जाओ।

यह किसका आदेश है ? किस अधिकार से, किस अचल श्रद्धा के अटूट तार पर स्वमेव बहती आ रही यह रस मिश्रित स्नेह वाणी किसका सस्पर्श लेकर इस अकेलेपन मे कुंठित मन पर मौन ममता की सहस्त्र धाराए छोड रही है ?

मूर्ख सा बैठा हुआ हिमांशु मन इसे कभी–कैसे भी समझ सकने से समर्थ नही है।

प्रात कालीन कामो से निपटते ही उष्मा ने कहा : 'चलो, हम लोग बॉलकोनी मे चाय पीयेगें, तुम्हारी सदैव की प्रिय जगह पर····।'

अशक्त हिमाशु को सहारा देने के लिये उष्मा ने अपने स्वस्थ हाथो से उसकी बॉह पकडी। कुछ खासने के बाद हिमाशु ने बहुत धीरे से कहा : 'उष्मा, एक पुरुष से भयभीत होने के बाद क्या उसी पुरुष वर्ग के दूसरे पुरुषो पर तुम विश्वास कर सकोगी ?'

'तनिक बाहर चलो, मैं तुम्हारे इस प्रश्न का उत्तर दे देती हूँ। उस

इतना कह कर हिमांशु को कुर्सी पर बैठा दिया। रेलिंग पर शरीर को झुलाते हुए अति मधुर स्वर मे वह कहने लगी . 'तुम्हारे पवित्र पुरुषत्व को मैंने जिस घृणा से लात मारी है। क्या तुम उसे अब भी नही भूल पा रहे हो ! तुम नही समझ सकते, हिमांशु ! मैं उस समय ऐसी स्थिति मे नहीं थी कि तुम्हारी उत्कंठ-प्रच्छन्न तृष्णा को अवलम्बन दे सकूं। मैं तुम्हारे एकाकी मन की व्याकुलता को भली प्रकार समझ चुकी थी। मैं यह भी भली प्रकार जान चुकी थी कि तुम्हारे प्रेमोत्सुक गुप्त अचेतन मन को यदि एक तीव्र प्रहार से मूर्छित करना अत्यावश्यक है। मैं यह भी जानती थी कि यदि ऐसा सम्भव नही हुआ तो आने वाले समय मे जीवनपर्यंन्त तुम उष्मा के विरह मे उसी प्रकार सुलगते रहोगे, जैसा कि आतिशा के विरह में सुलगते रहे हो आतिशा की तरह मधुर स्मरणो से एक बार तुम्हारा मन भर कर सदैव के लिये तुम्हे आग म जलते रहने की अपेक्षा मैं पहले से ही तुम्हे कटु स्मृतियो का पाथेय देना अच्छा समझती थी, जिससे कि यदि भूले भटके सुबह या विषाद की गम्भीर सन्ध्या मे वह पाथेय हाथ मे भी आ जाय तो मुह मे जिसे चबाने को मन न चाहे।'

इतनी गम्भीर बात करते हुए भी उष्मा जोर से हँसने लगी 'हिमांशु, गहन अन्धकार के विवर गुंज-कुंज की भीड मे नाचती मस्त, उष्मा की अभिवाछित तस्वीर तुम्हारे मनोचक्षु सम्मुख उपस्थित होकर अपने चिरपरिचित हास्य से तुम्हारी अन्तर्ज्वाला को सुलगाए''' भूले भटके भी उष्मा की याद तुम्हे न सतावे इसीलिए।'

'उष्मा, मैं इस याद को हँसते हुये आजीवन सहन कर सकने मे समर्थ था, किन्तु तुझे सहन करने की शक्ति मेरे पास कहा है! तेरे द्वारा दी गई कडवी या मीठी स्मृतियो को सजो कर रख सकता था, किंतु मैं तुझे कैसे सजो सकू गा ? किस प्रकार कहा ले जाकर रखूंगा, मैं यह समझने मे असमर्थ हूँ''''। मेरे कोई घर नहीं है। कोई ठिकाना नही, बस, केवल इस स्टीमर के अलावा कुछ भी नही है। मैं अपना जीवन तो जैसे तैसे यहा निकाल लू गा। किन्तु इस तूफानी अर्णव की जोखिम गोद में, मैं तुम्हे कैसे सम्भाल सकू गा ?'

'मिथ्या, आत्म प्रवचना मत करो हिमांशु ! मैं यह प्रार्थना करने तुम्हारे पास नही आई कि तुम मुझे सभालो ! जो अपने को ही सभालने मे असमर्थ है, वह मेरी सदैव दहकती तिग्मपन तेजोष्मा को सभालने मे कैसे समर्थ हो सकता है ? अतएव मैं तो स्वयम् यह चाहती हूं कि ''स्वयम् तुमको सभालने को''''आई हूं''' हां तुमको '''। देखो, दूर देखो, वहा क्या दिखाई दे रहा है ?'

उष्मा ने अगुंली से क्षितिज की ओर सकेत किया : 'जहा सागर आकाश के अधूरे वृत्त को छू रहा है, यह वह स्थान है, जो हमारे स्वप्नो को

बनाते हुए हमारी धडकनो को स्पर्श करता जा रहा है । यह वही स्थान है जहा अक्षास और देशान्तर अपने परस्पर के भेदों को भूल कर एक दूसरे का दृढ आलिंगन कर लेती है और ध्रुव तथा वृत्त एक हो जाते है। यहा पर ध्रुव का अचल प्रकाश अन्य प्रकार के सभी प्रकाशो को परास्त करके अवनि के हृदय को बाध लेता है तथा एक महासागर से गले मिलने को दूसरा महासागर तेजी से दौडता आता है और इसके साथ ही इसी दशा म वह एक स्थान है जहा आकाश धरती को चूमता है वही स्थल हमारा विश्राम स्थल है।

यह काव्य मय रूपक नि सन्देह एक छल के सिवाय क्या है ? जहा आकाश धरती को चमता है यह हमारे दृष्टि भ्रम क्षितिज पर पहुँचने के पश्चात ऐसा ही दूसरा क्षितिज दिखाई देने लगता है। इसका कहीं कोई अत नही है।

हम अत की खोज मे नहीं जाना है। हमे उदय की खोज पर पहुँचना है। हम अपनी नित्य उत्पन्न होती पनपती तथा विस्तृत हो रही भावनाओ का आभास करने वाला क्षितिज हम से छल नही करता है। यदि हम पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ इसकी ओर बढेगें तो हमारी मनो कामनाएँ क्षितिज अवश्य फलीभूत करेगा ही—वह हमारे दृष्टि भ्रम की सजना न होकर हमारी आत्म श्रद्धा की सजना होगी। जहा पर आकाश वास्तव म धरती को चूमता होगा ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार कि किसी दिन तुम अपनी आतिशा को ।

स्टीमर ने एक तीखी व्हिसिल बजाई। यह व्हिसिल पहले के समान कठोर नहीं थी अपितु मधुर सगीत की लय समान ।

बात बीच मे काटते हुए उष्मा ने बात का रुख बदला घबराओ मत। *मैं अब व्हिसिल से नही डरती हू। मेरा हिस्टीरिया अब जा चुका है।* मैं इसे हिन्द के किनारे पर छोड आई हू।

'ठीक है। किन्तु ऐसा लगता है कि तेरा हिस्टीरिया अब मेरा गला पकड लेगा तथा वह समय अब दूर नही है।

तब मैं तुम्हारी उसी प्रकार सेवा चाकरी करूगी जिस प्रकार तुम मेरी सेवा चाकरी कर रह थ।'

इस प्रकार के अटपटे प्रश्नो का क्या उत्तर दे या कौनसा प्रश्न किया जाय, यह हिमाशु को समझ म नही आ रहा था।

हिमाशु को उष्मा के प्रश्न का उत्तर नहीं सूझ पड रहा था ठीक इसी समय रेडियो के माइक पर यकायक यह गाना सुनाई पडा

आज अभावत घिर आये करील के विजन में,

आज उल्कापात होते हैं, तृष्णा के श्याम घन में !
दग्ध उर में नीर बरसाती चली फिर वह हिमानी !
फिर विकल हैं, प्राण धू-धू उड चली जलती निशानी ।।

हिमाशु ने उष्मा की ओर देखा । छत की ओर स्थिरता से देखती उष्मा की आंखो ने जलती निशानी को बुझा दी या नये निशान जला रही थी ?

बस, न पूछो ! रक्त मे किसने भरा है अग्नि आसव !
कौन अगों मे लगता एक आकांक्षा असम्भव !
एक क्षण की सगिनी फिर आह ! युग युग की कहानी !
फिर विकल हैं प्राण धू धू उड चली जलती निशानी !

उसकी आखें झुक गई । वे स्वयम् बन्द हो गई । उद्वेग चिन्ता ! भय ! हास्य या मजाक.... ! नही कुछ नही....केवल स्वप्न.... ! एक भ्रान्ति पूर्ण तरग लीला.... ! बुखार की तन्द्रा मे दृष्टिगत हो रही असभव कल्पनाए !

धीरे-धीरे उसे तन्द्रा के स्थान पर नीद आ गई ।

नीद से उठने पर.. स्वप्न बीत जाने के स्थान पर वह साकार बनकर समीप मे ही आ गया था ।

आखो के सामने....केवल स्थूल आखो के सामने या सूक्ष्म दृष्टि के सामने ?

केबिन मे दूसरी खाट नही थी । हिमाशु की खाट के पास फर्श पर बाहु का तकिया बना कर उष्मा सो रही थी ।

निद्राधीन .. !

हिमाशु ने इसी प्रकार निद्रा मे-तन्द्रा-मे-हिस्टीरिया मे कई बार उष्मा को इसी स्थिति मे देखा था । कभी बर्फ की पडी हुई शिला समान कभी पत्थर की सख्त शिला समान....कभी आग के दहकते अगार समान.... ! आग ....होने पर भी वह आतिश नही.. हिमाशु के हाथ मे अचानक आया हुआ एक केस.... ! केवल हिस्टीरिया का एक केस जिसमे हिमाशु ने रुचि ली थी !

रस.... ! इस बात की साक्षी तो डाक्टर की आखो तथा उच्चारण से स्पष्ट हो रही थी । इन दोनो से रस के श्रोते फूट पडते थे । स्वयम् उष्मा भी बिना किसी हिचकिचाहट के इस तथ्य को मान चुकी थी । एक दो नही अपितु हजारो बालाओ का निरीक्षण कर चुकने के उपरान्त भी जिस प्रकार हिमाशु ने किसी ओर एक उडती नजर से देखने का प्रयास नही किया, उसी डाक्टर देसाई की नजर पहली ही बार न जाने किस प्रकार से—उष्मा की उस अव्यवस्थित होकर पडी बेहोश काया को बिना किसी प्रकार की सूचना दिये ही अपने प्यार बन्धन म दृढता से बाध लिया था ?

उष्मा द्वारा किया गया बार-बार के अपमान की स्मृति मे वह यदा-कदा कम अधिक विचलित हो जाता था ।

रोगी का उपचार करने ग्राया डाक्टर, स्वयम् ही रोगी के सामने विविश गया ! ऐसी कौनसी बात थी ··· ? उष्मा के शून्य सौन्दर्य की वे भडकती वालाएँ···मोडरखिर के प्रवाह की तरह बिखरता हुग्रा ग्रसीम लावण्य ! शान्त किन्तु अंतर्निहित तेज मे दीप्त गोरी गोरी वर्दनिका ··! किन्तु ये सब ो उसकी नितांत निरासक्त ग्राभा के सामने सदा ही निष्फलता प्राप्त करते ो रही है··उष्मा की सुप्त चेतना मे डूबा हुग्रा शरीर नही, ग्रपितु उसके मुख ण्डल पर तैरती हुई एक अंतर्दाह ···! इस तरंगित लावण्य के बीच मे ग्नि शिखा दहकती इस प्रज्ज्वलित ज्योति को हिमांशु ने ग्रपनी प्रथम ष्टि मे ही पहचान लिया था···ग्रौर···ग्रौर···वह ग्रतीव ग्राश्चर्य से उसकी ग्रोर टकटकी लगाये देखता रहा···इस ग्रन्तर्दाह का किंचित मात्र भी निशान उष्मा के शरीर पर दिखाई नही दे रहा था। वे प्रज्ज्वलित शिखाएं न जाने इस अंतर्निहित ग्रात्मतेज मे परिवर्तित होकर उष्मा के मुग्ध प्रशान्त मुख मण्डल पर प्रेमोज्ज्वल ग्राभा बिखेर रही थी··।

ग्रधिकार का तकाजा करने वाली यह वही ग्राभा थी, जो किसी दिन काश्मीर की हिमकन्दराग्रो के मध्य ठंडी लहरों को ग्रपने गले लगाकर शरीर को उष्मा देती ग्रातिशा के रोम हर्षक मुख मण्डल के रोम रोम से दृष्टि गत हो रही थी··!

'ग्रोह··! क्या इसी कारण··· इस निर्लिप्त डाक्टर के प्राणों पर किसी ज्वलंत मोहनी का कोई ग्रतीव तेज चक्र ग्रपने दुर्दम्य ग्राकर्षण की चकाचौंध किरणें बरसाता हुग्रा मुग्ध उर्मियो की ग्रभिनिवेश सृष्टि सृजन करता हुग्रा गोलाकार वृत म घूम रहा था।

हिमांशु कुछ भी समझ सकने मे ग्रसमर्थ था कि वह ग्राखिर किस को देख रहा है। स्वयम् के पति का परित्याग करके एक बवडर की तरह उसकी गोद मे ग्रा पडी एक परिणीता··परस्त्री···उष्मा को।

वही उष्मा जिसकी प्रणय तृषित निर्दोष ग्रांखें ग्रब तक भी भावी दाम्पत्य के स्नेह स्वप्नो की खोज करती हुई, भावी पति के गले मे बांहे डाल रही थी ग्रौर ग्रातिशा को ?

नहीं, यह उष्मा नही केवल ग्रातिशा 'वह परिणीता नही···। यह तो वही थी, जैसी वह कौमार्य ग्रवस्था मे थी··! वही सुपुम पतझड मे जागती वर्षा की सुगन्ध-स्नात परी सी···! झिरमिर झिरमिर बूंदे बरसाती··। पुन कार्वालनी को मुग्ध होकर सचय कर कौतुक भाव से ताकती···। ग्रलमस्त घूमती···! अंग प्रत्यग को मरोडती··हर ग्रदा मे हास्य के फौव्वारे बिखेरती···! गाती···नाचती···मुस्कराती···हँसती···हिमकदरा की एक ग्राशा परी ग्रातिशा···! वही तो उष्मा··?

तब बीच के इन कुछ दिनों के लिये इसने इतना छल प्रपंच क्यों किया ?

सामने की टेबुल पर एक छोटा-सा आयना रखा हुआ था। इस आयने में हिमांशु का फीका-क्लान्त मुख स्पष्ट प्रतिबिम्बित हो रहा था·····! यह बिम्ब हिमांशु को पूछने लगा : 'यह छल किसने किया था ? हिमांशु ने या उष्मा ने····? वह भाग किसकी थी ? उष्मा की या प्रतिशा की ? वह रोगी कौन था ? रोग किसको था ? रोगी या डाक्टर को ? वह यात्रा किसकी थी ? हिमालय के अंक में सोये काश्मीर की····या हिमालय का धर्क लेकर तेजी से बहती, नदियों की जो अन्ततः महासागर की गोद में जाकर समा जाती हैं·· ?

यदि महासागर ने बाहें न फैलाई होती तब-सरिताएं जम गई होती ?

जमे मोती की तरह उष्मा अभी भी मख़्त कठोर फर्श पर पहले की तरह ही पडी है !

आकाश स्वच्छ था। चारों ओर तेज प्रकाश फैला हुआ था। स्टीमर विषुवत् रेखा के समीप हिन्दमहासागर सागर के बीच में स्थिरता से आगे बढ़ता जा रहा था····।

पति का घर त्याग करके अनिश्चित अवस्था में भाग आई उष्मा·· तथा जिसके आकर वह गले लगी है, वही हिमांशु—दोनों की जीवन नैया भी इस समय ठीक मध्य समुद्र में आ चुकी है।

हिमांशु ने दीवार के विण्डग्लासों से आसपास की जल तरंगों पर एक उडती नजर फेंकी·· क्षितिज····! यह वही क्षितिज है, जहां आकाश धरती को चूम रहा है, क्या इसको विजय करने का उत्तरदायित्व हिमांशु के सिर पर आ पड़ा है !

उष्मा का बोझ बांह पर उठाकर····! उष्मा कह रही थी·· नहीं, मैं अपना बोझ तुम्हारे कंधों पर डालने नहीं, अपितु तुम्हारा बोझ अपने कंधों पर उठाने आई हूं····।

एकदम सीधी नींद में सोई लावण्य ललितांगना के वदन कमल से तीखी नासिका से, जुड़े हुए पतले रक्त अधरों से, सुराहीदार गर्दन व अंग प्रत्यंग से फैल रही कामोज्ज्वल प्रदीप्त स्वप्न सरिताओं को डाक्टर हिमांशु मुग्ध होकर प्यार की दृष्टि से टकटकी लगाकर पीता रहा····!

कब तक पीता रहा· · !

इसके बाद वह एकदम उठा। दोनों बांहों से यत्नपूर्वक उठाकर उसने उष्मा को अपने पलंग पर सुला दिया।

डाक्टर ने सोचा उष्मा कदाचित जाग उठेगी····किन्तु वह सोती रही।

विषुवत् रेखा पार करते ही स्टीमर ने एक तीखी व्हिसिल बजाई। किन्तु उष्मा पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा। वह यथावत सोती रही।

हिमांशु ने रिस घुमाकर विण्डस्क्रीन खोल दिया। सारा केबिन ठंडी खारी हवा के झोंकों से बुरी तरह भर गया।

किन्तु उष्मा बराबर सोती रही।

सम्भवतया आज वह अपने दिनों, महीनों की थकान ही नहीं, अपितु जन्म-जन्मान्तर की थकावट उतार रही थी···किसी की सुरक्षित-प्रभाग गोदी में सम्पूर्ण विश्वास से पूर्ण निर्भय से पूर्ण शान्ति से, वह आज सुख की नींद सो रही थी। किसी परितृप्त कामनाओं के सुख प्रवाह को तरंगित करते हुए उसके पीनोत्तुंग उरसिज बड़ी तेजी से ऊँचे-नीचे हो रहे थे।

और अब क्या! बुझ सकेगी क्या कभी तृष्णा पुरानी।

आज जीवन का विसर्जन और यह जलती निशानी।

हिमांशु ने अपनी अशान्त छाती में न समा सकने वाले श्वास को रोक कर अपना मुंह उष्मा के मुंह से लगा दिया। वह उष्मा के मुख की श्वास में से श्वास लेने लगा। ये श्वास लेते समय उसे ऐसा महसूस होने लगा, जैसे वह अपने आप में हिम्मत भर रहा हो।

हिमांशु प्रतिक्षण परितृप्ति के लम्बे-लम्बे श्वास लेने लगा। आनन्द के क्षणों के उछलते आवेग में उसने उष्मा को अपनी मजबूत बाहुपाश में कस लिया।

किन्तु इस पर भी उष्मा सोती ही रही।

हिमाशु ने रिंग घुमाकर विण्डस्क्रीन खोल दिया। सारा केबिन ठंडी खारी हवा के झोंको से बुरी तरह भर गया।

किन्तु उष्मा बराबर सोती रही।

सम्भवतया आज वह अपने दिनों, महीनो की थकान ही नही, अपितु जन्म-जन्मान्तर की थकावट उतार रही थी····किसी की सुरक्षित-अभय गोदी मे सम्पूर्ण विश्वास से पूर्ण निर्भय से पूर्ण शान्ति से, वह आज सुख की नीद सो रही थी। किसी परितृप्त कामनाओ के गुप्त प्रवाह को तरंगित करते हुए उसके पीनोतुंग उरसिज बडी तेजी से ऊचे-नीचे हो रहे थे।

और अब क्या ! बुझ सकेगी क्या कभी तृष्णा पुरानी।

आज जीवन का विसर्जन और यह जलती निशानी।

हिमाशु ने अपनी अशान्त छाती मे न समा सकने वाले श्वास को रोक कर अपना मुह उष्मा के मुह से लगा दिया। वह उष्मा के सुगन्धी श्वास मे से श्वास लेने लगा। ये श्वास लेते समय उसे ऐसा महसूस होने लगा, मानो वह अपने आप मे हिम्मत भर रहा हो।

हिमाशु प्रतिक्षण परितृप्ति के लम्बे-लम्बे श्वास लेने लगा। अदम्य रोम हर्ष के उछलते आवेग मे उसने उष्मा को अपनी मजबूत बाहुपाश मे पकड लिया।

किन्तु इस पर भी उष्मा सोती ही रही।

हवा गाती रही :

> है दृगों मे खिंच रही विद्युत भरी-सी स्वप्न रेखा,
> मेघ पागल हो उठे कैसी प्रलय की रक्त रेखा।
> आज लहराते विकल पागल बने थे जो गुमानी,
> फिर धधकती आग प्राणों मे जलती निशानी॥

सागर की शान्त गम्भीर गुन्जन की लहराती ललकार के साथ कोमल मधुर स्वर से एस. एस. अगोला भम भम, भम भम करता आगे बढता जा रहा था।